(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

*सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद्–**9/989**,*
*के सातत्य में **शैक्षिक सत्र 2020-21** के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर*
आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक

संस्कृत

कक्षा-11

- चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)
- रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)
- पत्र लेखन
- अलंकार
- व्याकरण

व्याख्याकार

व्याख्याकार
डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

परामर्शदाता
डॉ० तारिणीश झा
व्याकरणवेदान्ताचार्य
भूतपूर्व पुराण विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है इसीलिए इसे देववाणी की संज्ञा दी गयी है। इसे ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज ने कक्षा-11 संस्कृत के लिए चर्चित एवं जनप्रिय तीन पुस्तकें निर्धारित की हैं। क्रमानुसार ये पुस्तकें हैं—चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग), रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)। विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए उपर्युक्त कृतियों को एक पुस्तक का स्वरूप दिया गया है।

बाणभट्ट द्वारा रचित 'चन्द्रापीडकथा' संस्कृत गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना है। बाणभट्ट की इस कृति के माध्यम से कथामुख प्रकरण को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है।

महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध कृति 'रघुवंशमहाकाव्यम्' (द्वितीय सर्ग) को पाठ्यक्रम में रखा गया है। इसे सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अनुपम सूक्तियों से परिपूर्ण सर्वगुणसम्पन्न इसकी रचना अत्यन्त चमत्कारिणी और मनोहारिणी है।

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इस कथन के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को सर्वश्रेष्ठ नाटक माना गया है। यह महाकवि कालिदास की सर्वश्रेष्ठ कृति है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

छात्र-छात्राओं के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक रचनाकारों का जीवन-परिचय, शैली, कृतियों की कथावस्तु, श्लोकों एवं गद्यावतरणों का हिन्दी अनुवाद, हिन्दी व्याख्या, संस्कृत व्याख्या एवं शब्दार्थ आदि दिये गये हैं। सम्पूर्ण कृतियों से उद्धृत सूक्तियों को भी प्राथमिकता दी गयी है। इसके अतिरिक्त अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का भी पूर्ण समावेश है।

प्रस्तुत संस्करण की रचना विशेषतः विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर की गयी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह उनके अध्ययन में अधिकाधिक सहायता प्रदान करेगी।

—व्याख्याकार

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा 2020-21
की परीक्षा के लिए निर्धारित

नवीन पाठ्यक्रम

संस्कृत

कक्षा-11

सामान्य निर्देश

संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रश्न-पत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगा—

खण्ड-क (गद्य) — 20 अंक

चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)

1. गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर। — **10**
2. कथात्मक पात्रों का चरित्र-चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)। — **4**
3. रचनाकार का जीवन-परिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)। — **4**
4. सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न। — **2**

खण्ड-ख (पद्य) — 20 अंक

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः – प्रारम्भ से श्लोक संख्या 40 तक)

1. किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या। — **2+5=7**
2. किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या। — **2+5=7**
3. कवि-परिचय एवं काव्य-शैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द) — **4**
4. काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। — **2**

खण्ड-ग (नाटक) — 20 अंक

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः – प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक)

1. पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। — **2+5=7**
2. पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या। — **2+5=7**

3. कालिदास का जीवन-परिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में अधिकतम 100 शब्द)। **4**

4. सन्दर्भित नाटक पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। **2**

खण्ड-घ (पत्र लेखन) **06 अंक**

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार) **04 अंक**

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में–अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण) **30 अंक**

1.	अनुवाद – हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।	**8**
2.	कारक तथा विभक्ति	**4**
3.	समास	**4**
4.	सन्धि अथवा सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख, नियम	**4**
5.	शब्दरूप	**4**
6.	धातुरूप	**4**
7.	प्रत्यय	**2**

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु

खण्ड-क (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम्–कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् 'चन्द्रापीडकथा' का पूर्वार्द्ध भाग–आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा...... सर्वरमणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श।

खण्ड-ख (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्–रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) प्रारम्भ से श्लोक संख्या 40 तक।

खण्ड-ग (नाटक)

महाकविकालिदासप्रणीतम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक।

खण्ड-घ (पत्रलेखन)

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में–अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण)

1. अनुवाद–

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

2. कारक तथा विभक्ति–

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान–

(क) प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

(1) स्वतंत्रः कर्त्ता।

(2) प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

(ख) द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)

(1) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

(2) कर्मणि द्वितीया।

(3) अकथितं च।

(4) अधिशीङ्स्थासां कर्म।

(5) अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि। (वा0)

(6) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

(ग) तृतीया विभक्ति (करण कारक)

(1) साधकतमं करणम्।

(2) कर्तृकरणयोस्तृतीया।

(3) सहयुक्तेऽप्रधाने।

(4) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

(5) येनाङ्गविकारः।

3. समास–

निम्नलिखित समासों का ज्ञान, परिभाषा तथा संस्कृत में विग्रहसहित उदाहरण–तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि।

4. सन्धि–सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम।

निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान।

स्वरसन्धि–(1) इको यणचि, (2) एचोऽयवायावः, (3) आद्गुणः, (4) वृद्धिरेचि, (5) अकः सवर्णे दीर्घः, (6) एङि पररूपम्, (7) एङः पदान्तादति।

5. शब्दरूप–निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का रूप–

(अ) पुल्लिंग– राम, हरि, गुरु, पितृ, भगवत्, करिन्, राजन्, पति, सखि, विद्वस्, चन्द्रमस्।

(आ) स्त्रीलिंग– रमा, मति, नदी, धेनु, वधू, वाच्, सरित्, श्री, स्त्री, अप्।

6. धातुरूप–दसों लकारों का सामान्य ज्ञान तथा निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिंग एवं लृट् में रूप।

परस्मैपद–भू, पठ्, पा, गम्, दृश्, स्था, नी, अस्, नश्, आप्, शक्, इष्, प्रच्छ्, कृष् के रूप।

7. प्रत्यय–क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, यत्।

टिप्पणी–संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी।

●●

विषय-सूची

विषय **पृष्ठ-संख्या**

खण्ड - 'क' (गद्य)

चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)

खण्ड -'ख' (पद्य)

रघुवंश-महाकाव्यम्- (द्वितीयः सर्गः)

खण्ड - 'ग' (नाटक)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः दशं श्लोकपर्यन्तः)

खण्ड - 'घ'

खण्ड - 'ङ'

खण्ड - 'च' (व्याकरण)

●●

खण्ड - 'क' (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम्

चन्द्रापीडकथा

(पूर्वार्द्ध भाग)

महाकवि बाणभट्ट : संक्षिप्त परिचय

जीवन-परिचय–बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ गद्य कवि हैं। उनके समय, जीवन-परिचय तथा रचनाओं आदि के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। इसका कारण है उनके आश्रयदाता हर्षवर्धन का ऐतिहासिक व्यक्तित्व होना, साथ ही उनकी कृतियों में वर्णित घटनाएँ तथा अन्य बाह्य साक्ष्य भी उसे प्रमाणित करते हैं। हर्षचरित के प्रथम दो उच्छ्वासों और कादम्बरी (भूमिका, श्लोक 10 से 20) में बाण ने अपनी आत्मकथा और वंश-परिचय दिया है। हर्षचरित के प्रथम उच्छ्वास में इन्होंने अपने वंश की पौराणिक उत्पत्ति बतायी है। इनके वंश प्रवर्तक वत्स, सरस्वती के पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई थे। बाण के पिता का नाम चित्रभानु तथा माता का नाम राजदेवी था। बचपन में ही उनकी माता का देहान्त हो गया और पिता ने उनका पालन-पोषण किया। 14 वर्ष की आयु में ही इनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण अपने मित्रों के साथ देशाटन पर निकल पड़े और यायावरी जीवन व्यतीत करने लगे। भ्रमण के दौरान बाण राजदरबारों तथा गुरुकुलों में भी गये। विद्वानों के बीच रहते हुए बाण की प्रकृति बदल गयी और वे अपने वात्स्यायन वंश के अनुरूप गम्भीर स्वभाव के होकर अपनी जन्म-भूमि को लौट आये। इनके पूर्वजों का निवास-स्थान शोण (सोन) नदी के पास प्रीतिकूट नामक ग्राम था।

समय–बाण सम्राट् हर्ष के सभा-पण्डित थे, अतः बाण के समय-निर्धारण में कोई कठिनाई नहीं है। हर्ष का राज्याभिषेक अक्टूबर, 606 ई0 में हुआ और उनकी मृत्यु 648रई0 में हुई। ताम्रपत्रों तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग के संस्मरणों से ये तिथियाँ निर्णीत हो चुकी हैं। ह्वेनसांग ने 629 से 645 ई0 तक भारत-भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था। अतः बाण का समय 7वीं शताब्दी ई0 का पूर्वार्द्ध मानना उचित है।

8वीं शताब्दी ई0 से लेकर अनेक संस्कृत ग्रन्थकारों ने बाण और उनके ग्रन्थों का उल्लेख किया है, अतः बाण के समय के विषय में कोई विवाद नहीं है।

रचनाएँ–मुख्य रूप से बाणभट्ट के दो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं–

1. हर्षचरित,
2. कादम्बरी।

इनके नाम से तीन और ग्रन्थ माने जाते हैं–

1. चण्डीशतक,
2. मुकुटताडितक,
3. पार्वती परिणय।

परन्तु इन तीनों रचनाओं की प्रामाणिकता सन्दिग्ध है।

हर्षचरित–यह आठ उच्छ्वासों में लिखी हुई एक आख्यायिका है। इसके प्रारम्भ में स्वयं बाण ने अपने वंश का विशद् वर्णन किया है और अगले उच्छ्वासों में हर्ष की वंश-परम्परा से प्रारम्भ करते हुए उनकी उत्पत्ति तथा विकास का विस्तृत वर्णन किया है।

कादम्बरी–यह एक अनूठा कथा-ग्रन्थ है। इसमें एक काल्पनिक कथा वर्णित है। कादम्बरी को हम आधुनिक युग में उपन्यास कह सकते हैं। भाव और भाषा-शैली सभी दृष्टियों से कादम्बरी एक उत्कृष्ट रचना है, अतः यह कथन उचित ही है कि कादम्बरी के रसज्ञों को भोजन भी अच्छा नहीं लगता—"कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।"

पार्वती परिणय–यह एक नाटक है, इसमें भगवान् शिव तथा पार्वती का विवाह वर्णितरहै।

चण्डीशतक–यह सौ श्लोकों का संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें अत्यन्त सुन्दर शब्दावली में भगवती चण्डिका की स्तुति की गयी है।

मुकुटताडितक–यह एक नाटक है, परन्तु अब अप्राप्य है।

बाण की शैली एवं काव्य-सौन्दर्य–बाण संस्कृत गद्य-काव्य के मूर्द्धन्य सम्राट् माने गये हैं। उन्होंने गद्य में पद्यों से भी अधिक सौन्दर्य एवं चमत्कार-प्रदर्शन किया है। बाण की सबसे प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने अपने दोनों गद्य-काव्यों में शैलीगत समस्त विशेषताओं का संग्रह करने का प्रयत्न किया है, अतः उनके ग्रन्थ सभी के लिए आनन्ददायी हैं। बाण के अनुसार नवीन या चमत्कारिक अर्थ, उत्कृष्ट स्वभावोक्ति, सरल श्लेष प्रयोग, सुन्दर रसाभिव्यक्ति और ओज-गुणयुक्त शब्दयोजना, ये सारे गुण एकत्र दुर्लभ हैं। परन्तु बाण की रचनाओं में ये सभी गुण प्राप्त होते हैं।

रीति–बाण पाञ्चाली रीति के कवि हैं। उनकी रचनाओं में भाव और भाषा का अनुपम समन्वय मिलता है। पाञ्चाली रीति का तात्पर्य है, विषय के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग और बाण इसके सिद्धहस्त कवि हैं।

शैली–बाण के समय चार प्रकार की गद्य-शैलियाँ प्रचलित थीं, जिनमें से तीन बाण के साहित्य में मिलती हैं–दीर्घसमासा, अल्पसमासा और समासरहिता। बाण का किसी शैली पर विशेष आग्रह नहीं था।

समासों का अस्तित्व गद्य शैली की प्रमुख विशेषता माना जाता है–'ओजः समास भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।' समासों का जमघट लगा देने में बाण ने कमाल दिखलाया है। जिस प्रकार उन्होंने समास-बहुल लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग किया है, उसी प्रकार समासरहित छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग में भी कौशल दिखाया है।

भाषा–बाण की भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है। उन्होंने भाव और भाषा का अत्यन्त सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। शृङ्गार रस के वर्णन में कोमलकान्त पदावली है और करुण रस के वर्णन में सरल-सुबोध पदावली का प्रयोग है। अतएव उनके काव्य में ललित पदविन्यास और रचनाशैली अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होती है। नये-नये अर्थों का सन्निवेश भी उन्होंने विलक्षण ढङ्ग से किया है। बाण का अक्षय शब्दकोश और पदावलियों का अविराम स्पन्दन, काव्य के लिए अपेक्षित समस्त तत्त्व जो बाण की कृतियों में वर्तमान हैं, उसे देखकर ही 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' की उक्ति चल पड़ी, जो सार्थक भी है।

अलङ्कार–बाण की रचनाओं में अलङ्कारों की छटा दर्शनीय है। उन्होंने अलङ्कारों का प्रयोग समुचित तथा अत्यन्त स्वाभाविक रूप में किया है। कहीं भी अलङ्कारों के कारण भाषा की रमणीयता में व्याघात नहीं उत्पन्न हुआ है। बाण के अलङ्कार-प्रयोग के विषय में प्रसिद्ध है कि बाण के लम्बे-लम्बे समास यदि पहाड़ी नदी की वेगवती धारा के समान हैं, तो उनकी श्लिष्ट उपमाएँ इन्द्रधनुष की छाया की भाँति उसे रंगीन बना देती हैं। उनके अनुप्रासों से भाषा में एक विलक्षण स्वर-माधुर्य आ गया है–'मधुकरकलकलङ्ककालीकृतकालेय-कुसुमकुड्मलेषु'। उनके श्लेष जुही की माला में पिरोये गये चम्पक पुष्पों की भाँति हैं–'निरन्तर

श्लेषघनाः सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव'। बाण की उत्प्रेक्षाओं और उपमाओं से सम्पूर्ण कथा व्याप्त है। वस्तुतः बाण के चित्रणों का अधिकांश सौन्दर्य उनकी उत्प्रेक्षाओं में ही है। बाण के अर्थापत्ति, विरोधाभास आदि अलङ्कारों के प्रयोग भी बड़े स्वाभाविक बन पड़े हैं।

रस–बाण रससिद्ध कवि हैं। शृङ्गार उनका सर्वप्रिय रस है। वे संयोग शृङ्गार के वर्णन में जितने सिद्धहस्त हैं, उससे अधिक सफलता उन्हें विप्रलम्भ शृङ्गार के वर्णन में मिली है। बाण जिस रस का प्रयोग करते हैं, उसका मार्मिक वर्णन कर पूर्ण रसास्वाद कराते हैं।

चरित्र-चित्रण–बाण ने हर्षचरित में ऐतिहासिक और कादम्बरी में काल्पनिक पात्र लिये हैं। कादम्बरी के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं, साथ ही, दिव्यलोक के पात्र भी हैं। प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण अति उत्तम है, जबकि गौण पात्रों का चित्रण उतना प्रभावशाली नहीं बना। बाण मर्यादित प्रेम के समर्थक हैं।

बाण ने तत्कालीन समाज और संस्कृति का बहुत सुन्दर और सजीव चित्रण किया है। बाण के सुभाषित उनकी सूक्ष्म दृष्टि और चिन्तन-शक्ति के परिचायक हैं।

बाण की दो-एक प्रशस्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। कादम्बरी के उत्तरभाग के 7वें श्लोक में कादम्बरी की रसभरता के विषय में भूषणभट्ट ने स्वयं कहा है–

(1) कादम्बरी रसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।।

(2) मरुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनोहरति।

(2) तत् किं तरुणी, नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।।

–धर्मदाससूरि, विदग्धमुखमण्डन, 4/28

चन्द्रापीडकथा : कथा-सार

प्राचीनकाल में शूद्रक नामक एक राजा था। विदिशा नाम की नगरी उसकी राजधानी थी। एक बार जब वह सभा मण्डप में बैठा हुआ था कि दक्षिण दिशा से एक चाण्डाल कन्या पिंजड़े में एक तोता लिए हुए आयी और उसके समीप जाकर बोली,''महाराज यह तोता सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता और पृथ्वी का एक रत्न है। इसे आप स्वीकार करें।'' राजा के पूछने एवं उनकी उत्सुकता को सन्तुष्ट करने हेतु शुक ने बताया कि बाल्यकाल में वह एक मुनि कुमार के द्वारा जाबालि के आश्रम में पहुँच गया। मेरे विषय में मुनियों की जिज्ञासा जानकर जाबालि ऋषि ने इस प्रकार बताया–

अवन्ति में उज्जयिनी नाम की एक नगरी में तारापीड नाम का एक राजा हुआ था। शुकनास नाम का एक ब्राह्मण उसका मन्त्री था। देवताओं की आराधना, पूजापाठ के बाद तारापीड को चन्द्रापीड नाम का और मन्त्री शुकनास को वैशम्पायन नाम का पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। विद्याध्ययन एवं युवावस्था प्राप्त होने पर चन्द्रापीड को युवराज और वैशम्पायन को उसका मन्त्री नियुक्त किया गया। विजय में मिली कुलूत राजा की पुत्री राजकन्या पत्रलेखा को चन्द्रापीड की सेवा में नियुक्त किया गया। दिग्विजय अभियान में चन्द्रापीड किरातों की नगरी सुवर्णपुर पहुँचा। अपने इन्द्रायुध पर सवार वह एक दिन शिकार खेलते समय किन्नरों के एक युगल का पीछा करते हुए अच्छोद सरोवर के तट पर पहुँच गया। वहाँ शिव मन्दिर में एक कन्या को पूजा करते हुए देखा। चन्द्रापीड के पूछने पर उस कन्या ने बताया कि वह गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता है। महर्षि श्वेतकेतु के पुत्र पुण्डरीक ने एक दिन उसे देखा और वे इतने आसक्त हो गये कि उनका जीवन खतरे में पड़ गया। पुण्डरीक के मित्र कपिंजल से सूचना पाकर रात्रि में जब मैं उनसे मिलने यहाँ पहुँची तब तक वे अपना प्राण त्याग चुके थे। मैंने उनके शरीर के साथ सती होने का निर्णय लिया तभी कोई उनके शरीर को लेकर आकाश में उड़ गया। उसी समय मुझे आकाशवाणी सुनाई पड़ी कि शाप का अन्त होने पर यह फिर तुमसे मिलेगा। तब तक तुम यहीं रहकर तपस्या करो। कुछ देर के बाद पुण्डरीक का मित्र कपिंजल भी जो हमारे निकट खड़ा था, अचानक मुझे अकेला छोड़कर दूर आसमान में उड़ता हुआ विलीन हो गया।

महाश्वेता अपनी आपबीती चन्द्रापीड को सुनाकर उसका उचित अतिथि सत्कार किया। महाश्वेता एक दिन चन्द्रापीड को साथ लेकर अपनी प्रिय सखी कादम्बरी को समझाने के लिए हेमकूट गयी। सखी के दुःख से प्रभावित होकर कादम्बरी विवाह नहीं करना चाहती थी। किन्तु महाश्वेता के साथ पहुँचे युवराज चन्द्रापीड को देखते ही वह उस पर आसक्त हो गई। कुछ दिनों उपरान्त अपनी सेविका पत्रलेखा को वहीं रुकने के लिए कहकर चन्द्रापीड अपनी सेना में लौट आया। किन्तु वहाँ आये पत्रवाहक से मिले पत्र को पढ़कर वैशम्पायन एवं सेवक को पत्रलेखा के साथ जाने का आदेश देकर अपनी राजधानी लौट आया। कुछ दिनों बाद एक दूत के माध्यम से कादम्बरी का सन्देश पाकर वैशम्पायन की खोज के बहाने चन्द्रापीड कादम्बरी से मिलने चल पड़ा। यात्रा के बीच में ही चन्द्रापीड को जानकारी प्राप्त हुई कि अच्छोद सरोवर के किनारे वैशम्पायन पड़ा हुआ है। वह वापस आना ही नहीं चाहता है। चन्द्रापीड के वहाँ पहुँचने पर महाश्वेता ने उसे बताया कि वैशम्पायन ने उसके प्रति दुर्व्यवहार किया जिसके कारण उसने उसे शुक हो जाने का शाप दे दिया है। चन्द्रापीड इतना सुनते ही वहीं गिरकर मर गया। यह दृश्य देखकर पत्रलेखा भी इन्द्रायुध को लेकर अच्छोद सरोवर में कूद पड़ी। तदन्तर सरोवर से एक पुरुष निकला। सारी कथा कादम्बरी और महाश्वेता को सुनाकर दोनों को अपने प्रेमियों से पुनर्मिलन के लिए आश्वस्त किया।

राजा शूद्रक शुक के मुख से इतना सुनते ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस घटना के बाद चन्द्रापीड जीवित हो गया और फिर चन्द्रलोक से पुण्डरीक भी आ गया। परिणामस्वरूप चन्द्रापीड का कादम्बरी के साथ और पुण्डरीक का महाश्वेता के साथ विवाह सम्पन्न हो गया।

चन्द्रापीडकथा : चरित्र-चित्रण

शूद्रक

बाण की कादम्बरी की कथा दो जन्मों से सम्बन्धित है। राजा शूद्रक पूर्वजन्म में युवराज चन्द्रापीड था। चन्द्रापीड पूर्वजन्म में चन्द्रमा था। वह शाप के कारण पृथ्वी पर दो बार जन्म लेता है। प्रथम बार चन्द्रापीड के रूप में जन्म लेकर मित्र वैशम्पायन की मृत्यु के आघात से प्राण त्याग देता है, तत्पश्चात् राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। राजा शूद्रक का शारीरिक सौष्ठव अत्यन्त आकर्षक था। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार कही जा सकती हैं–

महाबलशाली चक्रवर्ती सम्राट्–राजा शूद्रक महाप्रतापी चक्रवर्ती सम्राट् था। उसके पराक्रम के आगे समस्त राजा अपना मस्तक झुकाते हैं और उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। अपने पराक्रम और तेज के कारण वह दूसरे इन्द्र के समान प्रतीत होता था। चक्रवर्ती के लक्षणों से सम्पन्न शूद्रक चारों समुद्रों की मालारूपी मेखलावाली पृथ्वी का स्वामी था–''**अशेषनरपतिशिरः समभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः, चतुरुदधिमालामेखलाया भुवो भर्त्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तीलक्षणोपेतः, चक्रधर इव'' इति।** वह सम्पूर्ण पृथ्वी के भार को हाथों में कङ्गन के समान अनायास धारण करता था–''**वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्।**''

संयमी–शूद्रक के राजमहल में अनेक स्त्रियाँ उसकी परिचायिकाओं के रूप में कार्य करती थीं। उसे स्नानादि कराती थीं, परन्तु शूद्रक उनके बीच अनासक्त भाव से रहता था। बाण ने शूद्रक के लिए स्पष्ट कहा है–''**प्रथमे वयसि वर्तमानस्यापि रूपवतोऽपि सन्तानार्थिभिरमात्यैरपेक्षितस्यापि सुरतसुखस्योपरि द्वेष इवासीत्।**'' अर्थात् मन्त्रियों के द्वारा सन्तान की आकाङ्क्षा करने पर भी वह स्त्री-सुख से विमुख था। वह जितेन्द्रिय था, इन्द्रियों का दास नहीं। बाण पुनः शूद्रक को '**वनितासम्भोगसुखपराङ्मुखः**' कहकर उसके संयमी होने का परिचय देते हैं।

शास्त्रपारङ्गत एवं गुणग्राही–राजा शूद्रक समस्त शास्त्रों का ज्ञाता था और दूसरों के गुणों को भी परखनेवाला था। उसके राज-दरबार में विद्वानों और गुणीजनों का सदा आदर होता था। अनेक छन्दों का ज्ञाता शूद्रक अपना समय शास्त्रचर्चाओं में व्यतीत करता था–''**कदाचिदाबद्धविदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचिच्छात्रालापेन, कदाचिदाख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन....।**'' वह राज-सभा में प्रायः विद्वत् सभाओं और गोष्ठियों का आयोजन करता रहता था–''**आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनं गुणानां, आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्।**'' वह सभा में लोभरहित विद्वान् मन्त्रियों से घिरा रहता था–''**नीतिशास्त्रनिर्मलमनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः।**''

सौन्दर्य का प्रशंसक–राजा शूद्रक किसी भी प्रकार के गुण का प्रशंसक है, वह स्वाभाविक सौन्दर्य की भी प्रशंसा करता है। राजसभा में जब चाण्डालकन्या राजा के समक्ष उपस्थित होती है, तो उसके सौन्दर्य को देखकर वह चकित रह जाता है–''**अहो! विधातुरस्थाने रूप-निष्पादनप्रयत्नः....मन्ये च मातङ्गजातिस्पर्शदोषभयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य।**''

धर्मनिष्ठ–राजा शूद्रक धर्म के प्रति आस्था रखता है। उसके दैनिक कृत्यों में ईश्वरोपासना भी सम्मिलित है। पितरों को तर्पण देता है, मन्त्रों से पवित्र जल से सूर्य को अञ्जलि देता है तथा देवालय में शङ्कर की पूजा करता है–''**सम्पादितपितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्। उपरचित पशुपतिपूजश्च।**''

इस प्रकार पराक्रम का रसिक होते हुए भी विनय का व्यवहार करनेवाला शूद्रक विजय- प्राप्ति का उत्कट अभिलाषी एवं अत्यधिक शक्तिशाली था।

चाण्डालकन्या

सौन्दर्य की प्रतिमा—अपने अत्यधिक सौन्दर्य के कारण चाण्डालकन्या सौन्दर्य की प्रतिमा के सदृश थी। राजा शूद्रक जैसा पराक्रमी तथा चक्रवर्ती सम्राट् भी उसके अप्रतिम सौन्दर्य को देखकर चकित रह जाता है–"**असुरगृहीतामृतापहरणकृत-कपटपटुविलासिनीवेशस्य श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वतीम्।**" उसका रूप-लावण्य विष्णु के मोहिनी रूप का अनुकरण करनेवाला था। अपलक नेत्रों से चाण्डालकन्या के रूप-सौन्दर्य को देखते हुए वह सोचता है कि यदि विधाता ने उसे इतना रूप दिया तो उसे ऐसे कुल में जन्म क्यों दिया। वह सोचता है कि शायद अछूत को छूने के दोष के भय से इसे बिना छुए ही बना डाला है–"**यदि नामेयमात्मरूपोपहसिता-शेषरूपसम्पदुत्पादिता किमर्थमपगत-स्पर्शसम्भोगसुखे कृतं कुले जन्म।**" अन्ततः शूद्रक विधाता को धिक्कारता है कि ऐसे अनुपयोगी स्थान पर सर्व-सौन्दर्य तथा रूपलावण्यता की कमनीयता क्यों स्थापित की–**सर्वथा धिग्धिग्विधातारमसदृशसंयोगकारिणम्, अतिमनोहराकृतिरपि क्रूरजातितया....।**"

चतुरता—रूपवती होने के साथ ही चाण्डालकन्या अत्यन्त चतुर एवं विवेकशील स्त्री है। शूद्रक के समक्ष सभाभवन में प्रवेश करके वह सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए जर्जर बाँस के टुकड़े को फर्श पर जोर से पटकती है, जिससे उत्पन्न तेज आवाज के कारण पूरी सभा का ध्यान उसकी ओर चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि वह कितनी चतुराई से सभा-मण्डप में अपनी उपस्थिति का महत्त्व उत्पन्न करती है।

वात्सल्यमयी—चाण्डालकन्या का हृदय स्नेह तथा वात्सल्य से परिपूर्ण है। पिंजड़े में बन्द तोते के रूप में भी पुत्र के लिए उसके हृदय में अगाध स्नेह तथा वात्सल्य है। वह अपने पुत्र की देख-रेख तथा रक्षा के लिए मृत्युलोक में निवास करना स्वीकार करती है और चाण्डाल कुल में जन्म लेकर अपने आचरण को पवित्र रखती है। शुक रूप में स्थित पुत्र के शाप का अन्त समीप समझकर वह सम्पूर्ण वृत्तान्त राजा को सुनाती है।

वस्तुतः कादम्बरी के अनुसार चाण्डालकन्या महामुनि श्वेतकेतु की पत्नी एवं पुण्डरीक की माता है, जिसके शापग्रस्त हो जाने पर उसकी रक्षा के लिए चाण्डाल कुल में जन्म लेती है, जिससे स्पर्श के दोष से बची रहे। वैशम्पायन नामक शुक के शापमुक्त होने पर वह पुनः अपने लोक को चली जाती है।

वैशम्पायन नामक शुक

यह तोता अपने पहले के दो जन्मों में क्रमशः श्वेतकेतु का पुत्र पुण्डरीक तथा शुकनास नामक मन्त्री का पुत्र वैशम्पायन था। चन्द्रमा के शाप के कारण यह मनुष्य लोक में शुकनास के यहाँ उत्पन्न हुआ। महाश्वेता के द्वारा शाप दिये जाने पर तोते की योनि में उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसका शास्त्रज्ञान तथा महाश्वेता के प्रति अनुराग आदि नष्ट नहीं हुए। इसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

शास्त्रज्ञ तथा कलाओं में निपुण—पूर्वजन्मों के संस्कार के कारण शुक सम्पूर्ण विद्याओं, कलाओं, शास्त्रों, पुराणों, इतिहास तथा राजनीति का ज्ञानी था। इसका यह ज्ञान राजा 'शूद्रक' के लिए आशीर्वाद के रूप में कही हुई निम्न आर्या में स्पष्ट हो जाता है–

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥

अपने इसी ज्ञान के कारण इसने अपने तथा शूद्रक के पूर्वजन्मों की कथा को स्पष्ट रूप में कहा था।

मनुष्य की वाणी में बोलनेवाला—इसकी वाणी मनुष्य के समान स्पष्ट थी। स्वयं राजा शूद्रक उसकी इस चमत्कारयुक्त वाणी से प्रभावित होकर अपने मन्त्री कुमारपालित से कहता है कि सुना आप लोगों ने, इस पक्षी की वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता और स्वर में मधुरता! पहले तो यही महाश्चर्य है कि यह (शुक) वर्णों की परस्पर स्पष्ट पृथकतावाली सुस्पष्ट मात्रा, अनुस्वार, स्वर तथा व्याकरण-संयत अक्षरोंवाली वाणी बोलता है–"**श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता! प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम्....।**"

महाश्वेता का प्रेमी—पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसे महाश्वेता से अति प्रेम था। अतः जैसे ही इसके पङ्खों में उड़ने

की शक्ति आयी, वह महाश्वेता से मिलने के लिए उड़ चला।

दुर्भाग्यशाली—यह दुर्भाग्यशाली भी था। जन्म लेते ही इसकी माता स्वर्ग चली गयी और बचपन के आरम्भ में ही इसके पिता को वृद्ध भील ने मार डाला। यह इसके पूर्वजन्म के पिता श्वेतकेतु की तपस्या का प्रभाव था कि किसी प्रकार इसके जीवन की रक्षा हो सकी।

पूर्वजन्म का ज्ञाता—इसे पहले के दो जन्मों का पूर्ण ज्ञान था। इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक को कहानी सुनाता है। संक्षेप में इसके सम्पूर्ण गुण चाण्डालकन्या के द्वारा शूद्रक के समक्ष निम्नलिखित कथन से स्पष्ट है–

देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिप्रयोगकुशलः, पुराणेतिहासकथालापनिपुणः,...

सकलभूतलरत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः। ...तदयात्मीयः क्रियताम्।

इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक से स्वयं सम्मान प्राप्त करता है। राजा शूद्रक स्वयं वैशम्पायन शुक से पूछते हैं कि क्या आपने कुछ अभीष्ट खाद्य पदार्थों का अन्तःपुर में आस्वादन किया–

'कच्चिदभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किञ्चिदशनजातम्।''

अन्ततः राजा शूद्रक उसके चरित्र से प्रभावित होकर जिज्ञासावश उसके विषय में समस्त जानकारी देने का निवेदन करता है।

कादम्बरी का चरित्र-चित्रण

परिचय—कादम्बरी बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी' की प्रमुख स्त्री पात्र है। वह गन्धर्वों के राजा चित्ररथ की एकमात्र पुत्री है। वह चन्द्रापीड की प्रेमिका, महाश्वेता की सखी और सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष स्त्री है।

प्रमुख नायिका—कादम्बरी के नाम पर ही रचना का नामकरण होने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कादम्बरी मुख्य स्त्री-पात्र है। यद्यपि यह कथानक के आदि में ही हमारे सामने आती है और महाश्वेता के मुख से ही हमें उसका परिचय मिलता है, किन्तु नायक चन्द्रापीड की प्रिया होने के कारण तथा बाद के कथानक में सर्वत्र मुख्य रूप से उपस्थित होने से वही इस आख्यायिका की नायिका है।

सच्ची प्रेमिका—वह चन्द्रापीड को पहली बार देखते ही उस पर अनुरक्त हो जाती है और सदैव उनके पास रहना चाहती है, **'हे सखि! महाश्वेते, × × × दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः किमुत भवनस्य परिजनस्य वा'।** एकान्त में चन्द्रापीड के बारे में सोचना और पत्रलेखा के द्वारा चन्द्रापीड को सन्देश भेजना इसके प्रमाण हैं। पत्रलेखा चन्द्रापीड से कादम्बरी की मनोभावना का वर्णन करती हुई कहती है–वह चन्द्रापीड के मरने पर उसके साथ सती होना चाहती है, किन्तु आकाशवाणी के द्वारा पुनर्मिलन का सन्देश दिये जाने पर यह सब-कुछ छोड़कर अच्छोद सरोवर के किनारे ही उसके मृत शरीर की रक्षा और सेवा करती हुई एक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगती है।

सङ्कोची—यह अत्यन्त लज्जाशीला और सङ्कोची स्वभाव की है। इसी कारण से महाश्वेता के बार-बार आग्रह करने पर भी वह चन्द्रापीड को अपने हाथ से पान देने में सङ्कोच करती है और महाश्वेता के मुख से अपनी दृष्टि हटाये बिना ही उसे पान देती है। इसी कारण ही विभिन्न प्रकार से चन्द्रापीड के द्वारा पूछे जाने पर भी स्पष्ट रूप से अपने प्रेम को प्रकट नहीं करती।

प्रिय सखी—वह महाश्वेता की प्रिय सखी है। वह महाश्वेता से प्रेम करती है और महाश्वेता इससे प्रेम करती है। महाश्वेता कादम्बरी का परिचय कराती हुई चन्द्रापीड से कहती है–**'सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी।'**

सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष—वह सङ्गीत, चित्रकारी, शृङ्गार आदि सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष है। इस प्रकार कादम्बरी के चरित्र में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

चन्द्रापीड का चरित्र-चित्रण

'कादम्बरी' महाकवि बाण की श्रेष्ठ गद्य-काव्यात्मक रचना है। चन्द्रापीड इस गद्य-काव्य का धीरोदात्त नायक है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं–

रूपवान्—चन्द्रापीड सुन्दर राजकुमार है। जब उसमें यौवन आता है तब तो उसका अङ्ग-प्रत्यङ्ग निखर उठता है। शिक्षा प्राप्त कर जब वह घर आता है, तब नवयौवन उसके सौन्दर्य को दोगुना कर देता है।

बुद्धिमान् और गुणवान्—चन्द्रापीड की बुद्धि बहुत तीव्र है। विद्या-मन्दिर में वह आचार्यों द्वारा पढ़ायी गयी सम्पूर्ण विद्याओं को बहुत थोड़े समय में ग्रहण कर लेता है। सभी शास्त्रों, शस्त्रविद्या, घोड़े और हाथी पर सवारी, पक्षियों की भाषा का ज्ञान आदि सभी में वह पारङ्गत हो जाता है।

वीर—चन्द्रापीड महान् वीर तथा पराक्रमी भी है। वह युवराज बनकर दिग्विजय करने के लिए चलता है, तो चारों दिशाओं को जीतकर सबको अपने अधीन कर लेता है।

सच्चा मित्र—चन्द्रापीड सच्चा मित्र है। अपने मित्र वैशम्पायन के बिना वह रह नहीं सकता। चाहे विद्यालय में पढ़ने जाय अथवा दिग्विजय के लिए प्रस्थान करे, मित्र उसके साथ रहता है। मित्र ही कठिनाई के समय सहायता करता है–ऐसा उसका विश्वास है। चन्द्रापीड को जब यह पता चलता है कि महाश्वेता के शाप से वैशम्पायन मर गया है, तब अपने मित्र के शोक में व्याकुल चन्द्रापीड प्राण त्याग देता है।

सच्चा प्रेमी—चद्रापीड कादम्बरी से प्रेम करता है। कादम्बरी के प्रथम दर्शन में ही उसके हृदय में प्रेम प्रवाहित हो जाता है। उसका प्रेम निःस्वार्थ और वासनारहित है। कादम्बरी से मिलन के लिए वह आकुल होता है। उज्जयिनी से वर्षा-आँधी में चलकर भी वह कादम्बरी के पास पहुँचने का प्रयास करता है। कादम्बरी की प्रत्येक इच्छा को वह पूर्ण करना चाहता है। उसके प्रेम में कहीं भी स्वार्थ अथवा वासना की गन्ध नहीं है।

दिव्य पुरुष—चन्द्रापीड यद्यपि राजा तारापीड का पुत्र अर्थात् लौकिक मनुष्य है, परन्तु वास्तव में वह लोकपाल चन्द्रमा है। शाप के कारण वह पहले चन्द्रापीड के रूप में और फिर राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। शापमुक्त होकर वह फिर चन्द्रलोक, हेमकूट और उज्जयिनी पर शासन करता है।

संक्षेप में, चन्द्रापीड चन्द्रमा का अवतार है। वह वीर, बुद्धिमान् तथा गुणवान् राजकुमार के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुआ है।

पुण्डरीक का चरित्र-चित्रण

पुण्डरीक महाकवि बाणभट्ट कृत कादम्बरी का महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र में निम्न प्रमुख विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

सुन्दर एवं चञ्चल—महामुनि श्वेतकेतु से आकृष्ट लक्ष्मी के मानसपुत्र का नाम पुण्डरीक है। तीनों लोक में श्वेतकेतु का रूप सर्वाधिक सुन्दर है, अतः पुत्र पुण्डरीक भी अत्यन्त सुन्दर युवक है। लक्ष्मी का पुत्र होने से उसमें नैसर्गिक चञ्चलता भी है। तभी तो महाश्वेता के आकृष्ट होते ही वह अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण उस पर आसक्त हो जाता है।

कुशल प्रेमी—महाश्वेता के पुष्पमञ्जरी विषयक कौतूहल को देखकर वह उसके पास चला आता है और अपने कानों से उतारकर उसके कानों में पहनाते समय अनजाने ही महाश्वेता के गालों के स्पर्शसुख से उसकी अँगुलियाँ काँप जाती हैं और रुद्राक्षमाला उसके हाथ से गिर जाती है। मुनिपुत्र होने पर भी पुण्डरीक प्रणयव्यापार में प्रवीण है।

वाक्पटु—महाश्वेता के प्रेमपाश में आबद्ध हो जाने से कपिञ्जल उसकी भर्त्सना करता है, तो वह असत्य भी बोल जाता है और कहता है कि वह कामवश नहीं है। बनावटी क्रोध से वह महाश्वेता को प्रेम-फटकार भी सुनाता है, किन्तु अवसर मिलते ही छिपकर तरलिका के पास पहुँच जाता है और महाश्वेता के बारे में सारी बातें पूछता है। वह प्रेमपत्र भी तरलिका के माध्यम से महाश्वेता के पास पहुँचा देता है। पुण्डरीक की धार्मिकता, विद्वत्ता, तपस्विता एवं मित्रता आदि का मूल्याङ्कन कपिञ्जल के शब्दों में किया जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि पुण्डरीक के अन्दर अनेक विशेषताएँ हैं।

महाश्वेता का चरित्र-चित्रण

गौरवर्णा परम रूपवती गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता स्वभाव से सरल, उदार हृदयवाली, अतिथि सेवा परायण, तर्कशीला एवं बुद्धिमती है। उसकी माँ गौरी चन्द्रमा के वंश में उत्पन्न अप्सराओं के कुल में पैदा हुई थी। इससे स्पष्ट है कि बाण रचित 'कादम्बरी' की मुख्य नायिका कादम्बरी की सहेली महाश्वेता का जन्म अप्सराओं के कुल में हुआ था। महाश्वेता अपनी माँ गौरी से भी अधिक गौर वर्ण की और अत्यन्त आकर्षक थी। इसी कारण मुनिकुमार पुण्डरीक इसकी तरफ आकर्षित हुआ और अल्पकालिक

विछोह भी सहन करने में अक्षम होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया था।

दृढ़ संकल्पवती—महाश्वेता दृढ़ संकल्पवाली युवती है। मुनिकुमार पुण्डरीक को प्रथम दर्शन में ही आकर्षित होकर उसे प्राप्त करने का निश्चय कर लेती है। कपिञ्जल से पुण्डरीक की अस्वस्थता की सूचना पाकर वह रात्रि में उससे मिलने तरलिका के साथ निर्भय होकर सरोवर की तरफ जाती है। वहाँ पुण्डरीक की मृत्यु की दशा में पाकर उसके साथ सती होने का निर्णय लेती है। आकाशवाणी सुनकर कि "तुम प्राणों का परित्याग मत करना, तुम्हारा इसके साथ फिर मिलन होगा", महाश्वेता ने तपस्विनी के रूप में वहीं रहने का संकल्प किया। पिता के राजमहल में वैभवपूर्ण सुखमय जीवन का परित्याग करके निर्जन वन-प्रान्तर में रहकर कठोर तपस्यारत जीवन व्यतीत करना उसके दृढ़ संकल्पी व्यक्तित्व का ही द्योतक है।

पतिव्रता– महाश्वेता मानसिक रूप से पुण्डरीक को अपना पति स्वीकार कर चुकी थी। सामाजिक मान्यता के अभाव में भी पतिपरायण होकर एकनिष्ठ भारतीय आदर्श नारी का वह प्रतिनिधित्व करती है। वह दृढ़ चरित्र की स्वामिनी है। आकाशवाणी की सूचना पर वह पुण्डरीक के पुनर्आगमन तक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिए है। वैशम्पायन के प्रेम प्रदर्शन करने पर वह उसे शुक होने का श्राप देती है। यह उसके पातिव्रत्य धर्म पालन की गरिमा का स्पष्ट उदाहरण है।

व्यवहार-कुशल एवं कोमल हृदयवाली– महाश्वेता के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता उसकी व्यवहार-कुशलता एवं दयालुता है। वह उच्च कुलीन गन्धर्वराज हंस की पुत्री है। राजमहल में उसका बचपन व्यतीत हुआ। कोमल हृदयवाली होने के कारण ही वह तपस्वी कुमार पुण्डरीक को अपना हृदय दे देती है। वह राजकुमार चन्द्रापीड का आतिथ्य-सत्कार करती है। कादम्बरी उसकी प्रिय सहेली है। उसके कल्याण की कामना हेतु चन्द्रापीड को साथ लेकर वह उसके पास जाती है। अपने सम्पर्क में आने वाले केयूरक, पत्रलेखा आदि प्रत्येक व्यक्ति से वह बड़ी ही कुशलतापूर्वक व्यवहार करती है। सभी उसका सम्मान करते हैं। उसका व्यवहार चातुर्य उस समय भी प्रकट होता है जब पुण्डरीक अपनी अक्षमाला लौटाने के लिए कहता है तो वह अपनी एकावली उसके हाथ पर रखकर चली जाती है। वह सद्गुणी, निश्छल और सरल हृदया है। उसके चरित्र में कहीं भी अशिष्टता या कपटता का दर्शन नहीं होता है। चन्द्रापीड को वह अपनी आपबीती बिना कुछ छिपाये बता देती है। उसे सत्य के उद्घाटन करने में कभी लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं करती है।

कठोर तपोव्रती– महाश्वेती कठोर तपोव्रती है। मुनिजनों का आदर करने वाली है। पुण्डरीक की दुरवस्था की सूचना देने जब कपिञ्जल राजमहल में जाकर उससे मिलता है तो महाश्वेता उसका चरण धुलकर अपने आँचल से साफ करती है। पुण्डरीक से मिलने के लिए वह गुरुजनों की आज्ञा लिये बिना ही रात्रि में ही यह सोचकर चल पड़ती है कि कहीं पुण्डरीक के प्राणों पर संकट न आ जाये। पुण्डरीक की मृत्यु पर वह पहले सती होने का निर्णय लेती है किन्तु आकाशवाणी एवं दिव्य पुरुष के कथन पर वह तपस्विनी बन कर वहीं निर्जन वन में गुफा में रहने लगती है। वह पाशुपत व्रत एवं कठोर अनुष्ठानों में अपना जीवन लगा देती है। यह क्रम तब तक चलता है जब तक शाप का अन्त नहीं हो जाता है।

स्पष्ट है कि महाश्वेता प्रेम, त्याग, करुणा, सहानुभूति, सरलता, निष्कपटता आदि अनेक मानवीय सद्गुणों से युक्त एक आदर्श भारतीय नारी सिद्ध होती है।

पत्रलेखा का चरित्र-चित्रण

पत्रलेखा का परिचय युवराज चन्द्रापीड को महादेवी द्वारा दी गयी आज्ञा से प्राप्त होता है–महाराज ने कुलूत देश को जीतकर उस देश के राजा की पुत्री पत्रलेखा को कैदियों के साथ यहाँ लाकर रनिवास की सेविकाओं के बीच नियुक्त कर दिया था। उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति प्रेम हो गया। मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोसकर बड़ा किया है। 'अब यह पानदान का डिब्बा लेकर चलने वाली तुम्हारी योग्य सेविका बने'– आयुष्मान् उसके प्रति साधारण सेविका की दृष्टि न रखें और अपनी भावनाओं के समान ही इसे भी चंचलता से रोकें। स्पष्ट है कि उज्जयिनी के राजा तारापीड की पत्नी महारानी विलासवती द्वारा पालित पुत्री पत्रलेखा की सामाजिक स्थिति विशिष्ट थी।

स्वस्थ एवं सौन्दर्यवती—लम्बी,स्वस्थ एवं सुगठित शरीरवाली पत्रलेखा रूपवती एवं आकर्षक व्यक्तित्ववाली थी। गन्धर्व राजपुत्री कादम्बरी उसके सौन्दर्य को देखकर चकित रह गई थी। पत्रलेखा के सौन्दर्य के सम्बन्ध में कादम्बरी की यह युक्ति 'अहो! मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः' पूर्णतया सत्य प्रतीत होती है।

योग्य परिचारिका—चन्द्रापीड की ताम्बूल करङ्कवाहिनी पत्रलेखा सभी दृष्टिकोणों से सुयोग्य परिचारिका प्रमाणित होती

है। वह अपने कर्त्तव्य का पूर्णरूप से निर्वाह करती है। सेवाकाल में वह सदैव चन्द्रापीड के साथ रहती है। जिस समय चन्द्रापीड दिग्विजय के लिए उज्जयिनी से निकलता है और वह सुवर्णपुर पहुँचता है, हर जगह वह चन्द्रापीड के साथ रहती है। चन्द्रापीड का सानिध्य पत्रलेखा को सुख की अनुभूति करता है।

कर्त्तव्यपरायण—पत्रलेखा अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव जागरूक रहती है। उज्जयिनी हो या सुवर्णपुर, दिग्विजय यात्रा हो या कादम्बरी का महल सब जगह, हर समय वह अपने कर्त्तव्य के प्रति तत्पर रहती है। वह चन्द्रापीड की सेविका भी, सलाहकार भी और सखी भी है।

विश्वासपात्र—पत्रलेखा विश्वासपात्र सेविका है। वह छाया सदृश चन्द्रापीड के साथ सदैव उपस्थित रहती है। विश्वासपात्र होने के कारण ही चन्द्रापीड अपने मनोभावों को उससे प्रकट कर देता है। वह उससे कादम्बरी के प्रति अपने हृदय को भी खोल देता है। पत्रलेखा अपनी विश्वसनीयता के कारण कादम्बरी का भी विश्वास भाजन है। कादम्बरी भी चन्द्रापीड के प्रति मनोभावों को पत्रलेखा के समक्ष प्रकट कर देती है।

स्पष्ट है कि महाकवि बाण ने पत्रलेखा को कर्त्तव्यपरायण, स्वामिभक्त, आदर्श सेविका के रूप चित्रित किया है।

शुकनास का चरित्र-चित्रण

अवन्ति में उज्जयिनी के राजा तारापीड का प्रधानमंत्री शुकनास का चरित्र अपने विशिष्ट गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ है। शुकनास की बुद्धि बड़े-बड़े कार्यों के संकट में भी स्थिर रहती थी। राजा तारापीड प्रजा को निश्चिन्त करके राज्य का भार मंत्री शुकनास के ऊपर डालकर सुख से रहने लगा था। शुकनास ने अपनी बुद्धि के बल से उस महान राज्य के भार को सरलता से धारण कर लिया था। वह धीर-गम्भीर, विद्वान एवं राज्य संचालन में कुशल ब्राह्मण था। वह महाराज तारापीड का विश्वास पात्र था।

निर्भीक एवं कर्त्तव्यनिष्ठ—शुकनास के चरित्र की मुख्य विशेषता उसकी कर्त्तव्यनिष्ठता है। वह राज्य की सेवा को अपना परम धर्म मानता है वह समयानुसार राज्य के हित में निर्णय लेता है और अपने कार्य से राज्य का हित करता है। वह लगन एवं पूर्ण निष्ठा के साथ राज्य के समस्त कार्यों का संपादन करता है। निर्भीक स्वभाव, विवेकशीलता, दूरदर्शिता, अनुभव परिपक्वता का दर्शन उस समय स्पष्ट परिलक्षित होता है जब वह युवराज चन्द्रापीड को अनेक प्रकार के उपदेश देकर उसे सावधान करता है। वह उसे राजा का कर्त्तव्य सिखाता है।

राज्य के प्रति समर्पित— प्रधानमंत्री शुकनास राज्य एवं राजा के प्रति एकनिष्ठ एवं समर्पित है। वह राज्य एवं प्रजा के कल्याण में सदैव संलग्न रहता है। चन्द्रापीड के जन्म के अवसर पर उसकी प्रसन्नता देखने लायक होती है। युवराज पद पर जब चन्द्रापीड का राज्याभिषेक किया जाता है तो वह उसे बहुविधि उपदेश देकर भविष्य में लोकप्रिय राजा के रूप में तैयार करता है। उसके उपदेशों, सम्बोधन, चेतावनी से उसकी राज्यभक्ति परिलक्षित होती है।

महाराज तारापीड का विश्वासपात्र— प्रधानमंत्री शुकनास महाराज तारापीड का पूर्ण विश्वासपात्र मंत्री है। चन्द्रापीड को शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु आश्रम से वापस लाने के लिए प्रबन्धमंत्री शुकनास ही करता है। चन्द्रापीड को इस सन्दर्भ में राजा के पत्र के साथ मंत्री शुकनास का भी पत्र मिलता है। इस उदाहरण से शुकनास की गरिमा एवं विश्वासपात्रता का परिचय मिलता है। राजा तारापीड राज्य संचालन का भार शुकनास पर डालकर चिन्ता रहित हो जाते हैं।

धीर-गंभीर स्वभाव— ब्राह्मण मंत्री शुकनास सम्पूर्ण राज्य संचालन की शक्ति पाकर भी अत्यन्त सरल, विनम्र, राजा एवं प्रजा का कल्याण चाहने वाला सद्चरित्र व्यक्ति ही सिद्ध होता है। वह राजनैतिक संकट प्रकट होने पर भी अविचलित रहता है। वह सभी समस्याओं का समाधान अपने विवेक एवं बुद्धि कौशल से करता है।

दूरदृष्टिवाला— प्रधानमंत्री शुकनास अनुभवी एवं दूरदर्शी है। वह धन-वैभव से उत्पन्न बुराई को समझता है। लक्ष्मी के प्रभाव से व्यक्ति दूषित विचारवाला हो जाता है। इसलिए युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी की विशेषताओं से अवगत कराता है। शुकनासोपदेश इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शुकनास के चरित्र में वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक राजभक्त मंत्री में होना चाहिए। वह धैर्यवान, निर्भीक, निस्पृह, बुद्धिमान और निष्ठावान मंत्री है।

●●

महाकविश्रीबाणभट्टविरचितम्

चन्द्रापीडकथा

(पूर्वार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)

चन्द्रापीडकथा

1. आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा। तस्य विदिशाभिधाना राजधान्यासीत्। स तस्याम्, असकृदालोचितनीतिशास्त्रैः निर्मलमनोभिः अमात्यैः परिवृतः, समानवयोविद्यालङ्कारैः राजपुत्रैः सह रममाणः, प्रथमे वयसि वर्तमानोऽपि वनितासुखपराङ्मुखः सुखमतिचिरमुवास। एकदा तम्, आस्थानमण्डपगतम् दक्षिणापथात् आगता काचित् चण्डाल-कन्यका पञ्जरस्थं शुकम् आदाय, समुपसृत्य ''देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिकुशलः, पुराणेतिहासकथासु निपुणः, सकलभूतलरत्नभूतः, वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम् आत्मीयः क्रियाताम्' इत्युक्त्वा, पञ्जरं पुरो निधाय, अपससार। अपसृतायां तस्याम्, स विहङ्गराजः राजाभिमुखः भूत्वा, स्पष्टतरवर्णया गिरा कृतजयशब्दः राजानम् उद्दिश्य अर्याम् इमाम् पपाठ–

शब्दार्थ– पुरा = प्राचीनकाल में। विदिशाभिधाना = विदिशा नाम की। राजधान्यासीत् = राजधानी थी। तस्मात् = उसमें। असकृदालोचितम् = सूक्ष्म विवेचक। नीतिशास्त्रैः = नीतिशास्त्र की। निर्मलमनोभिः = पवित्र मनवाले। अमात्यैः = मंत्रियों द्वारा। परिवतृतः = चारों तरफ से घिरा हुआ। समानवयोविद्यालङ्कारैः = समतुल्य अवस्था, विद्या एवं आभूषणोंवाले। राजपुत्रैः सहः = राजकुमारों के साथ। रममाणः = आनन्द मनाता हुआ। प्रथमे वयसि = युवावस्था में। वनितासुखपराङ्मुखः = स्त्री-सुख से विरक्त। सुखमतिचिरमुवास = बहुत समय तक सुखपूर्वक रहा। एकदा = एक बार। दक्षिणापथात् = दक्षिण दिशा से। आगता = आयी हुई। चाण्डालकन्यका = चाण्डाल की कन्या। पञ्जरस्थं = पिंजड़े में स्थित। शुकम् आदाय = तोते को लेकर। समुपसृत्य = पास में आकर। विदितसकलशास्त्रार्थः सम्पूर्ण शास्त्रों को जानने वाला। राजनीतिकुशलः = राजनीति में प्रवीण। पुराणेतिहासकथासु = पुराण, इतिहास एवं कथाओं में। सकलभूतलरत्नभूतः = सम्पूर्ण पृथ्वी का एक रत्न सदृश। आत्मीयः क्रियताम् = आप स्वीकार करें। इत्युक्त्वा = ऐसा कहकर। पञ्जरं = पिंजड़े को। पुरो निधाय = सामने रखकर। अपससार = हट गई। अपसृतायां तस्याम् = उसके हट जाने पर। राजाभिमुखः भूत्वा = राजा की तरफ मुख करके। स्पष्टतरवर्णया = स्पष्ट वर्णोवाली। गिरा = वाणी से। कृतजयशब्दः = जयशब्द का उच्चारण किया। राजानम् उद्दिश्य = राजा को लक्ष्य करके। आर्याम् इमाम् पपाठ = इस आर्या छन्द को पढ़ा।

हिन्दी अनुवाद– प्राचीनकाल में शूद्रक नामक एक राजा था। विदिशा नाम की नगरी उसकी राजधानी थी। वह उसमें बार-बार नीतिशास्त्र की मीमांसा करके स्वच्छ मनोवृत्तियों वाले मंत्रियों से युक्त तथा अपने ही समान आयु, विद्या और आभूषणों से सुशोभित राजकुमारों के साथ आनन्द करता हुआ, युवावस्था के होते हुए भी स्त्री-सुख से अनासक्त होकर बहुत दिनों तक सुख से निवास करता रहा। एक बार जब वह सभा-मंडप में बैठा हुआ था कि दक्षिण दिशा से एक चाण्डालकन्या पिंजड़े में एक तोता लिये हुए आयी और उसके समीप जाकर बोली, ''महाराज यह तोता सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता, राजनीति में कुशल, पुराण, इतिहास तथा कथा में निपुण और पृथ्वी का एक रत्न है। इसका नाम वैशम्पायन है। इसे आप स्वीकार करें।'' इस प्रकार कहकर वह पिंजड़े को राजा के सामने रखकर हट गयी। उसके हट जाने पर उस तोते ने राजा की ओर मुँह करके स्पष्ट शब्दों में 'जय' शब्द का उच्चारण किया और राजा को लक्ष्य करके यह आर्या छन्द पढ़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आसीत् = (अनद्यतने लङ्, अस् धातु, लङ् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन) था। पुरा = अव्यय। विदिशाभिधाना = विदिशा अभिधानं यस्याः सा, बहुव्रीहि समास। राजधान्यासीत् = राजधानी + आसीत्। असकृदालोचितम् नीतिशास्त्रैः=असकृत् आलोचितम् नीतिशास्त्रम् यैः तैः। निर्मलमनोभिः = निर्मलानि मनांसि येषाम् तैः। समानवयोविद्यालङ्कारैः = समानम् वयः विद्या अलङ्कारश्च येषां तैः। वनितासुखपराङ्मुखः = वनितायाः सुखम् तेन पराङ्मुखः। सुखमतिचिरमुवास = सुखम्+अतिचिरम्+उवास। चांडालकन्यका = चांडालस्य कन्यका, षष्ठी तत्पुरुष। आदाय = आ+दा+ल्यप्। समुपसृत्य = (समुप्+सृ+ल्यप्) विदितसकलशास्त्रार्थः = विदितः सकल शास्त्रस्य अर्थः येन सः, बहुव्रीहि। राजनीतिकुशलः = राजनीतिषु कुशलः, तत्पुरुष। पुराणेतिहासकथासु = पुराणश्च इतिहासश्च कथा च पुराणेतिहासकथा तासु, द्वन्द्व समास। सकलभूतलरत्नभूतः = सकलस्य भूतलस्य रत्नभूतः यः सः। इत्युक्त्वा = इति+उक्त्वा। निधाय निधु+ल्यप्। पपाठ = पठ् धातु, लिट् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन। आर्या छन्द का लक्षण है–

यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

अर्थात् इसके प्रथम पाद में 12 मात्राएँ होती हैं, द्वितीय में 18, तृतीय में 12 और चतुर्थ में 15 मात्राएँ होती हैं।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिकुशलः, पुराणेतिहासकथासु निपुणः, सकलभूतलरत्नभूतः वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– देव! सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता, राजनीति में कुशल, पुराण, इतिहास और कथा में निपुण, सम्पूर्ण भूमण्डल का एकमात्र रत्नस्वरूप वैशम्पायन नाम का तोता है।
प्रश्न 3. शूद्रकः कः आसीत्?
उत्तर– शूद्रकः विदिशायाः राजा आसीत्।
प्रश्न 4. शूद्रकस्य राजधानी का आसीत्?
उत्तर– शूद्रकस्य राजधानी विदिशाभिधाना नगरी आसीत्।
प्रश्न 5. शूद्रकः कैः परिवृतः आसीत्?
उत्तर– शूद्रकः अमात्यैः परिवृतः आसीत्।
प्रश्न 6. को नाम प्रथमे वयसि वर्तमानः आसीत्?
उत्तर– राजा शूद्रकः प्रथमे वयसि वर्तमानः आसीत्।
प्रश्न 7. चाण्डाल कन्यका कुतः आगता?
उत्तर– चाण्डाल कन्यका दक्षिण पथात् आगता।
प्रश्न 8. वैशम्पायनः कः आसीत्?
उत्तर– वैशम्पायनः शुकः आसीत्।
प्रश्न 9. शुकः किं नाम आसीत्?
उत्तर– शुकः वैशम्पायनो नाम आसीत्।
प्रश्न 10. नरपतेः पुरः पञ्जरं निधाय को अपससार?
उत्तर– नरपतेः पुरः पञ्जरं निधाय चाण्डालकन्यका अपससार।

2. ''स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥''

अन्वय– भवतो रिपुस्त्रीणाम् स्तनयुगम् हृदयशोकाग्नेः समीपतरवर्ति अश्रुस्नातम् विमुक्ताहारम् व्रतमिव आचरति।

शब्दार्थ– भवतो = आपके। रिपुस्त्रीणाम् = शत्रु की स्त्रियों के। स्तनयुगम् = दोनों स्तनों के। हृदय शोकाग्नेः = हृदय की शोकाग्नि के। समीपतरवर्ति = समीप में स्थित। अश्रुस्नातम् = आँसुओं से स्नान किये हुए। व्रतमिव आचरति = व्रत में लगे हुए के समान।

हिन्दी अनुवाद– 'आपके शत्रुओं की स्त्रियों के दोनों स्तन (नेत्रों से निरन्तर बहनेवाले) आँसुओं में स्नान करके, हृदय के शोकाग्नि के अत्यन्त निकट स्थित होकर मोती की माला (व्रती-पक्ष में भोजन) का त्याग करके मानो व्रत (तपस्या) कर रहे हैं।'

व्याकरणात्मक टिप्पणी– रिपुस्त्रीणाम् = रिपूणाम् स्त्रियः तासाम्। स्तनयुगम् = स्तनस्य+युगम्। शोकाग्नेः = हृदयस्य शोकः तस्याग्निः तस्य। अश्रुस्नातम् = अश्रुणा स्नातम्।

विशेष– भाव यह है कि आपने समस्त शत्रुओं का विनाश कर दिया है, अतएव उनकी स्त्रियाँ सदा शोक में विलाप करती हैं, जिससे उनके दोनों स्तन आँसुओं में स्नान करते रहते हैं, हृदय में स्थित शोकाग्नि के अत्यन्त निकट रहते हैं और विमुक्ताहार (मोतियों की माला से अलग) रहते हैं। इस प्रकार मानो वे तपस्या करते हैं। तपस्वी भी त्रिकाल स्नान करता है, होमाग्नि के अत्यन्त निकट रहता है और विमुक्ताहार (भोजन का त्याग किये) रहता है।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आपके शत्रुओं की स्त्रियों के दोनों स्तन (नेत्रों से निरन्तर बहनेवाले) आँसुओं में स्नान करके, हृदय की शोकाग्नि के अत्यन्त निकट स्थित होकर मोती की माला का त्याग करके मानो व्रत (तपस्या) कर रहे हैं।

प्रश्न 3. शुको वैशम्पायनः कामार्या पपाठ?

उत्तर– शुको वैशम्पायनः –

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।

इतिमार्यां पपाठ।

प्रश्न 4. विमुक्ताहारं किं व्रतमिव चरति?

उत्तर– विमुक्ताहारं शूद्रकस्य रिपुस्त्रीणां स्तनयुगं व्रतमिव चरति।

प्रश्न 5. अस्य श्लोकस्य वक्ता कोऽस्ति?

उत्तर– अस्य श्लोकस्य वक्ता शुकः अस्ति।

3. राजा तु तां श्रुत्वा सञ्जातविस्मयः तमेवमब्रवीत्। आवेदयतु भवानादितः प्रभृतिः कात्स्र्न्येन आत्मनो वृत्तम्। जन्म कस्मिन् देशे? का माता? कस्ते पिता? कथं शास्त्राणां परिचयः? कियद्वा वयः? कथं पञ्जरबन्धः? कथं चाण्डालहस्तगमनम्? इह वा कथमागमनमिति।

शब्दार्थ– श्रुत्वा = सुनकर। सञ्जातविस्मयः = आश्चर्यचकित होकर। तमेवमब्रवीत् = उससे इस प्रकार कहा। आवेदयतु = बताओ। भवानादितः प्रभृतिः = आप प्रारम्भ से ही। कात्स्र्न्येन = विस्तार के साथ। आत्मनोवृत्तम् = अपना जीवन-चरित्र।

हिन्दी अनुवाद– राजा ने उस तोते की वाणी को सुनकर चकित होकर उससे इस प्रकार कहा, ''आप आरम्भ से ही विस्तार के साथ अपना आत्मचरित्र सुनाइए। जन्म किस देश में हुआ? माता कौन हैं? तुम्हारे पिता कौन हैं? तुम पिंजड़े में कैसे बँध गये? चाण्डाल के हाथों कैसे पड़े? और तुम्हारा यहाँ आना कैसे हुआ?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– श्रुत्वा = श्रु+क्त्वा। सञ्जातविस्मयः = संजातः विस्मयः यस्मिन् सः। तमेवमब्रवीत् = तम्+एवम्+अब्रवीत्। आवेदयतु = लोट् लकार, अन्यपुरुष, एकवचन। कियद्वा = कियत्+वा । कस्ते = कः+ते। पञ्जरबंधः = पञ्जरे बंधः। चांडालहस्तगमनम् = चांडालस्य हस्तयोः गमनम्।

एवं सबहुमानम् अवनिपतिना पृष्टः वैशम्पायनः मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरम् अब्रवीत्-देव! महतीयं कथा। यदिकौतुकम्, आकर्ण्यताम्।

शब्दार्थ– एवं = इस प्रकार। सबहुमानम् = अत्यन्त आदर के साथ। अवनिपतिना = भूपति द्वारा। पृष्टः = पूछा गया। मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। ध्यात्वा = ध्यान करके। सादरम् = आदर के साथ। अब्रवीत् = कहा। महतीयम् = यह बहुत बड़ी। कौतुकम् = उत्सुकता। आकर्ण्यताम् = सुनिए।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार अत्यन्त आदर के साथ राजा के पूछने पर थोड़ी देर सोचकर वैशम्पायन नामक तोते ने आदर के साथ कहा, ''राजन् यह बहुत बड़ी कथा है। यदि आप इस कथा को सुनने को उत्सुक हैं तो सुनिए–

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अवनिपतिना = अवनेः पतिः तेन। सादरम् = आदरेण सहितम्। महतीयम् = महती+इयम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>आवेदयतु भवानादितः प्रभृतिः कात्स्‍र्न्येन आत्मनो वृत्तम्</u>।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आप आरम्भ से ही विस्तार के साथ अपना आत्मचरित्र सुनाइए।

प्रश्न 3. राज्ञा वैशम्पायनं प्रति कृतेषु प्रश्नेषु कांश्चित् त्रीन् प्रश्नान् लिख?

उत्तर– राज्ञा वैशम्पायनं प्रति कृतेषु प्रश्नेषु त्रयः प्रश्नाः इमे सन्ति। तथाहि–1. जन्म कस्मिन् देशे? 2. का माता? 3. कस्ते पिता?

प्रश्न 4. चाण्डालहस्तगमनं कस्य?

उत्तर– चाण्डालहस्तगमनं वैशम्पायनस्य।

प्रश्न 5. अवनिपतिना पृष्टो वैशम्पायनो मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा किमब्रवीत्?

उत्तर– अवनिपतिना पृष्टो वैशम्पायनो मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा 'देव! महतीयं कथा, यदि कौतुकम् आकर्ण्यताम्' इत्यब्रवीत्।

3. अस्ति मध्यदेशालंकारभूता मेखलेव भुवः विन्ध्याटवी नाम। तस्यां च दण्डकारण्यान्तःपाति, गोदावर्या सरिता परिगतम् आश्रम-पदम् आसीत्। तस्य च नातिदूरे पम्पाभिधानस्य पद्मसरसः पश्चिमे तीरे महान् जीर्णः शाल्मलीवृक्षः। तत्र च शाखाग्रेषु कोटरोदरेषु विरचितकुलायानि नानादेशसमागतानि शुकशकुनिकुलानि प्रतिवसन्ति स्म। तत्रैकस्मिन् जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य पितुः अहमेवैकः सूनुरभवम्। अतिप्रबलया ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्। तातस्तु मे सुतस्नेहात् अभिमतजायाविनाशशोकम् अन्तः निगृह्य, मत्संवर्धनपरः अभवत्।

शब्दार्थ– मध्यदेशालङ्कारभूता = मध्यदेश के अलंकार जैसी। मेखलेव = करधनी जैसी। भुवः = पृथ्वी की। तस्याम् = उसमें। दण्डकारण्यान्तः पातिः = दण्डकारण्य के बीच में। गोदावर्या सरिता = गोदावरी नदी से। परिगतम् = किनारे पर स्थित। आश्रम पदम् = आश्रम स्थान। नातिदूरे = समीप में। पंपाभिधानस्य = पंपा नामवाले। पद्मसरसः = कमलयुक्त तालाब के। पश्चिम तीरे = पश्चिमी तट पर। महान् जीर्णः = बड़ा और बहुत पुराना। शाल्मलीवृक्षः = सेमल का वृक्ष। शाखाग्रेषु = शाखाओं की चोटी पर। कोटरोदरेषु = खोखलों के भीतर। विरचितकुलायानि = घोंसला बनाने वाले। समागतानि = आये हुए। शकुनिकुलानि = पक्षियों के झुण्ड। प्रतिवसति स्म = रहते थे।। तत्रैकस्मिन् = वहाँ एक। जीर्णकोटरे = पुराने खोखले में। जायया = स्त्री। निवसतः = रहते हुए। पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य = वृद्धावस्था में रहते हुए। पितुः अहमेवैकः = पिता का मैं ही एक। सुनुः अभवम् = पुत्र हुआ। अतिप्रबलया प्रसववेदनया = अत्यन्त तीव्र प्रसव वेदना से। ममैव जायमानस्य = मेरे जन्म लेते समय। लोकान्तरमगमत् = दूसरे लोक को चली गई। अभिमतजायविनाशशोकम् = प्रिय-पत्नी की मृत्यु का शोक। अन्तः निगृह्य = अन्दर ही दबाकर। मत्संवर्धनपरः = मेरे पालन-पोषण में तल्लीन।

हिन्दी अनुवाद– मध्य देश के आभूषण तथा पृथ्वी की मेखला के समान विन्ध्य पर्वत पर स्थित एक छोटा-सा जंगल है। उसमें दंडक नाम के वन के बीच गोदावरी नदी के किनारे एक आश्रम था। उसके समीप ही कमलों से युक्त पम्पा नाम के तालाब के पश्चिमी किनारे पर एक बहुत बड़ा पुराना सेमल का पेड़ था। वहाँ डालियों की चोटी तथा पुराने खोखलों में घोंसले

बनाकर विभिन्न देशों से आये हुए तोतों और पक्षियों के झुण्ड रहते थे। वहीं एक पुराने खोखले में मेरे पिता अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उनकी अन्तिम अवस्था में मैं ही एकमात्र पुत्र उत्पन्न हुआ। मेरे जन्म लेते समय प्रसव की अत्यन्त पीड़ा के कारण मेरी माता का देहान्त हो गया। पुत्र-प्रेम के कारण मेरे पिता प्रिय पत्नी के मरने का शोक हृदय के भीतर ही दबाकर मेरे पालन-पोषण में तल्लीन हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मध्यदेशालङ्कारभूता = मध्यदेशस्य अलङ्कारभूता। मेखलेव = मेखला+इव। दंडकारण्यान्तःपाति = दंडकारण्यस्य अन्तःपाति। शाखाग्रेषु = शाखयाः अग्रेषु। कोटरोदरेषु = कोटराणाम् उदरेषु। विरचितानि कुलायानि = विरचितकुलायानि = विरचितानि कुलायानि यैः तानि। नानादेशसमागतानि शुकशकुनिकुलानि = नानादेशेभ्यः समागतानि, शुकानाम् शकुनीनाम् च कुलानि। तत्रैकस्मिन् = तत्र+एकस्मिन्। अभिमतजायाविनाशशोकम् = अभिमतायाः जायायाः विनाशस्य शोकम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. '<u>अतिप्रबलया ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– मेरे जन्म लेते समय प्रसव की अत्यन्त पीड़ा के कारण मेरी माता का देहान्त हो गया।

प्रश्न 3. मध्यदेशालंकारभूता मेखलेव भुवः कः अस्ति?

उत्तर– मध्यदेशालंकारभूता मेखलेव भुवः विन्ध्याटवी अस्ति।

प्रश्न 4. आश्रम पदम् केन सरिता परिगतम् आसीत्?

उत्तर– गोदावर्या सरिता परिगतम् आश्रम पदम् आसीत्।

प्रश्न 5. पम्पाभिधानस्य पद्मसरः पश्चिमे तीरे कः वृक्षः आसीत्?

उत्तर– पम्पाभिधानस्य पद्मसरः पश्चिमे तीरे महान् जीर्णः शाल्मलीवृक्षः आसीत्।

5. एकदा तु प्रभाते सहसैव तस्मिन् महावने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचलत्। आकर्ण्य च तमहं समीपवर्तिनः पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्। अथ च शैशवात् किमिदम् इति सञ्जातकुतूहलः पितुरुत्संगात् ईषदिव निष्क्रम्य, कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य तामेव दिशं चक्षुः प्राहिणवम्। तस्मात् वनान्तरात् अभिमुखम् आपतत् अतिभयजनकम् शबरसैन्यमद्राक्षम्।

शब्दार्थ– एकदा = एक बार। प्रभाते = प्रातः काल। सहसैव = अचानक ही। तस्मिन् = उस। महावने = जंगल में। मृगया = शिकार। कोलाहलध्वनिः = हल्ले की ध्वनि। उद्चलत् = हुई, उठी। आकर्ण्य = सुनकर। तम् = उसको। समीपवर्तिनः = समीप में स्थित। पितुः = पिता के। पक्षपुटान्तरम् = पंखों के नीचे। अविशम् = घुस गया। शैशवात् = बचपन के कारण। किमिदम् इति = यह क्या है? संजातकुतूहलः = उत्कण्ठित होकर। पितुरुत्संगात् = पिता की गोद से। ईषदिव = थोड़ा-सा। निष्क्रम्य = निकलकर। कोटरस्थ एव = खोखले में बैठा हुआ ही। शिरोधरां = गर्दन को। प्रसार्य = फैलाकर। तामेव दिशं = उसी दिशा की ओर। चक्षुः प्राहिणवम् = निगाह भेजी (देखने लगा)। वनान्तरात् = वन के भीतर से। अभिमुखम् = अपनी ओर, सम्मुख। आपतत् = आते हुए। अतिभयजनकम् = अत्यन्त भयभीत करने वाले। शबरसैन्यम् = भीलों की सेना को। अद्राक्षम् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– एक बार प्रातःकाल ही अचानक उस जंगल में शिकार खेलने का हल्ला होने लगा। उसे सुनकर मैं पास ही में स्थित पिता के पंखों में घुस गया। बचपन के कारण मुझमें यह कुतूहल उत्पन्न हुआ कि यह क्या हो रहा है? इसे देखने के लिए पिता के पंखों से थोड़ा-सा निकल कर खोखले में बैठे-बैठे गर्दन को फैलाकर उसी दिशा की ओर निगाहें दौड़ाने लगा और उस जंगल से अपनी ओर आती हुई अत्यन्त डरावनी भीलों की सेना को देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सहसैव = सहसा+एव, वृद्धि सन्धिः। मृगयाकोलाहलध्वनिः = मृगयायाः कोलाहलः तस्य ध्वनि तत्पुरुष समास। सञ्जातकुतूहलः = संजातः कुतूहलः यस्मिन् सः। पितुरुत्संगात् = पितुः+उत्संगात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'आकर्ण्य च तमहं समीपवर्तिनः पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उसे सुनकर मैं पास में ही स्थित पिता के पंखों में घुस गया।

प्रश्न 3. तस्मिन् महावने कस्य ध्वनिः उद्चलत्?

उत्तर– तस्मिन् महावने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचलत्।

प्रश्न 4. कोलाहल ध्वनिः आकर्ण्य कुत्र अविशम्?

उत्तर– कोलाहल ध्वनिः आकर्ण्य समीपवर्तिनः पितुः पक्षपुटान्तमविशम्।

प्रश्न 5. वनान्तरात् अभिमुखम् आपतत् केन अद्राक्षम्?

उत्तर– वनान्तरात् अभिमुखम् आपतत् शबरसैन्यमद्राक्षम्।

6. मध्ये च तस्य, प्रथमे वयसि वर्तमानम् आजानुलम्बेन भुजयुगलेन उपशोभितम्, अनेकवर्णैः श्वभिः अनुगम्यमानम्, मातङ्गकनामानं शबरसेनापतिमपश्यम्। सोऽयम् अटवीभ्रमणसमुद्भवं श्रमम् अपनिनीषुः आगत्य तस्यैव शाल्मलीतरोः अधः छायायाम् उपाविशत्। अथ तस्मात् सरसः सलिलम् अत्यच्छम् कमलिनीपत्रपुटेन आदाय, आपीय, धौतपङ्का निर्मलाः मृणालिकाश्च अदशत्। अपगतश्रमश्चोत्थाय, सकलेन तेन शबरसैन्येन अनुगम्यमानः शनैः शनैः अभिमतं दिगन्तरम् अयासीत्। एकमस्तु जरच्छबरः पिशितार्थी, तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत्।

शब्दार्थ– मध्ये = बीच में। तस्य = उसके। प्रथमे वयसि वर्तमानम् = नौजवान्। आजानुलम्बेन = घुटने तक लटकी हुई। भुजयुगलेन = दोनों भुजाओं से। उपशोभितम् = सुशोभित। अनेकवर्णैः = अनेक रंगों वाले। श्वभिः = कुत्तों से। अनुगम्यमानम् = पीछा किया जाने वाला। मातङ्गकनामानम् = मातङ्ग नाम वाले। शबरसेनापतिम् = भीलों के सेनापति को। अपश्यम् = देखा। अटवीभ्रमणसमुद्भवम् = जंगल में भ्रमण से उत्पन्न। श्रमम् = थकान को। अपनिनीषुः = दूर करने की इच्छावाला। आगत्य = आकर। अधः = नीचे। छायायाम् = छाया में। उपविशत् = बैठा। तस्मात् सरसः = उस तालाब से। सलिलम् = पानी। अत्यच्छम् = अत्यन्त निर्मल। कमलिनीपत्रपुटेन = कमल के पत्ते के दोने से। आदाय = लेकर। आपीय = पीकर। धौतपङ्का = धुली हुई कीचड़वाली। मृणालिका = कमल के डंठल को। अदशत् = खाया। अपगतश्रमश्चोत्थाय = थकान दूर होने पर उठकर। शनैः शनैः = धीरे-धीरे। अभिमतम् = इच्छित। दिगन्तरम् = दिशा की ओर। अयासीत् = चला गया। एकमस्तु = उसमें से एक। जरच्छबरः = बूढ़ा भील। पिशितार्थी = मांस का इच्छुक। तस्मिन्नेव = उसी। तरुतले = वृक्ष के नीचे। मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। व्यलम्बत् = ठहर गया।

हिन्दी अनुवाद– उसके बीच में घुटनों तक लम्बी बाँहों वाले नौजवान भील सेनापति मातंग को भी देखा जिसके पीछे-पीछे कई रंगों के कुत्ते चले आ रहे थे। वह जंगल में घूमने की थकान दूर करने की इच्छा से उसी सेमल के पेड़ की छाया के नीचे आकर बैठ गया। उसने उस तालाब से कमल के पत्तों के दोने में स्वच्छ पानी लाकर पिया और कीचड़ धोकर साफ की गयी कमल की डंठल को खाया। थकान दूर हो जाने पर धीरे-धीरे वह अपनी इच्छित दिशा की ओर चल दिया। सारी सेना भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। उनमें से एक मांस चाहने वाला बूढ़ा भील उसी वृक्ष के नीचे थोड़ी देर तक ठहर गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अटवीभ्रमणसमुद्भवम् = अटव्याम् भ्रमणेन समुद्भवम्। अपनिनीषुः = अपनेतुम् इच्छुः। कमलिनीपत्रपुटेन = कमलिन्याः पत्रम् तस्य पुटम् तेन। धौतपङ्का = धौतः पङ्कः येभ्यः ताः। अपगतश्रमश्चोत्थाय = अपगतश्रमः+च+उत्थाय। जरच्छबरः = जरत+शबरः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. '<u>अपगतश्रमश्चोत्थाय, सकलेन तेन शबरसैन्येन अनुगम्यमानः शनैः शनैः अभिमतं दिगन्तरम् अयासीत्।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– थकान दूर हो जाने के बाद वह उठकर (अपनी) सम्पूर्ण शबर सेनाओं के द्वारा पीछा किया जाता हुआ धीरे-धीरे अपनी अभीष्ट दिशा की ओर चला गया।

प्रश्न 3. प्रथमे वयसि वर्तमानं कः आसीत्?

उत्तर– प्रथमे वयसि वर्तमानं शबरसेनापतिः आसीत्।

प्रश्न 4. शबरसेनापतिः कः नाम आसीत्?

उत्तर– शबरसेनापतिः मातङ्ग नाम आसीत्।

प्रश्न 5. शबरसेनापतिः केन पत्रपुटेन सलिलम् अपिबत्?

उत्तर– शबरसेनापतिः कमलिनीपत्रपुटेन सलिलम् अपिबत्।

7. अन्तरिते च शबरसेनापतौ स जीर्णशबरः पिबन्निव अस्माकम् आयूंषि तं वनस्पतिं सुचिरम् आमूलात् अपश्यत्। अथ तं पादपम् आरुह्य शाखान्तरेभ्यः कोटरेभ्यश्च शुकशावकान् गृहीत्वा अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितौ अपातयत्। तातस्तु तं महान्तं प्राणहरम् उपप्लवम् आलोक्य, मरणभयात्, उद्भ्रान्ततारकां दृशम् इतस्ततो दिक्षु विक्षिपन् स्नेहपरवशः मद्रक्षणाकुलः पक्षसंपुटेन आच्छाद्य कोडविभागेन माम् अवष्टभ्य तस्थौ।

शब्दार्थ– अन्तरित = आँख से ओझल हो जाने पर। जीर्णशबरः = वृद्ध भील। पिबन्निव = पीता हुआ। अस्माकम् = हम लोगों के। आयूंषि = आयु को। वनस्पतिं = वृक्ष को। सुचिरम् = देर तक। अपश्यत् = देखा। आमूलात् = जड़ से। पादप = वृक्ष पर। आरुह्य = चढ़कर। शाखान्तरेभ्यः = डालियों से। कोटरेभ्यः = खोखलों से। शुकशावकान् =तोतों के बच्चों को। गृहीत्वा = पकड़कर। अपगतासून् = प्राण रहित। क्षितौ = पृथ्वी पर। अपातयत् = गिरा दिया। तातस्तु = और पिता ने। तं महान्तम् = उस बहुत बड़े। प्राण हरणम् = प्राणों का हरण करने वाले। उपप्लवम् = विपत्ति को। आलोक्य = देखकर। मरणभयात् = मृत्यु के भय से। उद्भ्रान्ततारकाम् = चंचल पुतलियोंवाली। दृशम् = आँखों को। इतस्ततः = इधर-उधर। विक्षिपन् = डालते हुए। मद्रक्षणाकुलः = मेरी रक्षा के लिए व्याकुल। पक्षसंपुटेन = दोनों पंखों से। आच्छाद्य = ढँक कर। क्रोडविभागेन = गोद से। अवेष्टभ्यः = चिपकाकर। तस्थौ = बैठ गये।

हिन्दी अनुवाद– उस भील सेनापत्ति के आँखों से ओझल हो जाने पर उस बूढ़े भील ने हम लोगों की आयु को पीता हुआ-सा बड़ी देर तक उस पेड़ को नीचे से ऊपर देखा। फिर पेड़ पर चढ़कर डालियों और घोंसलों से तोतों के बच्चों को पकड़-पकड़ मार-मार करके वह उन्हें पृथ्वी पर गिराने लगा। मेरे पिता ने उस प्राणों को नष्ट करने वाली भयंकर विपत्ति को देख मृत्यु के भय से चंचल पुतलियों वाली आँखें इधर-उधर दौड़ायीं और प्रेम के वशीभूत मेरी रक्षा के लिए व्याकुल होकर मुझे अपने पंखों के भीतर ढँककर गोद से चिपका कर वह बैठ गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पिबन्निव = (पिबन्+इव) तातस्तु = (तातः+तु) मरणभयात् = (मरणस्य भयम् तस्मात्) तस्मिन्नेव = तस्मिन्+एव। मुहूर्तमिव = मुहूर्तम्+इव।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>स्नेहपरवशः मद्रक्षणाकुलः पक्षसंपुटेन आच्छाद्य कोडविभागेन माम् अवष्टभ्य तस्थौ।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– प्रेम के वशीभूत मेरी रक्षा के लिए व्याकुल होकर मुझे अपने पंखों के भीतर ढँककर गोद से चिपकाकर वह बैठ गये।

प्रश्न 3. जीर्णशबरः किम् अपश्यत्?

उत्तर– जीर्णशबरः तं वनस्पतिं सुचिरम् आमूलात् अपश्यत्।

प्रश्न 4. कोटरेभ्यः शुकशावकान् गृहीत्वा अपगतासूंश्च कृत्वा कुत्र अपातयत्?

उत्तर– क्षितौ अपातयत्।

प्रश्न 5. शुकशावकान् केन अग्रहीत्?
उत्तर– जीर्णशबरः शुकशावकान् अग्रहीत्।

8. असावपि पापः क्रमेण शाखान्तरैः सञ्चरमाणः कोटरद्वारमागत्य, भुजङ्गभोगभीषणं वामबाहुं प्रसार्य, तातम् आकृष्य अपगतासुम् अकरोत्। मां तु स्वल्पत्वात् भयसम्पिण्डिताङ्गत्वात् सावशेषत्वात् आयुषः पक्षसम्पुटान्तरगतं नालक्षयत्। उपरतं च तातम् अवनितले शिथिलशिरोधरम् अधोमुखम् अमुञ्चत्। अहमपि तच्चरणान्तराले निलीनः तेनैव सह अपतम्।

शब्दार्थ– असावपि = वह भी। पापः = पापी। क्रमेण = क्रमशः। शाखान्तरैः = एक डाल से दूसरी डाल पर। सञ्चरमाणः = घूमता हुआ। कोटरद्वारमागत्य = खोखले के दरवाजे पर आकर। भुजंगभोगभीषणम् = साँप के फन के समान भयंकर। वामबाहुं = बायीं भुजा। प्रसार्य = फैलाकर। तातम् = पिता को। आकृष्य = खींचकर। अपगतासुम् = प्राणरहित। अकरोत् = किया। माम् = मुझको। स्वल्पत्वात् = बहुत छोटा होने के कारण। भयसम्पिण्डिताङ्गत्वात् = भय से सिकुड़े हुए अंगों के कारण। सावशेषत्वात् = शेष होने के कारण। नालक्षयत् = नहीं देखा। उपरतं = मरे हुए। तातम् = पिता को। शिथिलशिरोधराम् = लटकी हुई गर्दन वाले। अधोमुखम् = नीचे मुख किये हुए। अमुञ्चत् = गिरा दिया। तच्चरणान्तराले = उसके पैरों के बीच में। विलीनः = छिपा हुआ। तनैव सह = उसी के साथ। अपतम् = गिर पड़ा।

हिन्दी अनुवाद– वह पापी क्रमशः एक डाल से दूसरी डाल पर घूमता हुआ खोखले के द्वार पर आ पहुँचा और साँप के फन के समान भयंकर अपनी बायीं भुजा को फैलाकर मेरे पिता को खींचकर मार डाला। बहुत छोटा होने व भय से सिकुड़ जाने तथा आयु बची रहने के कारण पंखों के बीच में चिपके हुए मुझको वह (निष्ठुर भील) देख न सका। उसने लटकी हुई गर्दन तथा नीचे की ओर मुख किये हुए मेरे मरे हुए पिता को पृथ्वी पर गिरा दिया। मैं भी उनके पैरों के बीच में छिपा हुआ उन्हीं के साथ नीचे गिर गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– असावपि = (असौ+अपि)। भुजंगभोगभीषणम् = भुजंगस्य भोग इव भीषणः तम्। अपगतासुम् = अपगताः असवः यस्य तत्। भयसम्पिण्डितांगत्वात् = भयेन सम्पिण्डितानि अंगानि यस्य सः तस्मात्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अहमपि तच्चरणान्तराले निलीनः तेनैव सह अपतम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मैं भी उनके पैरों के बीच में छिपा हुआ उन्हीं के साथ नीचे गिर गया।
प्रश्न 3. जीर्णशबरः वामबाहुं कीदृशी आसीत्?
उत्तर– जीर्णशबरः वामबाहुं भुजङ्गभोगभीषणम् आसीत्।
प्रश्न 4. मम तातं केन अपगतासुम् अकरोत्?
उत्तर– मम तातं जीर्णशबरः अपगतासुम् अकरोत्।

9. अवशिष्टपुण्यतया तु महतः शुष्कपत्रराशेः उपरि पतितम् आत्मानम् अपश्यम्। अङ्गानि मे नाशीर्यन्त। यावदसौ तस्मात् तरुशिखरात् नावतरति तावत् अहं पितरम् उपरतम् उत्सृज्य, नातिदूरवर्तिनः तमालविटपिनः मूलदेशम् अविशम्। स तदानीम् अवतीर्य क्षितितलविप्रकीर्णान् संहृत्य तान् शुकशिशून एकलतापाशसंयतान् आदाय, सेनापतिगतेनैव वर्त्मना तामेव दिशम् अगच्छत्। अतिदूरपातात् आयासितशरीरं मां बलवती पिपासा परवशम् अकरोत्।

शब्दार्थ– अवशिष्टपुण्यतया = पुण्य शेष बचे रहने से। महतः = बहुत बड़े। शुष्कपत्रराशेः = सूखे पत्तों की ढेरी पर। पतितम् = गिरा हुआ। आत्मानम् = अपने को। अपश्यम् = देखा। अंगानि = अंग। नाशीर्यन्तः = नहीं टूटे। यावदसौ = जब तक वह। तरुशिखरात् = वृक्ष की चोटी से। नावतरति = नहीं उतरता है। तावत् = तब तक। पितरम् = पिता को। उपरतम् = मरे हुए। उत्सृज्य = छोड़कर। नातिदूरवर्तिनः = समीप ही के। तमालविटपिनः = तमालवृक्ष के। मूलदेशम् = जड़ में। अविशम्

= घुस गया। तदानीम् = उस समय। अवतीर्य = उतर कर। क्षितितलविप्रकीर्णान् = जमीन पर फैले हुए। संहृत्य = इकट्ठा करके। शुकशिशून् = शुकों के बच्चों को। एकलतापाशसंयतान् = एक लता के फन्दे में बँधे हुए। आदाय = लेकर। सेनापतिगतेनैव = जिस मार्ग से सेनापति गया था। वर्त्मना = मार्ग से। तामेव = उसी। दिशम् = दिशा (तरफ)। अगच्छत् = चला गया। अतिदूरपातात् = अधिक दूर से गिरने के कारण। आयासितशरीरम् = थके हुए शरीरवाले को। पिपासा = प्यास। परवशम् = विवश। अकरोत् = कर दिया।

हिन्दी अनुवाद– किसी बचे हुए अपने पुण्य के कारण मैंने अपने आपको एक सूखे पत्तों की ढेरी पर गिरा हुआ देखा। इसी से मेरे अंग टूटे नहीं। जब तक वह उस पेड़ की चोटी से उतरे तब तक मैं मरे हुए पिता को छोड़कर समीप ही में स्थित एक तमाल वृक्ष की जड़ में घुस गया। इसके बाद उसने पेड़ से उतरकर पृथ्वी पर बिखरे हुए उन सुग्गों के बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें एक लता में बांधकर ले लिया और सेनापति जिस रास्ते से गया था उसी रास्ते से वह भी उसी ओर चला गया। बहुत दूर से गिरने के कारण मेरा शरीर अत्यन्त शिथिल हो गया और तेज प्यास ने मुझे विवश कर दिया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अवशिष्टपुण्यतया = अवशिष्टं च यत्पुण्यत् तस्य भावः तया। नाशीर्यन्तः = न+आशीर्यन्तः। यावदसौ = यावत्+असौ। तरुशिखरात् = तरोः शिखरात्। नावतरति = न+अवतरति। नातिदूरवर्तिनः = न+अति दूरवर्तिनः। क्षितितलविप्रकीर्णान् = क्षितितले विप्रकीर्णस्तान्। शुकशिशून् =शुकानाम् शिशून्। एकलतापाशसंयतान् = एकलतायाः पाशे संयतान्। आयासितशरीरम् = आयासितम् शरीरम् यस्य तम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>अवशिष्टपुण्यतया तु महतः शुष्कपत्रराशेः उपरि पतितम् आत्मानम् अपश्यम्।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कुछ बचे हुए अपने पुण्य के कारण मैंने अपने आपको एक सूखे पत्तों की ढेरी पर गिरा हुआ देखा।

प्रश्न 3. वैशम्पायनः कुत्र पतितम् आत्मानम् अपश्यत्?

उत्तर– वैशम्पायनः शुष्कपत्रराशेः उपरि पतितम् आत्मानम् अपश्यत्।

प्रश्न 4. वैशम्पायनः पितरम् उपरतम् उत्सृज्य कुत्र अविशत्?

उत्तर– वैशम्पायनः पितरम् उपरतम् उत्सृज्य नातिदूरवर्तिनः तमालविटपिनः मूलदेशम् अविशत्।

प्रश्न 5. जीर्णशबरः कुत्र अगच्छत्?

उत्तर– सेनापतिगतेनैव वर्त्मना तामेव दिशम् अगच्छत्।

10. तस्मात् सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने जाबालिः नाम महातपाः मुनिः प्रतिवसति स्म। तत्तनयश्च हारीतनामा तदेव कमलसरः सिस्नासुः उपागमत्। स मां तदवस्थम् आलोक्य, समुपजातदयः, समीपम् उपसृत्य, सरस्तीरम् आनीय, स्वयं माम् उत्तानितमुखम् अङ्गुल्या कतिचित् सलिलबिन्दून् आपाययत्। अम्भःक्षोदकृतसेकम् समुपजातनवीनप्राणम् माम् उपतटप्ररूढस्य नलिनीपलाशस्य जलशिशिराया छायायाम् निधाय, समुचितम् अकरोत् स्नानविधिम्। अभिषेकावसाने च भगवते सवित्रे दत्तवार्घ्यम्, उदतिष्ठत्। आगृहीतधौतधवलवल्कलश्च मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखम् अगच्छत्।

शब्दार्थ– तस्मात् सरसः = उस तालाब से। नातिदूरवर्तिनि = समीप में स्थित। तपोवने = तपोवन में। महातपाः = बहुत बड़े तपस्वी। प्रतिवसति स्म = रहते थे। तत्तनयः = उसके पुत्र। सिस्नासुः = स्नान के इच्छुक। उपागतम् = आये। तदवस्थम् = ऐसी दशा में। आलोक्य = देखकर। समुपजातदयः = दया आ जाने से। उपसृत्य = पास आकर। आनीय = लाकर। उत्तानितमुखम् = ऊपर मुँह किये हुए। कतिचित् = कुछ। सलिलबिन्दून् = पानी की बूँदें। अपाययत् = पिलायी। अम्भःक्षोदकृतसेकम् = पानी की बूँदों से सींचे हुए। समुपजातनवीनप्राणम् = नवीन प्राणवाले। उपतटप्ररूढस्य = किनारे के समीप उगे हुए। नलिनीपलाशस्य = कमल के पत्ते की। जल शिशिरायाम् = जल से शीतल। निधाय = रखकर। स्नानविधिम् = स्नान की विधि। अभिषेकावसाने = स्नान के बाद। सवित्रे = सूर्य को। दत्वार्घ्यम् = अर्घ्य देकर। उदतिष्ठत् = उठे। आगृहीतं धौतधवलवल्कलश्च = धुले हुए श्वेत वल्कलवस्त्र को धारण किये हुए। तपोवनाभिमुखम् = तपोवन की ओर। आगच्छत् = चल दिये।

हिन्दी अनुवाद– उस तालाब के समीप ही तपोवन में जाबालि नाम के महान् तपस्वी मुनि रहते थे। उनके पुत्र हारीत उसी कमलों से भरे तालाब में स्नान करने के लिए आये। मुझे उस दशा में देखकर उन्हें दया आ गयी और मेरे पास आकर उन्होंने मुझे उठा लिया तथा तालाब के किनारे लाकर अपनी उँगली से ऊपर मुख किये हुए मुझको पानी की कुछ बूँदें पिलायीं। जल की बूँदों से सींचने के कारण मुझमें नवीन प्राण आ गये। उन्होंने मुझे तालाब के किनारे उगे हुए कमल के पत्ते की जल से ठंडी छाया में रखकर भली-भाँति स्नान किया। स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य देकर धुले हुए स्वच्छ वल्कलवस्त्र को धारण करके उन्होंने मुझे उठा लिया और वे तपोवन की ओर चल पड़े।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सिस्नासु = स्नातुं इच्छुः। समुपजातदयः = समुपजाता दवा यस्मिन् सः। अम्भःक्षोदकृतसेकम् अम्भसः क्षोदैः कृतसेकः यस्य तम्। समुपजातनवीनप्राणम् = समुपजाताः नवीनाः प्राणाः यस्मिन् तम्। उपतटप्ररूढस्य = तटस्य समीपे प्ररूढस्य। नलिनीपलाशस्य = नलिन्याः पलाशस्य। अभिषेकावसाने = अभिषेकस्य अवसाने। आगृहीतं धौतधवलवल्कलश्च = धौतं धवलं च यत् वल्कलम् धौतधवलवल्कलम्, आगृहीतं धौतधवलवल्कलम् येन सः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'आगृहीतधौतधवलवल्कलश्च मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखम् अगच्छत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– धुले हुए स्वच्छ वल्कल (वस्त्र) को धारण करके मुझको साथ लेकर वे तपोवन की ओर चल दिए।

प्रश्न 3. तपोवने कः मुनिः प्रतिवसति स्म?

उत्तर– तपोवने जाबालिः नाम महातपाः मुनिः प्रतिवसति स्म।

प्रश्न 4. जाबालिमुनेः तनयस्य किं नाम आसीत्?

उत्तर– जाबालिमुनेः तनयस्य नाम हारीतः आसीत्।

प्रश्न 5. हारीतः कस्य तनयः आसीत्?

उत्तर– हारीतः जाबालिमुनेः तनयः आसीत्।

11. अनतिदूरमिव गत्वा सदासन्निहितकुसुमफलैः काननैः उपगूढम्, वेदाध्ययनमुखरवटुजनम्, उपचर्यमाणातिथिवर्गम्, व्याख्यायमानयज्ञविद्यम्, आलोच्यमानधर्मशास्त्रम्, वाच्यमानविविधपुस्तकम्, विचार्यमाणसकलशास्त्रार्थम् आश्रमम् अपश्यम्। तस्य च एवंविधस्य मध्यभागे रक्ताशोकतरोः अधः छायायाम् उपविष्टम् समन्तात् महनीयैः महर्षिभिः परिवृतम् आयामिनीभिः जटाभिः उपशोभितम्, आनाभिलम्बिकूर्चकलापम्, भगवन्तं जाबालिम् अपश्यम्। हारीतस्तु मां तस्यामेव अशोकतरोः अद्यः छायायां स्थापयित्वा, पितुः पादौ उपगृह्य, कृताभिवादनः, नातिसमीपवर्तिनि कुशासने समुपाविशत्।

शब्दार्थ– अनतिदूरम् = थोड़ी दूर। सदासन्निहितकुसुमफलैः = सदा फल-फूलों से युक्त। काननैः = जंगलों से। उपगूढम् = घिरे हुए। वेदाध्ययनेन = वेदाध्ययन से। मुखरः = वाचाल। वटुजनम् = ब्रह्मचारियोंवाले। उपचर्यमाणातिथिवर्गम् = जहाँ अतिथियों का सत्कार होता है। आलोच्यमानधर्मशास्त्रम् = जहाँ धर्मशास्त्रों की चर्चा होती है। वाच्यमानविधिपुस्तकम् = जहाँ तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ी जाती हैं। अपश्यम् = देखा। मध्यभागे = बीच में। रक्ताशोकतरोः = लाल अशोक वृक्ष के। अधः = नीचे। छायायाम् = छाया में। उपविष्टम् = बैठे हुए। समन्तात् = चारों ओर। महनीयैः = पूज्य। परिवृतम् = घिरे हुए। आयामिनीभिः = लम्बी। जटाभिः = जटाओं से। उपशोभितम् = सुशोभित। आनाभिलम्बिकूर्चकलापम् = नाभि तक लटकी हुई दाढ़ी वाले। स्थापयित्वा = रखकर। पितुः पादौ = पिता के चरणों को। कृताभिवादनः प्रणाम करके। समुपाविशत् = बैठ गये।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी ही दूर जाने पर मैंने उस आश्रम को देखा जो सर्वदा फलफूलों से युक्त वनों से घिरा था। जहाँ ब्रह्मचारी जोर-जोर से बोलते हुए वेदपाठ कर रहे थे, जहाँ अतिथियों का सत्कार हो रहा था। यज्ञ विद्या का व्याख्यान हो रहा था। धर्मशास्त्रों की चर्चा हो रही थी। तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ी जा रही थीं और शास्त्र के अर्थों पर विचार हो रहा था। इस प्रकार के आश्रम के बीच में लाल अशोक वृक्ष के नीचे छाया में चारों ओर पूज्य महर्षियों से घिरे हुए भगवान् जाबालि को देखा। वह नाभि तक लम्बी जटाओं से सुशोभित थे और उनकी दाढ़ी नाभि तक लटकी हुई थी। हारीत ने मुझे उसी अशोक की छाया

में रखकर पिता के चरणों को छूकर अभिवादन किया और समीप ही के कुशासन पर आसन ग्रहण किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सदासन्निहितकुसुमफलैः सदा सन्निहितानि कुसुमफलानि यस्मिन् तत्। वेदाध्ययनमुखरवटुजनम् = वेदाध्ययनेन मुखरः वटुः जनः यस्मिन् तत्। उपचर्यमाणातिथिवर्गम् = उपचर्यमाणः अतिथिवर्गाः यस्मिन् तत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>अनतिदूरमिव गत्वा सदासन्निहितकुसुमफलैः काननैः उपगूढम्, आश्रमम् अपश्यम्।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कुछ ही दूर जाने पर मैंने उस आश्रम को देखा जो सर्वदा फल और फूलों से युक्त वनों से घिरा था।

प्रश्न 3. आश्रमः कीदृशः आसीत्?

उत्तर– आश्रमः सदासन्निहित कुसुमफलैः काननैः उपगूढम् आसीत्।

प्रश्न 4. शुकः किम् अपश्यत्?

उत्तर– शुकः आश्रमम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. जाबालि मुनिः कैः परिवृतः आसीत्?

उत्तर– जाबालि मुनिः महनीयैः महर्षिभिः परिवृतः आसीत्।

प्रश्न 6. जटाभिः उपशोभितं कः आसीत्?

उत्तर– जाबालि मुनिः जटाभिः उपशोभितम् आसीत्।

12. आलोक्य तु माम् ते सर्वे एव मुनयः कुतोऽयम् आसादितः शुकशिशुः इति तम् आसीनम् अपृच्छन्। असी तु तान् अब्रवीत्– ''अयं मया स्नातुम् इतो गतेन कमलिनीसरस्तीरे तरुनीडात् पतितः दूरनिपतनविह्वलतनुः आसादितः। तपस्विदुरारोहतया तस्य वनस्पतेः न शक्यते स्वनीडम् आरोपयितुम् इति जातदयेन आनीतः। अयम् इदानीम् अप्ररूढपक्षतिः, अक्षमोऽन्तरिक्षम् उत्पतितुम्। तत् अत्रैव कस्मिश्चित् आश्रमतरुकोटरे मुनिकुमारकैः अस्माभिश्च उपनीतेन नीवारकणनिकरेण फलरसेन च, संवर्ध्यमानः धारयतु जीवितम्। अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्। उद्भिन्नपक्षतिस्तु–गगनतलसञ्चरणसमर्थः यास्यति यत्रास्मै रोचिष्यते– इहैव वा उपजातपरिचयः स्थास्यति'' इति।

शब्दार्थ– आलोक्य = देखकर। कुतः = कहाँ। अयम् = यह। आसादितः = प्राप्त किया गया। आसीनम् = बैठे हुए। अपृच्छत् = पूछा। अब्रवीत् = कहा। स्नातुम् = स्नान के लिए। इतः = यहाँ से। कमलिनीसरस्तीरे = कमल वाले तालाब के किनारे। तरुनीडात् (तरोः नीडात्) वृक्ष के घोंसले से। पतितः गिरा हुआ। दूरात् निपतेन = दूर से गिरने के कारण। विह्वलतनुः = व्याकुल शरीरवाले। आसादितः = प्राप्त किया गया। तपस्विदुरोहतया = तपस्वियों के द्वारा चढ़ने योग्य न होने से। वनस्पतेः = वृक्ष के। आरोपयितुम् = रखने के लिए। जातदयेन = दया आने के कारण। आनीतः = लाया गया। इदानीम् = इस समय। अप्ररूढ़पक्षतिः = पंख न निकले हुए। अक्षमः = असमर्थ। अन्तरिक्षम् = आकाश। उत्पतितुम् = उड़ने के लिए। आश्रमतरुकोटरे = आश्रम के वृक्ष के खोखले में। उपनीतेन = लाये गये। नीवारकणनिकरेण = नीवार के दाने से। संवर्ध्यमानः = बड़ा होकर। अस्माद्विधानाम् = हमारे जैसे लोगों का। उद्भिन्नपक्षतिः = पंख निकलने पर। गगनतलसंचरणसमर्थः = आकाश में उड़ने योग्य। यास्यति = चला जायेगा। यत्र = जहाँ। अस्मै = इसे। रोचिष्यते = अच्छा लगेगा। इहैव = यहाँ ही। उपजात परिचयः = परिचय हो जाने से। स्थास्यति = रह जायेगा।

हिन्दी अनुवाद– वहाँ के वे मुनि मुझे देखकर उस बैठे हुए हारीत से पूछने लगे कि इस सुग्गे के बच्चे को कहाँ पाया? उन्होंने उनसे कहा– यहाँ से मैं जब स्नान करने के लिए गया था तो यह उस कमल वाले तालाब के किनारे वृक्ष के खोखले से गिरा हुआ था। दूर से गिरने के कारण बहुत बुरी दशा में मैंने इसे पाया। मुनियों के लिए उस पेड़ पर चढ़ना कठिन था, इसलिए इसको इसके घोसले में न रख सका और दया के वशीभूत हो इसे उठा लाया। यह इस समय पंख न निकलने के कारण

उड़ने में असमर्थ है। इसलिए यह यहीं आश्रम के किसी पेड़ के खोखले में मुनिकुमारों तथा हम लोगों द्वारा लाये गये निवार के दानों तथा फल के रसों से पोषित होकर जीवित रहे। हमारे जैसे लोगों का धर्म ही अनाथों का पालन करना है। जब इसे पंख निकल आयेंगे और आकाश में उड़ने योग्य हो जायेगा तो यह जहाँ चाहेगा चला जायेगा या परिचित हो जाने के कारण यहीं रह जायेगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दूरनिपतनविह्वलतनुः = दूरात् निपतनेन विह्वलं तनुः यस्य सः। अप्ररूढपक्षति = अप्ररूढा पक्षतिः यस्य सः। आश्रमतरुकोटरे = आश्रमस्य तरोः कोटरे। गगनतलसंचरणसमर्थः = गगनतले संचरणाय समर्थः। यत्रास्मै = यत्र+अस्मै। इहैव = इह+एव। उपजातपरिचयः = उपजातः परिचयः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अनाथों का पालन करना ही हमारे जैसे लोगों का धर्म है।
प्रश्न 3. सर्वे मुनयः हारीतेन किम् अपृच्छन्।
उत्तर– सर्वे मुनयः हारीतेन अपृच्छन्–कुतोऽयम् आसादितः शुकशिशुः।
प्रश्न 4. हारीतेन किम् अब्रवीत्?
उत्तर– हारीतेन अब्रवीत्– "अयं मया स्नातुम् इतो गतेन कमलिनीसरस्तीरे तरुनीडात् पतितः दूरनिपतनविह्वलतनुः आसादितः।"
प्रश्न 5. हारीतानुसारेण धर्मः कः?
उत्तर– हारीतानुसारेण 'अनाथपरिपालनं हि धर्मः।'

13. इत्यस्मत्संबद्धम् आलापम् आकर्ण्य, भगवान् जाबालिः माम् अतिप्रशान्तया दृष्ट्या दृष्ट्वा, "स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते" इत्यवोचत्। श्रुत्वैतत् सर्वैव सा तापसपरिषत् तं भगवन्तम् एवम् उपनाथितवती–आवेदय भगवन्! कीदृशस्य अविनयस्य फलम् अनेन अनुभूयते? कश्चायमासीत् जन्मान्तरे? विहगजातौ कथमस्य संभवः? किमभिधानो वा अयम्? अपनय नः कुतूहलम् इति। एवमुक्तस्तु सः महामुनिः अवादीत्–श्रूयतां यदि कुतूहलम्।

शब्दार्थ–इत्यस्मत्संबद्धम् = इस प्रकार मुझसे संबंधित। आलापम् = बातचीत। आकर्ण्य = सुनकर। अतिप्रशान्तया = अत्यन्त शान्त। दृष्ट्या = दृष्टि से। दृष्ट्वा = देखकर। स्वस्यैवाविनयस्य = अपने ही पापों का। अनेन = इसके द्वारा। अनुभूयते = भोगा जा रहा है। श्रुत्वा = सुनकर। एतत् = यह। तापस = तपस्वियों की। परिषत् = मंडली। उपनाथितवती = प्रार्थना करने लगी। आवेदय = बताइए। कश्चायमासीत् = यह कौन था। जन्मान्तरे = पूर्व जन्म में। विहगजातौ = पक्षी योनि में। सम्भवः = जन्म हुआ। किम् = क्या। अभिधानः = नाम। अपनय = दूर करो। नः = हम लोगों का। कुतूहलम् = उत्सुकता। आवादीत् = बोले।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार मेरे सम्बन्ध की चर्चा सुनकर भगवान् जाबालि ने मुझे बड़ी शान्त दृष्टि से देखकर कहा कि "यह अपने ही पापों का फल भोग रहा है।" यह सुनकर तपस्वियों की मंडली ने भगवान् जाबालि से प्रार्थना की कि भगवान् यह बताइये–यह तोता किस प्रकार के पाप का फल भोग रहा है? यह पूर्वजन्म में कौन था? पक्षीयोनि में यह कैसे पैदा हुआ? इसका नाम क्या है? हम लोगों की उत्सुकता को दूर करें। ऐसा कहने पर उस महामुनि ने कहा–यदि उत्सुकता है तो सुनिए–

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यस्मत्सम्बद्धम् = इति+अस्मत्+संबद्धम्। स्वस्यैवाविनयस्य = स्वस्य+एव+अविनयस्य। अनेनानुभूयते = अनेन+अनुभूयते। श्रुत्वैतत् = श्रुत्वा+एतत्। कश्चायमासीत् = कः+च+अयम्+आसीत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अपनी ही अविनम्रता का फल इसके द्वारा भोगा जा रहा है।

प्रश्न 3. भगवान् जाबालिः केन अतिप्रशान्तया दृष्ट्या अपश्यत्?

उत्तर– भगवान् जाबालिः शुकशिशुम् अतिप्रशान्तया दृष्ट्या अपश्यत्।

प्रश्न 4. भगवान् जाबालिः किम् अवोचत्?

उत्तर– 'स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते' इत्यवोचत्।

प्रश्न 5. कः स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते?

उत्तर– शुकः स्वस्यैवाविनयस्य फलम् अनेनानुभूयते।

14. अस्ति सकलभुवनललामभूता विजितामरलोकद्युति; अवन्तिषु उज्जयिनी नाम नगरी। तस्यां च नलनहुषययातिप्रतिमः तारापीडो नाम राजा बभूव। तस्य च राज्ञः नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलःमहत्स्वपि कार्यसङ्कटेषु अविषण्णधीः अमात्यः ब्राह्मणः शुकनासो नाम आसीत्। स राजा बाल एव राजलक्ष्मीलीलोपधानेन बाहुना सप्तद्वीपवलयां वसुन्धरां विजित्य, तस्मिन् शुकनासे राज्यभारम् आरोप्य सुस्थिताः प्रजाः कृत्वा, सुखम् उवास। शुकनासोऽपि महान्तं तं राज्यभारम् अनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार। एवं मन्त्रिनिवेशितराज्यभारः यौवनसुखम् अनुभवन् स राजा महान्तं कालम् अयापयत्। भूयसापि कालेन सुतमुखदर्शनसुखं न लेभे।

शब्दार्थ– सकलभुवनललामभूता = सम्पूर्ण संसार में सबसे सुन्दर। विजितामरलोकद्युति = देवलोक की कांति को जीत लेने वाली। नलनहुषययातिप्रतिमः = नल, नहुष और ययाति के समान। राज्ञा = राजा का। नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः = नीतिशास्त्र में प्रवीण। महत्सु = बड़े से बड़े। अपि = भी। कार्यसंकटेषु = काम की कठिनाइयों में। अविषण्णधीः = तीव्रबुद्धिवाले। अमात्यः = मन्त्री। राजलक्ष्मीलीलोपधानेन = राज्यलक्ष्मी के तकिये के समान। सप्तद्वीपवलयाम् = सात द्वीपोंवाली। बसुन्धरां = पृथ्वी को। विजित्य = जीतकर। राज्यभारम् = राज्य का बोझ। आरोप्य = देकर। सुस्थिताः = निश्ंिचत। उवास = रहने लगा। अनायासेनैव = सरलता से। बभार = धारण किया। मंत्रिनिवेशितराज्यभारः = मंत्रियों पर राज्य का भार डालकर। यौवनसुखम् = जवानी का सुख। अनुभवन् = भोगता हुआ। अयावयत् = बिता दिया। भूयसापिकालेन = बहुत समय बीत जाने पर भी। सुतमुख-दर्शनम् = पुत्र का मुख देखने का सुख। लेभे = प्राप्त किया।

हिन्दी अनुवाद– सारे संसार में सबसे सुन्दर तथा देवलोक की शोभा को भी जीत लेने वाली अवन्ति में उज्जयिनी नाम की जो नगरी है उसमें नल, नहुष और ययाति के समान तारापीड नाम का एक राजा हुआ था। उस राजा का शुकनास नाम का एक ब्राह्मण मंत्री था जिसकी बुद्धि बड़े-बड़े कार्यों के संकट में भी स्थिर रहती थी। उस राजा ने बचपन में राजलक्ष्मी के तकिये के समान अपनी बाहु से सातों द्वीपों वाली पृथ्वी को जीत लिया और प्रजा को निश्ंिचत करके तथा राज्य का भार मंत्री के ऊपर डालकर सुख से रहने लगा। शुकनास ने अपनी बुद्धि के बल से उस महान् राज्य के भार को सरलता से धारण कर लिया। प्रधानमन्त्री के ऊपर राज्यभार रखकर उसने जवानी का आनन्द लेते हुए बहुत समय बिता दिया। लेकिन बहुत समय बीतने पर भी वह अपने पुत्र का मुख देखने का सुख न पा सका।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सकलभुवनललामभूता = सकलस्य भुवनस्य ललामभूता। विजितामरलोकद्युति = विजितना अमर लोकस्य द्युतिः यया (सा) नलनहुषययातिप्रतिमः = नलश्च नहुषश्च ययातिश्च नलनहुषययातयः ते प्रतिमा यस्य सः। नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः = नीतिशास्त्रस्य प्रयोगकुशलः। महत्स्वपि = महत्सु+अपि। अविषण्णधीः = अविषण्णा धीः यस्य सः। राजलक्ष्मीलीलोपधानेन = राज्ञः लक्ष्मीः तस्याः लीलायाः उपधानम् तेन। उदास = वस् धातु का लिट्लकार, अन्य पुरुष, एकवचन। मंत्रिनिवेशितराज्यभारः = मंत्रिणि निवेशितः राज्यस्य भारः येन सः। यौवनसुखम् = यौवनस्य सुखम्। सुतमुख-दर्शनम् = सुतस्य मुखम् तस्य दर्शनम् तस्य सुखम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. '<u>शुकनासोऽपि महान्तं तं राज्यभारम् अनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– शुकनास भी बुद्धि के बल से राज्य के उस महान कार्यभार को सरलता से धारण कर लिया।
प्रश्न 3. तारापीडः कः आसीत्?
उत्तर– तारापीडः उज्जयिनी नगरस्य राजा आसीत्।
प्रश्न 4. उज्जयिनी नगरी कुत्र स्थितः?
उत्तर– उज्जयिनी अवन्ति राज्ये स्थितः।
प्रश्न 5. शुकनासः कः आसीत्?
उत्तर– शुकनासः तारापीडस्य अमात्यः आसीत्।
प्रश्न 6. नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः कः आसीत्?
उत्तर– नीतिशास्त्रप्रयोगकुशलः शुकनासः आसीत्।
प्रश्न 7. राजा तारापीडः कस्मिन् राज्यभारम् आरोप्य सुखम् उवास?
उत्तर– राजा तारापीडः शुकनासे राज्यभारम् आरोप्य सुखम् उवास।

15. तस्य विलासवती नाम महिषी भगवन्तं महाकालम् अभ्यर्चितुं गता, तत्रमहाभारते वाच्यमाने ''अपुत्राणां न सन्ति लोकाः शुभाः'' इति श्रुत्वा, नितरां परितप्यमाना, ततः प्रभृति, देवताराधनेषु ब्राह्मणपूजासु गुरुजनसपर्यासु च सुतराम् आदरवती वभूव। एवं गच्छति काले कदाचित् राजा चरमे यामिनीयामे स्वप्ने विलासवत्याः वदने सकलकलापरिपूर्णमण्डलं शशिनं प्रविशन्तम् अद्राक्षीत्। प्रबुद्धश्चोत्थाय तस्मिन्नेव क्षणे समाहूय शुकनासाय तं स्वप्नम् अकथयत्। स च समुपजातहर्ष प्रत्युवाच, ''देव! संपन्नाः सुचिरात् अस्माकं प्रजानां च मनोरथाः। कतिपयैरेवाहोभिः असंदेहम् अनुभवति स्वामी सुतमुखकमलावलोकनसुखम्। अद्य खलु मयापि स्वप्ने दिव्याकृतिना शान्तमूर्तिना द्विजेन केनचित् विकचं पुण्डरीकम् उत्सङ्गे देव्याः मनोरमायाः निहितं दृष्टम्। अवितथफलाश्च प्रायः निशावसानसमयदृष्टाः भवन्ति स्वप्नाः'' इति।

शब्दार्थ– महिषी = प्रधान रानी। महाकालम् = शिव को। अभ्यर्चितुं = पूजने के लिए। गता = गयी। वाच्यमाने = पढ़े जाने पर। अपुत्राणाम् = पुत्रहीनों का। शुभाः लोकाः = शुभ लोक, स्वर्गादि। नितराम् = अत्यन्त। परितप्यमाना = दुःखी होती हुई। ततः प्रभृति = तब से। देवताराधनेषु = देवताओं की आराधना में। ब्राह्मणपूजासु = ब्राह्मणों की पूजा में। गुरुजनसपर्यासु = बड़े लोगों के आदर-सत्कार में। आदरवती बभूव = श्रद्धा वाली हो गयी। गच्छति काले = समय बीतने पर। चरमे = अन्तिम। यामिनीयामे = रात के पहर में। वदने = मुख में। सकलकलापरिपूर्णमंडलम् = सम्पूर्ण। कलाओं से परिपूर्ण। शशिनम् = चन्द्रमा को। प्रविशन्तम् = प्रवेश करते हुए। अद्राक्षीत् = देखा। प्रबुद्धः = जागकर। च उत्थाय = और उठकर। समाहूय = बुलाकर। समुपजातहर्षः = प्रसन्न होते हुए। प्रत्युवाच = उत्तर दिया। सम्पन्नाः = पूरा हो गया। सुचिरात् = बहुत दिनों का। अकस्मात् = हम लोगों का। कतिपयैरेवाहोभिः = कुछ दिनों में। असंदेहम् = निश्चय ही। सुतमुखकमलावलोकनसुखम् = पुत्र के मुखकमल को देखने का सुख। अद्य = आज। दिव्याकृतिना = दिव्य आकृतिवाले। द्विजेन = ब्राह्मण द्वारा। विकचम् = प्रफुल्लित। पुण्डरीकम् = श्वेत कमल को। उत्संगे = गोद में। निहितम् = रखा हुआ। अवितथफलाः = सच्चे फल देने वाले। निसावसानसमयदृष्टाः = रात के अन्त में देखे गये।

हिन्दी अनुवाद– विलासवती नाम की उसकी पटरानी एक बार भगवान महाकाल की पूजा के लिए गयी। वहाँ उसने महाभारत की कथा में सुना कि पुत्रहीन मनुष्य को गति (स्वर्गादि) की प्राप्ति नहीं होती। तभी से वह देवताओं की आराधना, ब्राह्मणों की पूजा और बड़े लोगों के सत्कार में अधिक श्रद्धा रखने लगी। इस प्रकार कुछ समय बीतने पर राजा ने स्वप्न में रात्रि के पिछले पहर में पूर्ण चन्द्रमा को विलासवती के मुँह में प्रवेश करते हुए देखा। जागकर और उठकर उसी समय शुकनास को बुलवाकर राजा ने उससे सपने को कह सुनाया। उसने प्रसन्न होकर कहा– राजन्, बहुत दिनों के बाद हम लोगों एवं प्रजा की अभिलाषा पूर्ण हुई। स्वामी थोड़े ही दिनों में निश्चय ही पुत्र के मुख-दर्शन का सुख पावेंगे। आज मैंने भी स्वप्न में एक दिव्य और शान्त मूर्ति वाले ब्राह्मण के द्वारा देवी मनोरमा की गोद में फूला हुआ श्वेत कमल रखते हुए देखा है। प्रायः रात के अन्त में देखे गये सपने अवश्य फल देने वाले होते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सकलकलापरिपूर्णमंडलम् = सकलाभिः कलाभिः परिपूर्ण मंडलम् यस्य तत्। समुपजातहर्षः =

समुपजात हर्षःयस्मिन् सः। प्रत्युवाच = प्रति+उवाच। कतिपयैरेवाहोभिः=कतिपय एव अहोभिः। सुतमुखकमलावलोकनसुखम् = सुतस्य मुखकमलम् (तस्यावलोकनस्यः सुखम्)। दिव्याकृतिना = दिव्या आकृतिः यस्य तेन।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. '<u>अपुत्राणां न सन्ति लोकाः शुभाः।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– पुत्रहीन मनुष्यों को शुभ लोक (स्वर्गादि) नहीं प्राप्त हो पाते हैं।
प्रश्न 3. विलासवती का आसीत्?
उत्तर– विलासवती राजा तारापीडस्य महिषी आसीत्।
प्रश्न 4. विलासवती कुत्र गता?
उत्तर– विलासवती भगवन्तं महाकालम् अभ्यर्चितुं गता।
प्रश्न 5. राजा स्वप्ने किम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– राजा स्वप्ने विलासवत्याः वदने शशिनं प्रविशन्तम् अद्राक्षीत्।

16. कतिपयदिवसापगमे च देवताप्रसादात् विवेश गर्भो विलासवतीम्। शनैः शनैश्च प्रतिदिनम् उपचीयमानगर्भा सा पूर्णे प्रसवसमये प्रशस्तायां वेलायां सकललोकहृदयानन्दकारिणं सुतम् असूत। अथ पार्थिवः मौहूर्तिकगणोपदिष्टे प्राशस्ते मुहूर्ते शुकनासद्वितीयः मङ्गलकलशयुगलाशून्येन द्वारदेशेन विराजमानम्, अविच्छिन्नपठ्यमाननारायणनामसहस्रम्, सूतिकागृहं प्रविश्य विलासवत्याः प्रसवपरिक्षामपाण्डुमूर्तेः उत्सङ्गगतम् महापुरुषलक्षणोपेतम् आत्मजम् ददर्श। विगतनिमेषेण निश्चलपक्ष्मणा चक्षुषा पिबन् इव सस्पृहम् ईक्षमाणः तनयाननम् अतितराम् मुमुदे।

शब्दार्थ– कतिपय = कुछ। दिवसापगमे = दिन बीतने पर। विवेश = प्रवेश किये। शनैःशनैश्च = और धीरे-धीरे। उपचीयमानगर्भा = बढ़ते हुए गर्भवाली। पूर्णप्रसव समये = प्रसव का समय पूरा होने पर। प्रशस्तायाम् = श्रेष्ठ। वेलायाम् = समय में। सकललोक हृदयानन्दकारिणं = सारे संसार को आनन्दित करने वाले। सुतम् = पुत्र को। असूत् पैदा किया। पार्थिवः राजा। मौहूर्तिकगणोपदिष्टे = ज्योतिषियों द्वारा बताये गये। मुहूर्ते = शुभ लग्न में। शुकनाशद्वितीयः = शुकनास के साथ। मंगलकलशायुगलाशून्येन = दो मंगल घटों से युक्त। द्वारदेशेन = दरवाजे। अविच्छिन्नपठ्यमाननारायणनामसहस्रम् = जहाँ लगातार नारायण के सहस्रनाम का पाठ हो रहा था। सूतिकागृहम् = प्रसवगृह। प्रसवपरिक्षामपाण्डुमूर्तेः = सन्तानोत्पत्ति के कारण दुबली व पीली आकृतिवाली। उत्संगगतम् = गोद में स्थित। महापुरुषलक्षणोपेतम् = महापुरुषों के लक्षणों से युक्त। आत्मजम् = अपने पुत्र को। ददर्श = देखा। विगतनिमेषेण = बिना पलक गिराये। निश्चलपक्ष्मणा = निर्निमेष। चक्षुषा = नेत्र से। सस्पृहम् = रुचि के साथ। ईक्षमाणः = देखते हुए। तनयाननम् = पुत्रमुख को। अतितराम् = अत्यन्त। मुमुदे = आनन्दित हुआ।

हिन्दी अनुवाद– कुछ दिन बीतने पर देवताओं की कृपा से विलासवती ने गर्भ धारण किया। धीरे-धीरे बढ़ते हुए गर्भ वाली प्रसव का समय पूरा होने पर शुभदायक समय में उसने सारे संसार को आनन्दित करने वाले पुत्र को जन्म दिया। शुभदायक समय में उसने सारे संसार को आनन्दित करने वाले पुत्र को जन्म दिया। ज्योतिषियों द्वारा बताये गये शुभ मुहूर्त में शुकनास के साथ राजा प्रसवगृह में गये जिसके दरवाजे पर दो मंगल घट रखे हुए थे तथा निरन्तर विष्णुसहस्रनाम का पाठ हो रहा था। वहाँ उन्होंने प्रसव के कारण दुबली एवं पीली आकृतिवाली विलासवती की गोद में स्थित महापुरुषों के लक्षणों से युक्त अपने पुत्र को देखा। स्थिर एवं निर्निमेष नेत्रों से उसकी शोभा को पाते हुए राजा अत्यधिक तृषित होकर पुत्र का मुख देखते हुए अत्यन्त आनन्दित हुए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपचीयमानगर्भा = उपचीयमानः गर्भः यस्याम् सा। सकललोकहृदयानन्दकारिणम् = सकललोकस्य हृदयाणाम् आनन्दकारिणम्। मौहूर्तिकगणोपदिष्टे = मौहूर्तिकगणे उपदिष्टे। प्रसवपरिक्षामपाण्डुमूर्तेः = प्रसवेन परिक्षामं पाण्डुः मूर्तिः यस्याः सा तस्याः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'विगतनिमेषेण निश्चलपक्ष्मणा चक्षुषा पिबन् इव सस्पृहम् ईक्षमाणः तनयाननम् अतितराम् मुमुदे।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्थिर और अपलक नेत्रों से उसकी शोभा को देखते हुए राजा अत्यधिक तृषित नेत्रों वाले पुत्र को देखते हुए आनन्दित हुए।

प्रश्न 3. कस्य प्रसादात् विवेश गर्भो विलासवतीम्?

उत्तर– देवताप्रसादात् विवेश गर्भो विलासवतीम्।

प्रश्न 4. विलासवती कदा सुतम् असूत्?

उत्तर– प्रशस्तायां वेलायां सुतम् असूत्।

प्रश्न 5. राजा तारापीड केन सह सूतिकागृहं प्रविशति स्म?

उत्तर– राजा तारापीड शुकनासेन सह सूतिकागृहं प्रविशति स्म।

17. तस्मिन्नेव समये शुकनासस्यापि जेष्ठायां ब्राह्मण्यां मनोरमायां तनयः जातः। अथ नृपतिः अमृतवृष्टिप्रतिमम् तज्जननवृत्तान्तम् आकर्ण्य, ''अहो कल्याणपरम्परा'' इत्यभिधाय, शुकनासभवनं गत्वा द्विगुणतरम् उत्सवम् अकारयत्। प्राप्ते च दशमेऽहनि पुण्ये मुहूर्ते स्वप्नानुरूपमेव राजा स्वसूनोः ''चन्द्रापीडः'' इति नाम चकार। अपरेद्युः शुकनासोऽपि ब्राह्मणोचिताः सकलाः क्रियाः कृत्वा, विप्रजनोचितम् आत्मजस्य 'वैशम्पायनः' इति नाम चक्रे। क्रमेण च कृतचूडाकरणादिबालक्रियाकलापस्य शैशवम् अतिचक्राम सवैशम्पायनस्य चन्द्रापीडस्य।

शब्दार्थ– तस्मिन् एव समये = उसी समय। जेष्ठायाम् = बड़ी। ब्राह्मण्याम् = ब्राह्मणी। तनयः जातः = पुत्र उत्पन्न हुआ। अमृतवृष्टि प्रतिमम् = अमृत की वर्षा के समान। तज्जननवृत्तान्तम् = उसके जन्म का समाचार। आकर्ण्य = सुनकर। कल्याणपरम्परा = एक कल्याण के बाद दूसरे कल्याण का आगमन। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। द्विगुणतरम् = पहले से दूना। अकारयत् = कराया। दशमेऽहनि = दसवें दिन। पुण्ये = पवित्र। स्वप्नानुरूपमेव = स्वप्न के अनुसार ही। स्वसूनोः = अपने पुत्र का। चकार = किया। अपरेद्युः = दूसरे दिन। ब्राह्मणोचिताः = ब्राह्मणों के योग्य। चक्रे = किया। कृतचूडाकरणादि बालक्रियाकलापस्य = जिसकी मुण्डन आदि बाल-क्रियाएँ की गई हों, उसका। सवैशम्पायनस्य = वैशम्पायन के साथ। शैशवम् = बचपन। अतिचक्राम = व्यतीत हुआ।

हिन्दी अनुवाद– उसी समय शुकनास की बड़ी पत्नी मनोरमा को भी पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा ने अमृत वर्षा के समान उसके जन्म का समाचार सुनकर कहा– धन्य है। एक मंगल के बाद दूसरा मंगल आ गया। यह कहकर राजा ने शुकनास के महल में जाकर दूना उत्सव कराया। दसवें दिन पवित्र मुहूर्त में राजा ने स्वप्न के अनुसार ही अपने पुत्र का नाम चन्द्रापीड रखा। दूसरे दिन शुकनास ने भी ब्राह्मणोचित क्रियाओं को करके ब्राह्मणों के अनुकूल अपने पुत्र का नाम वैशम्पायन रखा। धीरे-धीरे वैशम्पायन के साथ ही चन्द्रापीड का मुण्डनादि बाल संस्कार हुए और उन दोनों का बचपन बीत गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अमृतवृष्टिप्रतिमम् = अमृतस्य वृष्टिः सा प्रतिमा यस्य तम्। तज्जननतृत्तान्तम् = तस्य जननस्य तृत्तान्तः तम्। कल्याणपरम्परा = कल्याणानाम् परम्परा। ब्राह्मणोचिताः = ब्राह्मणेभ्यः उचिताः। कृतचूडाकरणादि-बालक्रियाकलापस्य = कृतः चूडाकरणादि बालक्रियाकलापः यस्य तस्य।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. **'अहो कल्याणपरम्परा।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– धन्य है, कल्याणों की यह परम्परा अर्थात् एक मङ्गल के बाद दूसरा मङ्गल आ गया।
प्रश्न 3. **मनोरमा का आसीत्?**
उत्तर– मनोरमा शुकनासस्य ज्येष्ठ पत्नी आसीत्।
प्रश्न 4. **स्वप्नानुरूपेण राजा स्वसूनोः किं नाम चकार?**
उत्तर– स्वप्नानुरूपेण राजा स्वसूनोः 'चन्द्रापीड' इति नामचकार।
प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः कस्य पुत्रः आसीत्?**
उत्तर– चन्द्रापीडः राजा तारापीडस्य पुत्रः आसीत्।
प्रश्न 6. **शुकनासस्य पुत्रस्य किं नाम आसीत्?**
उत्तर– शुकनासस्य पुत्रस्य वैशम्पायनः नाम आसीत्।

18. अथ तारापीडो बहिर्नगरात् अनुशिप्रम् अतिमहता सुधाधवलेन प्राकारमण्डलेन परिवृतं विद्यामन्दिरम् अकारयत्। तत्र शोभने दिवसे चन्द्रापीडम् वैशम्पायनद्वितीयम् आचार्येभ्यः निखिलविद्योपादानार्थम् अर्पयाम्बभूव। प्रतिदिनम् सह विलासवत्या तत्रैव गत्वा एनम् आलोकयामास। चन्द्रापीडोऽपि अतिरेणैव कालेन, यथास्वम् आत्मकौशलं प्रकटयद्भिः पात्रवशात् उपजातोत्साहैः आचार्यैः उपदिश्यमानाः सर्वाः विद्याः जग्राह। तथा हि पदे, वाक्ये, प्रमाणे, धर्मशास्त्रे, राजनीतिशषु, व्यायामविद्यासु, सर्वेष्वायुधविशेषेषु, रथचर्यासु, गजपृष्ठेषु, तुरङ्गमेषु, वीणावेणुप्रभृतिषु, वाद्येषु, नृत्तशास्त्रेषु, गान्धर्वविद्यासु, शकुनिरुतज्ञाने, यन्त्रप्रयोगे, विषापहरणे, सर्वलिपिषु, सर्वदेशभाषासु, अन्येष्वपि कलाविशेषेषु परं कौशलम् अवाप। सहजा चास्य वृकोदरस्येव आविर्बभूव सर्वलोकविस्मयजननी महाप्राणता। एकैकेन कृपाणप्रहारेण बालतरून् मृणालदण्डानिव लुलाव। दशपुरुषसंवहनयोग्येन अयोदण्डेन श्रमम् अकरोत्। ऋते च महाप्राणतायाः सर्वाभिः अन्याभिः कलाभिः अनुचकार तं वैशम्पायनः। सः चन्द्रापीडस्य सर्वविस्रम्भस्थानम् द्वितीयमिव हृदयं परं मित्रम् आसीत्। निमेषमपि तेन विना स्थातुं न शशाक। वैशम्पायनोऽपि तं न क्षणमपि विरहायाञ्चकार।

शब्दार्थ– बहिर्नगरात् = नगर से बाहर। अनुशिप्रम् = शिप्रा नदी के किनारे। अतिमता = बहुत बड़ा। सुधाधवलेन = सुधया धवलं तेन, चूने से सफेद। प्राकारमण्डलेन = चहारदीवारी से। परिवृतम् = घिरे हुए। विद्यामन्दिरम् = पाठशाला को। अकारयत् = बनवाया। शोभने दिवसे = शुभ दिन। वैशम्पायन द्वितीयम् = वैशम्पायन के साथ। निखिलविद्योपादानार्थम् = सम्पूर्ण विद्या पढ़ने के लिए। अर्पयाम्बभूव = भेज दिया। आलोकयामास = देखा। अचिरेणैवकालेन = थोड़े ही समय में, यथास्वम् = अपनी शक्ति के अनुसार। आत्मकौशलम् = अपनी चतुराई। प्रकटयद्भिः = प्रकट करने वाले। पात्रवशात् = योग्य शिष्य होने के कारण। उपजातोत्साहैः = बढ़े हुए उत्साहवाले। उपदिश्यमानाः = बतलायी गयी। जग्राह = ग्रहण किया। पदे = व्याकरण में। वाक्ये = मीमांसा में। प्रमाणे = तर्कशास्त्र में। सर्वेष्वायुधविशेषेषु = सभी शस्त्र-विशेषों में। रथचर्यासु = रथ हाँकने में। गजपृष्ठेषु = हाथी की सवारी में। तुरङ्गमेषु = घुड़सवारी में। वीणावेणुप्रभृतिषु = वीणा बाँसुरी आदि में। गान्धर्वविद्यासु = संगीत विद्या में। शकुनिरुतज्ञाने = पक्षियों की भाषा के ज्ञान में। विषापहरणे = विष दूर करने में। सर्वलिपिसु = सभी लिपियों में। कौशलम् = निपुणता। अवाप = प्राप्त की। सहजा = स्वाभाविक। वृकोदरस्येव = भीम के समान। आविर्बभूव = उत्पन्न हुई। सर्वलोकविस्मयजननी = सारे संसार को चकित करने वाली। महाप्राणता = बलवता। कृपाणप्रहारेण = तलवार के प्रहार से। बालतरून् = छोटे-छोटे पेड़ों को। मृणालदंडानिव = कमल के समान। लुलाव = काट दिया। दशपुरुषसंवहनयोग्येन = दस पुरुषों से उठाये जा सकने वाले। अयोदण्डेन = लोहे के डण्डे से। श्रमम् = व्यायाम। ऋते च = छोड़कर। अनुचकार = अनुसरण किया। सर्वविश्रम्भस्थानम् = सभी प्रकार का विश्वासपात्र। निमेषमपि = पलमात्र भी। शशाक = सका। न विरहाञ्चकार = अलग नहीं करता था, नहीं छोड़ता था।

हिन्दी अनुवाद– तारापीड ने नगर के बाहर शिप्रा नदी के किनारे चूने से उजले चहारदीवारी से घिरी हुई एक बहुत बड़ी पाठशाला बनवायी। उसने एक शुभ दिन वैशम्पायन के साथ चन्द्रापीड को आचार्यों से सम्पूर्ण विद्या सीखने के लिए भेज दिया। राजा प्रतिदिन विलासवती के साथ वहाँ जाकर उसे देख लिया करते थे। चन्द्रापीड ने भी थोड़े ही समय में योग्य शिष्य होने के कारण अपनी कुशलता प्रकट करने वाले उत्साह से भरे आचार्यों द्वारा बतायी गयी सभी विद्याएँ ग्रहण कर लीं। वह व्याकरण,

मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, राजनीति, व्यायाम-विद्या, सभी हथियारों की विद्या, रथ हाँकने, घुड़सवारी करने, वीणा-बाँसुरी आदि बाजों के बजाने, नृत्य विद्या, संगीत विद्या, पक्षियों की भाषा के ज्ञान, यन्त्रों के प्रयोग, विष को दूर करने, सभी लिपियों एवं सभी देश की भाषाओं तथा दूसरी कलाओं में भी निपुणता प्राप्त कर ली। उसमें सारे संसार को चकित करने वाली भीम जैसी स्वाभाविक बलवत्ता (शारीरिक शक्ति) भी उत्पन्न हो गई। वह तलवार के एक ही वार से छोटे-छोटे पेड़ों को काट गिराता था। शारीरिक शक्ति को छोड़कर अन्य सभी कलाओं में वैशम्पायन ने उसका अनुसरण किया। वह चन्द्रापीड का सभी प्रकार से विश्वासपात्र अभिन्न-हृदय मित्र था। चन्द्रापीड उसके बिना क्षणमात्र भी नहीं रह सकता था। वैशम्पायन भी उसे क्षणमात्र के लिए भी नहीं छोड़ता था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– वैशम्पायनद्वितीयम् = वैशम्पायनः द्वितीयः यस्य तम्। उपजातोत्साहैः = उपजातः उत्साहः येषां तैः। कृपाणप्रहारेण = कृपाणस्य प्रहारः तेन। दशपुरुषसंवहनयोग्येन = दशपुरुषैः संवहनयोग्यः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'सहजा चास्य वृकोदरस्येव आविर्बभूव सर्वलोकविस्मयजननी महाप्राणता।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उस (चन्द्रापीड) की भीम के समान सम्पूर्ण संसार को आश्चर्यचकित करने वाली स्वाभाविक बलवत्ता भी उत्पन्न हो गई।

प्रश्न 3. बहिर्नगरात् विद्यामन्दिरं केन अकारयत्?

उत्तर– राजा तारापीडः बहिर्नगरात् विद्यामन्दिरम् अकारयत्।

प्रश्न 4. विद्यामन्दिरः कस्या नद्या परिगता आसीत्?

उत्तर– विद्यामन्दिरः शिप्रा नद्या परिगता आसीत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कस्येव महाप्राणता आविर्बभूव?

उत्तर– चन्द्रापीडः बृकोदरस्येव महाप्राणता आविर्बभूव।

प्रश्न 6. चन्द्रापीडस्य परं मित्रं कः आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य परं मित्रं वैशम्पायनः आसीत्।

19. अथ तस्य चन्द्रापीडस्य यौवनारम्भः प्रादुर्भवन् द्विगुणां रमणीयतां पुपोष। वक्षः स्थलं वितस्तार। ऊरुदण्डद्वयम् अपूर्यत। मध्यभागः तनिमानम् अभजत्। नितम्बागः प्रथिमानम् आततान। भुजयुगलं प्रलम्बताम् उपययौ। भुजशिखरदेशः गुरुः बभूव। स्वरश्च गम्भीरताम् आजगाम। एवं च क्रमेण समारूढयौवनारम्भम् अधीताशेषविद्यम् अनुमोदितम् आचार्यैः चन्द्रापीडम् आनेतुं राजा बलाधिकृतं वलाहकनामानं प्राहिणोत्। स गत्वा विद्यागृहम्, द्वाःस्थैः समावेदितः प्रविश्य प्रणम्य व्यजिज्ञपत्– ''कुमार! महाराजःसमाज्ञापयति–पूर्णाः नः मनोरथाः। अधीतानि शास्त्राणि अनुमतोऽसि निर्गमाय सर्वाचार्यैः। अयम् अत्र भवतो दशमः वत्सरः विद्यागृहम् अधिवसतः। प्रविष्टोऽसि षष्ठे वर्षेः। एवं संपिण्डितेन षोडशेन प्रवर्धसे। तत् अद्य निर्गत्य यथासुखम् अनुभव राज्यसुखानि।

शब्दार्थ– तस्य = उसके। चन्द्रापीडस्य = चन्द्रापीड के। यौवनारम्भः = युवावस्था में पहुँचने पर। प्रादुर्भवन् = प्रकट होते ही। द्विगुणाम् = दूनी। रमणीयताम् = सुन्दरता। पुपोष = बढ़ी। वक्षस्थलम् = छाती। वितस्तार = फैल गई, चौड़ी हो गई। उरुदण्डद्वयम् = दोनों जाँघें। अपूर्यत् = भर गईं। मध्यभागः = कमर। तनिमानम् = क्षीणता को। अभजत् = प्राप्त हुई। प्रथिमानम् = मोटाई को। आततान् = फैल गये। भुजयुगलम् = दोनों भुजाएँ। प्रलम्बताम् = लम्बाई को। उपययौ = पहुँच गई। भुजशिखरदेशः = भुजाओं के सिरे का भाग। गुरुः = भारी। समारूढयौवनारम्भः = युवावस्था में पहुँच जाने वाले। अधीता शेषविद्यम् = सम्पूर्ण विद्याओं को सीख लेने वाले। अनुमोदितम् = स्वीकृत किये गये। आनेतुम् = लाने के लिए। बलाधिकृतम् = सेनापति को। प्राहिणोत् = भेजा। विद्यागृहम् = पाठशाला। द्वास्थैः = द्वारपालों द्वारा। समावेदितः = निवेदित होकर। व्यजिज्ञपत् = सूचना दी। समाज्ञापयति = आदेश दिया है। नः = हम लोगों का। पूर्णः = पूरे हो गये। अधीतानि = पढ़ लिये गये। अनुमतोऽसि = अनुमति मिल गई

है। निर्गमाय = जाने के लिए। वत्सरः = वर्ष। अधिवसतः = रहते हुए। संपिडितेन = मिलाने से। निर्गम्य = यहाँ से चलकर। अद्य = आज। अनुभव = भोग करो। राज्यसुखानि = राज्य के सुखों को।

हिन्दी अनुवाद– युवावस्था में पहुँचते ही चन्द्रापीड की सुन्दरता दूनी होकर बढ़ने लगी। छाती चौड़ी हो गई। दोनों जाँघें भर गईं (सुगठित हो गईं) कमर पतली हो गई, नितम्ब के हिस्से मोटे होकर फैल गये, दोनों भुजाएँ लम्बी हो गयीं, भुजाओं के सिरे भारी हो गये और स्वर में गम्भीरता आ गई। इस प्रकार क्रमशः युवावस्था में पहुँचते हुए, सम्पूर्ण विद्याओं को सीखने वाले तथा आचार्यों से अनुमति प्राप्त कर चन्द्रापीड को लाने के लिए राजा ने बलाहक नाम के सेनापति को भेजा। वह पाठशाला में जाकर तथा द्वारपालों से सूचना भेजकर भीतर पहुँचा और प्रणाम करके बोला– कुमार, राजा ने आदेश दिया है कि हम लोगों की अभिलाषाएँ पूरी हो गयीं। आपने सभी शास्त्रों को पढ़ लिया। आचार्यों ने आपको यहाँ से जाने की अनुमति दे दी है। इस विद्याभवन में रहते हुए दसवाँ साल है और छः वर्ष की आयु में आप यहाँ आये हुए थे। इस प्रकार मिलाकर आप 16 वर्ष के हो गये। इसलिए आप यहाँ से चलकर राज्यसुख का उपभोग करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यौवनारम्भः = यौवनस्य आरम्भः। समारूढयौवनारम्भम् = समारूढ़ः यौवनस्य आरम्भः यस्य तम्। अधीताशेषविद्यम् = अधीता अशेषा विद्या येन तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'कुमार! महाराजःसमाज्ञापयति–पूर्णाः नः मनोरथाः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– कुमार! राजा ने आदेश दिया है कि हम लोगों की अभिलाषा पूरी हो गई।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडस्य भुजशिखरदेशः कीदृशी बभूव?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य भुजशिखरदेशः गुरुः बभूव।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडम् आनेतुं राजा केन प्राहिणोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडम् आनेतुं राजा बलाधिकृतं वलाहकनामानं प्राहिणोत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कति वर्षाणि विद्यागृहम् अधिवसति?
उत्तर– चन्द्रापीडः दशवर्षाणि विद्यागृहम् अधिवसति।

20. अयं च ते त्रिभुनैकरत्नम् इन्द्रायुधनामा तुरङ्गमः महाराजेन प्रेषितः द्वारि तिष्ठति। एष खलु देवस्य पारसीकाधिपतिना 'जलनिधिजलात् उत्थितम् अयोनिजम् अश्वरत्नम् आसादितं मया महाराजाधिरोहणयोग्यम्' इति संदिश्य प्रहितः। तदयम् अनुगृह्यताम् अधिरोहणेन'' इत्यभिधाय विरतवचसि वलाहके चन्द्रापीडः पितुः आज्ञां शिरसि कृत्वा, निर्जिगमिषुः अखिललक्षणोपेतम् अतिप्रमाणम् इन्द्रायुधम् अद्राक्षीत। दृष्ट्वा च तम् अदृष्टपूर्वम् अश्वरूपातिशयं नितरां चन्द्रापीडः विस्मितः बभूव। आसीच्चास्य मनसि– अतितेजस्वितया महाप्राणतया च सदैवतेव इयम् अस्य आकृतिः। यत् सत्यम् आरोहणे शङ्कामिव मे जनयति। देवतान्यपि हि शापवशात् शरीरान्तराणि अध्यासत एव। असंशयम् अनेनापि केनापि महात्मना शापभाजा भवितव्यम्। आवेदयतीव मदन्तःकरणम् अस्य दिव्यताम्।

शब्दार्थ– अयं = यह। ते = तुम्हारा। त्रिभुवनैकरत्नम् = तीनों लोकों में एक मात्र रत्न। तुरङ्गमः = घोड़ा। महाराजेन = महाराजा द्वारा। प्रेषित = भेजा गया। द्वारि = दरवाजे पर। तिष्ठति = खड़ा है। पारसीकाधिपतिना = फारस देश के राजा द्वारा। जलनिधि-जलात् = समुद्र के जल से। उत्पतितम् = निकले हुए। अयोनिजम् = योनि से पैदा न होने वाले। महाराजाधिरोहण-योग्यम् = महाराज की सवारी के योग्य। आसादितम् = पाया है। संदिश्य = संदेश देकर। प्रहित = भेजा है। अनुगृह्यताम् = कृपा करें। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। विरतवचंसि = चुप हो जाने पर। शिरसि कृत्वा = सिर पर धारण करके। निर्जिगमिषुः = जाने की इच्छा वाला। अखिललक्षणोपेतम् = सभी लक्ष्णों से युक्त। अतिप्रमाणाम् = बड़ी अकृति वाले। अद्राक्षीत् = देखा। अदृष्टपूर्वम् = पहले न देखे हुए। अश्वरूपातिशम् = घोड़े के रूप का अतिक्रमण करने वाले। नितराम् = अत्यन्त। आसीच्चास्य = हुआ, उसके। तेजस्वितया = तेजस्वी होने के कारण। महाप्राणतया = बहुत बलवान होने के कारण। सदैवतेव = देवता से युक्त। आरोहणे

= सवारी करने में। देवतान्यपि = देवता लोग भी। शापवशात् = शाप के कारण। शरीरान्तराणि = दूसरा शरीर। अध्यासत = धारण करते हैं। असंशयम् = निः संदेह। शापभाजा = शाप ग्रहण करने वाला। आवेदयतीव = बोलता रहा है। मदन्तःकरणम् = मेरा अन्तःकरण। दिव्यताम् = देवत्व।

हिन्दी अनुवाद– तुम्हारे लिए महाराजा द्वारा भेजा हुआ तीनों लोक में एक रत्न के समान इन्द्रायुध नाम का एक घोड़ा द्वार पर खड़ा है। महाराज ने यह संदेश भेजा है कि समुद्र के जल से उत्पन्न, अयोनिज (जिसका जन्म योनि से न हुआ हो) एवं महाराज की सवारी के योग्य इस श्रेष्ठ घोड़े को मैंने पारस (फारस) देश के राजा से प्राप्त किया है। इसलिए इस पर सवारी करके हमें अनुगृहीत करें। ऐसा कहकर वलाहक के चुप हो जाने पर चन्द्रापीड ने पिता की आज्ञा सिर पर धारण करके जाने की इच्छा से सभी लक्षणों से युक्त बहुत बड़ी आकृति वाले इन्द्रायुध को देखा। सामान्य घोड़ों की आकृति से विशेष आकृति रखने वाले तथा पहले कभी न देखे हुए उस घोड़े को देखकर चन्द्रापीड को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उसके मन में ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि अत्यन्त तेजस्विता एवं शक्ति के कारण इसकी आकृति देवताधिष्ठित-सी प्रतीत हो रही है जो सचमुच इस पर सवारी करने में मुझे शंकित कर रही है। देवता लोग भी शाप के कारण अन्य शरीर धारण करते ही हैं। निश्चय ही यह महात्मा किसी शाप में ग्रस्त हुआ है। मेरा मन इसकी दिव्यता को बतला रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– त्रिभुवनैकरत्नम् = त्रिभुवनेषु एक एव रत्नम्। पारसीकाधिपतिना = पारसीकस्य अधिपतिः तेन। अखिललक्षणोपेतम् = अखिल लक्षणैः उपेतम्। आसीच्चास्य आसीत्+च+अस्य। सदैवतैव = सदेवता+इव। देवतान्यपि = देवतानि+अपि। आवेदयतीव = आवेदयति+इव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'आवेदयतीव मदन्तःकरणम् अस्य दिव्यताम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मेरा अन्तःकरण (मन) इसकी दिव्यता (देवत्व भाव) को सूचित कर रहा है।
प्रश्न 3. महाराजेन प्रेषितः तुरङ्गस्य किं नाम आसीत्?
उत्तर– महाराजेन प्रेषितः तुरङ्गस्य इन्द्रायुध नाम आसीत्।
प्रश्न 4. इन्द्रायुध कीदृशीव आसीत्?
उत्तर– त्रिभुवनैकरत्नम् इव आसीत्।
प्रश्न 5. इन्द्रायुध नाम्नः तुरङ्गं केन अधिपतिना प्राप्नोति?
उत्तर– पारसीकाधिपतिना प्राप्नोति।

21. इति विचिन्तयन्नेव आरुरुक्षुः तं तुरङ्गमम् उपसृज्य, महात्मन्! अर्वन्! योऽसि सोऽसि। नमोऽस्तु ते। मर्षणीयोऽयम् आरोहणातिक्रमः इति आमन्त्रयांबभूव। विदिताभिप्राय इव सः इन्द्रायुधः तम् तिर्यक् चक्षुषा विलोक्य, हेषारवम् अकरोत्। अथानेन मधुरहेषितेन दत्ताभ्यनुज्ञ इव इन्द्रायुधम् आरुह्य चन्द्रापीडः तुरगान्तरारूढेन वैशम्पायनेन अनुगम्यमानः, प्रस्थाय सकुतूहलैः नागरलोकैः प्रणम्यमानः, राजगृहद्वारम् आसाद्य तुरगात् अवततार। अवतीर्य च करतले करे वैशम्पायनम् अवलम्ब्य, सविनयं पुरः प्रतिस्थितेन वलाहकेन उपदिश्यमानमार्गः, सप्तकक्षान्तराणि अतिक्रम्य, हंसधवले शयनतले निषण्णम् पितरम् अपश्यत्।

शब्दार्थ– विचिन्तयन्नेयेव = सोचते हुए। आरुरुक्षुः = चढ़ने की इच्छा वाला। उपसृत्य = पास में जाकर। अर्वन् = घोड़े। योऽसि सोऽसि = जो हो सो हो। नमोऽस्तु = नमस्कार है। मर्षणीयः = क्षमा के योग्य। आरोहणातिक्रमः = चढ़ने का अपराध। आमंत्रयाम्बभूव = आमन्त्रित किया। विदिताभिप्रायः = अभिप्राय समझ जाने वाले। तिर्यक् चक्षुषा = तिरछी निगाहों से। विलोक्य = देखकर। हेषारवम् = हिनहिनाने का शब्द। दत्ताभ्यनुज्ञः = आज्ञा दिया हुआ। तुरगान्तरारूढेन = दूसरे घोड़े पर सवार। अनुगम्यमानः = अनुसरण करने पर। प्रस्थाय = प्रस्थान करके। सकुतूहलैः = उत्सुकतापूर्ण। नागरलोकैः = नागरिक लोगों द्वारा। प्रणम्यमानः = प्रणाम किया जाने वाला। राजगृहद्वारम् = राजमहल के द्वारा पर। आसाद्य = पहुँचकर। तुरगात् = घोड़े से। अवततार = उतर

पड़ा। अवलम्ब्य = सहारा लेकर। सविनयम् = विनम्रता के साथ। पुनः = आगे। प्रस्थितेन = चलने वाले। उपदिश्यमानमार्ग = बताये गये मार्ग वाला। सप्तकक्षान्तराणि = सात ड्योढ़ियों को। अतिक्रम्य = पार करके। हंसधवले = हंस के समान उजले। शयनतले = शैया पर। निषण्णम् = बैठे हुए।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा विचार करता हुआ वह उस (घोड़े) पर सवार होने की इच्छा से उसके पास जाकर बोला– हे महात्मा घोड़े! आप चाहे जो हों, आपको नमस्कार है। सवारी करने के मेरे इस दोष को क्षमा करें। ऐसा कहकर उसे सवारी के लिए निमंत्रित किया। उसके अभिप्राय को समझ जाने वाले इन्द्रायुध ने उसे तिरछी निगाहों से देखा और हिनहिनाने की आवाज की। इस मधुर हिनहिनाहट से मानो उसने सवारी करने की आज्ञा दे दी। चन्द्रापीड ने इन्द्रायुध पर सवार होकर प्रस्थान किया। दूसरे घोड़े पर सवार वैशम्पायन भी उसके पीछे-पीछे चला। उत्सुकता से पूर्ण नागरिकों के प्रणाम को स्वीकार करता हुआ वह राजमहल के द्वार पर पहुँचकर घोड़े से उतर पड़ा और वैशम्पायन का हाथ पकड़े हुए विनम्रता के साथ आगे-आगे चलने वाले वलाहक द्वारा बताये गये मार्ग से सात ड्योढ़ियों को पार करके उसने हंस के समान उजली शैया पर बैठे हुए अपने पिता को देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– विदिताभिप्रायः = विदित अभिप्रायः। उपदिश्यमानमार्ग = उपदिश्यमानः मार्गः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत्।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>मर्षणीयोऽयम् आरोहणातिक्रमः इति आमन्त्रयांबभूव</u>।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– सवारी करने के मेरे इस अपराध को क्षमा करें। ऐसा कहकर उसे सवारी के लिए निमंत्रित किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन अनुगम्यमानः?

उत्तर– चन्द्रापीडः वैशम्पायनेन अनुगम्यमानः।

प्रश्न 4. केन उपदिश्यमानमार्गः?

उत्तर– वलाहकेन उपदिश्यमानमार्गः।

प्रश्न 5. हंसधवले शयनतले किम् अपश्यत्?

उत्तर– हंसधवले शयनतले पितरम् अपश्यत्।

22. दृष्ट्वा च तम् अतिदूरावनतेन शिरसा प्रणनाम्। तारापीडस्तु तम् 'एहि एहि' इत्यभिदधानः दूरादेव प्रसारितभुजयुगलः सुदृढम् आलिलिङ्ग। आलिङ्गितोन्मुक्तश्च चन्द्रापीडः पितुः चरणसमीपे क्षितितल एव निषसाद। मुहूर्तमिव स्थित्वा पिता विसर्जितः मातरम् उपसृत्य प्रणम्य वैशम्पायनद्वितीयः शुकनासं द्रष्टुम् अयासीत्। द्वारदेश एवं अवस्थाप्य तुरङ्गमम् उपदर्शितविनयः प्रविश्य भवनं दूरावनतेन मौलिना शुकनासं ववन्दे। शुकनासः ससम्भ्रमम् उत्थाय गाढम् आलिलिङ्ग। अथ तेन सबहुमानम् आशीर्भिः अभिनन्द्य विसर्जितः स्वभवनम् आजगाम। तत्र स्नानादिकाः क्रियाः कृत्वा तं दिवसम् अत्यवाहयत्।

शब्दार्थ– अतिदूरावनतेन = अत्यन्त दूर से झुके हुए। शिरसा = सिर से। प्रणनाम = प्रणाम किया। एहि एहि = आओ आओ। इत्यभिदधानः = ऐसा कहते हुए। प्रसारितभुजयुगलः = दोनों भुजाएँ फैलाकर। सुदृढ़म् = मजबूती से। आलिलिंग = आलिंगन किया। आलिंगितोन्मुक्तश्च = आलिंगन से छूटे हुए। क्षितितले = पृथ्वी पर। निषसाद = बैठ गया। मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। स्थित्वा = ठहरकर। विसर्जितः = विदा पाकर। अपसृत्य = जाकर। अयासीत् = चला गया। अवस्थाप्य = खड़ा करके। उपदर्शितविनयः = विनय दिखाते हुए। दूरावनतेन = दूर ही से झुके हुए। मौलिना = सिर से। वन्दे = प्रणाम किया। ससम्भ्रमम् = सहसा। उत्थाय = उठकर। गाढम् = दृढ़ता के साथ। सबहुमानम् = आदर के साथ। आशीर्भिः = आशीर्वादों से। अभिनन्द्य = सत्कार करके। विसर्जित = विदा पाकर। आजगाम = आया। अत्यवाहयत् = बिताया।

हिन्दी अनुवाद– उसे देखकर दूर ही से झुके हुए सिर से प्रणाम किया। तारापीड ने आओ-आओ कहते हुए दूर ही से अपनी भुजाएँ फैलाकर उसे दृढ़ता के साथ हृदय से लगा लिया। आलिंगन से छूटा हुआ चन्द्रापीड पिता के चरणों के पास पृथ्वी

पर ही बैठ गया। थोड़ी देर ठहरकर और पिता से विदा पाकर वह माँ के पास गया और प्रणाम करके वैशम्पायन के साथ शुकनास को देखने के लिए चल दिया। दरवाजे पर ही घोड़े को रोककर बड़ी विनम्रता के साथ महल में जाकर उसने दूर से झुके हुए सिर से शुकनास को प्रणाम किया। शुकनास ने झटके से उठकर उसे गले से लगा लिया। चन्द्रापीड आदर के साथ दिये गये आशीर्वादों से सत्कृत होकर अपने महल में चला आया और स्नानादि कार्य करके उस दिन को व्यतीत किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यभिदधान = इति+अभिदधानः। प्रसारितभुजयुगलः = प्रसारितम् भुजयुगलम् येन सः। उपदर्शितविनयः = उपदर्शितः विनयः येन सः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. **उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. **'मुहूर्तमिव स्थित्वा पिता विसर्जितः मातरम् उपसृत्य प्रणम्य वैशम्पायनद्वितीयः शुकनासं द्रष्टुम् अयासीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– थोड़ी देर ठहरकर और पिता से विदा पाकर वह माँ के पास गया और प्रणाम करके वैशम्पायन के साथ शुकनास को देखने चल दिया।

प्रश्न 3. **तारापीडः कस्य आलिंगम् अकरोत्?**

उत्तर– तारापीडः चन्द्रापीडस्य आलिङ्गम् अकरोत्।

प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः कुत्र निषसाद?**

उत्तर– चन्द्रापीडः पितुः चरणंसमीपे क्षिततले निषसाद।

प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः केन द्रष्टुम् अयासीत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः वैशम्पायेन सह शुकनासं द्रष्टुम् अयासीत्।

23. अपरेद्युश्च प्रभाते सर्वान्तः पुराधिकृतिः कैलासनामा कञ्चुकी रक्तांशुकेन रचितावगुण्ठनया महानुभावाकारया कन्यकया अनुगम्यमानः समुपसृत्य चन्द्रापीड विज्ञापयामास। कुमार, महादेवी विलासवती समाज्ञापयति–इयं खलु कन्यका, महाराजेन पूर्वं कुलूतराजधानीम् अवजित्य, कुलूतेश्वरदुहिता पत्रलेखाभिधाना बालिका सती बन्दीजनेन सह आनीय अन्तःपुरपरिचारिकामध्यम् उपनीता। सा मया 'विगतनाथा राजदुहिता' इति समुपजातस्नेहया दुहितृनिर्विशेषम् उपलालिता संवर्धिता च। तदियम् इदानीम् 'उचिता भवतः ताम्बूलकरङ्कवाहिनी' इति कृत्वा मया प्रेषिता। न चास्याम् आयुष्मता परिजनसामान्यदृष्टिना भक्तिवयम्। स्वचित्तवृत्तिरिव सा चापलेभयः निवारणीया। शिष्येव द्रष्टव्या। अविदितशीलश्चास्याः कुमारः इति संदिश्यते। सर्वथा तथा प्रयतितव्यम् यथेयम् अतिचिरम् उचिता परिचारिका ते भवति। इत्यभिधाय विरतवचसि कैलासे, चन्द्रापीडः 'यथाज्ञापयत्यम्बा' इत्युक्त्वा तं प्रेषयामास। पत्रलेखा तु, ततः प्रभृति समुपजातसेवारसा, सर्वदा राजसूनोः पार्श्वं न मुमोच।

शब्दार्थ– अपरेद्युः = दूसरे दिन। प्रभाते = प्रातः समय। सर्वान्तः पुराधिकृतः = सारे रनिवास का अधिकारी। रक्तांशुकेन = लाल कपड़े से। रचितावगुण्ठनया = घूँघट डाले हुए। महानुभावाकारया = गम्भीर आकृति वाली। समुपसृत्य = पास में आकर। विज्ञापयामास = निवेदन किया। अवजित्य = जीतकर। कुलूतेश्वरदुहित = कुलूत के राजा की पुत्री। बन्दीजनेन सह = कैदियों के साथ। आनीय = लाकर। अन्तःपुरपरिचारिकामध्यम् = रनिवास की सेविकाओं के बीच। उपनीता = नियुक्त किया। विगतनाथाः = अनाथ। समुपजातस्नेहया = प्रेम उत्पन्न होने के कारण। दुहितृनिर्विशेषम् = पुत्री के समान। उपलालिता = लाड़ प्यार की गई। संवर्धिता = बड़ी की गई। उचिता = योग्य। भवतः = आपकी। ताम्बूलकरङ्कवाहिनी = पानदान लेकर चलने वाली। कृत्वा = ऐसा नियुक्त करके। प्रेषितः = भेजी गई है। परिजनसामान्यदृष्टिना = साधारण सेविका जैसी दृष्टि से। स्वचित्तवृत्तिरिव = अपनी भावनाओं के समान। चापलेभयः = चंचलता से। निवारणीया = रोकना। अविदितशीलश्चास्याः = इसके शील को नहीं जानते। प्रयतितव्यम् = प्रयत्न करें। यथेयम् = जिससे यह। उचिता परिचारिका = योग्य सेविका। इत्थभिधाय = ऐसा कहकर। यथाज्ञापयत्यम्बा = माँ की जैसी आज्ञा। इत्युक्त्वा = ऐसा कहकर। ततः प्रभृति = उसी समय से। समुपजातसेवारसा = सेवा का आनन्द प्राप्त करने वाली। राजसूनोः = राजपुत्र का। पार्श्वम् = साथ। मुमोच = छोड़ा।

हिन्दी अनुवाद– दूसरे दिन प्रातःकाल कैलाश नाम का रनिवास का एक अधिकारी लाल कपड़े का घूँघट डाले हुए अपने पीछे-पीछे आने वाली अत्यन्त गम्भीर आकृति की कन्या के साथ चन्द्रापीड के पास आकर बोला– कुमार, महादेवी ने आज्ञा दी है कि महाराज ने कुलूत देश को जीतकर उस देश के राजा की पुत्री पत्रलेखा को कैदियों के साथ यहाँ लाकर रनिवास की सेविकाओं के बीच नियुक्त कर दिया था। उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति प्रेम हो गया। मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोस कर बड़ा किया है। 'अब यह पानदान का डिब्बा लेकर चलने वाली तुम्हारी योग्य सेविका बने' ऐसा सोचकर भेजा है। आयुष्मान् उसके प्रति साधारण सेविका की दृष्टि न रखें और अपनी भावनाओं के समान ही इसे भी चंचलता से रोकें। इसे अपनी शिष्या के समान देखें। राजकुमार इसके शील स्वभाव को नहीं जानते इसलिए संदेश भेजा जा रहा है। सर्वदा ऐसा प्रत्यन करें जिससे बहुत दिनों तक यह आपकी योग्य सेविका बनी रहे। ऐसा कहकर कैलाश के चुप हो जाने पर चंद्रापीड ने कहा कि माँ की जैसी आज्ञा यह कहकर उसने कैलाश को भेज दिया। उसी समय से सेवा का आनन्द प्राप्त कर लेने वाली पत्रलेखा ने राजपुत्र का साथ कभी नहीं छोड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– रचितावगुण्ठनया = रचितम् अवगुण्ठनम् यया तया। समुपजातस्नेहया = समुपजातः स्नेहः यस्यां तया। ताम्बूलकरङ्कवाहिनी = ताम्बूलस्य करङ्कं या वहति सा। यथेयम् = यथा + इयम्। यथाज्ञापयत्यम्बा = यथा+आज्ञापयति+अम्बा। इत्युक्त्वा = इति+उक्त्वा।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "सा मया 'विगतनाथा राजदुहिता' इति समुपजातस्नेहया दुहितृनिर्विशेषम् उपलालिता संवर्धिता च।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति सहज स्नेह उत्पन्न होने के कारण मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोसकर बड़ा किया।

प्रश्न 3. पुराधिकृतिः किम् नाम आसीत्?

उत्तर– पुराधिकृतिः कैलास नाम आसीत्।

प्रश्न 4. कुलूतराजधानीं कः अविजित्?

उत्तर– महाराज तारापीडेन कुलूतराधानीम् अविजित्।

प्रश्न 5. पत्रलेखा का आसीत्?

उत्तर– कुलूतेश्वर दुहिता आसीत्।

प्रश्न 6. चन्द्रापीडस्य ताम्बूलकरङ्कवाहिनी का आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य ताम्बूलकरङ्कवाहिनी पत्रलेखा आसीत्।

24. एवं समतिक्रामस्तु केषुचित् दिवसेषु, राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः, प्रतीहारान् उपकरणसम्भारसंग्रहार्थम् आदिदेश। अथ सम्पादितेषु सर्वोपकरणेषु, पुरोधसा राज्याभिषेकमङ्गलानि अशेषाणि निर्वर्त्य नरपतिः शुकनासेन हंस स्वयम् उत्क्षिप्तमङ्गलकलशः, सर्वेभ्यः तीर्थेभ्यः समाहृतेन मन्त्रपूतेन वारिणा सुतम् अभिषिषेच। अभिषेकसलिलार्द्रदेहः चन्द्रापीडः सभामण्डपम् उपगम्य, सर्वतः 'जय जय' इति समुद्घुष्यमाणजयशब्दः सिंहासनम् आरुरोह।

शब्दार्थ– समतिक्रामत्सु = बीतने पर। केषुचित् = कुछ। यौवराज्याभिषेकम् = युवराज पद पर अभिषेक। चिकीर्षुः = करने की इच्छा से। प्रतीहारान् = प्रतिहारियों को। उपकरणसम्भारसंग्रहार्थम् = (पुरोहित द्वारा) आवश्यक सामग्री एकत्र कर लेने हेतु। सर्वोपकरणेषु = सारी सामग्री। अशेषाणि = सम्पूर्ण। निवर्त्य = पूरा करके। उत्क्षिप्तमंगलकलशः = मंगलकलश उठाकर। समाहृतेन = लाये गये। मन्त्रपूतेन = मंत्रों से पावन। वारिणा = जल से। अभिषिषेच = अभिषिक्त किया। अभिषेक- सलिलार्द्रदेहः = अभिषेक के जल से भीगे शरीरवाले। उपगम्य = जाकर। समुद्घुष्यमाणः जयशब्दः = जिसकी जयकार की गई हो। आरुरोह = बैठा।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर राजा चन्द्रापीड को युवराज पद पर अभिषेक करने की इच्छा से प्रतिहारियों को बुलाकर आवश्यक सामग्री जुटाने का आदेश दिया। इसके पश्चात् सभी सामग्री इकट्ठा हो जाने पर पुरोहित ने राज्याभिषेक के सभी मंगल कार्यों को पूरा किया। तब राजा ने शुकनास के साथ स्वयम् मंगलघट को उठाकर सभी तीर्थों से लाये गये मंत्रों से पवित्र जल से पुत्र का अभिषेक किया। अभिषेक के जल से भीगे शरीर वाला चन्द्रापीड सभामंडप में आकर सिंहासन पर बैठा, जहाँ चारों ओर से उसके जयकार की घोषणा हो रही थी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपकरणसम्भारसंग्रहार्थम् = उपकरणस्य संभारः तस्य संग्रहार्थम्। उत्क्षिप्तमंगलकलशः = उत्क्षिप्तः मंगलस्य कलशः येन सः। मंत्रपूतेन = मंत्रैः पूतं तेन। अभिषेकसलिलार्द्रदेहः = अभिषेकस्य सलिलेन आर्द्रः यस्य देहः सः। समुद्घुष्यमाणः जयशब्दः = समदुघुष्यमाणः जयशब्द यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अभिषेकसलिलार्द्रदेहः चन्द्रापीडः सभामण्डपम् उपगम्य, सर्वतः 'जय जय' इति समुद्घुष्यमाणजयशब्दः सिंहासनम् आरुरोह।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अभिषेक के जल से भीगे शरीर वाला चन्द्रापीड सभा मण्डप के पास आकर बैठा, जहाँ सभी दिशाओं से उसके जयकार की घोषणा हो रही थी।

प्रश्न 3. राजा कस्य यौवराज्याभिषेकम् आदिदेश?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकम् आदिदेश।

प्रश्न 4. राजा कान् उपकरणसम्भार संग्रहार्थम् आदिदेश?

उत्तर– राजा प्रतीहारान् उपकरणसम्भार संग्रहार्थम् आदिदेश।

प्रश्न 5. राजा केन सह मन्त्रपूतेन वारिणा सुतम् अभिषिषेच?

उत्तर– राजा शुकनासेन सह मन्त्रपूतेन वारिणा सुतम् अभिषिषेच।

25. अथ दिग्विजयाय प्रस्थितः चन्द्रापीडः महता बलसमूहेन वैशम्पायनेन च अनुगम्यमानः प्रदक्षिणीकृत्य वसुधां परिभ्रमन् प्रथमं प्राचीम्, ततः त्रिशङ्कुतिलकाम्, ततो वरुणलाञ्छनां, अनन्तरं सप्तर्षिताराशबलां दिशं विजिग्ये। तत्र तत्र शरणागतान् रक्षन्, उपायनानि प्रतीच्छन्, देशव्यवस्थाः स्थापयन्, अग्रजन्मनः पूजयन्, यशः विस्तारयन्, पृथिवीं विचचार। एवं क्रमेण अवजितसकलभुवनतलः कदाचित् किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं पूर्वजलनिधेः नातिविप्रकृष्टं जित्वा जग्राह। तत्र च निजबलस्य विश्रामहेतोः कतिपयान् दिवसान् अतिष्ठत्।

शब्दार्थ– दिग्विजयाय = दिग्विजय के लिए। प्रस्थितः = प्रस्थान करने वाला। बलसमूहेन = सेनाओं से। प्रदक्षिणीकृत्य = प्रदक्षिणा करके। वसुधाम् = पृथ्वी की। परिभ्रमन् = भ्रमण करते हुए। प्राचीम् = पूर्व दिशा। त्रिशङ्कुतिलकाम् = त्रिशाङ्कु (दक्षिण दिशा) से सुशोभित। वरुणलाञ्छनान् = वरुण से चिह्नित अर्थात् पश्चिम दिशा। सप्तर्षिताराशबलाम् = सप्तर्षि तारों से सुशोभित अर्थात् उत्तर दिशा। विजिग्ये = जीत लिया। शरणागतान् = शरण में आये हुए को। रक्षन् = रक्षा करते हुए। उपायनानि प्रतीच्छन् = भेंट स्वीकार करते हुए। विचचार = विचरण किया। अवजितसकलभुवनतलः = सारी पृथ्वी को जीतने वाला। कदाचित् = किसी समय। किरातानाम् = किरातों के। पूर्वजलनिधेः = पूर्व समुद्र से। नातिविप्रकृष्टम् = अत्यन्त दूर नहीं, अर्थात् समीप। जित्वा = जीतकर। जग्राह = अधिकार में कर लिया। निजवलस्य = अपनी सेना के। विश्रामहेतोः = विश्राम के लिए। कतिपयान् = कुछ। अतिष्ठत् = ठहरा।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद बहुत बड़ी सेना तथा वैशम्पायन के साथ दिग्विजय के लिए प्रस्थान करने वाले चन्द्रापीड ने सारी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते हुए पहले पूर्व दिशा फिर दक्षिण दिशा, फिर पश्चिम दिशा, फिर उत्तर दिशा को जीत लिया। वहाँ शरणागतों की रक्षा करते हुए, भेंट स्वीकार करते हुए, देशों में व्यवस्था स्थापित करते हुए, ब्राह्मणों की पूजा करते हुए,

कीर्ति का विस्तार करते हुए उसने सारी पृथ्वी का भ्रमण किया। इस प्रकार सारी पृथ्वी को जीतकर किसी समय उसने पूर्व समुद्र के समीप किरातों की निवास भूमि सुवर्णपुर को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ वह अपनी सेना के विश्राम के लिए कुछ दिन ठहरा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– त्रिशङ्कुतिलकाम् = त्रिशङ्कुः तिलकः यस्यास्ताम्। वरुणलाञ्छनाम् = वरुणः लाञ्छनः यस्याः ताम्। सप्तर्षिताराशबलाम् = सप्तर्षिभिः ताराभिः शबला या ताम्। अवजितसकलभुवनतलः = अवजितम् सकलभुवनतलम् येन सः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत्।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **'एवं क्रमेण अविजितसकलभुवनतलः कदाचित् किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं पूर्वजलनिधेः नातिविप्रकृष्ट जित्वा जग्राह।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला (वह चन्द्रापीड) किसी समय पूर्व समुद्र के समीप में स्थित किरातों की निवास भूमि सुवर्णपुर को भी जीतकर अपने अधीन कर लिया।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः केन सह अनुगम्यमानः दिशं विजिग्ये?**

उत्तर– चन्द्रापीडः बलसमूहेन वैशम्पायनेन च अनुगम्यमानः दिशं विजिग्ये।

प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः कस्य रक्षाम् अकरोत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः शरणागतान् रक्षाम् अकरोत्।

प्रश्न 5. **किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं कः जित्वा जग्राह?**

उत्तर– चन्द्रापीडः किरातानां निवासस्थानं सुवर्णपुरं जित्वा जग्राह।

26. एकदा तु तत्रस्थ एव इन्द्रायुधम् आरुह्य, मृगयानिर्गतः विचरन् काननम् शैलशिखरात् यदृच्छया अवतीर्णम् किन्नरमिथुनम् अद्राक्षीत्। अपूर्वदर्शनतया तु समुपजातकुतूहलः कृतग्रहणाभिलाषः तत्समीपम् उपसर्पन् अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासात् पलायमानं तत् सुदूरम् अनुससार। इदं गृहीतम्, इदं गृहीतम् इति अतिरभसाकृष्टचेताः महाजवतया तुरङ्गस्य तस्मात् प्रदेशात् असहायः पञ्चदशयोजनमात्रम् संमुखापतितम् अत्युच्छ्रितम् अचलशिखरम् आरुरोह।

शब्दार्थ– तत्रस्थ एव = वहीं रहते हुए। आरुह्य = सवार होकर। मृगयानिर्गतः = शिकार के लिए निकला हुआ। विचरन् = घूमता हुआ। काननम् = जंगल। शैलशिखरात् = पर्वत की चोटी से। यदृच्छया = स्वेच्छा से। अवतीर्णम् = उतरे हुए। किन्नरमिथुनम् = किन्नरों के जोड़े को। अद्राक्षीत् = देखा। अपूर्वदर्शनतया = पहले न देखने के कारण। समुपजातकुतूहलः = उत्पन्न कौतूहल वाला। कृतग्रहणाभिलाषः = पकड़ने की इच्छा रखनेवाला। उपसर्पन् = जाते हुए। अदृष्ट पूर्व पुरुषदर्शनत्रासात् = पहले न देखे हुए पुरुष को देखने के भय से। पलायमानम् = भाग जाने वाले। अनुससार = पीछा किया। इदं गृहीतम् = यह पकड़ा। अतिरभसाकृष्टचेताः = बहुत वेग से आकृष्ट चित्तवाला। महाजवतया = बहुत वेग के कारण। तुरंगस्य = घोड़े के। असहायः = अकेला। पंचदशयोजनामात्रम् = पन्द्रह योजना। सम्मुखापतितं = सामने दिखाई देने वाले। अत्युच्छ्रितम् = अत्यन्त ऊँचे। अचलशिखरम् = पहाड़ की चोटी पर। आरुरोह = चढ़ गया।

हिन्दी अनुवाद– वहीं रहते हुए एक बार इन्द्रायुध पर चढ़कर, शिकार के लिए निकलकर वन में घूमते हुए राजकुमार ने पर्वत की चोटी से अपनी इच्छा से उतरे हुए एक किन्नर के जोड़े को देखा। पहले कभी न देखने के कारण अत्यन्त उत्सुक होकर वह उसे पकड़ने की इच्छा से उसके पास गया और पहले कभी न देखे गये पुरुष को देखकर भागने वाले उस जोड़े का बहुत दूर तक पीछा किया। यह पकड़ा, यह पकड़ा इस प्रकार शीघ्रता में मग्न हुआ चन्द्रापीड घोड़े की अत्यन्त तेज चाल के कारण अकेले ही उस स्थान से पन्द्रह योजन की दूरी पर सामने पड़ने वाले बहुत ऊँचे पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समुपजातकुतूहलः = समुपजातं कुतूहलम् यस्य सः। कृतग्रहणाभिलाषः = कृता ग्रहणस्य अभिलाषा येन सः। अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासात् =अदृष्टपूर्वस्य पुरुषस्य दर्शनेन त्रासः तस्मात्। अतिरभसाकृष्टचेताः = अतिरभसा आकृष्टन् चेतः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अपूर्वदर्शनतया तु समुपजातकुतूहलः कृतग्रहणाभिलाषः तत्समीपम् उपसर्पन् अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासात् पलायमानं तत् सुदूरम् अनुससार।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पहले कभी न देखने के कारण अत्यन्त उत्सुक होकर वह उसे पकड़ने की इच्छा से उसके पास गया और पहले कभी न देखे गये पुरुष को देखकर भागने वाले उस जोड़ों का बहुत दूर तक पीछा किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः किम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः किन्नरमिथुनम् अद्राक्षीत्।

प्रश्न 4. अपूर्व दर्शनतया कः समुपजातकुतूहलः?

उत्तर– चन्द्रापीडः अपूर्वदर्शनतया समुपजातकुतूहलः।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुतः आरुरोह?

उत्तर– चन्द्रापीडः अचलशिखरम् आरुरोह।

27. आरूढे च तस्मिन् शनैः शनैः ततः दृष्टिं निवर्त्य, प्रस्तरप्रतिहतगतिप्रसरः, श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् इन्द्रायुधम् आत्मानं च अवलोक्य, स्वयमेव विहस्य अचिन्तयत्–अहो मे निरर्थकव्यापारेषु अभिनिवेशः, अहो मे मूर्खतायाः प्रकारः, अहो मे बालिशचरितेषु आसक्तिः, किमनेन गृहीतेन किन्नरयुगलेन प्रयोजनम्? कस्मात् अहम् आविष्ट इव निजपरिवारान् उत्सृज्य, भूमिम् एतावतीम् आयातः। न जाने कियताध्वना विच्छिन्नम् इतः बलम् अनुयायि मे। न चागच्छता मया किन्नरमिथुने बद्धदृष्टिना महावनेऽस्मिन् पन्थाः निरूपितः, येन प्रतिनिवृत्य यास्यामि। न चास्मिन् प्रदेशे परिभ्रमता मया मर्त्यः कश्चित् आसाद्यते, यः सुवर्णपुरगामिनं पन्थानम् उपदेक्ष्यति। श्रुतं च मया बहुशः कथ्यमानम्–'उत्तरेण सुवर्णपुरं निर्मानुषम् अरण्य, तच्चातिक्रम्य कैलासगिरिः इति' अयं च कैलास।

शब्दार्थ– आरूढे च तस्मिन् = उसके चढ़ जाने पर। शनैः शनैः = धीरे-धीरे। ततः = वहाँ से। दृष्टिं निवर्त्य = निगाहें हटाकर। प्रस्तरप्रतिहतगतिप्रसरः = पत्थरों के कारण रुकी हुई गतिवाला। श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् = पसीने से भीगे शरीरवाले। आत्मानम् = अपने को। अवलोक्य = देखकर। विहस्य = हँसकर। अचिन्तयत् = विचार किया। निरर्थकव्यापारेषु = व्यर्थ के कार्यों में। अभिनिवेशः = हठ बालिशचरितेषु = मूर्खों जैसे कार्य में। गृहीतेन = पकड़ने से। आविष्ट इव = भूतप्रेत से वशीभूत जैसा। निजपरिवारान् = अपने परिवार के लोगों को। उत्सृज्य छोड़कर। एतावतीम् = इतनी। आयातः = आया हूँ। कियताध्वना = कितने मार्ग से, कितनी दूर विच्छिन्नम् = छूट गये हैं। आगच्छता = आते हुए। बद्धदृष्टिना = नजर बाँधे हुए। निरूपितः = देखा। प्रतिनिवृत्य = लौटकर। यास्यामि = जाऊँगा। मर्त्यः = मनुष्य। आसाद्यते = मिलेगा। उपदेक्ष्यति = दिखायेगा। बहुशः = बहुत लोगों के। कथ्यमानम् = कहते हुए। निर्मानुषम् = मनुष्य रहित। अरण्यम् = जंगल। तच्चातिक्रम्य = उसे पार करके।

हिन्दी अनुवाद– उसके (किन्नर जोड़े के) चोटी पर चढ़ जाने पर उधर से अपनी निगाहें हटाकर पत्थरों के कारण आगे बढ़ने में असमर्थ चन्द्रापीड पसीने से लथपथ घोड़े तथा अपने को देखकर स्वयं ही हँसते हुए विचार करने लगा– इस प्रकार के व्यर्थ के काम में मेरे हठ, मेरी इस मूर्खता पर और मूर्खों के कार्य में मेरे इस प्रकार आसक्त हो जाने पर मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा है। इस किन्नर जोड़े को पकड़ने से मेरा कौन-सा प्रयोजन सिद्ध होता है? मैं कैसे भूतप्रेतों के वश में पड़ा हुआ-सा अपने परिवार वालों को छोड़कर इतनी दूर चला आया। पता नहीं यहाँ से कितनी दूर मेरे अनुयायी और मेरे सैनिक छूट गये हैं। आते समय किन्नर जोड़े पर निगाहें लगाये रहने के कारण इस घने जंगल में मैंने मार्ग का भी ध्यान नहीं रखा जिससे लौट चलूँ। इस प्रान्त में मुझे कोई मनुष्य भी नहीं मिलेगा जो मुझे सुवर्णपुर का रास्ता बतायेगा। मैंने बहुत से लोगों को कहते हुए सुना है कि– सुवर्णपुर के उत्तर में मनुष्य-रहित जंगल है और उसको पार करने के बाद कैलास पहाड़ है। तो क्या यह कैलास है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रस्तरप्रतिहतगतिप्रसरः = प्रस्तरेण प्रतिहतः गतिप्रसरः यस्य सः। श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् = श्रमस्य स्वेदैः आर्द्रशरीरम् यस्य तम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'अहो मे निरर्थकव्यापारेषु अभिनिवेशः, अहो मे मूर्खतायाः प्रकारः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस प्रकार के व्यर्थ के कार्यों में मेरा (यह) आग्रह, अहो मेरी मूर्खता का यह कैसा प्रकार है।
प्रश्न 3. श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् कः?
उत्तर– श्रमस्वेदार्द्रशरीरम् चन्द्रापीडः।
प्रश्न 4. कः अचिन्तयत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः अचिन्तयत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः विहस्य किम् अचिन्तयत्?
उत्तर– अहो मे निरर्थक व्यापारेषु अभिनिवेशः।

28. तदिदानीं प्रतिनिवृत्य एकाकिना स्वयम् उत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य दक्षिणाम् आशां केवलम् अङ्गीकृत्य गन्तव्यम्। आत्मकृतनां हि दोषाणां नियतम् अनुभवितव्यं फलम् आत्मनैव। अयम् अधुना भगवान् भानुः नभोमध्यम् अलङ्करोति। परिश्रान्तश्चायम् इन्द्रायुधः। तदेनम् आगृहीतकतिपयदूर्वाप्रवालकवलम् कस्मिश्चित् सरसि स्नातपीतोदकम् अपनीतश्रमं कृत्वा, स्वयं च सलिलं पीत्वा, कस्यचित् तरोः अधः छायायां मुहूर्तमात्रं विश्रम्य ततः गमिष्यामि– इति चिन्तयित्वा सलिलम् अन्वेषमाणः, मुहुर्मुहुः इतस्ततः दत्तदृष्टिः पर्यटन्, जलावगाहोत्थितस्य अचिरात् अपक्रान्तस्य महतः गिरिवरस्य वनगजयूथस्य चरणोत्थापितः पङ्कपटलैः आर्द्रीकृतं मार्गम् अद्राक्षीत्। उपजातजलाशयशङ्कश्च तं प्रतीपम् अनुसरन् कैलासतलेन कञ्चित् अध्वानं गत्वा, तस्यैव कैलासशिखरिणः पूर्वोत्तरे दिग्भागे, तरुषण्डमेकम् अत्यायतं प्रविश्य, तस्य मध्यभागे, स्वच्छसलिलतया, आपूर्णपर्यन्तमपि रिक्तमिव उपलक्ष्यमाणम् अतिमनोहरम् अखिलेन्द्रियाह्लादनसमर्थम् अच्छोदं नाम सरो दृष्टवान्।

शब्दार्थ– तदिदानीम् = तो अब। एकाकिना = अकेले। उत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य = अनुमान करके। आशाम् = दिशा को। अंगीकृत्य = स्वीकार करके। आत्मकृतानाम् = अपने किये हुए। नियतम् = निश्चय ही। अनुभवितव्यम् = भोगना होगा। अधुना = इस समय। भानुः = सूर्य। नभोमध्यम् = आकाश के बीच। अलंकरोति = सुशोभित हो रहे हैं। परिश्रान्तः = थका हुआ है। आगृहीत-कतिपयदूर्वाप्रवालकवलम् = दूब के कुछ नरम-नरम कवल को ग्रहण करने वाले। कस्मिंश्चित् = किसी। सरसि = तालाब में। स्नातपीतोदकम् = स्नान करने वाले, पानी पीये हुए। अपनीतश्रमम् = थकान रहित। अधः = नीचे। चिन्तयित्वा = सोचकर। अन्वेषमाणः = खोजते हुए। मुहुर्मुहुः = बार-बार। इतस्ततः = इधर-उधर। दत्तदृष्टिः = दृष्टि डालते हुए। पर्यटन = घूमते हुए। जलावगाहोत्थितस्य = जल में स्नान करके निकले हुए। अचिरात् = शीघ्र ही। अपक्रान्तस्य = गए हुए। गिरिवरस्य = पहाड़ के समान। वनगजयूथस्य = जंगली हाथियों के झुण्ड के। चरणोत्थापितैः = चरणों से उठाई गई। पङ्कपटलैः = कीचड़ के समूह से। आर्द्रीकृतम् = गीले किये गये। मार्गम् = रास्ते को। अद्राक्षीत् = देखा। उपजातजलाशयशङ्कश्च = जिसे जलाशय की शंका उत्पन्न हो गई है। प्रतीयम् = विरुद्ध। अनुसरन् = जाते हुए। कञ्चित् = कुछ। अध्वानम् = मार्ग। कैलाशशिखरिणः = कैलाश के। पूर्वोत्तरे दिग्भागे = पूर्व उत्तर की ओर। तरुषण्डमेकम् = एक वृक्षों के समूह। अत्यायतम् = बहुत बड़े। प्रविश्य = प्रवेश करके। मध्यभागे = बीच में। स्वच्छसलिलतया = स्वच्छजल के कारण। आपूर्णपर्यन्तमपि = ऊपर तक भरे होने पर भी। रिक्तमिव = खाली जैसा। उपलक्ष्यमाणम् = दिखाई पड़ने वाले। अखिलेन्द्रियाह्लादनसमर्थम् = सभी इन्द्रियों को आनन्दित करने में समर्थ। सरो = तालाब। दृष्टवान् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– इसलिए अब अकेले लौटकर अनुमान करके दक्षिण दिशा की ओर चलना चाहिए। अपने किये गये दोषों का फल स्वयं निश्चय ही भोगना पड़ता है। इस समय भगवान सूर्य भी आकाश के बीच में सुशोभित हो रहे हैं। यह इन्द्रायुध भी थक चुका है। अतः इसे कोमल-कोमल दूबों के कुछ ग्रास खा लेने पर इसे स्नान कराकर तथा जल पिलाकर थकान रहित करके और स्वयं भी जल पीकर किसी पेड़ के नीचे छाया में थोड़ी देर विश्राम करके तब चलूँगा। चन्द्रापीड इस प्रकार सोचकर जल की खोज में बार-बार इधर-उधर निगाहें दौड़ाते हुए घूमने लगा कि इसी बीच उसने जल में डुबकी लगाकर निकले तथा शीघ्र

ही गये हुए पर्वत जैसा जंगली हाथियों के झुण्ड के पैरों से उठे हुए कीचड़ से भीगे रास्ते को देखा। उसे देखकर (समीप में ही) जल मिलने का सन्देह होने पर उसके विपरीत दिशा में चलते-चलते कैलाश पहाड़ के उत्तर-पूर्व की ओर एक बहुत बड़े वृक्षों के समूह में प्रवेश करके उसके बीच अच्छोद नाम के तालाब को देखा, जो जल की स्वच्छता के कारण भरा होने पर भी खाली दिखाई पड़ता था और सभी इन्द्रियों को आनन्दित कर रहा था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आगृहीतकतिपयदूर्वाप्रवालकवलम् = आगृहीतानि। कतिपयानि दूर्वाणाम् प्रवालस्य कवलानि येन तम्। जलावगाहोत्थितस्य = जलावगाहात् उत्थितस्य। चरणोत्थापितैः = चरणैः उत्थापितैः। उपजातजलाशयशङ्कश्च = उपजाता जलाशयस्य शङ्का यस्मिन् सः। स्वच्छ सलिलतया = स्वच्छ यत्सलिलम् तस्य भावः तथा।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. '<u>आत्मकृतनां हि दोषाणां नियतम् अनुभवितव्यं फलम् आत्मनैव।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अपने किये गये दोषों का फल निश्चित रूप से स्वयं ही भोगना पड़ता है।

प्रश्न 3. केन दिशां केवलम् अङ्गीकृत्य गन्तव्यम्?

उत्तर– दक्षिणां दिशां केवलम् अङ्गीकृत्य गन्तव्यम्।

प्रश्न 4. नभोमध्यम् कः अलङ्करोति?

उत्तर– भगवान् भानुः नभोमध्यम् अलङ्करोति।

प्रश्न 5. सरोवरस्य किं नाम आसीत्?

उत्तर– सरोवरस्य अच्छोद नाम आसीत्।

29. तदावलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः तस्य दक्षिणं तीरमासाद्य तुरगात् अवततार। अवतीर्य च व्यपनीतपर्याणम् इन्द्रायुधं क्षितितललुठितोत्थितं गृहीतकतिपययवसग्रासम् सरोऽवतार्य पीतसलिलम् इच्छया स्नातं च उत्थाप्य समीपवर्तिनः तरोः मूलशाखायां कनकमय्या शृङ्खलया चरणौ बद्ध्वा स्वयमपि सलिलम् अवततार। प्रक्षालितकरयुगलः जलमयम् आहारं कृत्वा, सरः सलिलात् उदगात्। प्रत्यग्रभग्नैः अतिशिशिरैः कमलिनीपलाशैः लतामण्डपपरिक्षिप्ते शिलातले स्रस्तरम् आस्तीर्य निषसाद।

शब्दार्थ– तदावलोकनमात्रेणैव = उसको देखने मात्र से ही। अपगतश्रमः = थकान रहित होकर। दक्षिणतीरम् = दाहिने किनारे। आसाद्य = पहुँचकर। तुरगात् = घोड़े से। अवततार = उतरा। अवतीर्य = उतरकर। व्यपनीतपर्याणम् = जिसकी जीन उतार दी गई हो उसको। क्षितितललुठितोत्थितं = पृथ्वी पर लोटकर उठे हुए। गृहीतकतिपययवसग्रासम् = घास के कुछ ग्रास लेने वाले। सरोऽवतार्य = तालाब में उतरकर। पीतसलिलम् = जिसने पानी पी लिया हो। स्नातम् = स्नान किये हुए। उत्थाप्य = जल से बाहर लाकर। समीपवर्तिनः = पास के ही। कनकमय्या = सोने से बनी। शृङ्खलया = सॉकल से। प्रक्षालितकर युगल = दोनों हाथ धोने वाले। जलमयम् आहारम् कृत्वा = पानी पीकर। उदगात् = निकला। प्रत्यग्रभग्नैः = तुरन्त के तोड़े गए। अतिशिशिरैः = अत्यन्त ठण्डे। कमलिनीपलाशैः = कमल के पत्तों से। लतामण्डपपरिक्षिप्ते = लता मण्डप में पड़े हुए। शिलातले = पत्थर की चट्टान पर। स्रस्तरम् = बिछौना। आस्तीर्य = बिछाकर। निषसाद = बैठा।

हिन्दी अनुवाद– उस तालाब को देखने मात्र से ही थकान रहित होकर चन्द्रापीड उसके दाहिने किनारे पर पहुँचकर घोड़े से उतर पड़ा और उसने घोड़े की पीठ से जीन उतार दी। इन्द्रायुध पृथ्वी पर लोटकर खड़ा हुआ और घास के कुछ ग्रास खाये। तब उसे तालाब में उतारकर उसके पानी पीने और इच्छानुसार स्नान कर लेने पर चन्द्रापीड उसे पानी से बाहर करके समीप के ही पेड़ की शाखा में सोने की साँकल से उसके पैरों को बाँधकर स्वयम् पानी में उतर गया और दोनों हाथों को धोकर पानी पीकर जल से बाहर आया। फिर ताजे तोड़े गये कमल के पत्तों को लता मण्डप में पड़े हुए पत्थर पर बिछाकर बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदवलोकनमात्रेणैव = तद्+अवलोकनमात्रेण+ एव। अपगतश्रमः = अपगतः श्रमः यस्य सः। व्यपनीतपर्याणम् = व्यपनीतम् पर्याणम् यस्य तम्। गृहीतकतिपयवसग्रासम् = गृहीतानि कतिपयानि यवसग्रासानि यस्मै तम्। पीतसलिलम् = पीतम् सलिलम् येन तम्। प्रक्षालितकरयुगलः = प्रक्षालितं करयुगलम् येन सः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>तदावलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः तस्य दक्षिणं तीरमासाद्य तुरगात् अवततार।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– उसको देखने मात्र से ही थकान रहित होकर उसके दक्षिणी तट पर पहुँचकर घोड़े से उतर गये।

प्रश्न 3. कस्य अवलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः बभूव?
उत्तर– आच्छोद सरोवरस्य अवलोकनमात्रेणैव अपगतश्रमः बभूव।

प्रश्न 4. क्षितितललुठितोत्थितम् कः?
उत्तर– इन्द्रायुधं क्षितितललुठितोत्थितम्।

प्रश्न 5. इन्द्रायुधस्य चरणौ केन अबध्नात्?
उत्तर– कनकमय्या शृङ्खलया चरणौ अबध्नात्।

प्रश्न 6. चन्द्रापीडः कस्मिन् स्रस्तरम् आस्तीर्य निषसाद?
उत्तर– चन्द्रापीडः शिलातले स्रस्तरम् आस्तीर्य निषसाद।

30. मुहूर्तं विश्रान्तश्च तस्य सरसः उत्तरे तीरे समुच्चरन्तं श्रुतिसुभगं वीणातन्त्रीझङ्कारमिश्रम्, गीतशब्दम् अशृणोत्। श्रुत्वा च 'कुतोऽत्र गीतसंभूतिः' इति समुपजातकुतूहलः दत्तपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य पश्चिमया सरस्तीरसरण्या संप्रतस्थे। तत्र च शून्ये सिद्धायतने चतुःस्तम्भस्फटिकमण्डपिकातलप्रतिष्ठितस्य भगवतः चराचरगुरोः त्र्यम्बकस्य दक्षिणां मूर्तिम् आश्रित्य अभिमुखीम् आसीनाम् उपरचितब्रह्मासनाम् दक्षिणेन करेण वीणाम्। उत्सङ्गगताम् उत्सङ्गगताम् आस्फालयन्तीम् अनेकभावनानुविद्धया गीत्या देवं विरूपाक्षम् उपवीणयन्तीम्, प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् अष्टादशवर्षदेशीयाम् कन्यकां ददर्श। ततोऽवतीर्य तरुशाखायां तुरङ्गमं बद्ध्वा, उपसृत्य भगवते भक्त्या प्रणम्य त्रिलोचनाय, तामेव दिव्ययोषितम् अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा निरूपयन्, तस्यामेव स्फटिकमण्डपिकायाम् अन्यतमं स्तम्भम् आश्रित्य, गीतंसमाप्त्यवसरं प्रतीक्षमाणः तस्थौ।

शब्दार्थ– मुहूर्तम् = थोड़ी देर। विश्रान्तश्च = आराम करके। सरस = तालाब के। उत्तरे तीरे = उत्तरी किनारे पर। समुच्चरन्तरम् = उच्चरित होने वाले। श्रुतिसुभगम् = कानों को मधुर लगने वाले। वीणतन्त्रीझङ्कारमिश्रम् = वीणा के तारों की झनकार से मिले हुए। गीमतशब्दम् = गाने की ध्वनि को। अशृणोत = सुना। कुतोऽत्र = यहाँ कहाँ। गीतसम्भूतिः = गीत की उत्पत्ति। समुपजातकुतूहलः = उत्सुकतापूर्ण होकर। दत्तपर्याणम् = जीन कसकर। सरस्तीरसरण्या = तालाब के किनारे के रास्ते से। संप्रतस्थे = प्रस्थान किया। सिद्धायतने = देवमन्दिर में। चतुः स्तम्भस्फटिकमण्डपिकातलप्रतिष्ठितस्य = चार खम्भों वाले स्फटिक (विल्लौरी पत्थर) के छोटे से मण्डप में स्थित। चराचरागुरोः = चर और अचर के गुरु। त्र्यम्बकस्य = शंकरजी की। दक्षिणाम् = दक्षिम की ओर मुँह वाली मूर्ति। आश्रित्य = आश्रय लेकर। अभिमुखीम् = सामने। आसीनाम् = बैठी हुई। उपरचितब्रह्मासनाम् = ब्रह्मासन लगाने वाली। दक्षिणेन करेण = दाहिने हाथ में। उत्संगगताम् = गोद में पड़ी हुई। आस्फालयन्तीम् = बजाने वाली। अनेकभावनानुविद्धया = अनेक भावनाओं से भरी हुई। गीत्या = गीत से। विरूपाक्षम् = शिवजी को। उपवीणयन्तीम् = वीणा बजाकर स्तुति करती हुई। प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् = शिवजीका व्रत धारण करनेवाली। अष्टादशवर्षदेशीयाम् = अठारह वर्ष की अवस्थावाली। ददर्श = देखा। अवतीर्य = उतरकर। तरुशाखायाम् = पेड़ की डाल में। अपसृत्य = पास जाकर। भक्त्या = भक्ति के साथ। त्रिलोचनाय = शंकर जी के लिए। दिव्ययोषितम् = दिव्य स्त्री को। अनिमेषपक्ष्मणा = निर्निमेष। चक्षुषा = नेत्रों से। निरूपयन् = देखते हुए। अन्यतमम् = दूसरे। गीतसमाप्त्यवसरम् = गीत समाप्त होने का समय। प्रतीक्षा करता हुआ। तस्थौ = रुका रहा।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर विश्राम करने के बाद उसने तालाब के उत्तर किनारे पर उच्चरित होने वाले तथा वीणा के तारों की झनकार से मिले हुए कानों को अत्यन्त प्रिय लगने वाले गीत को सुना। उसे सुनकर उसे अत्यन्त कुतूहल हुआ कि यहाँ इस गीत की उत्पत्ति कहाँ से हो रही है? इसी उत्कंठा में जीन कसकर इन्द्रायुध पर सवार होकर वह तालाब के पश्चिमी किनारे

के रास्ते से चल दिया। वहाँ उसने एक सुनसान देवमंदिर में चार खम्भों वाले स्फटिक से बने छोटे मण्डप में स्थित चराचर के गुरु भगवान शंकर की दक्षिण मूर्ति का आश्रय लेकर ब्रह्मासन लगाकर बैठने वाली, दाहिने हाथ से गोद में पड़ी हुई वीणा को झंकृत करके अनेक भावों से पूर्ण गीत द्वारा भगवान् शंकर की स्तुति करने वाली पाशुपत व्रत में संलग्न अठारह वर्ष की अवस्था वाली एक कन्या को देखा। इसके पश्चात् घोड़े से उतरकर तथा उसे पेड़ की डाली से बाँधकर उसने समीप में जाकर भगवान् शिव को भक्ति के साथ प्रणाम किया और वह निर्निमेष नेत्रों से उसी दिव्य युवती को देखते हुए उसी मण्डप के एक दूसरे खम्भे का सहारा लेकर गीत के समाप्त होने के अवसर की प्रतीक्षा करते हुए ठहरा रहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– श्रुतिसुभगम् = श्रुतिम् सुभगम्। कुतोऽत्र = कुतः+अत्र। सरस्तीरसरण्या = सरः+तीरसरण्या। प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् = प्रतिपन्नं पाशुपतव्रतं यया ताम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. 'समुपजातकुतूहलः दत्तपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य पश्चिमया सरस्तीरसरण्या संप्रतस्थे।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इसी उत्कण्ठा में जीन कसकर इन्द्रायुध पर सवार होकर वह तालाब के पश्चिमी किनारे के रास्ते से चल दिया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः किम् अशृणोत्?

उत्तर– वीणातन्त्रीझङ्कारमिश्रम् शीतशब्दम् अशृणोत्।

प्रश्न 4. चतुःस्तम्भस्फटिकमण्डपिकातलप्रतिष्ठतस्य कस्य मूर्तिम् आसीत्?

उत्तर– भगवतः चराचरगुरोः त्रयम्बकस्य मूर्तिम् आसीत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन ददर्श?

उत्तर– चन्द्रापीडः प्रतिपन्नपाशुपतव्रताम् अष्टदशवर्षदेशीयां कन्यकां ददर्श।

31. अथ गीतावसाने मूकीभूतवीणा सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामा परिवृत्य चन्द्रापीडम् आवभाषे–''स्वागतम् अतिथये। कथम् इमां भूमिम् अनुप्राप्तो महाभागः? उत्थाय आगम्यताम्। अनुभूयताम्। अतिथिसत्कारः'' इति। एवम् उक्तस्तु तया संभाषणमात्रेणैव अनुगृहीतम् आत्मानं मन्यमानः उत्थाय भक्त्या कृतप्रणामः–'भगवति यथाज्ञापयसि' इत्यभिधाय शिष्य इव तां व्रजनतीम् अनुवव्राज।

शब्दार्थ– गीतावसाने = गीतगायन की समाप्ति पर। मूकीभूतवीणा = वीणा वादन के रुक जाने पर (मौन हो जाने पर) समुत्थाय = उठकर। प्रदक्षिणीकृत्य = प्रदक्षिणा करके। कृतहरप्रणामा = शंकर जी को प्रणाम करने वाली। परिवृत्य = घूमकर। आबभाषे = बोली। अतिथये = अतिथि के लिए। अनुप्राप्तो = पहुँचे। आगम्यताम् = आइये। अनुभूयताम् = अनुभव कीजिए। सम्भाषणमात्रेणैव = केवल बोलने से ही। मन्यमान = मानते हुए। आत्मानम् = अपने को। कृतप्रणामः = प्रमाण करके। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। व्रजन्तीम् = जाती हुई का। अनुवव्राज = पीछे चला।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद गीत समाप्त हो जाने और वीणा के मौन हो जाने पर वह कन्या उठी और प्रदक्षिणा करके शिव को प्रणाम करने के बाद घूमकर बोली। अतिथि का स्वागत है। आप इस स्थान पर कैसे आ गये? उठिये, आइये और अतिथि-सत्कार ग्रहण कीजिए। उसके ऐसा कहने पर उसके सम्भाषण मात्र से ही अपने को अनुगृहीत मानते हुए उसने उठकर भक्तिपूर्वक प्रणाम किया और 'देवी की जैसी आज्ञा' ऐसा कहकर उस जाती हुई कन्या के पीछे-पीछे शिष्य के समान (चन्द्रापीड) चल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मूकीभूतवीणा = मूकीभूता वीणा यस्याः सा। सम्भाषणमात्रेणैव = सम्भाषणमात्रेण+एव। इत्याभिधाय = इति+अभिधाय।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः'।

प्रश्न 2. "स्वागतम् अतिथये। कथम् इमां भूमिम् अनुप्राप्तो महाभागः?" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अतिथि का स्वागत है। आप इस स्थान पर कैसे आ गये?

प्रश्न 3. गीतावसाने मूकीभूतवीणा का उत्तिष्ठतः?

उत्तर– गीतावसाने मूकीभूतवीणा सा कन्यका (महाश्वेता) उत्तिष्ठतः।

प्रश्न 4. कया प्रदक्षिणाम् अकरोत्?

उत्तर– महाश्वेता प्रदक्षिणाम् अकरोत्।

प्रश्न 5. महाश्वेता का आवभाषे?

उत्तर– "स्वागतम् अतिथये। कथम् इमां भूमिम् अनुप्राप्तो महाभागः? उत्थाय आगम्यताम्। अनुभूयताम् अतिथिसत्कारः" इति।

32. पदशतमात्रमिव गत्वा, निरन्तरैः तमालतरुभिः अन्धकारितपुरोभागम्, अन्तःस्थापितमणिकमण्डलुमण्डलाम्, एकान्तावलम्बितयोगपट्टिकाम्, विशाखिकाशिखरनिबद्धेन नारिकेलफलवल्कलमयेन उपानद्युगेन उपेताम्, वल्कलशयनीयसनाथैकदेशाम्, शङ्खमयेन भिक्षाकलापेन अधिष्ठिताम्, सन्निहितभस्मालाबुकाम् गुहाम् अद्राक्षीत्। तस्याश्च द्वारि शिलातले समुपविष्टः वल्कलशयनशिरोभागविन्यस्तवीणया तया विरचिताम् अतिथिसपर्यां सप्रश्रयं प्रतिजग्राह। कृतातिथ्यया तया द्वितीयशिलातलोपविष्टया क्रमेण परिपृष्टः दिग्विजयादारभ्य, किन्नरमिथुनानुसरणप्रसङ्गेन आगममनम् आत्मनः सर्वम् आचचक्षे।

शब्दार्थ– पद्शतमात्रम् = केवल सौ कदम। निरन्तरैः = एक में सटे हुए, घने। तमालतरुभिः = तमाल के पेड़ों से। अन्धकारितपुरोभागम् = जिसके सामने का भाग अंधकार से भरा है। अन्तःस्थापितमणिकमण्डलुमण्डलाम् = जिसके भीतर मणियों के कमण्डलु रखे हुए हैं। एकान्तावलम्बितयोगपट्टिकाम् = जिसके एक कोने में योगपट्िका लटकी हुई है। विशाखिकाशिखरनिबद्धेन = लोहे की खूँटी में बँधी। नारिकेलफलवल्कलमयेन = नारियल के छिलके से बने हुए। उपानद्युगेन = एक जोड़े जूते से। उपेताम् = युक्त। वल्कलशयनीयसनाथैकदेशाम् = वल्कल की शैया से युक्त एक भागवाली। शङ्खमयेन = शङ्ख से बने हुए। भिक्षाकपालेन = भिक्षापात्र से। अधिष्ठिताम् = युक्त। सन्निहितभस्मालाबुकाम् = भस्म की तुम्बी से युक्त। गुहाम् = गुफा को। अद्राक्षीत् = देखा। द्वारि = दरवाजे पर । समुपविष्टः = बैठे हुए। वल्कलशयनशिरोभागविन्यस्तवीणया = वल्कल के बिछौने के सिरहाने वीणा रख देने वाली। विरचिताम् = बनाई गई। अतिथिसपर्याम् = अतिथि की पूजा। प्रतिजग्राह = ग्रहण किया। कृतातिथ्यया = अतिथि सत्कार कर लेने वाली। द्वितीय शिलातलोपविष्टया = दूसरी चट्टान पर बैठी हुई। परिपृष्टः = पूछे जाने पर। दिग्विजयादारभ्य = दिग्विजय से लेकर। किन्नरमिथुनानुसरणप्रसंगेन = (किन्नरमिथुनस्य अनुसरणम् तस्य प्रसंगेन किन्नर जोड़े के पीछा करने के प्रसंग से। आगमन = आना। आत्मनः = अपना। आचचक्षे = बताया।

हिन्दी अनुवाद– केवल सौ कदम चलकर चन्द्रापीड ने एक गुफा देखी जिसके सामने का भाग घने तमाल वृक्षों के कारण अन्धकारपूर्ण था, जिसके भीतर मणियों के कमंडल रखे हुये थे, एक कोने में योगपट्टिका लटक रही थी, एक लोहे की कील पर बँधा हुआ नारियल की जटा से बना हुआ एक जोड़ा जूता रखा था, एक किनारे वल्कल का बिस्तर लगा हुआ था और शंख का बना हुआ भिक्षापात्र तथा भस्म की तुम्बी रखी हुई थी। वह गुफा के द्वार पर चट्टान के ऊपर बैठ गया। उस कन्या ने वल्कल के बिछौने के सिरहाने वीणा रखकर अतिथि-सत्कार की सामग्री उसके सामने रख दी, जिसे उसने अत्यन्त विनय के साथ ग्रहण किया। अतिथि-सत्कार करने के पश्चात् दूसरी चट्टान पर बैठकर उसके पूछने पर चन्द्रापीड ने दिग्विजय से लेकर किन्नर जोड़े का पीछा करने के प्रसंग में अपने वहाँ तक आने का सारा समाचार कह सुनाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अन्धकारितपुरोभागम् = अन्धकारितपुरोभागः यस्याः सा ताम्। एकान्तावलम्बितयोगन-पट्टिकाम् = एकान्ते अवलम्बिता योगपट्टिका यस्याः ताम्। अन्तःस्थापितमणिकमण्डलुमण्डलाम् = अन्तःस्थापितम् मणिकमण्डलुमंडलाम् यस्याः ताम्। वल्कलशयनीय सनाथैकदेशाम् = वल्कलस्य शयनीयेन सनाथः एकदेशः यस्याः सा ताम्। सन्निहितभस्मालाबुकाम् = सन्निहिता भस्मस्य अलाबुका यस्याम् ताम्। वल्कलशयनशिरोभागविन्यस्तवीणया = वल्कलस्य शयनीयस्य शिरोभागे विन्यस्ता वीणा यया सा तया। द्वितीयशिलातलोपविष्टया = द्वितीये शिलातले उपविष्टा या तया।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'दिग्विजयादारभ्य, किन्नरमिथुनानुसरणप्रसङ्गेन आगममनम् आत्मनः सर्वम् आचचक्षे।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– (चन्द्रापीड ने) दिग्विजय से लेकर किन्नर जोड़े का पीछा करने के प्रसंग में अपने वहाँ तक आने का सारा समाचार कह सुनाया।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः पदशतमात्रमिव गत्वा किम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः पदशतमात्रमिव गत्वा गुहाम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 4. गुहाः पुरोभागं कैः तरुभिः परिवृतम्?
उत्तर– गुहाः पुरोभागं तमालतरुभिः परिवृतम्।
प्रश्न 5. केन अतिथिसपर्यां सप्रश्रयं प्रतिजग्राह।
उत्तर– चन्द्रापीडेन अतिथिसपर्यां सप्रश्रयं प्रतिजग्राह।

33. अथ सा कन्यका समुत्थाय शङ्खमयं भिक्षाकपालम् अदाय, तरुतलेषु विचचार। अचिरेण तस्याः स्वयं पतितैः फलैः अपूर्यत, भिक्षाभाजनम्। आगत्य च तेषाम् उपयोगाय नियुक्तवती चन्द्रापीडम्। चन्द्रापीडस्तु ''चित्रमिदम् आलोकितम् अस्माभिः अदृष्टपूर्वम्, यत् व्यपगतचेतना अपि वनस्पतयः सचेतना इव अस्यै भगवत्यै प्रयच्छन्ति फलानि'' इति अधिकतरोपजातविस्मयः उत्थाय तमेव प्रदेशम् इन्द्रायुधम् आनीय, व्यपनीतपर्याणं नातिदूरे संयम्य, निर्झरजलनिर्वर्तितस्नानविधिः, तान्यमृतरसस्वादून्युपभुज्य फलानि, पीत्वा च तुषारशिशिरं प्रस्रवणजलम् उपस्पृश्य एकान्ते तावत् अवतस्थे।

शब्दार्थ– समुत्थाय = उठकर। तरुतले = वृक्ष के नीचे। विचचार = घूमने लगी। अचिरेण = शीघ्र ही। तस्याः = उसका। स्वयं पतितैः = अपने आप गिरे हुए। अपूर्यत् = भर गया। भिक्षाभाजनम् = भिक्षापात्र। आगत्य = आकर। उपयोगाय = उपयोग करने के लिए। चित्रमिदम् = यह आश्चर्य। अवलोकितम् = देखा। व्यपगतचेतना = अचेतन। वनस्पतयः = वृक्ष। प्रयच्छन्ति = देते हैं। अधिकतरोपजातविस्मयः = और भी अधिक आश्चर्य वाला। आनीय = लाकर। व्यपनीतपर्याणम् = जीन से उतरे हुए। संयम्य = बाँधकर। निर्झरजलनिर्वर्तितस्नानविधिः = झरने के जल से स्नान करने वाले। तान्यमृतरसस्वादून्युपभुज्य = उन अमृत रस जैसे स्वादिष्ट फलों को खाकर। तुषारशिशिरम् = तुषार जैसे ठंडे। प्रस्रवणजलम् = झरने का पानी। उपस्पृश्य = हाथ-मुँह धोकर। अवतस्थे = बैठ गया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद वह कन्या शंख से बने भिक्षापात्र को लेकर वृक्षों के नीचे घूमने लगी। शीघ्र ही अपने-आप गिरे हुए फलों से उसका पात्र भर गया। लौटकर उसने चन्द्रापीड को उन्हें खाने के लिए कहा– ''मैंने आज यह अपूर्व आश्चर्यजनक बात देखी कि अचेतन होते हुए भी ये पेड़ सचेतन के समान इस देवी को फल दे रहे हैं'' इस प्रकार और भी अधिक आश्चर्यचकित हो चन्द्रापीड ने इन्द्रायुध को उसी जगह लाकर बाँध दिया और झरने के जल से स्नान करके उन अमृतरस जैसे फलों का भोजन किया तथा झरने का शीतल जल पिया। फिर वह मुँह धोकर निश्चिन्त होकर एकान्त में बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्झरजलनिर्वर्तितस्नानविधिः = निर्झरजलेन निर्वर्तितास्नानविधिः येन सः। तान्यमृतरसस्वादून्युपभुज्य = तानि+अमृतरसस्वादूनि+ उपभुज्य।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?
उत्तर– उपरोक्त गद्यांश बाणभट्टेन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः।

प्रश्न 2. **''चित्रमिदम् आलोकितम् अस्माभिः अदृष्टपूर्वम्, यत् व्यपगतचेतना अपि वनस्पतयः सचेतना इव अस्यै भगवत्यै प्रयच्छन्ति फलानि।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– मैंने आज यह अपूर्व आश्चर्यजनक बात देखी कि अचेतन होते हुए भी ये पेड़ सचेतन के समान इस देवी को फल दे रहे हैं।

प्रश्न 3. **तरुतलेषु विचचार का?**

उत्तर– सा कन्यका तरुतलेषु विचचार।

प्रश्न 4. **सा कन्यका केन आदाय तरुतलेषु विचचार?**

उत्तर– भिक्षाकपालम् आदाय तरुतलेषु विचचार।

प्रश्न 5. **'तरुतलेषु' में कौन-सी विभक्ति है?**

उत्तर– 'तरुतलेषु' में सप्तमी विभक्ति है।

34. अथ च निर्वर्तितसन्ध्योचिताचाराम् परिसमापिताहारां शिलातले विस्रब्धम् उपविष्टाम् तां कन्यकां सप्रश्रयम् उपसृत्य, नातिदूरे समुपविश्य, अवादीत्–''भगवति! भवद्दर्शनात् प्रभृति मम महतम् कौतुकम् अस्मिन् विषये। कतरत् मरुताम्, ऋषीणां, गन्धर्वाणाम्, अप्सरसां वा कुलम् अनुगृहीतम् भगवत्या जन्मना? किमर्थं वास्मिन् कुसुमसुकुमारे नवे वयसि व्रतग्रहणम्? किं निमित्तं वा वनम् अमानुषम् एकाकिनी अधिवससि? क्वेदं वयः, क्वेयम् इन्द्रियाणाम् उपशान्तिः? अद्भुतमिव मे प्रतिभाति। तत् यदि नातिखेदकरमिव, ततः कथनेन आत्मानम् अनुगृह्यमाणम् इच्छामि। आवेदयतु भवती सर्वम्'' इति।

शब्दार्थ– निर्वर्तितसन्ध्योचिताचाराम् = सन्ध्याकालीन उचित क्रियाओं से निवृत्त होकर। परिसमापिताहाराम् = भोजन कर चुकने वाली। विस्रब्धम् = निश्चिन्त होकर। उपविष्टाम् = बैठी हुई। सप्रश्रयम् = विनयपूर्वक। उपसृत्य = पास में जाकर। समुपविश्य = बैठकर। अवादीत् = कहा। भवद्दर्शनात् = आप के दर्शन से। कौतुकम् = उत्कण्ठा। कतरत् = किस। मरुताम् = देवता का। अप्सरसाम् = अप्सरा के। कुलम् = वंश को। जन्मना = जन्म से। कुसुमसुकुमारे = फूल जैसे कोमल। नववयसि = नई उम्र में। अमानुषम् = मनुष्य रहित। एकाकिनी = अकेली। अधिवससि = निवास करती हो। क्वेदम् = कहाँ यह। वयः = अवस्था। इन्द्रियाणाम् उपशान्तिः = इन्द्रियों की शान्ति। अद्भुतमिव = आश्चर्यपूर्ण जैसा। प्रतिभाति = प्रतीत होता है। नातिखेदकरमिव = अत्यन्त कष्टदायक-सा नहीं। कथनेन = कहने से। आत्मानम् = अपने को। अनुगृह्यमाणम् = अनुग्रह किया हुआ। आवेदयतु = बताइए।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् सन्ध्यावन्दनादि करके भोजन कर चुकने के बाद निश्चिन्त होकर शिला के ऊपर बैठने वाली उस कन्या के पास विनम्रता के साथ जाकर समीप ही में बैठकर चन्द्रापीड ने कहा–देवि, आपके दर्शन होने के समय से ही मुझे इस विषय में बड़ी उत्कण्ठा है कि आपने किस देवता, ऋषि, गन्धर्व या अप्सरा के कुल को अपने जन्म से अनुगृहीत किया है? इस फूल जैसी कोमल नयी उम्र में ही किसलिए यह व्रत ग्रहण किया है। मनुष्य रहित इस वन में अकेली क्यों रहती हैं? कहाँ आपकी यह अवस्था और कहाँ इस प्रकार इन्द्रियों का दमन? यह बड़ा अद्भुत-सा लग रहा है? अत्यधिक कष्टकर न हो तो मैं चाहता हूँ कि आप अपना वृत्तान्त कहकर मुझे अनुगृहीत करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्वर्तितसन्ध्योचिताचाराम् = निर्वर्तिताः सन्ध्योचिताः आचाराः यया ताम्। किमर्थं = किम्+अर्थं।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **'भगवति! भवद्दर्शनात् प्रभृति मम महतम् कौतुकम् अस्मिन् विषये।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– देवि, आपके दर्शन होने के समय से ही मुझे इस विषय में बड़ी उत्कण्ठा है।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः कस्याः समीपम् अगच्छत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतायाः समीपम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. काः शिलातले विस्रब्धम् उपविष्टाम् आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता शिलातले विस्रब्धम् उपविष्टाम् आसीत्?
प्रश्न 5. ''भवद्दर्शनात् प्रभृति मम महतम् कौतुकम् अस्मिन् विषये'' कस्योक्तिः?
उत्तर– चन्द्रापीडस्योक्तिः।

35. एवम् अभिहिता सा किमप्यन्तः ध्यायन्ती, दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य, प्रत्यवादीत्–राजपुत्र! किमनेन मम मन्दभाग्यायाः जन्मनः प्रभृति वृत्तन्तेन श्रुतेन? तथापि यदि महत् कुतूहलम् तत् कथयामि श्रूयताम्। एतत् प्रायेण भवतः श्रुतिविषयम् आपतितमेव–यथा दक्षस्य प्रजापतेः अतिप्रभूतानां कन्यकानां मध्ये द्वे सुते मुनिः अरिष्टा च बभूवतुः। तत्र अरिष्टायाः पुत्र हंसो नाम् गन्धर्वराजः सोममयूखसंभवात् अप्सरःकुलात् समुद्भूताम् हिमकरकिरणावदातवर्णाम् गौरी नाम कन्यकां प्रणयिनीम् अकरोत। तयोरहम् ईदृशी विगतलक्षणा दुःखसहस्त्रभाजनम् एकेव सुता समुत्पन्ना। तातस्तु मे अनपत्यतया सुतजन्मातिरिक्तेन महोत्सवेन मज्जन्म अभिनन्दितवान्। प्राप्ते च दशमेऽहनि 'महाश्वेता' इति यथार्थमेव नाम कृतवान्।

शब्दार्थ– अभिहिता = कही हुई। किमप्यन्तः = कुछ मन ही मन। ध्यायन्ती = सोचती हुई। दीर्घम् उष्णं च = लम्बी और गरम। निःश्वस्य = सांस लेकर। प्रत्यवादीत् = बोली। मन्दाभाग्यायाः = अभागिनी का। जन्मनः प्रभृति = जन्म से अब तक। वृत्तान्तेन श्रुतेन = वृत्तान्त सुनने से। श्रूयताम् = सुनिए। भवतः = आपके। श्रुतिविषयम् = सुनने में। आपतितम् = पड़ा होगा, आया होगा। अतिप्रभूताम् = बहुत अधिक। द्वे सुते = दो पुत्रियाँ। बभूवतुः = हुईं। सोममयूखसम्भवात् = चन्द्रमा की किरणों से उत्पन्न। समुद्भूताम् = उत्पन्न होने वाली। हिमकरकिरणावदातवर्णाम् = चन्द्रकिरणों के समान उज्ज्वल रंगवाली। प्रणयिनीम् अकरोत् = पत्नी बना लिया। तयोरहम् = मैं उन्हीं दोनों से। ईदृशी = इस प्रकार की। विगतलक्षणा = लक्षणों से रहित। दुखसहस्त्रभाजनम् = हजारों प्रकार के दुःखपूर्ण वाली। समुत्पन्ना = उत्पन्न हुई। अनपत्यतया = सन्तान न होने के कारण। सुतजन्मातिरिक्तेन = पुत्र-जन्म से भी अधिक। महोत्सवेन = महान् उत्सव द्वारा। अभिनन्दितवान् = अभिनन्दन किया। प्राप्ते च दशमेऽहनि = दसवाँ दिन आने पर यथार्थमेव = सत्य ही, विशेषता के अनुरूप ही। नाम कृतवान् = नाम रखा।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा पूछे जाने पर उसने मन ही मन कुछ सोचकर लम्बी-लम्बी गरम साँसें लेकर उत्तर दिया– राजकुमार! मुझ अभागिनी की जन्म से लेकर अब तक की कथा सुनने में आपको क्या लाभ होगा? फिर भी यदि आप की इस विषय में बड़ी उत्कण्ठा है तो सुनिए। यह तो आपके कानों में पड़ा होगा कि प्रजापति दक्ष की बहुत-सी कन्याओं में मुनि और अरिष्टा नाम की दो पुत्रियाँ थीं। उनमें से अरिष्टा के पुत्र गन्धर्वों के राजा हंस ने चन्द्रकिरणों से उत्पन्न अप्सरा के कुल में उत्पन्न होने वाली तथा चन्द्रमा की किरणों के समान श्वेत वर्णवाली गौरी नाम की कन्या से विवाह किया। उन्हीं दोनों से इस प्रकार शुभ लक्षणों से हीन और हजारों दुःखों से पूर्ण केवल मैं ही उत्पन्न हुई। सन्तान न होने के कारण मेरे पिता ने पुत्रजन्म से भी अधिक उत्सव द्वारा मेरे जन्म का स्वागत किया और दसवाँ दिन आने पर मेरी विशेषता के अनुसार ही मेरा नाम महाश्वेता रखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– किमप्यन्तः = किम्+अपि+अन्तः। प्रत्यवादीत् = प्रति+अवादीत्। हिमकरकिरणावदातवर्णाम् = हिमकरकिरणस्य इव अवदातवर्णा या सा ताम्। तयोरहम् = तयोः+अहम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेतां 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'राजपुत्र! किमनेन मम मन्दभाग्यायाः जन्मनः प्रभृति वृत्तन्तेन श्रुतेन?' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– राजकुमार! मुझ अभागिनी की जन्म से लेकर अब तक की कथा सुनने में आपको क्या लाभ होगा?
प्रश्न 3. दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य का प्रत्यवादीत्?
उत्तर– दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य कन्यका प्रत्यवादीत्।
प्रश्न 4. मुनिः अरिष्ट च का आसीत्?
उत्तर– दक्षस्य प्रजापतेः पुत्री आसीत्।

प्रश्न 5. किं नाम कन्यकां प्रणयिनीम् अकरोत्?
उत्तर– गौरी नाम कन्यकां प्रणयिनीम् अकरोत्।
प्रश्न 6. महाश्वेता मातुः का नाम आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता मातुः गौरी नाम आसीत्।

36. साहं पितृभवने बालतया कलमधुरप्रलापिनी वीणेव गन्धर्वाणाम् अङ्कादङ्कं सञ्चरन्ती शैशवम् अतिनीतवती। क्रमेण च कृतं मे वपुषि नवयौवनेन पदम्। अथ सकलजीवलोकहृदयानन्ददायकेषु मधुमासदिवसेषु एकदा अहम् अम्बया समम् इदम् अच्छोदं सरः स्नातुम् अभ्यागमम्। अत्र च रमणीये तीरतरुतले सखी जनेन सह विचरन्ती झटिति वनानिलेन उपनीतम् अभिभूतान्यकुसुमपरिमलम् अनाघ्रातपूर्वम् कुसुमगन्धम् अभ्यजिघ्रम। कुतोऽयम्? इत्युपारूढकुतूहला चाहं कतिचित् पदानि गत्वा काममिवापरम् अतिमनोहराकृतिम्। तापसकुमारेण सवयसा सह स्नानार्थम् आगतं मुनिकुमारकम् अपश्यम्। तेन च कर्णावतसीकृतां कुसुममञ्जरीम् अद्राक्षम्।

शब्दार्थ– साहम् = वह मैं। पितृभवने = पिता के घर में। बालतया = बचपन के कारण। कलमधुरप्रलापिनी = सुन्दर और मधुर भाषिणी। वीणेव = वीणा के समान। गन्धर्वाणाम् = गन्धर्वों के। अङ्कादङ्कम् = एक गोद से दूसरी गोद में। सञ्चरन्ती = जाती हुई। शैशवम् = बचपन। अतिनीतवती = बितायी। वपुषि = शरीर में। पदम् = स्थान। सकलजीवलोकहृदयानन्ददायकेषु = सम्पूर्ण प्राणियों को आनन्द देने वाले। मधुमासदिवसेषु = बसन्त के दिनों में। एकदा = एक बार। अम्बया समम् = माता के साथ। स्नातुम् = स्नान करने के लिए। अभ्यागमम् = आयी। तीरतरुतले = किनारे के वृक्षों के नीचे। झटिति = सहसा। वनानिलेन = जंगल की वायु द्वारा। उपनीतम् = लायी गयी। अभिभूतान्यकुसुमपरिमल् = दूसरे फूलों की गन्ध को ढक लेने वाली। अनाघ्रातपूर्वम् = पहले कभी न सूँघी हुई। कुसुमगन्धम् = फूल की गन्ध को। अभ्यजिघ्रम् = मैंने सूँघा। उपारूढकुतूहला = उत्कंठित होकर। काममिवापरम् = दूसरे कामदेव के समान। अतिमनोहराकृतिम् = अत्यन्त मनोहर आकृति वाले। मुनिकुमारकम् = मुनि कुमार को। अपश्यम् = देखा। कर्णावतंसीकृताम् = कान पर आभूषणों के समान रखी हुई। कुसुममञ्जरीम् = फूल की मञ्जरी को। अद्राक्षम् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– वह मैंने पिता के घर में बचपन के कारण सुन्दर और मधुर ढंग से बातचीत करती हुई तथा वीणा के समान एक गन्धर्व की गोद से दूसरे गन्धर्व की गोद में घूमती हुई अपने बचपन को बिताया। धीरे-धीरे मेरे शरीर में यौवन ने अपना स्थान बना लिया। इसके बाद एक बार सभी प्राणियों को आनन्दित करने वाले बसन्त के दिनों में मैं अपनी माता के साथ इसी अच्छोद तालाब में स्नान करने के लिए आयी। यहाँ किनारों के सुन्दर वृक्षों के नीचे सखियों के साथ घूम रही थी कि सहसा मुझे जंगल की वायु द्वारा लायी गयी एक ऐसी गन्ध सूंघने को मिली जो सभी फूलों की गन्ध को मात कर रही थी और वैसी गन्ध मैंने कभी नहीं सूँघी थी। यह कहाँ से आ रही है? इस उत्कंठा में पड़ी हुई मैं कुछ ही कदम चली थी कि मैंने दूसरे कामदेव के समान, अत्यन्त सुन्दर आकृति वाले तथा अपनी उम्र के एक तपस्वी कुमार के साथ स्नान के लिए आये हुए एक मुनिकुमार को देखा और उसके कान पर आभूषण की तरह रखी हुई फूल की मञ्जरी को भी देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अङ्कादङ्कम् = अङ्कात्+अङ्कम्। सकलजीवलोकहृदयानन्ददायकेषु = सकलजीवलोकस्य हृदयानन्ददायकः तेषु। अभिभूतान्यकुसुमपरिमल् = अभिभूतानि अन्यकुसुमानाम् परिमालानि येन तत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'तापसकुमारेण सवयसा सह स्नानार्थम् आगतं मुनिकुमारकम् अपश्यम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तपस्वी कुमार के साथ स्नान के लिए आये हुए एक मुनिकुमार को देखा।
प्रश्न 3. महाश्वेता केन समं स्नातुम् अभ्यागमम्?
उत्तर– महाश्वेता अम्बया समं स्नातुम् अभ्यागमम्।
प्रश्न 4. महाश्वेता कुतः स्नातुम् अभ्यागमम्?
उत्तर– अच्छोदं सरः स्नातुम् अभ्यागमम्।

प्रश्न 5. महाश्वेता कम् अपश्यत्?
उत्तर– महाश्वेता मुनिकुमारकम् अपश्यत्।

37. 'अस्याः नन्वयं परिमलः' इति मनसा निश्चित्य, विस्मृतनिमेषेण चक्षुषा तं तपोधनयुवानम् अतिचिरं विलोकयन्ती रूपैकपक्षपातिना नवयौवनसुलभेन कुसुमायुधेन परवशीकृता अभवम्। 'अशेषजनपूजनीया चेयं जातिः' इति कृत्वा तस्मै प्रणामम् अकरवम्। कृतप्रणामायां मयि मद्विकारदर्शनापहृतधैर्यं तमपि कुमारं तरलताम् अनयत् अनङ्गः। अथ च उपसृत्य तं द्वितीयम् अस्य सहचरम् मुनिबालकं प्रणामपूर्वकम् अपृच्छम्–भगवन्! किभिधानः? कस्य वा अयं तोधनयुवा? किं नाम्नः तरोः इयम् अनेन अवतसीकृता कुसुममञ्जरी? इति। स तु माम् ईषत् विहस्य अब्रवीत्–बाले! किम् अनेन पृष्टेन प्रयोजनम्? अथ कौतुकं चेत् आवेदयामि, श्रूयताम्।

शब्दार्थ– अस्याः = इसी का। परिमलः = गन्ध। विस्मृतनिमेषेण = पलक गिराना भूली हुई। तपोधनयुवानम् = तपस्वी युवक को। अतिचिरम् = बहुत देर तक। विलोकयन्ती = देखती हुई। रूपैकपक्षपातिना = केवल सौन्दर्य के पक्षपाती। नवयौवनसुलभेन = जवानी में सहज ही मिलने वाले। कुसुमायुधेन = काम के द्वारा। परवशीकृता अभवम् = विवश कर दी गयी। अशेषजनपूजनीया = सभी के लिए पूज्य है। इयं जातिः = यह जाति अर्थात् मुनियों की जाति। अकरवम् = किया कृतप्रणामायाम् = प्रणाम करने वाली। मद्विकारदर्शनापहृतधैर्यं = मेरे विकार को देखकर धैर्य खो देने वाले तरलताम् = चंचलता को। अनयत् पहुँचा दिया। अनङ्गः = कामदेव। सहचरम् = साथी। अपृच्छम् = पूछा। किमभिधानः = क्या नाम है। ईषत् = कुछ। विहस्य = हँसकर। चेत् = यदि। आवेदयामि = बता रहा हूँ।

हिन्दी अनुवाद– यह गन्ध निश्चय ही इसी की है। ऐसा मन में निश्चय करके मैं पलक गिराना भूलकर निर्निमेष नेत्रों से बहुत देर तक उस तपस्वी कुमार को देखती रही। केवल सौन्दर्य की ओर आकृष्ट होने वाले नवजवानी में स्वभावतः सुलभ कामदेव ने मुझे परवश बना दिया। मुनियों की जाति सभी के लिए पूज्य है इसलिए मैंने उन्हें प्रणाम किया। मेरे प्रणाम करने पर मेरे काम-जन्य विकार को देखकर धैर्यहीन हो जानेवाले मुनिकुमार को भी काम ने चंचल बना दिया। इसके बाद मैंने उसके साथी दूसरे मुनिकुमार के पास जाकर प्रणाम करके पूछा– भगवन् इनका नाम क्या है? और यह किसके लड़के हैं? इन्होंने किस वृक्ष की पुष्पमंजरी को अपने कान पर आभूषण के समान लगा लिया है। उसने कुछ-कुछ हँसते हुए मुझसे कहा– हे बाले! इसे पूछने से तुम्हारा क्या मतलब है? यदि तुम्हें उत्कंठा है तो बताता हूँ सुनो–

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कुसुमायुधेन = कुसुम+आयुधेन। मद्विकारदर्शनापहृत धैर्यम् = मत् विकारस्य दर्शनेन अपहृत धैर्य यस्य तम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'अशेषजनपूजनीया चेयं जातिः' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मुनियों की जाति सभी के लिए पूजनीय है।
प्रश्न 3. महाश्वेता कं विलोकयन्ती?
उत्तर– तपोधनयुवानं विलोकयन्ती।
प्रश्न 4. महाश्वेता केन परवशीकृता अभवम्?
उत्तर– कुसुमायुधेन परवशीकृता अभवम्।
प्रश्न 5. मुनिकुमारः किम् अब्रवीत्?
उत्तर– मुनि कुमारः अब्रवीत्–किम् अनेन पृष्टेन प्रयोजनम्।

38. अस्ति सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः महामुनिः दिव्यलोकनिवासी श्वेतकेतुः नाम। तस्य च भगवतः सकललोकहृदयानन्दकरम् अतिशयितनलकूबरं रूपम् आसीत्। तस्यायम् आत्मजः पुण्डरीको नाम। सोऽयम् अद्य 'चतुर्दशी' इति भगवन्तम् अम्बिकापतिं कैलासगतम् उपासितुम् नन्दनवनसमीपेन गच्छन् वनदेवतया

समर्पिताम् इमाम् पारिजातकुसुममञ्जरीम् कर्णपूरीकृतवान् इति। इत्युक्तवति तस्मिन् सः तपोधनयुवा, 'अयि! कुतूहलिनि! किनेन प्रश्नायासेन? यदि रुचितसुरभिपरिमला गृह्यताम् इयम्।

शब्दार्थ– सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः = सारे संसार में प्रसिद्ध कीर्तिवाले। दिव्यलोकनिवासी = दिव्यलोक में रहने वाले। सकललोकहृदयानन्दकरम् = सारे संसार को आनन्दित करने वाला। अतिशयितनलकूबरम् = नलकूबर से भी अधिक। रूपम् = सौन्दर्य। आत्मजः = पुत्रः। अम्बिकापतिम् उपासितुम् = शिव की पूजा करने के लिये। गच्छन् = जाते हुए। वनदेवतया = वनदेवता द्वारा। समर्पिताम् = दी गयी। कर्णपूरीकृतवान् = कान में लगा लिया। प्रश्नायासेन = प्रश्न के परिश्रम से। रुचितसुरभिपरिमला = यदि इसकी सुगन्ध अच्छी लगती हो।

हिन्दी अनुवाद– सारे संसार में प्रसिद्ध कीर्ति वाले दिव्यलोक के निवासी श्वेतकेतु नाम के एक मुनि हैं। भगवान् श्वेतकेतु का सौन्दर्य नलकूबर की सुन्दरता से भी श्रेष्ठ और सम्पूर्ण संसार को आनन्दित करने वाला था। यह उन्हीं के पुत्र पुण्डरीक हैं। आज यह चतुर्दशी के दिन भगवान शंकर की पूजा के लिए कैलास गये थे। जाते समय नन्दन वन के समीप वनदेवता ने इन्हें पारिजात पुष्प की मंजरी दी जिसे इन्होंने अपने कान में लगा लिया। उसके ऐसा कहने पर उस मुनिकुमार ने कहा– अरी उत्कंठिते! इस प्रकार के प्रश्न का कष्ट क्यों झेल रही हो? यदि इसकी गंध तुम्हें प्रिय है तो इसे ले लो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः = सकलभुवनेषु पुख्यातः कीर्तिः यस्य सः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. 'तस्य च भगवतः सकललोकहृदयानन्दकरम् अतिशयितनलकूबरं रूपम् आसीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– और उस भगवान (श्वेतकेतु) का सौन्दर्य नलकूबर की सुन्दरता से भी श्रेष्ठ और सम्पूर्ण संसार को आनंदित करने वाला था।

प्रश्न 3. श्वेतकेतुः कः आसीत्?
उत्तर– सकलभुवनप्रख्यातकीर्तिः महामुनिः आसीत्।

प्रश्न 4. श्वेतकेतुः आत्मजः किं नाम आसीत्।
उत्तर– श्वेतकेतुः आत्मजः पुण्डरीको नाम आसीत्।

प्रश्न 5. श्वेतकेतुः रूपम् कीदृशी आसीत्?
उत्तर– भगवतः श्वेतकेतुः सकललोकहृदयानन्दकरम् अतिशयितनलकुबेरं रूपम् आसीत्।

प्रश्न 6. पारिजातपुष्पमञ्जरीम् केन समर्पिता?
उत्तर– पारिजातपुष्पमञ्जरीम् वनदेवतया समर्पिता।

39. इत्युक्त्वा समुपसृत्य श्रवणात् आत्मीयात् अपनीय, मदीये श्रवणपुटे नाम् अकरोत्। तदानीं मत्कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिः करतलात् गलिताम् अक्षमालां नाज्ञासीत्। अथाह ताम् असम्प्राप्तामेव भूतलम् गृहीत्वा सलीलं कण्ठाभरणताम् अनयम्। इत्यभूते च व्यतिकरे छत्रग्राहिणी माम् अवोचत्–''भर्तृदारिके! स्नाता देवी। प्रत्यासीदति गृहगमनकालः। तत् क्रियतां मज्जनविधिः'' इति। ततः अहं तन्मुखात् अतिकृच्छ्रेण दृष्टिम् आकृष्य, स्नातुम् उदयलम्।

शब्दार्थ– श्रवणात् = कान से। आत्मीयात् = अपने। अपनीय = उतारकर। मदीये = मेरे। मत्कपोलस्पर्शसुखेन = मेरे कपोल के स्पर्श सुख से। तरलीकृतांगुलिः = जिसकी उँगली काँप गयी हो। करतलात् = हाथ से। गलिताम् = गिरी हुई। अक्षमालाम् = रुद्राक्ष की माला को। नाज्ञासीत् = न जान सका। असम्प्राप्तामेव भूतलम् = पृथ्वी पर पहुँचने के पहले ही। गृहीत्वा = पड़कर। सलीलम् = खुशी के साथ। कण्ठाभरणताम् अनयत् = गले का आभूषण बना लिया। इत्थं भूते = इस प्रकार के। व्यतिकरे = घटना होने पर। छत्रग्राहिणी = छाता लेकर चलने वाली सेविका ने। अवोचत् = बोली। भर्तृदारिके = स्वामिपुत्री। स्नाता = स्नानकर

चुकी। प्रत्यासीदति = देर हो रही है। गृहगमनकालः = घर जाने का समय। मज्जनविधिः = स्नानक्रिया। तन्मुखात् = उसकी ओर से। अतिकृच्छ्रेण = बड़ी कठिनाई से। दृष्टिम् = निगाहों को। आकृष्ण = हटाकर। उदचलम् = चल पड़ी।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा कहकर और मेरे पास आकर इन्होंने उस मंजरी को अपने कान से उतारकर मेरे कान पर रख दिया। उस समय मेरे कपोल के स्पर्शसुख से उनकी अँगुलियों के काँप जाने के कारण उनकी अक्षमाला हाथ से नीचे गिर पड़ी किन्तु उन्हें इसका पता भी न चल सका। मैंने भूमि पर पहुँचने के पहले ही उसे लेकर आनन्द के साथ गले में डाल लिया। इस प्रकार की घटना होने पर मेरा छाता लेकर चलने वाली सेविका ने कहा– स्वामिपुत्री, देवी स्नान कर चुकीं। घर जाने का समय हो रहा है। इसलिए आप भी स्नान कर लें। मैं बड़ी कठिनाई से उसकी ओर से निगाहों को हटाकर स्नान के लिए चल पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मत्कपोलस्पर्शसुखेन = मत्कपोलस्य स्पर्शस्य सुखेन। असम्प्राप्तामेव = असम्प्राप्तम्+एव। तन्मुखत् = तत्+मुखात्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके! स्नाता देवी। प्रत्यासीदति गृहगमनकालः। तत् क्रियतां मज्जनविधिः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्री, देवी स्नान कर चुकी है। घर जाने का समय हो रहा है। इसलिए आप भी स्नान कर लें।

प्रश्न 3. श्वेतकेतुः पारिजातपुष्पमञ्जरीम् कस्य कर्णपुटे अकरोत्?

उत्तर– महाश्वेतायाः कर्णपुटे अकरोत्।

प्रश्न 4. कस्य कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिः?

उत्तर– महाश्वेतायाः कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिः।

प्रश्न 5. करतलात् गलिताम् अक्षमालां कः नाज्ञासीत्?

उत्तर– श्वेतकेतुः करतलात् गलिताम् अक्षमालां नाज्ञासीत्।

40. उच्चलितायां च मयि सः द्वितीयः मुनिदारकः तथाविधं तस्य धैर्यस्खलितम् आलोक्य, किंचित् प्रकटितप्रणयकोपः प्रोवाच– ''सखे पुण्डरीक! नैतदनुरूपं भवतः। क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः। धैर्यधना हि साधवः। कथं करतलात् गलिताम् अक्षमालामपि न लक्ष्यसि? अहो विगतचेतनः त्वम्'' इति। इत्येवम् अभिधीयमानश्च तेन, किंचित् उपजातलज्ज इव प्रत्यवादीत्–''सखे कपिञ्जल! किं माम् अन्यथा संभावयसि? नाहम् अस्याः दुर्विनीतायाः मर्षयामि अक्षमालाग्रहणापराधन् इमम्'' इति उक्त्वा, अलीककोपकान्तेन मुखेन्दुना माम् अवदत्–''चपले! अक्षमालाम् इमाम् अदत्त्वा, पदात् पदमपि न गन्तव्यम्'' इति। तच्च श्रुत्वा अहम् आत्मकण्ठात् उन्मुच्य एकावलीम् ''भगवन्! गृहयताम् अक्षमाला'' इति मन्मुखासक्तदृष्टेः तस्य प्रसारिते पाणौ निधाय स्नातुं सरः अवातरम्।

शब्दार्थ– उच्चलितायाम् = चलने पर। द्वितीयः = दूसरा। मुनिदारकः = मुनिकुमार। तथाविधम् = उस प्रकार। धैर्यस्खलितं = धैर्य का नष्ट होना। प्रकटितप्रणयकोपः = प्रेम का क्रोध प्रकट करने वाले। आलोक्य = देखकर। किञ्चित् = कुछ। प्रोवाच = बोला। नैतदनुरूपम् = यह योग्य नहीं। भवतः = आपके। क्षुद्रजनक्षुण्ण = छोटे लोगों द्वारा अपनाया गया। एषः = यह। धैर्यधना = धैर्यशाली। लक्ष्यसि = देखते हो। विगतचेतनः = चेतनाहीन। इत्येवम् = इस प्रकार। अभिधीयमानश्च = कहे जाने पर। उपजातलज्जा = लज्जा आने से। प्रत्यवादीत् = उत्तर दिया। अन्यथा = अन्य प्रकार से। संभावयसि = समझते हो। नाहम् = मैं नहीं। अस्याः = इस। दुर्विनीतायाः = धृष्टा का। अक्षमालाग्रहणापराधम् = अक्षमाला ले लेने के अपराध को। मर्षयामि = क्षमा करूँगा। अलीककोपकान्तेन = झूठे क्रोध से सुन्दर। मुखेन्दुना = मुखचन्द्र से। अवदत् = कहा। अदत्वा = बिना दिये। पदात् पदमपि = एक कदम भी। न गन्तव्यम् = नहीं जाता है। आत्मकंठात् = अपने कंठ से। उन्मुच्य = निकालकर। एकावलीम्

= एक लड़ी की माला। गृह्यताम् = लीजिए। मन्मुखाक्तदृष्टेः = मेरे मुख पर दृष्टि गड़ानेवाले। प्रसारिते पाणौ = फैलाये हुए हाथ पर। विधाय = रखकर। स्नातुम् = स्नान के लिए। सरः = तालाब में। अवातरम् = उतर गयी।

हिन्दी अनुवाद– मेरे चल पड़ने पर उस द्वितीय मुनिकुमार ने इस प्रकार उसके धैर्य का नाश देखकर कुछ प्रेमपूर्ण क्रोध को दिखाते हुए कहा– मित्र पुंडरीक, तुम्हें ऐसा करना उचित नहीं है। यह तो छोटे लोगों के चलने का रास्ता है। सज्जन लोगों का धन तो धैर्य ही होता है। तुम अपने हाथ से गिरती हुई अक्षमाला को भी न देख सके। तुम इतने चेतनाहीन हो गये हो? इस प्रकार कहने पर कुछ लज्जित-सा होकर उसने कहा–मित्र कपिंजल, तुम मुझसे दूसरी बात की कल्पना क्यों कर रहे हो (मुझे गलत क्यों समझ रहे हो)? मैं इस धृष्टा के अक्षमाला ले लेने के अपराध को क्षमा नहीं करूँगा, इस प्रकार कहकर झूठे क्रोध से सुन्दर मुखमण्डल द्वारा उसने मुझसे कहा–चंचले, इस अक्षमाला को बिना दिये हुए तुम एक कदम भी आगे नहीं जा सकती हो। यह सुनकर मैंने अपने गले से एकावली निकालकर मेरे मुँह पर दृष्टि गड़ाने वाले उसके फैलाये हुए हाथ में रख दी और स्नान करने के लिए तालाब में उतर पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रकटितप्रणयकोप = प्रकटितः प्रणयकोपः येन सः। नैतदनुरूपम् = न+एतत्+अनुरूपम्। क्षुद्रजनक्षुण्णः = क्षुद्रजनैः क्षुण्णः। धैर्यधना = धैर्य एव धनं येषां ते। इत्येवम् = (इति+एवम्)। उपजातलज्जा = उपजाता लज्जा यस्मिन् सः। नाहम् = (न+अहम्)। अक्षमालाग्रहणापराधम् = अक्षमालायाः ग्रहणस्य अपराधम्। अलीककोपकान्तेन = अलीकः यः कोपः तेन कान्तः तेन। मन्मुखासक्तदृष्टेः = मम मुखे आसक्ता दृष्टिः यस्य तस्य।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. '<u>धैर्यधना हि साधवः।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सज्जन लोगों का धन तो धैर्य ही होता है।
प्रश्न 3. पुण्डरीकस्य सख्युः किं नाम आसीत्?
उत्तर– पुण्डरीकस्य सख्युः कपिञ्जल नाम आसीत्।
प्रश्न 4. धैर्यधना कः?
उत्तर– धैर्यधना हि साधवः।
प्रश्न 5. कः विगतचेतनः बभूव?
उत्तर– पुण्डरीक विगतचेतनः बभूव।
प्रश्न 6. स्नातुं सरः अवातरम् का?
उत्तर– महाश्वेता स्नानुं सरः अवातरम्।

41. उत्थाय च कथमपि सखीजनेन नीयमाना, तमेव चिन्तयन्ती स्वभवनम् अम्बया समम् अयासिषम्। गत्वा च प्रविश्य कन्यान्तःपुरम्, ततः प्रभृति तद्विरहविधुरा, सर्वव्यापारान् उत्सृज्य, विसृज्य सखीजनम् एकाकिनी गवाक्षनिक्षिप्तमुखी, तामेव दिशम् ईक्षमाणा तामेवाक्षमालां कण्ठेनोद्वहन्ती दिवसम् अत्यवाहयम्।

शब्दार्थ– उत्थाय = पानी से बाहर आकर, कथमपि = किसी प्रकार। सखीजनेन = सखियों द्वारा। नीयमाना = ले आई जाकर। चिन्तयन्ति = चिन्तन करती हुई। अम्बया समम् = माँ के साथ। अयासिषम् = आई। प्रविश्य = प्रवेश करके। कन्यान्तःपुरम् = कन्या के महल में। ततः प्रभृतिः = उसी समय से। तद्विरहविधुरा = उसके विरह में दुःखी। सर्वव्यापारान् = सभी कामों को। उत्सृज्य = छोड़कर। विसृज्य = विदा करके। सखीजनम् = सखियों को। गवाक्षनिक्षिप्तमुखी = खिड़की पर मुँह लगाये हुए। तामेव दिशम् = उसी दिशा की ओर। ईक्षमाणा = देखती हुई। तामेवाक्षमलाम् = उसी अक्षमाला को। कण्ठेनोद्वहन्ती = गले में धारण किये हुए। दिवसम् = दिन को। अत्यवाहयम् = बिताया।

हिन्दी अनुवाद– वहाँ से उठकर सखियों द्वारा किसी प्रकार ले आई जाती हुई मैं उसी का चिन्तन करती हुई माँ के साथ अपने घर चली गयी। कन्या-भवन में प्रवेश करके उसी समय से उनके वियोग में दुःखी होकर सभी कामों को छोड़कर और

सखियों को विदा करके अकेले खिड़की में मुँह लगाकर उसी ओर देखती हुई तथा उसी अक्षमाला को गले में पहिने हुए मैंने सारा दिन बिता दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कन्यान्तःपुरम् = कन्यायाः अन्तःपुरम्। तद्विरहविधुरा = तस्य विरहेण विधुरा। गवाक्षनिक्षिप्तमुखी = गवाक्षनिक्षिप्तं मुखं यया सा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'तमेव चिन्तयन्ती स्वभवनम् अम्बया समम् अयासिषम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– उसी का ही चिन्तन करती हुई माँ के साथ अपने घर चली गयी।
प्रश्न 3. का सखीजनेन नीयमानाः?
उत्तर– महाश्वेता सखीजनेन नीयमानाः।
प्रश्न 4. स्वभवनं कया समम् अयासिषम्?
उत्तर– स्वभवनं अम्बया समम् अयासिषम्।
प्रश्न 5. कस्यां कण्ठेनोद्वहन्ती दिवसम् अत्यवाहयम्?
उत्तर– अक्षमालां कण्ठेनोद्वहन्ती दिवसम् अत्यवाहयम्।

42. अथ लोहितायति सूर्ये, छत्रग्राहिणी समागत्य माम् अकथयत्–"भर्तृदारिके, तयोः मुनिकुमारयोः अन्तरः द्वारि तिष्ठति। कथयति च–अक्षमालाम् उपयाचितुम् आगतोऽस्मि" इति। अहं तु समाहूय कञ्चुकिनं गच्छ प्रवेश्यताम् इत्यादिश्य प्राहिणवम्। अथ मुहूर्तादेव तं तस्य अनुरूपं सखायं मुनिकुमारं कपिञ्जलनामानम् आगच्छन्तम् अपश्यम्। उत्थाय च कृतप्रणामा सादरं स्वयम् आसनम् उपाहरम्। उपविष्टस्य तस्य प्रक्षाल्य चरणौ, उपमृज्य च उत्तरीयांशुकाञ्चलेन अव्यधानायां भूमावेव तस्यान्तिके समुपाविशम्।

शब्दार्थ– लोहितायति सूर्ये = सूर्य के लाल होने पर (सन्ध्याकाल में)। समागत्य = आकर। तयोः मुनिकुमारयोः = उन दोनों मुनि कुमारों में से। अन्यतरः = दूसरा। द्वारि तिष्ठति = दरवाजे पर खड़ा है। उपयाचितुम् = माँगने के लिए। आगतोऽस्मि = आया हूँ। समाहूय = बुलाकर। गच्छ = आओ। प्रवेश्यताम् = प्रवेश कराओ। भीतर ले जाओ। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। प्राहिणवम् = भेजा। तस्य अनुरूपम् = उसके समान रूपवाले। सखायम् = मित्र को। आगच्छन्तम् = आते हुए। अपश्यम् = देखा। कृत प्रणामा = प्रणाम करती हुई। उपाहरम् = दिया। उपविष्टस्य = बैठे हुए। प्रक्षाल्य = धोकर। उपमृज्य = पोछकर। उत्तरीयांशुकेन = दुपट्टे के आँचल से। अव्यवधानायाम् = बिना कुछ बिछाये। भूमौ = पृथ्वी पर। तस्यान्तिके = उसके पास। समुपाविशम् = बैठ गयी।

हिन्दी अनुवाद– सायंकाल मेरी छत्रग्राहिणी ने आकर मुझसे कहा–स्वामिपुत्री, उन दोनों मुनिकुमारों में से दूसरा दरवाजे पर खड़ा है और कहता है कि अक्षमाला माँगने आया हूँ। मैंने कंचुकी को बुलाकर उसे जाकर भीतर ले आने का आदेश देकर भेजा। थोड़ी ही देर में उसके ही समान रूप वाले उसके मित्र मुनिकुमार को, जिसका नाम कपिञ्जल था, आते हुए देखा। मैंने उठकर उन्हें प्रणाम करते हुए स्वयम् आदर के साथ आसन दिया, उस बैठे हुए मुनिकुमार के चरणों को धोकर और अपने दुपट्टे के आँचल से पोंछकर उसके पास ही बिना कुछ बिछाये ही भूमि पर मैं भी बैठ गयी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यादिश्य = इति+आदिश्य। कृतप्रणामा = कृतः प्रणामः यया सा। तस्यान्तिके = तस्य + अन्तिके। समुपाविराम् = सम + उपाविशम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **''भर्तृदारिके, तयोः मुनिकुमारयोः अन्तरः द्वारि तिष्ठति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– स्वामिपुत्री! उन दोनों मुनिकुमारों में से दूसरा दरवाजे पर खड़ा है।
प्रश्न 3. **छत्रग्राहिणी समागत्य का अकथयत्?**
उत्तर– छत्रग्राहिणी अकथयत्– 'भर्तृदारिके, तयोः मुनिकुमारयोः अन्यतरः द्वारि तिष्ठति।
प्रश्न 4. **मुनिकुमारः किम् अकथयति?**
उत्तर– मुनिकुमारः अकथयति– अक्षमालाम् उपयाचितुम् आगतोऽस्मि।
प्रश्न 5. **मुनिकुमारस्य किं नाम आसीत्?**
उत्तर– मुनिकुमारस्य कपिञ्जल नाम आसीत्।

43. अथ मुहूर्त्तमिव स्थित्वा स तस्यां मत्समीपोपविष्टायां तरलिकायां चक्षुः अपातयत्। अहं तु विदिताभिप्रया ''भगवन् अव्यतिरिक्तेयम् अस्मच्छरीरात् अशङ्कितम् अभिधीयताम्'' इत्यवोचम्। एवम् उक्तश्च मया कपिञ्जलः प्रत्यवादीत् ''राजपुत्रि! किं ब्रवीमि? किमारब्धं दैवेन? वागेव मे न प्रसरति त्रपया। सर्वथा रक्षणीयाः सुहृदसवः इति कथयामि। अस्ति खलु भवत्या समक्षमेव स मया तथा निष्ठुरम् अभिहितः'' इति। तथा चाभिधाय परित्यज्य तम् उपजातमन्युः अन्यं प्रदेशम् अगमम्।

शब्दार्थ– स्थित्वा = ठहरकर। मत्समीपोपविष्टायाम् = मेरे पास ही बैठी हुई। चक्षुः अपातयत् = निगाहें डालीं। विदिताभिप्राया = उसके अभिप्राय को जान जाने वाली। अव्यतिरिक्तेयम् = यह अभिन्न। अस्मच्छरीरात् = हमारे शरीर से। अशंकितम् = निडर होकर। अभिधीयताम् = कहिए। ब्रवीमि = कहूँ। किमारब्धम् = क्या किया। वागेव = वाणी ही। प्रसरति = फैल रही है, त्रपया = लज्जा से। सुहृदसवः = मित्र के प्राप्प। भवत्याः आपके। समक्षम् = सामने। निष्ठुरम् = कठोर। अभिहितः = कहा गया। चाभिधाय = और कहकर, परित्यज्य तम् = उसे छोड़कर। उपजातमन्युः = क्रुद्ध होकर। अन्यप्रदेशम् = दूसरी जगह। अगमम् = चला गया।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर ठहरकर उसने मेरे पास बैठी हुई तरलिका की ओर देखा। मैं उसके अभिप्राय को समझकर बोली– भगवान्! यह मेरे शरीर से अभिन्न है, अतः आप निडर होकर कहें। मेरे ऐसा कहने पर कपिंजल ने कहा–राजपुत्रि क्या कहूँ? दैव ने यह क्या कर दिया? लाज के कारण वाणी ही नहीं निकल रही है। केवल यही कहता हूँ कि मित्र के प्राणों की रक्षा होनी चाहिए। आपके सामने ही मैंने उसे कठोर बातें कही थीं और उन बातों को सुनकर क्रोध आ जाने से वह दूसरी जगह चला गया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी–विदिताभिप्राया = विदितः अभिप्रायः यया सा। अव्यतिरिक्तेयम् = अव्यतिरिक्ता+इयम्। वागेव = वाक्+एव। चाभिधाय = च+अभिधाय।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. **''भगवन् अव्यतिरिक्तेयम् अस्मच्छरीरात् अशङ्कितम् अभिधीयताम्'' इत्यवोचम्। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– भगवन्! यह मेरे शरीर से अभिन्न है, अतः आप निडर होकर कहें।
प्रश्न 3. **तरलिकायां चक्षुः अपातयत् कः?**
उत्तर– मुनिकुमारः तरलिकायां चक्षुः अपातयत्।
प्रश्न 4. **महाश्वेता मुनिकुमारेण किम् अवोचत्?**
उत्तर– ''भगवन् अव्यतिरिक्तेयम् अस्मच्छरीरात् अभिधीयताम्'' इत्यवोचत्।
प्रश्न 5. **'सर्वथा रक्षणीयाः सुहृदसवः', कस्य उक्तिः?**
उत्तर– मुनिकुमार कपिञ्जलस्य उक्तिः।

44. अपगतायां भवत्यां मुहूर्तमिव स्थित्वा, एकाकी किमयम् इदानीम् आचरतीति सञ्जातवितर्कः प्रतिनिवृत्त्य विटपान्तरितविग्रहः तं प्रदेशं व्यलोकयम्। यावत् तत्र तं नाद्राक्षम्, तेन तस्यादर्शनेन दूयमानः, मनस्यचिन्तयम्– स कदाचित् धैर्यस्खलनविलक्षः किंचित् अनिष्टमपि समाचरेत्। तत् न युक्तम् एनम् एकाकिनं कर्तुम्' इत्यवधार्य, अन्वेषमाणः निपुणम् इतस्ततो दत्तदृष्टिः तरुलतागहनानि वीक्षमाणः सुचिरं व्यचरम्। अथ एकस्मिन् सरस्समीपवर्तिनि लतागहने व्युपरतसकलव्यापारतया लिखितमिवावस्थितम्, मन्मथावेशस्य परां कोटिम् अधिरूढं करतलनिहितवामकपोलम् शिलातलोपविष्टम् तमहमद्राक्षम्।

शब्दार्थ–अपगतायाम् भवत्याम् = आपके चले जाने पर। स्थित्वा = ठहरकर। एकाकी = अकेला। किमयम् = यह क्या। इदानीम् = इस समय। आचरतीति = कर रहा है। सञ्जातवितर्कः = वितर्क उत्पन्न होने पर। प्रतिनिवृत्त्य = लौटकर। विटपान्तरितविग्रहः = वृक्षों की ओट में शरीर को छिपाने वाला। व्यलोकयम् = देखा। नाद्राक्षम् = नहीं देखा। तस्यादर्शनेन = उसके न दिखने से। दूयमानः = दुःखी होते हुए। मनस्यचिन्तयम् = मन में विचार किया। धर्मस्खलनविलक्षः = धैर्य नष्ट हो जाने से दुःखी। अनिष्टमपि = अप्रिय। समाचरेत् = कर ले। न युक्तम् = ठीक नहीं। एकाकिनम् कर्तुम् = अकेला करना। इत्यवधार्य = ऐसा निश्चित करके। अन्वेषमाणः = खोजता हुआ। निपुणम् = सावधानी से। इतस्ततः = इधर-उधर। दत्तदृष्टिः = दृष्टि डालते हुए। तरुलतागहनानि = घने वृक्षों और घनी लताओं में। वीक्षमाणः = देखते हुए। सुचिरम् = देर तक। व्यचरम् = घूमता रहा। सरस्समीपवर्तिनी = तालाब के समीप। लतागहने = घनी लताओं में। व्युपरतसकलव्यापारतया = सभी क्रियाओं से रहित होने से। लिखितमिव = चित्र में लिखा हुआ-सा जड़ीभूत। अवस्थितम् = बैठा हुआ। मन्मथावेशस्य = कामदेव के आवेश की। परां कोटिम् = चरम सीमा पर। अधिरूढम् = पहुँचा हुआ। करतलनिहितवामकपोलम् = हथेली पर बायें गाल को रखे हुए। शिलातलोपविष्टम् = चट्टान पर बैठे हुए। अद्राक्षम् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– आपके चली जाने पर थोड़ी देर ठहरकर 'इस समय अकेले वह क्या कर रहा है' इस प्रकार का तर्क करके लौटकर अपने को पेड़ की ओट में छिपाकर मैं उस स्थान को देखने लगा। उस समय मैंने उसे वहाँ नहीं देखा और उसके वहाँ न देखने से दुःखी होकर कोई अनिष्ट न कर बैठे। इसलिए उसे अकेले छोड़ना उचित नहीं है। ऐसा निश्चय करके इधर-उधर सावधानी से ढूँढ़ते हुए घने पेड़ों और लताओं में देखते हुए बड़ी देर तक मैं घूमता रहा। इसके पश्चात् मैंने तालाब के किनारे एक घनी लता में सारी क्रियाओं से रहित होने के कारण चित्र में लिखे– जैसे तथा कामवासना की अन्तिम सीमा पर पहुँचे हुए उसे बायें गाल को हथेली पर रखकर चट्टान पर बैठे हुए देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सञ्जातवितर्कः = संजातः वितर्कः यस्मिन् सः। विटपान्तरितविग्रहः = विटपेषु अन्तरितः विग्रहः यस्य सः। नाद्राक्षम् = न+अद्राक्षम्। तस्यादर्शनेन = तस्य+अदर्शनेन। मनस्यचिन्तयम् = मनसि+अचिन्तयम्। धैर्यस्खलनविलक्षः = धैर्यस्खलनेन विलक्षः। इत्यवधार्य = इति+अवधार्य। दत्तदृष्टिः=दत्ता दृष्टिः येन सः। व्युपरतसकलव्यापारतया = व्युपरतः सकलव्यापारः तस्य भावः तया। करतलनिहितवामकपोलम् = करतले निहितः वामकपोलः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'एकाकी किमयम् इदानीम् आचरतीति।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस समय अकेले क्या कर रहा है?
प्रश्न 3. कः विटपान्तरितविग्रहः तं प्रदेशं व्यलोकयत्?
उत्तर– कपिञ्जलः विटपान्तरितविग्रहः तं प्रदेशं व्यलोकयत्।
प्रश्न 4. तरुलतागहनानि वीक्षमाणः सुचिरं कः व्यचरत्?
उत्तर– कपिञ्जल तरुलतागहनानि वीक्षमाणः सुचिरं व्यचरत्।
प्रश्न 5. करतलनिहितवामकपोलम् शिलातलोपविष्टम् कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– करतलनिहितवामकपोलम् शिलातलोपविष्टम् पुण्डरीकम् अद्राक्षीत्?
प्रश्न 6. शिलातलोपविष्टम् कः?
उत्तर– शिलातलोपविष्टम् पुण्डरीकः।

45. उपसृत्य च तस्मिन्नेव शिलातलैकपार्श्वे समुपविश्य, अंसदेशावसक्तपाणिः ''सखे पुण्डरीक, कथय किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्, उत धर्मशास्त्रेषु पठितम्, उत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्, कथमेतद्युक्तं भवतो मनसापि चिन्तयितुम्। धैर्यम् अवलम्ब्य निर्भर्त्स्यताम् अयं दुराकारः कामः'' इति अब्रवम्।

शब्दार्थ– उपसृत्य = पास जाकर। तस्मिन्नैव = उसी। शिलातलैकपार्श्वे = चट्टान के एक किनारे। समुपविश्य = बैठकर। अंसदेशावसक्तपाणिः = कंधे पर हाथ रखकर। कथय = बताओ। गुरुभिः = गुरुजनों द्वारा। उपदिष्टम् = उदेश दिया गया है। उत = अथवा। धर्मशास्त्रेषु = धर्मशास्त्रों में। पठितम् = पढ़ा गया है। मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम् = यह मोक्ष पाने का उपाय है। कथमेतद्युक्तं = क्या यह उचित है। चिन्तयितुम् = सोचना। अवलम्ब्य = सहारा लेकर। निर्भर्त्स्यताम् = दुत्कार दो। दुराकारः = दुष्ट। अब्रवम् = कहा।

हिन्दी अनुवाद– उसके पास जाकर उसी चट्टान पर एक किनारे बैठकर तथा उसके कंधे पर हाथ रखकर मैंने कहा कि ''मित्र पुण्डरीक! क्या गुरुओं ने ऐसा ही उपदेश दिया है? अथवा धर्मशास्त्रों में इसे पढ़ा है? या मोक्षप्राप्ति का यही उपाय है? तुम्हारे लिए मन से भी ऐसा सोचना क्या उचित है? इसलिए धैर्य धारण करो और इस दुष्ट कामदेव को दुत्कार दो''।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अंसदेशावसक्तपाणिः = अंसदेशे अवसक्तः पाणिः यस्य सः। मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम् = मोक्षप्राप्तेः युक्तिः इयम्। कथमेतद्युक्तं = कथम्+एतत्+युक्तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''<u>सखे पुण्डरीक, कथय किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्, उत धर्मशास्त्रेषु पठितम्, उत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्, कथमेतद्युक्तं भवतो मनसापि चिन्तयितुम्।</u>'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– प्रिय पुण्डरीक! क्या गुरुओं ने ऐसा उपदेश दिया है? अथवा धर्मशास्त्रों में इसे पढ़ा है? या मोक्ष प्राप्ति का यही उपाय है? तुम्हारे लिए मन से भी ऐसा सोचना क्या उचित है?

प्रश्न 3. **'सखे पुण्डरीक! कथय किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्', केन उक्तः?**

उत्तर– कपिञ्जलेन उक्तः।

प्रश्न 4. **''धैर्यम् अवलम्ब्य निर्भर्त्स्यताम् अयं दुराकारः कामः'' इति केन अब्रवीत्?**

उत्तर– कपिञ्जलेन अब्रवीत्।

प्रश्न 5. **शिलातलैकपार्श्वे कः समउपविशः?**

उत्तर– शिलातलैकपार्श्वे कपिञ्जलः समुपविशः।

46. इत्येवं वदत एव मे वचनम् आक्षिप्य, करतलेन पाणौ माम् अवलम्ब्य अवोचत्–''सखे! किं बहुना उक्तेन? सर्वथा स्वस्थोऽसि, यतः आशीविषविषवेगविषमाणां कुसुमचापसायकानां पतितोऽसि न गोचरे। सुखम् उपदिश्यते परस्य। मम तु गत इदानीम् उपदेशकालः। को वापरः त्वत्समः मे जगति बन्धुः? किं करोमि? न शक्नोमि निवारयितुम् आत्मानम्। यावत् प्राणिमि, तावदस्य मदनसंतापस्य प्रतिक्रियां कर्तुम् इच्छामि। अत्र यत् प्राप्तकालं तत् करोतु भवान्'' इति।

शब्दार्थ– इत्येवम् = इस प्रकार। वदतः = कहते हुए। मे वचनम् = मेरी बात को। आक्षिप्य = टोककर, काटकर। करतलेन = हाथ में। पाणौ माम् अवलम्ब्य = मेरा हाथ पकड़कर। अवोचत् = कहा। बहुना उक्तेन = अधिक कहने से। स्वस्थोऽसि = स्वस्थ हो। यतः = क्योंकि। आशीविषविषवेगविषमाणां = साँप के जहर की लहर के समान भीषण। कुसुमचापसायकानाम् = कामदेव के बाणों के। गोचरे = निशाने पर। न पतितोऽसि = नहीं पड़े हो। सुखम् = सरलता से। उपदिश्यते = उपदेश दिया जाता है। परस्य = दूसरे को। गतः = बीत गया। उपदेशकालः = उपदेश का समय। अपरः = दूसरा। त्वत्समः = तुम्हारे समान। मे = मेरा। जगति = संसार में। बन्धुः = भाई। शक्नोमि = सकता हूँ। निवारयितुम् = रोकने में। आत्मानम् = अपने को। प्राणिमि = जी रहा हूँ। मदन संतापस्य = कामपीड़ा का। प्रतिक्रियाम् = उपाय। यत् = जो । प्राप्तकालम् = उचित अवसर के अनुकूल।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा कहते हुए मेरी बात को बीच में ही काटकर अपने हाथ से मेरा हाथ पकड़कर उसने कहा–''मित्र! अधिक कहने से क्या लाभ? तुम सब प्रकार से स्वस्थ हो, क्योंकि साँप के विष की लहरों के समान भयंकर कामदेव के बाणों के सामने नहीं पड़े हो। दूसरे को उपदेश देना आसान होता है। मुझे अब उपदेश देने का समय बीत चुका है। संसार में तुम्हारे समान कोई अपना नहीं है। क्या करूँ? मैं अपने को (इस मार्ग से) रोकने में असमर्थ हूँ। जब तक जीवित हूँ इस काम-पीड़ा को दूर करने का उपाय करना चाहता हूँ। इसलिए अब इस विषय में समयानुसार जो उचित हो करो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आशीविषविषवेगविषमाणाम् = आशीविषस्य विषवेगः तस्य इव विषमः तेषाम्। कुसुमचापसायकानाम् = कुसुमचापस्य सायकानाम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. ''सखे! किं बहुना उक्तेन? सर्वथा स्वस्थोऽसि'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मित्र! अधिक कहने से क्या लाभ है? तुम सब प्रकार से स्वस्थ हो।

प्रश्न 3. कः वचनम् आक्षिप्य अवोचत्?
उत्तर– पुण्डरीकः वचनम् आक्षिप्य अवोचत्।

प्रश्न 4. कस्य पाणौ अवलम्ब्य अवोचत्?
उत्तर– कपिञ्जलस्य पाणौ अवलम्ब्य अवोचत्।

प्रश्न 5. 'सुखम् उपदिश्यते परस्य', केन उक्तः?
उत्तर– पुण्डरीकेन उक्तः।

47. एवम् उक्तोऽहम् अचिन्तयम्–'अतिभूमिं गतोऽयं न शक्यते निवर्तयितुम्। अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः। प्राणास्तावदस्य रक्षणीयाः। अतिगर्हितेन अकृत्येनापि रक्षणीयान् सुहृदसून् मन्यन्ते साधवः। तत् अतिह्वेपणम् अवश्यकर्तव्यम् आपतितम्। किं करोमि? कान्यागतिः प्रयामि तस्याः सकाशम्। आवेदयामि एताम् अवस्थाम्' इति चिन्तयित्वा, कदाचित् अनुचितव्यापारप्रवृत्तं मां विज्ञाय, सञ्जातलज्जः निवारयेत् इति अनिवेद्यैव तस्मै, सव्याजम् उत्थाय तस्मात् प्रदेशात् उपागतोऽहम्। तदेवम् अवस्थिते, यदत्र अवसरप्राप्तम् तत्र प्रभवति भवती'' इत्यभिधाय, किमियं वक्ष्यतीति गन्मुखासक्तदृष्टिः, तूष्णीमभवत्।

शब्दार्थ– एवम् = इस प्रकार। उक्तोऽहम् = कहा गया मैं। अचिन्तयम् = विचार किया। अतिभूमिम् = बहुत दूर। गतोऽयम् = यह चला गया है। निवर्तयितुम् न शक्यते = लौटाया नहीं जा सकता है। अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः = इसका यह काम विकार जीवन भर नहीं जा सकता। प्राणास्तावदस्य = इसके प्राण। रक्षणीया = बचाना चाहिए। अतिगर्हितेन = अत्यन्त निन्दनीय। अकृत्येन = बुरे कर्म से। रक्षणीयान् = रक्षायोग्य। सुहृदसून् = मित्रों के प्राणों को। मन्यन्ते = मानते हैं। साधवः = सज्जन लोग। अतिह्वेपणम् = लज्जाजनक। आपतितम् = अचानक आ पड़ने वाले। कान्यागतिः = दूसरी गति क्या है? प्रयामि = जाता हूँ। तस्याः सकाशम् = उसके पास। आवेदयामि = आवेदन करता हूँ। एताम् अवस्थाम् = इस अवस्था को। चिन्तयित्वा = विचार करके। कदाचित् = कहीं, संभवतः। अनुचितव्यापारप्रवृत्तम् = अनुचित कार्य में लगा हुआ। विज्ञाय = जानकर। सञ्जातलज्जः = लज्जित होकर। निवारयेत् = रोके। अनिवेद्येव = बिना कहे ही। सव्याजम् = बहाने के साथ उठकर, प्रदेशात् = स्थान से। उपगतोऽहम् = मैं आया हूँ। एवम् अवस्थिते = ऐसी स्थिति में। यदत्र अवसरप्राप्तम् = इस समय जो उचित हो। तत्र प्रभवति = वह आप कर सकती हैं। मन्मुखासक्तदृष्टिः = मेरे मुख की ओर टकटकी लगाये। तूष्णीमभवत् = चुप हो गया।

हिन्दी अनुवाद– उसके इस प्रकार कहने पर मैं सोचने लगा– यह बहुत दूर जा चुका है, अतः अब इसे लौटाया नहीं जा सकता। इसका यह कामविकार जीवनभर नहीं जा सकता। इसलिए इसके प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। साधु लोग अत्यन्त निन्दनीय बुरे कर्मों द्वारा भी मित्र के प्राणों की रक्षा करना उचित मानते हैं। अतः बहुत लज्जाजनक होने पर भी अचानक उपस्थित

इस काम को करना ही चाहिए। क्या करूँ? दूसरी गति ही क्या है? उसके पास जाता हूँ और उसे इस दशा को बतलाता हूँ ऐसा सोचकर संभवतः मुझे अनुचित कार्य में संलग्न जान लज्जा के कारण वह रोके न, अतः उसे बिना बतलाये ही बहाने से उठकर उस स्थान से आया हूँ। इस स्थिति में जो उचित हो उसे आप कर सकती हैं। ऐसा कहकर यह जानने के लिए कि मैं क्या कहती हूँ, मेरे मुख की ओर देखते हुए वह चुप हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः = अकालान्तरक्षमः+च+अयम्+अस्य मदनविकारः। प्राणास्तावदस्य = प्राणाः+तावत्+अस्य।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'अतिभूमिं गतोऽयं न शक्यते निवर्तयितुम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– यह बहुत दूर तक चला गया है, अतः अब इसे लौटाया नहीं जा सकता।

प्रश्न 3. कः अचिन्तयत्?

उत्तर– कपिञ्जलः अचिन्तयत्।

प्रश्न 4. अकालान्तरक्षमः मदननविकारः कस्य?

उत्तर– पुण्डरीकस्य अकालान्तरक्षमः मदनविकारः।

प्रश्न 5. प्राणास्तावत् रक्षणीयाः कस्य?

उत्तर– पुण्डरीकस्य।

48. अहं तु तत् आकर्ण्य 'दिष्ट्या अयम् अनङ्गः मामिव तमपि अनुबध्नाति' इति सर्वानन्दानाम् उपरि वर्तमाना 'इत्थंभूते किं मया प्रतिपत्तव्यम्' इति विचारयन्ती आसम्। अत्रान्तरे प्रतीहारी ससंभ्रमं प्रविश्य अकथयत् "भर्तृदारिके! त्वम् अस्वस्थशरीरेति परिजनात् उपलभ्य महादेवी प्राप्ता" इति। तत् श्रुत्वा जनसंमर्दभीरुः कपिञ्जलः सत्वरम् उत्थाय, "राजपुत्रि! भगवानयम् अस्तम् उपगच्छति दिवाकरः। तद् गच्छामि–सर्वथा सुहृत्प्राणरक्षादक्षिणार्थम् अयम् उपरचितोऽञ्जलिः" इत्यभिधाय, प्रतिवचनकालम् अप्रतीक्ष्यैव प्रययौ।

शब्दार्थ– आकर्ण्य = सुनकर। दिष्ट्या = भाग्य से। अनङ्गः = कामदेव। मामिव = मेरे ही समान। अनुबध्नाति = पीड़ा दे रहा है। सर्वानन्दानाम् = सभी आनन्दों के। उपरि वर्तमाना = ऊपर स्थित। इत्थंभूते = ऐसा होने पर। प्रतिपत्तव्यम् = क्या करना चाहिए। विचारयन्ती आसम् = विचार कर रही थी। अत्रान्तरे = इसी बीच। ससंभ्रमम् = झटके के साथ। अकथयत् = कहा। अस्वस्थशरीरा = बीमार। परिजनात् = सेवकों से। उपलभ्य = समाचार पाकर। जनसंमर्दभीरुः = लोगों की भीड़ से भयभीत। सत्वरम् = शीघ्र ही। अस्तमुपगच्छति = अस्त हो रहे हैं। दिवाकरः = सूर्य। सुहृत्प्राणरक्षादक्षिणार्थम् = मित्र की प्राणरक्षा की दक्षिणा के लिए। उपरचितोञ्जलिः = हाथ जोड़ता हूँ। प्रतिवचनकालम् = प्रत्युत्तर। अप्रतीक्ष्य = प्रतीक्षा किये बिना ही। प्रययौ = चला गया।

हिन्दी अनुवाद– मैं यह बात सुनकर और सौभाग्य से यह कामदेव मेरे ही समान उसे भी पीड़ित कर रहा है, ऐसा जानकर सभी प्रकार के सुखों की चरम सीमा पर पहुँच गयी। इस प्रकार की स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए, यह सोच ही रही थी कि इसी बीच बड़ी शीघ्रता से प्रतिहारी ने प्रवेश करके कहा–"स्वामिपुत्रि! सेविकाओं से आपकी अस्वस्थता का समाचार जानकर महादेवी आयी हैं।" यह सुनकर लोगों की भीड़ से भयभीत कपिञ्जल शीघ्र ही उठकर बोला– "राजपुत्रि, सूर्यास्त हो रहा है, इसलिए मैं जा रहा हूँ। और मित्र की प्राणरक्षा की दक्षिणा के लिए हाथ जोड़ता हूँ।" ऐसा कहकर मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वह चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– जनसंमर्दभीरुः = जनानाम् सम्मर्दात् भीरुः। सुहृत्प्राणरक्षादक्षिणार्थम् = सुहृदः प्राणरक्षायाः दक्षिणा तस्यार्थम्। उपरचितोऽञ्जलिः = उपरचितः+अञ्जलिः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके! त्वम् अस्वस्थशरीरेति परिजनात् उपलभ्य महादेवी प्राप्ता'' इति। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्रि! सेविकाओं से आपकी अस्वस्थता का समाचार जानकर महादेवी आयी हैं।

प्रश्न 3. सर्वानन्दानाम् उपरि वर्तमाना का?

उत्तर– महाश्वेता सर्वानन्दानाम् उपरि वर्तमाना।

प्रश्न 4. प्रतिहारी का अकथयत्?

उत्तर– भर्तृदारिके! त्वम् अस्वस्थशरीरेति परिजनात् उपलभ्य महादेवी प्राप्ता।

प्रश्न 5. कः अस्तम् उपगच्छति?

उत्तर– भगवान् दिवाकरः अस्तम् उपगच्छति।

49. अम्बा तु मत्समीपम् आगत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनम् अयासीत्। गतायां च तस्याम् अस्तम् उपगते भगवति सवितरि, किंकर्तव्यतामूढा तरलिकाम् अपृच्छम्–''अयि तरलिके! कथं न पश्यसि दृढमाकुलम् मे हृदयम्। उपदिशतु मे भवती यदत्र साम्प्रतम्। अयमेवं त्वत्समक्षमेवाभिधाय गतः कपिञ्जलः। यदि तावत् विहाय विनयम्, विसृज्य लज्जाम्, अचिन्तयित्वा जनापवादम्, अतिक्रम्य सदाचारम्, अननुज्ञाता पित्रा, अननुमोदिता मात्रा, स्वयम् उपगम्य, पाणि ग्राहयामि तदा गुरुजानातिक्रमात् अधर्मो महान्। अथ धर्मानुरोधे इतरपक्षम् अङ्गीकरोमि, प्रथमं तावत् स्वयम् आगतस्य कपिञ्जलस्य प्रणयभङ्गः। अपरम्– यदि कदाचित् तस्य जनस्य मत्कृतात् आशाभङ्गात् प्राणविपत्तिः उजायते, तदपि मुनिजनवधजनितं महत् पातकं भवेत्'' इत्येवम् उच्चारयन्त्यामेव मयि अभिनवोदितेन रजनिकरबिम्बेन रमणीयतामनीयत यामिनी।

शब्दार्थ– मत्समीपम् = मेरे पास। आगत्य = आकर। सुचिरम् स्थित्वा = देर तक ठहरकर। अयासीत् = चली गयी। सवितरि = सूर्य। गतायाम् च तस्याम् = उनके जाने पर। किंकर्तव्यविमूढा = क्या करूँ, क्या न करूँ। इसका निर्णय न कर सकने वाली। अपृच्छम् = पूछा। कथम् = क्या। पश्यसि = देखती हो। दृढ़माकुलम् = अत्यन्त व्याकुल। उपदिशतु = बताओ। साम्प्रतम् = उचित। त्वत्समक्षमेव = तुम्हारे सामने ही। अभिधाय = कहकर। गतः = चला गया है। विहाय = छोड़कर। विसृज्य = त्यागकर। अचिन्तयित्वा = चिन्ता न करके। अतिक्रम्य = लाँघकर। अननुज्ञाता = बिना अनुमति लिये। पित्रा = पिता द्वारा। अननुमोदिता = बिना स्वीकृति पाये। उपगम्य = उसके पास जाकर। पाणिम् ग्राहयामि = हाथ पकड़ा लूँ। गुरुजनातिक्रमात् = गुरुजनों का अतिक्रम करने से। धर्मानुरोधेन = धर्म के अनुरोध से। इतरपक्षम् = दूसरे पक्ष को। अङ्गीकरोमि = स्वीकार करूँ। आगतस्य = आये हुए। प्रणयभंगः=प्रेम का भंग। अपरम् = दूसरे। तस्यजनस्य = उस व्यक्ति का (पुण्डरीक का)। मत्कृतात् = मेरे कारण। आशाभङ्गात् = आशा टूटने से। प्राणविपत्तिः उपजायते = मृत्यु हो जाय। मुनिजनवधजनितम् = मुनि के वध से उत्पन्न। महत् पातकम् = बहुत बड़ा पाप। भवेत् = होवे। उच्चारयन्त्यामेव = कहते ही। अभिनवोदितेन = नये नये निकले हुए। रजनिकरबिम्बेन = चन्द्रमण्डल के कारण। रमणीयतामनीयत = सुन्दरता को पहुँचायी गयी। यामिनी = रात्रि।

हिन्दी अनुवाद– मेरी माता मेरे पास आकर बहुत देर तक रुकने के बाद अपने महल में चली गयीं। उनके चले जाने पर सूर्यास्त के समय कुछ निश्चय करने में असमर्थ मैंने तरलिका से पूछा–तरलिके क्या मेरे इस अत्यन्त व्याकुल हृदय को नहीं देखती हो? इस समय मेरे लिए जो उचित हो बताओ। यह कपिंजल तुम्हारे सामने ही वैसा कहकर गया है। यदि विनय को छोड़कर, लज्जा का परित्याग कर, लोकापवाद की चिन्ता न करके, सदाचार की सीमा लाँघकर, पिता की आज्ञा और माता की स्वीकृति लिये बिना ही स्वयं उसके पास जाकर अपना हाथ उसे पकड़ा दूँ (विवाह कर लूँ) तो गुरुजनों का उल्लंघन करने से महान् अधर्म होगा और यदि धर्म के अनुरोध से दूसरे पक्ष को (वहाँ न जाने को) स्वीकार करूँ तो पहले तो स्वयं आने वाले कपिञ्जल का प्रेम टूट जायेगा, दूसरे यदि मेरे कारण आशा टूट जाने से उसकी मृत्यु हो गयी तो मुनिवध का महान् पाप होगा, मेरे इस प्रकार कहते समय नये-नये निकले हुए चन्द्रमण्डल के द्वारा रात अत्यन्त रमणीय हो उठी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गुरुजनातिक्रमात् = गुरुजनानां अतिक्रमणम् तस्मात्। मुनिजनवधजनितम् = मुनिजनस्य वधात् जनितम्। मत्समीपम् = मम समीपम्। त्वत्समक्षमेव = त्वत्+समक्षम्+एव। उच्चारयन्त्यामेव = उच्चारमन्त्याम्+एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. **"अयि तरलिके! कथं न पश्यसि दृढमाकुलम् मे हृदयम्।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– तरलिके! क्या मेरे इस अत्यन्त व्याकुल हृदय को नहीं देखती हो।
प्रश्न 3. **का मत्समीपम् आगत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनम् अयासीत्?**
उत्तर– अम्बा मत्समीपम् आगत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनम् अयासीत्।
प्रश्न 4. **किंकर्तव्यविमूढा का आसीत्?**
उत्तर– किंर्तव्यविमूढा महाश्वेता आसीत्।
प्रश्न 5. **महाश्वेता काम् अपृच्छत्?**
उत्तर– महाश्वेता तरलिकाम् अपृच्छत्।

50. तदानीम्–दुर्विषहमदनवेदनातुरां, तथाविधं रजनिकरबिम्बं विलोकयन्तीम् मूर्च्छा मां निमीलितलोचनाम् अकार्षीत्। अथ संभ्रान्ता तरलिका, सरभसम् उपनीताभिः चन्दनचर्चाभिः तालवृन्तानिलैश्च लब्धसंज्ञां माम् आबद्धाञ्जलिः एवम् अवादीत्– "भर्तृदारिके! किं लज्जया, गुरुजनापेक्षया वा? प्रसीद प्रेषय माम्। आनयामि ते हृदयदयितम्। उत्तिष्ठ। स्वयं वा तत्र गम्यताम्" इति। एवंवादिनीम् ताम् "उत्तिष्ठ, संभावयामि स्वयम् अभिगमनेन हृदयदयितं जनम्" इति अभिदधाना कथंचित् तामेव अवलम्ब्य, उदतिष्ठम्। उच्चलितायाश्च मे दुर्निमित्तनिवेदकम् अस्पन्दत दक्षिणं चक्षुः। तेन उपजातशङ्का च अचिन्तयम्। 'इदमपरं किमप्युत्क्षिप्तं दैवेन' इति।

शब्दार्थ– तदानीम् = उस समय। दुविषहमदनवेदनातुराम् = असह्य कामपीड़ा से व्यग्र। तथाविधम् = वैसे। रजनिकरबिम्बम् = चन्द्रमण्डल को। विलोकयन्तीम् = देखने वाली। निमीलितलोचना = बन्द आँखों वाली। अकार्षीत् = कर दिया। सभ्रान्ता = घबड़ायी हुई। सरभसम् = शीघ्रता से, उपनीताभिः = लायी गयी। चन्दन चर्चाभिः = चन्दन के लेप द्वारा। तालवृन्तानिलैः = ताड़ के पंखे की वायु से। लब्धसंज्ञाम् = होश में आने वाली को। आबद्धांजलिः = हाथ जोड़ते हुए। एवम् = इस प्रकार। अवादीत् = बोली। किं लज्जया = लज्जा से क्या? गुरुजनापेक्षया = गुरुजनों की अनुमति से। प्रसीद = कृपा करो। प्रेषय = भेजो। आनयामि = ले आ रही हूँ। हृदयदयितम् = प्राणप्रिय को। उत्तिष्ठ = उठो। गम्यताम् = चलो। एवंवादिनीम् = इस प्रकार कहने वाली। संभावयामि = सम्मान करूँ। अभिगमनेन = जान से। अभिदधाना = कहती हुई। कथंचित् = किसी प्रकार। अवलम्ब्य = सहारा लेकर। उदतिष्ठतम् = उठी। उच्चलितायाश्च = चलने वाली का। दुर्निमित्तनिवेदकम् = अपशकुन बताने वाला। अस्पन्दत = फड़क उठा। दक्षिणम् चक्षुः = दाहिना नेत्र। उपजातशंका = शंकित होकर। अचिन्तयम् = सोचा। इतः परम् = यह दूसरा। किमप्युत्क्षिप्तम् = कुछ डाल दिया गया। दैवेन = भाग्य द्वारा।

हिन्दी अनुवाद– उस समय असह्य कामपीड़ा से व्याकुल मुझे उस प्रकार के चन्द्रबिम्ब के देखने से मूर्च्छा आ गयी और मेरी आँखें बन्द हो गयीं, इसके बाद घबड़ायी तरलिका ने लाकर चन्दन का लेप किया और ताड़ के पंखे से हवा किया जिससे मैं होश में आ गयी। उसने मुझसे हाथ जोड़कर कहा– स्वामिपुत्री! इस लज्जा और गुरुजनों की उपेक्षा से क्या होगा? कृपा करके मुझे भेजिए, मैं आपके प्राणप्रिय को लाती हूँ, अथवा उठिए, स्वयं वहाँ चलिए। इस प्रकार कहने वाली तरलिका से मैंने कहा– उठो मैं स्वयं वहाँ चलकर प्राणप्रिय को सम्मानित करूँ। ऐसा कहकर उसी का सहारा लेते हुए मैं उठ खड़ी हुई। ज्यों ही मैं चलने लगी त्यों ही अपशकुन की सूचना देने वाली मेरी दाहिनी आँख फड़क उठी। जिससे शंकित होकर मैंने विचार किया कि अब भाग्य और कौन दूसरी घटना उपस्थित करना चाहता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दुर्विषहमदनवेदनातुराम् = दुर्विषहेन मदनवेदनया आतुरा या ताम्। लब्धसंज्ञाम् = लब्धा संज्ञा तया ताम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके! किं लज्जया, गुरुजनापेक्षया वा? प्रसीद प्रेषय माम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्रि! लज्जा से अथवा श्रेष्ठ लोगों की अनुमति से क्या प्रयोजन है? (आप) प्रसन्न होवें, मुझे भेज दें।

प्रश्न 3. दुर्विषहमदनवेदनातुरां का आसीत्?

उत्तर– महाश्वेता दुर्विषहमदनवेदनातुराम् आसीत्।

प्रश्न 4. रजनीबिम्बं विलोकयन्तमीम् का मूर्च्छिता आसीत्?

उत्तर– महाश्वेता मूर्च्छिता आसीत्।

प्रश्न 5. का सम्भ्रान्ता आसीत्?

उत्तर– तरलिका सम्भ्रान्ता आसीत्।

51. अथ च गृहीतविविधकुसुमताम्बूलाङ्गरागया तरलिकया अनुगम्यमाना रक्तांशुकेन कृतशिरोवगुण्ठना केनचित् आत्मीयेनापि परिजनेन अनुपलक्ष्यमाणा, प्रमदवनपक्षद्वारेण निर्गत्य, तत्कालोचितैः आलापैः तम् उद्देशम् अभ्युपागमम्। तत्र च तस्मिन्नेव सरसः पश्चिमे तटे पुरुषस्येव रुदितध्वनिम् विप्रकर्षात् नातिव्यक्तम् उपालक्षयम्। दक्षिणेक्षणस्फुरणेन प्रथममेव मनस्याहित-शङ्काविषण्णेन अन्तरात्मना 'तरलिके! किमिदम्' इति सभयम् अभिदधाना, तदाभिमुखम् अतित्वरितम् अगच्छम्।

शब्दार्थ– गृहीतविविधकुसुमताम्बूलांगरागया =तरह-तरह के फूल, ताम्बूल और अङ्गराग को लेने वाली। अनुगम्यमाना = अनुगमन की गयी। रक्ताशुकेन = लालवस्त्र से। कृतशिरोवगुण्ठना = सर पर घूँघट डाली हुई। आत्मीयेनापि = खास। परिजनेन = सेवक द्वारा। अनुपलक्ष्यमाणा = न देखी हुई, छिपकर। प्रमदवनपक्षद्वारेण = प्रमदवन के छोटे द्वार से। निर्गत्य = निकलकर। तत्कालोचितैः = उस समय के अनुरूप। आलापैः = बातचीत द्वारा। उद्देशम् = स्थान। अभ्युपागमम् = समीप में पहुँची। पुरुषस्येव = पुरुष जैसा। रुदितध्वनिम् = रोने की आवाज। विप्रकर्षात् = दूर होने से। नातिव्यक्तम् = स्पष्ट न होने वाली। उपालक्षयम् = सुनी। दक्षिणेक्षणस्फुरणेन = दाहिनी आँख फड़कने से। प्रथमेव = पहिले ही। मनस्याहितशंकाविषण्णेन = मन में आयी हुई शंका से दुःखी। अन्तरात्मना = हृदय से। सभयम् = भय के साथ। अभिदधाना = कहती हुई। तदभिमुखम् = उसी ओर। अतित्वरितम् = बड़ी शीघ्रता से। अगच्छम् = चली।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् अनेक फल, ताम्बूल तथा अंगराग लेकर पीछे-पीछे आनेवाली तरलिका के साथ लाल रंग के कपड़े का घूँघट डाल कर और अपने निजी सेवकों से भी छिपकर मैं प्रमदवन के छोटे से दरवाजे से निकलकर समयोचित वार्तालाप करती हुई उस स्थान के समीप पहुँची। वहाँ के पश्चिमी किनारे पर दूर होने के कारण स्पष्ट न होने वाली पुरुष जैसे रोने की आवाज सुनाई पड़ी। दाहिनी आँख फड़कने के कारण पहले ही मन में सशंक हो उठने वाली मैं दुःखी हृदय से बोली– तरलिके! ये क्या है? इस प्रकार कहकर मैं उसी ओर जल्दी-जल्दी चलने लगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गृहीतविविधकुसुमताम्बूलांगरागया = गृहीतानि विविधानि कुसुमानि ताम्बूलानि अंगरागानि च तया। प्रमदवनपक्षद्वारेण = प्रमदवनस्य पक्षद्वारेण।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?

उत्तर– उपरोक्त गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित 'चन्द्रापीडकथायाः' उद्धृतः?

प्रश्न 2. ''अथ च गृहीतविविधकुसुमताम्बूलाङ्गरागया तरलिकया अनुगम्यमाना रक्तांशुकेन कृतशिरोवगुण्ठना।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तत्पश्चात् अनेक प्रकार के फल, ताम्बूल और अङ्गराग को ग्रहण करने वाली तरलिका से अनुगत होती हुई लाल कपड़े सिर पर डाली हुई है।

प्रश्न 3. कया अनुगम्यमाना?
उत्तर– तरलिकया अनुगम्यमाना।
प्रश्न 4. केन कृतिशिरोवगुण्ठना?
उत्तर– रक्तांशुकेन कृतशिरोवगुण्ठना।
प्रश्न 5. सरसः पश्चिम तटे कस्य रुदितध्वनिम् अश्रुणोत्?
उत्तर– सरसः पश्चिम तटे पुरुषस्येव रुदितध्वनिम् अश्रुणोत्।

52. अथ निशीथप्रभावात् दूरादेव विभाव्यमानस्वरम् उन्मुक्तार्तनादम् ''हा हतोऽस्मि, हा किमिदम् आपतितम्? हा दुरात्मन् मदन! निर्घृण! किमिदम् अकृत्यम् अनुष्ठितम्। आः पापे दुर्विनीते महाश्वेते! किम् अनेन ते अपकृतम्। आः पाप दुश्चरित! चन्द्र! चाण्डाल! कृतार्थोऽसि इदानीम्। हा भगवन् श्वेतकेतो! न वेत्सि मुषितम् आत्मानम्। हा तपः! निराश्रयमसि। हा सत्य! अनाथमसि। हा सरस्वति! विधवाऽसि। सखे! प्रतिपालय माम्। अहमपि भवन्तम् अनुयास्यामि। न शक्नोमि भवता विना श्रणमप्यवस्थातुम् एकाकी'' इत्येतानि अन्यानि च विलपन्तं कपिञ्जलम् अश्रौषम्।

शब्दार्थ– निशीथप्रभावात् = रात के प्रभाव से। दूरादेव = दूर से ही। विभाव्यमानस्वरम् = जिसका स्वर पहचाना जा रहा हो। उन्मुक्तार्तनादम् = जिसकी दुःखपूर्ण आवाज प्रकट हो रही हो। हतोऽस्मि = मैं मारा गया हूँ। किमिदम् = यह क्या। आपतितम् = अचानक आ पड़ा। निर्घृण = नीच। मदन = कामदेव। अकृत्यम् = बुरा कर्म। अनुष्ठितम् = किया। दुर्विनीते = दुष्ट। अपकृतम् = अपराध किया। अनेन = इसके द्वारा। ते = तुम्हारा। कृतार्थोऽसि = सफल हो जाओ। न वेत्सि = नहीं जानते हो। मुषितम् आत्मानम् = अपना लूट लिया जाना। निराश्रयम् = असहाय। प्रतिपालय = प्रतीक्षा करो। अनुयास्यामि = पीछे चलूँगा। क्षणमप्यवस्थातुम् = एक क्षण भी रहना। इत्येतानि = इस प्रकार यह। अन्यानि = अन्य प्रकार से। विलपन्तम् = विलाप करते हुए। अश्रौषम् = सुना।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् मैंने कपिञ्जल को विलाप करते हुए सुना जिसका स्वर रात्रि के कारण दूर से ही पहिचान में आ रहा था। वह चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था– हाय! मैं मारा गया। हाय! यह अचानक क्या हो गया। अरे दुष्ट, निष्ठुर कामदेव तुमने क्यों इतना बुरा कार्य कर डाला। अरी पापिनी महाश्वेते! इसने तुम्हारा क्या अपराध किया था? अरे पापी कुकर्मी, चांडाल चन्द्रमा अब तुम सफल मनोरथ हो जाओ। हाय भगवान् श्वेतकेतु! तुम्हें अपना लुट जाना नहीं मालूम है। हाय तप! तुम असहाय हो गये। हाय! सत्य! तुम अनाथ हो गये। हाय सरस्वती! आज तुम विधवा हो गयी। मित्र! मेरी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम्हारे बिना मैं अकेले एक क्षण भी यहाँ नहीं ठहर सकता। वह इसी प्रकार तथा और दूसरी-दूसरी बातें कहकर रो रहा था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– विभाव्यमानस्वरम् = विभाव्यमानः स्वर यस्य तम्। उन्मुक्तार्तनादम् = उन्मुक्तः आर्तनादः यस्य सः तम्। इत्येतानि = इतिः एतानि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. ''न शक्नोमि भवता विना श्रणमप्यवस्थातुम् एकाकी'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तुम्हारे बिना अकेला क्षणभर भी जीवित नहीं रह सकता हूँ।
प्रश्न 3. कं विलपन्तम् अश्रौषम्?
उत्तर– कपिञ्जलं विलपन्तम् अश्रौषम्।
प्रश्न 4. उन्मुक्तार्तनादम् कः?
उत्तर– कपिञ्जलः उन्मुक्तार्तनादम्।
प्रश्न 5. 'हा भगवन् श्वेतकेतो! न वेत्सि मुषितम् आत्मानम्।' कस्य उक्तिः?
उत्तर– कपिञ्जलस्य उक्तिः।

53. तच्च श्रुत्वा दूरादेव मुक्तैकताराक्रन्दा, त्वरितैः पादप्रक्षेपैः पदे पदे प्रस्खलन्ती, तं प्रदेशं गत्वा, सरस्तीरसमीपवर्तिनि शशिमणिशिलातले विरचितं मृणालमयं शयनम्, अधिशयानम्, तत्क्षणविगतजीवितं तं महाभागम् अद्राक्षम्। ''एतद्भूतमूर्च्छान्धकारां च तदा किमकरवम्? किं व्यलपम्? इति सर्वमेव नाज्ञासिषम्। अथाहम् अतिचिरात् लब्धचेतना, 'हा हां ! किमिदम् उपनतम्' इति मुक्तार्तनादा 'हा अम्ब! हा तात! हा सख्यः!' इति व्याहरन्ती 'हा नाथ! क्व माम् एकाकिनीम् उत्सृज्य यासि? हा हतास्मि मन्दभागिनी, धिङ् मां दुष्कृतकारिणीम्। याहमेवंविधं भवन्तम् उत्सृज्य गृहं गतवती–भगवत्यः वनदेवताः! प्रसीदत। प्रयच्छतास्य प्राणान्'' इत्येतानि अन्यानि च ग्रहगृहीतेव उन्मत्तेव व्यलपम्। मुहुर्मुहुः तरलिकां कण्ठे गृहीत्वा प्रारुदम्। 'भगवन्! प्रसीद प्रत्युज्जीवयैनम्' इति मुहुर्मुहुः कपिञ्जलस्य पादयोः अपतम्। तथाभूते तस्मिन् अवस्थान्तरे मरणैकनिश्चया तत्तत् बहु विलप्य, तरलिकाम् अब्रवम्–''अयि! उत्तिष्ठ काष्ठान्याहृत्य विरचय चिताम्। अनुसरामि जीवितेश्वरम्'' इति।

शब्दार्थ– तच्च = और यह। मुक्तैकताराक्रन्दा = एक स्वर से चिल्लाकर रोने वाली। त्वरितैः = जल्दी-जल्दी। पादप्रक्षेपैः = कदम डालने से, पदे-पदे = कदम-कदम पर। प्रस्खलन्ती = लड़खड़ाती हुई। तम् प्रदेशम् गत्वा = उस स्थान पर जाकर। सरस्तीरसमीपवर्तिनी = तालाब के किनारे के समीप स्थित। शशिमणि-शिलातले = चन्द्रकांत मणि की चट्टान पर। विरचितम् = लगाये गये। मृणालमयं शयनम् = कमल की डंठल के बिछौने पर। अधिशयानम् = सोये हुए। तत्क्षण-विगतजीवितम् = तत्काल के मरे हुए। एतद्भूतमूर्च्छान्धकारां = इसके कारण मूर्च्छा के अन्धकार में पड़ने वाली। किमकरवम् = क्या किया। किं व्यलपम् = क्या विलाप किया। नाज्ञासिषम् = न जान सकी। अतिचिरात् = बहुत देर के बाद। लब्धचेतना = होश में आने वाली। किमिदम् उपनतम् = यह क्या हो गया? व्याहरन्ती = पुकारती हुई। मुक्तार्तनादा = फूट-फूट कर रोती हुई। क्व = कहाँ। एकाकिनीम् = अकेली को। उत्सृज्य = छोड़कर, यासि = जा रहे हो। हतास्मि = मारी गयी हूँ। धिङ् = धिक्कार है। दृष्कृतकारणीम् = पाप करने वाली। एवंविधं = इस प्रकार। भवन्तम् = आपको। गतवती = चली गयी। प्रसीदत = प्रसन्न होइए। प्रयच्छतास्य = इसको दो। ग्रहगृहीतेव = ग्रह के वश में पड़ी हुई। उन्मत्तेव = पगली जैसी। व्यलपम् = विलाप करने लगी। मुहुर्मुहुः = बार-बार। कण्ठे गृहीत्वा = गला पकड़कर। प्रारुदम् = रोने लगी। प्रत्युज्जीवयैनम् = इन्हें जीवित कर दो। पादयोः = पैरों पर। अपतम् = गिरने लगी। तथाभूते = ऐसा होने पर। अवस्थान्तरे = मृत्यु। मरणैकनिश्चया = एकमात्र मरने का निश्चय करने वाली। तत्तत् = बहुत प्रकार से। विलप्य = विलाप करके। अब्रवन् = बोली। उत्तिष्ठ = उठो। काष्ठान्याहृत्य = लकड़ियाँ इकट्ठी करके। विरचय = बनाओ। अनुसरास्मि = अनुसरण करूँगी। जीवितेश्वरम् = प्राणनाथ।

हिन्दी अनुवाद– दूर से ही कपिञ्जल का रुदन सुनकर फूट-फूट कर रोती हुई तथा शीघ्रता के साथ पैरों के रखने के कारण पग-पग पर लड़खड़ाती हुई उस स्थान पर जाकर तालाब के किनारे के समीप ही चन्द्रकांतमणि की शिला पर कमलदंड से बनायी गयी शैय्या पर लेटे तथा उसी समय मरे हुए उस महाभाग को मैंने देखा। उन्हें इस प्रकार देखते ही मैं मूर्च्छित हो गयी। इसलिए उस समय मैंने क्या कहा और क्या-क्या किया, यह सब न जान सकी। बहुत देर बाद होश आने पर हाय! यह क्या हो गया? इस प्रकार चिल्लाकर हाय माता, हाय पिता, हाय सखियाँ कहकर रोने लगी और कहने लगी कि हाय मुझे अकेली छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो? मैं भाग्यहीन मारी गयी, मुझ पापिनी को धिक्कार है जो आपको इस दशा में छोड़कर घर चली गयी। भगवती, वनदेवता! मेरे ऊपर कृपा करो, इन्हें फिर से जीवन प्रदान करो। इस प्रकार तथा और भी दूसरी तरह ग्रह के वशीभूत तथा पगली के समान विलाप करने लगी। बार-बार तरलिका का गला पकड़कर रोने लगी। भगवान्! इन्हें कृपा करके फिर जीवित कर दो, ऐसा कहकर बार-बार कपिञ्जल के पैरों पर गिरने लगी। इस प्रकार उसकी मृत्यु हो जाने पर एकमात्र मरण का निश्चय कर मैंने नाना प्रकार के विलाप करके तरलिका से कहा–अरी! उठ, लकड़ियाँ इकट्ठी करके चिता बना। मैं अपने प्राणनाथ का अनुगमन करूँगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तच्च = तत्+च। मुक्तैकताराक्रन्दा = मुक्ताः एकतार आक्रन्दः यस्य सा। तत्क्षण-विगतजीवितम् = (तस्मिन् क्षणे एव विगतम् जीवनम् यस्य तम्)। लब्धचेतना = लब्धा चेतना यया सा। मुक्तार्तनादा = मुक्तः आर्तनादः यथा सा। प्रयच्छतास्य = प्रयच्छत+अस्य। प्रत्युज्जीवयैनम् = प्रति+उत्+जीवय+एनम्। उन्मत्तेव = उत्मत्ता+इव। मरणैक निश्चया = मरणम् एव एकः निश्चयः यस्या सा। काष्ठान्याहृत्य = काष्ठानि+आहृत्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'भगवन्! प्रसीद प्रत्युज्जीवयैनम्' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– भगवान्! इन्हें कृपा करके फिर जीवित कर दो।
प्रश्न 1. विगतजीवितं कं महाभागम् अद्राक्षम्?
उत्तर– पुण्डरीक महाभागं विगतजीवितम् अद्राक्षम्।
प्रश्न 2. केन अद्राक्षम्?
उत्तर– महाश्वेतया अद्राक्षम्।
प्रश्न 3. का मूर्च्छिता बभूव?
उत्तर– महाश्वेता मूर्च्छिता बभूव।

54. अत्रान्तरे चन्द्रमण्डलात् विनिर्गतः दिव्याकृतिः पुरुषः गगनात् अवतीर्य, बाहुभयां तम् उपरतम् उत्क्षिपन् गंभीरेण स्वरेण ''वत्से महाश्वेते! न परित्याज्याः त्वया प्राणाः। पुनरपि तवानेन सह भविष्यति समागमाः।'' इति माम् आदृतः पितेव अभिधाय, सहैव अनेन गगनतलम् उदपतत्।

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। चन्द्रमण्डलात् = चन्द्रमंडल से। विनिर्गतः = निकला हुआ। दिव्याकृतिः पुरुषः = दिव्य आकृति वाला पुरुष। गगनात् = आकाश से। अवतीर्य = उतरकर। बाहुभ्याम् = भुजाओं से। तम् उपरतम् = उस मरे हुए को। उत्क्षिपन् = उठाते हुए। गंभीरेण स्वरेण = गम्भीर स्वर से। परित्याज्याः = छोड़ना चाहिए। पुनरपि = फिर भी। तवानेन सद् = तुम्हारा इसके साथ। भविष्यति = होगा। समागमः = मिलन। आदृतः पितेव = आदरणीय पिता के समान। अभिधाय = कहकर। सहैव अनेन = उसके साथ ही। गगनतलम् = आकाश में। उदपतत् = उड़ गया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच चन्द्रमण्डल से निकले हुए एक दिव्य पुरुष ने आकाश से उतरकर अपनी दोनों भुजाओं पर उस मरे हुए पुण्डरीक को उठाते हुए गम्भीर स्वर में आदरणीय पिता के समान मुझसे कहा कि–पुत्री महाश्वेते! तुम प्राणों का परित्याग मत करना। तुम्हारा इसके साथ फिर मिलन होगा। इस प्रकार कहकर वह उसके साथ ही साथ आकाश में उड़ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र+अन्तरे। दिव्याकृतिः = दिव्य+आकृतिः। पुनरपि = पुनः + अपि। तवानेन सह = (तव+अनेन+सह)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. ''वत्से महाश्वेते! न परित्याज्याः त्वया प्राणाः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– वत्से महाश्वेते! तुम प्राणों का परित्याग मत करना।
प्रश्न 3. चन्द्रमण्डलात् कः विनिर्गतः?
उत्तर– दिव्याकृतिः पुरुषः विनिर्गतः।
प्रश्न 4. बाहुभ्यां कम् उपरतम् उत्क्षिपत्?
उत्तर– पुण्डरीकम् उपरतम् उत्क्षिपत्।
प्रश्न 5. गंभीर स्वरेण केन अकथयत्?
उत्तर– द्विव्याकृतिः पुरुषेण अकथयत्।

55. अहं तु तेन व्यतिकरकेण सभया सविस्मया सकौतुका च सती किमिदम् इति कपिञ्जलम् अपृच्छम्। असौ तु ससंभ्रमम् अदत्त्वैवोत्तरम्, उत्थाय ''दुरात्मन् क्व मे वयस्यम् अपहृत्य गच्छसि?'' इत्यभिधाय सकोपः सवेगम् उत्तरवल्कलेन परिकरम् आबध्य, तमेव अनुसरन् अन्तरिक्षम् उदपतत्। पश्यन्त्याः एव मे सर्वे एव ते तारागणमध्यम् अविशन्।

शब्दार्थ– तेन व्यतिकरेण = उस घटना से। सभया = भयभीत। सविस्मया = चकित। सकौतुका = उत्कण्ठित। सती = होकर। अपृच्छम् = पूछा। ससंभ्रमम् = एकाएक। अदत्त्वैवोत्तरम् = बिना उत्तर दिये ही। उत्थाय = उठकर। क्व = कहाँ। मे वयस्यम् = मेरे मित्र को। अपहृत्य = छीनकर। गच्छसि = जा रहे हो। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। सकोपः = क्रोध के साथ। सवेगम् = बड़े वेग से। उत्तरवल्कलेन = वल्कल की चादर से। परिकरम् आबध्य = कमर को कसकर। तमेव अनुसरन् = उसी का पीछा करते हुए। अन्तरिक्षम् = आकाश में। उदपतत् = उड़ गया। पश्यन्त्या = देखने वाली। सर्वे एव = वे सभी। तारागण मध्यम् = तारों के बीच। अविशन् = प्रविष्ट हो गये।

हिन्दी अनुवाद– इस घटना से भयभीत, चकित और उत्कण्ठित होकर मैंने कपिञ्जल से पूछा कि यह क्या है? वह बिना उत्तर दिये ही एकाएक उठकर, 'दुष्ट! मेरे मित्र को छीनकर कहाँ लिये जा रहे हो?' इस प्रकार कहते हुए वल्कल (पेड़ की छाल) के दुपट्टे से कमर को बाँधकर उसके पीछे-पीछे आकाश में उड़ गया और हमारे देखते-देखते वे सभी तारों के बीच प्रविष्ट हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अदत्त्वैवोत्तरम् = अदत्वा+एव+उत्तरम्। इत्यभिधाय = इति+अभिधाय।

।। प्रश्नोत्तरः ।।

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?**
उत्तर– उपरोक्त गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित 'चन्द्रापीडकथायाः' उद्धृतः?
प्रश्न 2. **''दुरात्मन् क्व मे वयस्यम् अपहृत्य गच्छसि?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– दुष्ट! मेरे मित्र को खींचकर कहाँ लिये जा रहे हो?
प्रश्न 3. **का सभया सविस्मया सकौतुका च?**
उत्तर– महाश्वेता सभया सविस्मया सकौतुका च।
प्रश्न 4. **कपिञ्जलेन के अपृच्छत्?**
उत्तर– महाश्वेता अपृच्छत्।
प्रश्न 5. **'दुरात्मन क्व मे वयस्यम् अपहृत्य गच्छसि।' केन उक्तः?**
उत्तर– कपिञ्जलेन उक्तः।

56. अहं तु कपिञ्जलगमनेन द्विगुणीकृतशोका, किंकर्तव्यतामूढा तरलिकाम् अब्रवम्– ''अयि न जानासि? कथय किमेतत्'' इति। सा तु तत् अवलोक्य स्त्रीस्वभावकातरा विषण्णहृदया अवादीत्–''भर्तृदारिके! न जानामि किन्तु महदिदम् आश्चर्यम्। अमानुषाकृतिः एष पुरुषः। समाश्वासिता च सानुकम्पम् भर्तृदारिका। तमनुसरन् गत एव कपिञ्जलः तत् कोऽयम्? कुतोऽयम्, किमर्थं वानेनायम् अपगतासुः उत्क्षिप्य नीतः? क्व वा नीतः इति सर्वम् उपलभ्य जीवितं वा मरणं वा समाचरिष्यसि। कपिञ्जलस्य प्रत्यागमनकालावधि ध्रियन्ताम् अमी प्राणाः'' इत्युक्त्वा पादयोः मे न्यपतत्।

शब्दार्थ– कपिञ्जलगमनेन = कपिञ्जल के जाने से। द्विगुणीकृतशोका = दूना शोक करती हुई। किंकर्तव्यतामूढा = कार्याकार्य का निर्णय करने में असमर्थ। अब्रवम् = बोली। जानासि = जानती हो। कथय = कहो। किमेतत् = यह क्या है? अवलोक्य = देखकर। स्त्रीस्वभावकातरा = स्त्रीस्वभाव के कारण भयभीत। विषण्णहृदया = दुःखी हृदय वाली। अवादीत् = बोली। महदिदम् = यह महान। अमानुषाकृतिः मनुष्य जैसी आकृति वाला नहीं दैवी। समाश्वासिता = आश्वस्त किया है। सानुकम्पम् = कृपा के साथ। तमनुसरन् = उसका पीछा करते हुए। वानेनायम् = अथवा उसके द्वारा यह। अपगतासुः = मृतक। नीतः = ले जाया गया। उपलभ्य = जानकर। समाचरिष्यसि = करोगी। प्रत्यागमनकालावधि = लौटने के समय तक। ध्रियन्ताम् = धीरज

धारण कीजिए। अभी = इन। न्यपतत् = गिर पड़ी।

हिन्दी अनुवाद– कपिञ्जल के जाने से दूनी दुःखी होकर तथा कार्याकार्य का निर्णय करने में असमर्थ होने के कारण मैंने तरलिका से कहा– अरी! नहीं जानती है, कहो यह क्या है? उसने उस घटना को देख स्त्री-स्वभाव के कारण भयभीत और दुःखी हृदय से कहा–स्वामिपुत्रि! मैं नहीं जानती हूँ, किन्तु यह महान् आश्चर्य है। वह पुरुष दिव्य आकृति का है, और दयापूर्वक उसने आप को आश्वासन भी दिया है। उसका पीछा करते हुए कपिञ्जल गया ही है, अतः वह कौन है, कहाँ से आया है और उस मृतक को किसलिए लेकर उड़ गया है, यह सारी बातें जानकर ही आप जीने अथवा मरने का निश्चय करें। कपिञ्जल के लौटने तक इन प्राणों को धारण किये रहें। ऐसा कहकर वह तरलिका मेरे पैरों पर गिर पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– द्विगुणीकृतशोका = द्विगुणकृतः शोकः यया सा। स्त्रीस्वभावकातरा = स्त्रीस्वभावेन कातरा। वानेनायम् = वा+अनेन+अयम्। अपगतासुः = अपगता असवः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "भर्तृदारिके! न जानामि किन्तु महदिदम् आश्चर्यम्। अमानुषाकृतिः एष पुरुषः।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्रि! मैं नहीं जानती हूँ, किन्तु यह महान आश्चर्य है। वह पुरुष दिव्य आकृति का है।

प्रश्न 3. केन गमनेन द्विगुणीकृतशोका?

उत्तर– कपिञ्जलगमनेन द्विगुणीकृतशोका।

प्रश्न 4. का द्विगुणीकृतशोका आसीत्?

उत्तर– महाश्वेता द्विगुणीकृतशोका आसीत्।

प्रश्न 5. किंकर्तव्यतामूढा का आसीत्?

उत्तर– महाश्वेता किंकर्तव्यतामूढा आसीत्।

57. अहमपि तदेव युक्तं मन्यमाना नोत्सृष्टवती जीवितम्। तस्मिन्नेव सरस्तीरे तरलिकाद्वितीया तां क्षपां क्षपितवती। प्रत्युषसि तु उत्थाय तस्मिन्नेव सरसि स्नात्वा तमेव कमण्डलुम् आदाय, तामेव अक्षमालां गृहीत्वा, गृहीतब्रह्मचर्या बहुविधैः नियमैः शरीरं शोषयन्ती, देवम् शरणार्थिनी स्थाणुम् आश्रिता। अपरेद्युश्च, कुतोऽपि समुपलब्धवृत्तान्तः तातः, सहाम्बया, सह बन्धुवर्गेणागत्य तैस्तैः उपदेशैः गृहगमनाय मे महान्तं यत्नम् अकरोत्। अथ च दृढाध्यवसायां मां विसृज्य सशोक एव गृहान् अयासीत्। "साहम् एवंविधा, निर्लज्जा, निष्फलजीविता, निस्सुखा च" इत्युक्त्वा वल्कलोपान्तेन वदनम् आच्छाद्य, मुक्तकण्ठं प्रारोदीत्।

शब्दार्थ– तदेव = यही। युक्तम् = उचित। मन्यमना = मानती हुई। नोत्सृष्टवती = नहीं छोड़ा। जीवितम् = जीवन को। तरलिकाद्वितीया = तरलिका के साथ। क्षपाम् = रात को। क्षपितवती = बिताया। प्रत्युषसि = प्रातःकाल। सरसि = तालाब में। स्नात्वा = स्नान करके। आदाय = लेकर। अक्षमालाम् = रुद्राक्ष की माला को। गृहीतब्रह्मचर्या = ब्रह्मचारिणी का व्रत लेकर। बहुविधैः नियमैः = अनेक नियमों से। शोषयन्ती = सुखाती हुई। शरणार्थिनी = शरण पाने की कामना वाली। देवस्थाणुम् = भगवान् शंकर का। आश्रिता = सहारा लिया। अपरेद्युः = दूसरे दिन। कुतोऽपि = कहीं से। समुपलब्धवृतान्तः = समाचार पाये हुए। तातः = पिता। सहाम्बया = माता के साथ। सह बन्धुवर्गेण = परिवार वालों के साथ। आगत्य = आकर। तैस्तैः उपदेशैः = विभिन्न प्रकार के उपदेशों से, गृहगमनाय = घर चलने के लिए। दृढाध्यवसायाम् = दृढ़ निश्चयवाली। विसृज्य = छोड़कर। सशोकः = दुःख के साथ। अयासीत् = चले गये। एवंविधा = इस प्रकार। निर्लज्जा = लज्जा रहित। निष्फल जीविता = व्यर्थ जीवन वाली। निस्सुखा = सुख रहित। बल्कलोपान्तेन = वल्कल के आँचल से। वदनम् = मुँह को। आच्छाद्य = ढँककर। मुक्तकण्ठ = खुले गले से। प्रारोदीत् = रोने लगी।

हिन्दी अनुवाद– मैंने भी यही उचित समझकर जीवन का परित्याग नहीं किया। उसी सरोवर के किनारे तरलिका के साथ

वह रात बितायी और प्रातःकाल उठकर सरोवर में स्नान करके उसी कमण्डल और उसी रुद्राक्ष की माला को लेकर ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया तथा अनेक नियमों से शरीर को सुखाती हुई शरण पाने की कामना से भगवान शिव का सहारा लिया। दूसरे दिन कहीं से समाचार पाकर मेरे पिता ने माताजी तथा परिवार वालों के साथ आकर विभिन्न उपदेशों द्वारा मुझे घर ले चलने का बहुत अधिक प्रयत्न किया। इसके पश्चात् (घर न लौटने के लिए निश्चय वाली) मुझको छोड़कर दुःखी हृदय से घर लौट गये। हे राजकुमार चन्द्रापीड, मैं वही निर्लज्ज, व्यर्थ का जीवन बिताने वाली दुखिया हूँ। इस प्रकार कहकर वल्कल (पेड़ की छाल से बना वस्त्र) के आँचल से मुँह ढँककर फूट-फूटकर रोने लगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदेव = तत्+एव। गृहीतब्रह्मचर्या = गृहीतम् ब्रह्मचर्यम् यया सा। दृढाध्यवसायाम् = दृढः अध्यवसायः यस्याः ताम्। निष्फलजीविता = निष्फलम् जीवितम् यस्याः सा।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. ''साहम् एवंविधा, निर्लज्जा, निष्फलजीविता, निस्सुखा च'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– मैं वही निर्लज्जा, निष्फल जीवन बिताने वाली दुखिया हूँ।

प्रश्न 3. का नोत्सृष्टवती जीवितम्?

उत्तर– महाश्वेता नोत्सृष्टवती जीवितम्।

प्रश्न 4. कया सह क्षपां क्षपितवती?

उत्तर– तरलिकया सह क्षपां क्षपितवती।

प्रश्न 5. महाश्वेता कस्य देवम् आश्रिता?

उत्तर– महाश्वेता देवस्थाणुम् आश्रिता।

58. चन्द्रापीडश्च तस्याः विनयेन दाक्षिण्येन मधुरालापतया च प्रथममेव उपारूढगौरवः, तदानीम् अपरेण प्रदर्शितसद्भावेन स्ववृत्तान्तकथनेन नितरां प्रीतो बभूव। अभाषत च– ''भगवति! क्लेशभीरुः कृत्स्नो लोकः स्नेहसदृशं कर्म अनुष्ठातुम् अशक्तः निष्फलेन अश्रुपातमात्रेण स्नेहम् उपदर्शयन् रोदिति त्वया तु सर्वं प्रेमोचितम् आचेष्टितम्। किमर्थं रोदिषि? यदेतत् अनुमरणं नाम, तत् अतिनिष्फलम्, अविद्वज्जनाचरित एषः मार्गः। अज्ञानपद्धतिरियम्। मौर्ख्यस्खलितमिदम्।

शब्दार्थ– विनयेन = विनम्रता से। दाक्षिण्येन = सरलता से। मधुरालापतया = मीठी-मीठी बातों से। प्रथमेव = पहले ही। उपारूढगौरवः = गौरवयुक्त। तदानीम् = उस समय। अपरेण = दूसरे। प्रदर्शितसद्भवेन = सद्भाव प्रकट करने से। स्ववृत्तान्तकथनेन = अपने समाचार कहने से, नितराम् = अत्यन्त। प्रीतो बभूव = प्रसन्न हुआ। अभाषत् = कहा। क्लेशभीरुः = कष्टों से भयभीत। कृत्सनो लोकः = सभी लोग। स्नेहसदृशम् = प्रेम जैसा। अनुष्ठातुम् अशक्त; = करने के लिए असमर्थ। निष्फलेन = व्यर्थ। अश्रुपातमात्रेण = केवल आँसू गिराकर। उपदर्शयन् = दिखाते हुए। रोदिति = रोते हैं। प्रेमोचितम् = प्रेम के लिए उचित। आचेष्टिम् = आचरण किया। अनुमरण = किसी के पीछे मरना। अतिनिष्फलम् = अत्यन्त व्यर्थ है। अविद्वज्जनाचरितम् = मूर्खों द्वारा अपनाया गया। अज्ञानपद्धंतिरियम् = यह अज्ञान की रीति है। मौर्ख्यस्खलितमिदम् = यह मूर्खतापूर्ण लगती है।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड उसकी विनम्रता, सरलता एवं मधुर बातचीत से पहले ही अपने को गौरवशाली समझने लगा था अथवा उसके प्रति गौरव की भावना से पूर्ण हो चुका था, अब उसके इस आत्मीयता दिखाने तथा अपना वृत्तांत कह सुनाने के कारण अत्यन्त प्रसन्न हो गया, उसने कहा कि देवि! कष्टों से डरने वाले सभी लोग प्रेम जैसा कर्म करने में असमर्थ होने के कारण व्यर्थ ही आँसू गिराकर प्रेम प्रकट करते हुए रोते हैं। तुमने तो केवल प्रेमोचित आचरण किया है। फिर क्यों रो रही हो? और यह जो किसी के पीछे मरने की क्रिया (सती होना) है वह तो अत्यन्त व्यर्थ है। वह मूर्खों द्वारा अपनाया गया मार्ग है, अज्ञान की रीति है तथा मूर्खतापूर्ण भूल है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपारूढगौरवः = उपारूढ गौरवः यस्य सः। प्रदर्शितसद्भावेन = प्रदर्शितः सद्भावः यया तेन। क्लेशभीरुः = क्लेशेण भीरुः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?**

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''भगवति! क्लेशभीरुः कृत्स्नो लोकः स्नेहसदृशं कर्म अनुष्ठातुम् अशक्तः निष्फलेन अश्रुपातमात्रेण स्नेहम् उपदर्शयन् रोदिति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– देवि! कष्टों से डरने वाले सभी लोग प्रेम जैसा कर्म करने में असमर्थ होने के कारण व्यर्थ ही आँसू गिराकर प्रेम प्रकट करते हुए रोते हैं।

प्रश्न 3. **कः नितरां प्रीतो बभूव?**

उत्तर– चन्द्रापीडः नितरां प्रीतो बभूव।

प्रश्न 4. **कया प्रेमोचितम् आचेष्टितम्?**

उत्तर– महाश्वेतया प्रेमोचितम् आचेष्टितम्।

प्रश्न 5. **केन आचरित एषः मार्गः?**

उत्तर– अविद्वज्जनाचरित एषः मार्गः।

59. स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः प्राणाः। अत्र हि विचार्यमाणे स्वार्थ एव प्राणपरित्यागः असह्यशोकवेदनाप्रतीकारत्वात्। उपरतस्य तु न कमपि गुणम् आवहति। न तावत् तस्यायं प्रत्युज्जीवनोपायः, न नरकपतनप्रतीकारः, न धर्मोपचयकारणम्, न दर्शनोपायः, अन्यामेवासौ कर्मणा नीयते कर्मभूमिम्। असावप्यात्मघाती केवलम् एनसा संयुज्यते। जीवस्तु जलाञ्जलिदानादिना बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च। मृतस्तु नोभयस्यापि। स्मर तावत् प्रियाम् एकपत्नीं रतिम् भर्तरि मकरकेतौ मृतेऽपि अविरहिताम् असुभिः। उतरां च विराट्दुहितरं पञ्चत्वमभिमन्यौ उपगतेअपि धृतदेहाम्। पृथां च पाण्डौ मृतेऽपि अपरित्यक्तजीविताम्। अतो नार्हस्यनिन्द्यम् आत्मानं निन्दितुम्''। इत्येवंविधै अन्यैश्च बहुभिः उपसान्त्वनैः संस्थाप्य ताम् अञ्जलिपुटोपनीतेन निर्झरजलेन प्रक्षालितमुखीम् अकारयत्।

शब्दार्थ– चेत् = यदि। न जहति = नहीं छोड़ता है। विचार्यमाणे = विचार करने पर। असह्यशोकवेदनाप्रतीकारत्वात् = असह्य शोक पीड़ा दूर करने का उपाय होने के कारण। उपरतस्य = मरे हुए का। गुणम् न आवहति = कोई लाभ नहीं करता। प्रत्युज्जीवनोपायः = फिर जिलाने का उपाय। न नरकपतनप्रतीकारः=नरक में गिरने से बचने का कोई उपाय नहीं। धर्मोपचयकारणम् = धर्मलाभ करने का हेतु। दर्शनोपायः = देखने का उपाय। अन्यामेवासौ = यह दूसरी ही। कर्मणा = कर्म द्वारा। नीयते = ले जाया जाता है। असावप्यात्मघाती = यह आत्मघात करनेवाला। एनसा संयुज्जते = पाप से युक्त होता है। जीवस्तु = जीवित रहकर, जलाञ्जलिदानादिना = जल की अंजली देने से, तपर्ण आदि करने से। बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च = मृतक और अपना दोनों का उपकार करता है। नोभयस्यापि = दोनों का नहीं। स्मर = स्मरण करो। एकपत्नीम् = एकमात्र पत्नी। मकरकेतौ = कामदेव की। भर्तरि = स्वामी। असुभिः अविरहिताम् = प्राणों से युक्त होने वाली। विराटदुहितरम् = विराट कन्या। पञ्चत्वमभिमन्यौ = अभिमन्यु के मरने पर। उपगतेअपि = जाने पर भी। धृतदेहाम् = शरीर धारण करने वाली। पाण्डौ मृतेऽपि = पाण्डु के मरने पर भी। अपरित्यक्तजीविताम् = जीव का परित्याग न करने वाली। नार्हस्यनिन्द्यम् = निन्दा न करने योग्य। उपसान्त्वनैः = सान्त्वना की बातों से। संस्थाप्य = समझाकर। अञ्जलीपुटोपनीतेन = अंजलिपुट में लाये गये। निर्झरजलेन = झरने के जल से। प्रक्षालितमुखीम् = धुले हुए मुखवाली। अकारयत् = कराया।

हिन्दी अनुवाद– यदि प्राण स्वयं नहीं छोड़ते हैं तो उनका परित्याग नहीं करना चाहिए। इस विषय में विचार करने पर प्राणों का परित्याग स्वार्थ ही है, क्योंकि वह असह्यवेदना से छुटकारा पाने का उपाय है। इससे मरने वाले को कोई भी लाभ नहीं पहुँचता। यह न तो उसके फिर जी उठने का उपाय है, न यह नरक में गिरने से बचने का उपाय है, न धर्मसंचय का हेतु

है और न उसके दर्शन का उपाय है। मरा हुआ व्यक्ति अपने कर्मों द्वारा ही दूसरी कर्मभूमि में पहुँचा दिया जाता है (अर्थात् अपने प्रिय के पीछे मरने वाला व्यक्ति दूसरे जन्म में जीवन धारण करता है)। इस प्रकार आत्मघात करने वाला केवल पाप का भागी बनता है। जीवित रहने वाला तर्पण आदि करके मृतक तथा अपना दोनों का लाभ करता है। मरा हुआ तो दोनों का उपकार नहीं कर सकता। अपने पति कामदेव के मरने पर प्राणों का त्याग न करने वाली प्रिय पत्नी रति का, अभिमन्यु के मर जाने पर शरीर धारण करने वाली विराट की पुत्री उत्तरा का और पाण्डु के मरने पर भी जीवन धारण करने वाली कुन्ती का स्मरण करो। इसलिए तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा की निन्दा करना उचित नहीं है। इस प्रकार तथा और भी अनेक सान्त्वना की बातों से उसे (महाश्वेता को) समझा-बुझाकर अपनी अंजली में लाये गये जल से चन्द्रापीड ने उसका मुँह धुलवा दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अन्यामेवासौ = अन्याम् एव असौ। असावप्यात्मघाती = असौ+अपि+आत्मघाती। बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च = बहु+उपकरोति+उपरतस्य+आत्मनः+च। नोभयस्यापि = न+उपभयस्य+अपि। नार्हस्यनिन्द्यम् = न+अर्हसि+अनिन्द्यम्। प्रक्षालितमुखीम् = प्रक्षालितं मुखं यस्याः सा ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. 'स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः प्राणाः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– यदि प्राण स्वयं नहीं छोड़ते तो उनका परित्याग नहीं करना चाहिए।
प्रश्न 3. स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः के?
उत्तर– स्वयं चेत् न जहति, न परित्याज्याः प्राणाः।
प्रश्न 4. विराटस्य पुत्री का आसीत्?
उत्तर– विराटस्य पुत्री उत्तरा आसीत्।
प्रश्न 5. कः निर्झरजलेन प्रक्षालितमुखम् अकारयत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः निर्झरजलेन प्रक्षालितमुखम् अकारयत्।

60. अथ क्षीणे दिवसे महाश्वेता मन्दम् मन्दम् उत्थाय, पश्चिमां सन्ध्याम् उपास्य, वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद। चन्द्रापीडोऽपि उत्थाय कृतसन्ध्याप्रणामः तस्मिन् द्वितीये शिलातले मृदुभिः लता पल्लवैः शय्याम् अकल्पयत्।

शब्दार्थ– क्षीणे दिवसे = दिन के समाप्त होने पर। मन्दं-मन्दं = धीरे-धीरे। उत्थाय = उठकर। पश्चिमाम् संध्याम् = सायंकाल की सन्ध्या। उपास्य = उपासना करके। वल्कलशयनीये = वल्कल के बिछौने पर। सखेदम् = कष्ट के साथ। उष्णं च निःश्वस्य = और गरम साँस लेकर। निषसाद = बैठी। कृतसंध्याप्रणामः = सन्ध्यावन्दन करने वाले। मृदुभिः = कोमल। लतापल्लवैः = लताओं के पत्तों से। अकल्पयत् = लगायी।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् दिन बीत जाने पर महाश्वेता धीरे-धीरे उठकर सन्ध्याकालीन सन्ध्योपासना करके वल्कल के बिछौने पर दुःखी हृदय से गरम आहें भरती हुई चुपचाप आकर बैठ गयी। चन्द्रापीड ने भी उठकर सन्ध्या-वन्दनादि करके उसी दूसरी चट्टान पर लताओं के कोमल पत्तों से शैय्या लगायी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतसंध्याप्रणामः = कृतः संध्यायाः प्रणामः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **"<u>अथ क्षीणे दिवसे महाश्वेता मन्दम् मन्दम् उत्थाय, पश्चिमां सन्ध्याम् उपास्य, वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद।</u>" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– इसके पश्चात् दिन बीत जाने पर महाश्वेता धीरे-धीरे उठकर सन्ध्याकालीन सन्ध्योपासना करके वल्कल के बिछौने पर दुःखी हृदय से गरम आहें भरती हुई चुपचाप आकर बैठ गयी।

प्रश्न 3. **वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद का?**

उत्तर– महाश्वेता वल्कलशयनीये सखेदम् उष्णं च निःश्वस्य निषसाद।

प्रश्न 4. **कः द्वितीये शिलातले मृदुभिः लता पल्लवैः शय्याम् अकल्पयत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः द्वितीये शिलातले मृदुभिः लता पल्लवैः शय्याम् अकल्पयत्।

प्रश्न 5. **महाश्वेता पश्चिमां सन्ध्यां कदा उपासितः?**

उत्तर– महाश्वेता क्षाणेदिवसे पश्चिमां सन्ध्याम् उपासितः।

61. उपविष्टश्च तस्याम् पुनः पुनः तमेव महाश्वेतावृत्तान्तं मनसा भावयन्, पुनरेनां पप्रच्छ–"भगवति! सा तव परिचारिका तरलिका क्व गता?" इति। अथ सा अकथयत्–"महाभाग! श्रूयताम्– अमृतसंभवात् अप्सरः कुलात् मदिरेति नाम्ना कन्यका अभूत्। दक्षदुहितुः मुनेः तनयः चित्ररथो नाम गन्धर्वराजः तस्याः पाणिम् अग्रहीत्। तयोश्च परस्परप्रेमसंवर्धितानि यौवनसुखानि सेवमानयोः दुहितृरत्नम् उदपादि कादम्बरीति नाम्ना। सा च मे जन्मनः प्रभृति द्वितीयमिव हृदयं बालमित्रम्। सेयम् अमुनैव मदीयेन वृत्तान्तेन सशोका निश्चयम् अकार्षीत– 'नाहं कथंचिदपि सशोकायां महाश्वेतायाम् आत्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि' इति।

शब्दार्थ– उपविष्टश्च = और बैठकर। मनसा भावयन् = मन ही मन सोचते हुए। पुनरेनाम् = फिर उससे। पप्रच्छ = पूछा। तव परिचारिका = तुम्हारी सेविका। क्व गता = कहाँ गयी है? अकथयत् = कहा। अमृतसंभवात् = अमृत से उत्पन्न हुए। अप्सरःकुलात् = अप्सरा के वंश से। अभूत् = पैदा हुई। दक्षदुहितुः = दक्ष की पुत्री। मुनेः = मुनि के। तनयः = पुत्र। तस्याः = उसका। पाणिम् अग्रहीत् = पाणिग्रहण किया। तयोश्च = उन दोनों के। परस्परप्रेमसंवर्धितानि = परस्पर प्रेम से बढ़े हुए। यौवनसुखानि = जवानी के सुख। सेवमानयोः = भोग करने वाले। उद्पादि = उत्पन्न हुई। जन्मनः प्रभृति = जन्म से ही। द्वितीयमिव हृदयम् = दूसरे हृदय के समान। बालमित्रम् = बालसखी। अमुनैव = इसे ही। मदीयेन वृत्तान्तेन = मेरे इस समाचार से। सशोका = दुःखी होकर। अकार्षीत् = किया। कथंचिदपि = किसी प्रकार भी, आत्मनः = अपना, पाणिम् ग्राहयिष्यामि = हाथ पकड़ाऊँगी, विवाह करूँगी।

हिन्दी अनुवाद– उस शैय्या पर बैठकर बार-बार उसी महाश्वेता के वृत्तान्त के बारे में सोचते हुए चन्द्रापीड ने फिर उससे पूछा-देवी, तुम्हारी वह सेविका तरलिका कहाँ गयी? उसने कहा-महाभाग! अमृत से उत्पन्न अप्सरा वंश से मदिरा नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। दक्ष की पुत्री मुनि के लड़के गन्धर्वराज चित्ररथ ने उससे विवाह किया। परस्पर प्रेम से बढ़े यौवन सुख का अनुभव करने वाले उन दोनों से कादम्बरी नाम की कन्या उत्पन्न हुई। वह जन्म से ही दूसरे हृदय जैसी मेरी बालसखी है। उसने मेरे इस वृत्तान्त से दुःखी होकर निश्चय किया कि जब तक महाश्वेता इस शोकावस्था में रहेंगी, मैं किसी प्रकार भी अपना विवाह नहीं करूँगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपविष्टश्च = उपविष्टः+च। पुनरेनाम् = पुनः+एनाम्। कथंचिदपि = कथंचित्+अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **'<u>नाहं कथंचिदपि सशोकायां महाश्वेतायाम् आत्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि' इति।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– महाश्वेता के शोकाकुल रहने पर मैं किसी भी प्रकार अपना पाणिग्रहण नहीं कराऊँगी।

प्रश्न 3. **अप्सरः कुलात् का नाम्ना कन्यका अभूत?**

उत्तर– अप्सरः कुलात् मदिरेति नाम्ना कन्यका अभूत।

प्रश्न 4. दक्षस्य दुहिता का नाम्नासीत्?
उत्तर– दक्षस्य दुहिता मदिरा नाम्नासीत्।
प्रश्न 5. चित्ररथः कया पाणिम् अग्रहीत्?
उत्तर– चित्ररथः मदिराया पाणिम् अग्रहीत्।
प्रश्न 6. कादम्बर्याः मातापितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– कादम्बर्याः माता मदिरा पिता चित्ररथः च आस्ताम्।

62. तत् आत्मदुहितुः निश्चयवचनं शुश्राव। गच्छति च काले समुपारूढयौवनाम् आलोक्य सः ताम् एकापत्यतया अतिप्रियतया च, किञ्चिदपि ताम् अभिधातुम् अशक्तः ''वत्से ! महाश्वेते! त्वमेव शरणम् इदानीं कादम्बरीम् अनुनेतुम्'' इति संदिश्य, क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनम् अद्यैव प्रत्युषसि मत्समीपं प्रेषितवान्। ततो मया गुरुवचनगौरवेण सखीप्रेम्णा च, क्षीरोदेन सार्धं सा तरलिका ''सखि कादम्बरि ! किं दुःखितमपि जनम् अतितरां दुःखयसि? जीवन्तीम् इच्छसि चेन्मां तत् कुरु गुरुवचनम् अवितथम्'' इति संदिश्य विसर्जितां गतायां च तस्याम् अनन्तरमेव इमां भूमिम् अनुप्राप्तः महाभागः। इत्यभिधाय तूष्णीम् अभवत्।

शब्दार्थ– आत्मदुहितुः = अपनी कन्या के। निश्चयवचनं = निश्चय की बात को, शुश्राव = सुना। गच्छति काले = कुछ समय बीतने पर। समुपारूढयौवनाम् = युवावस्था में पहुँची हुई, आलोक्य = देखकर, एकापत्यतया = एक ही संतान होने के कारण, अतिप्रियतया च = बहुत प्रिय होने से, अभिधातुम् = समझने में, अशक्तः = असमर्थ होकर, त्वमेव शरणम् = तुम्हीं शरण हो, तुम्हीं समर्थ हो। इदानीम् = अब, अनुनेतुम् = समझाने के लिए, संदिश्य = सन्देश देकर, अद्यैव = आज ही। प्रत्युषसि = प्रातःकाल ही, मत्ससमीपम् = मेरे पास, प्रेषितवान् = भेजा, गुरुवचनगौरवेण = गुरुवाणी के आदर से, सखीप्रेम्णा = सखी के प्रेम से, सार्धम् = साथ, दुखितमपि जनम् = इस दुखिया को, अतितराम् = और भी अधिक, दुःखयसि = दुखी बना रही हो, जीवन्तीम् = जीती रहने वाली, इच्छति = चाहती हो, चेन्माम् = यदि मुझको कुरु = करो, गुरुवचनम् = माता-पिता की बात, अवितथम् = सत्य, विसर्जिता = भेजी गयी, गतायाम् च तस्याम् = उसके जाने पर, अनन्तरमेव = बाद ही, इमाम् भूमिम् = इस स्थान पर, अनुप्राप्तः = आये, तूष्णीम् अभवत् = चुप हो गयी।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् चित्ररथ ने अपनी कन्या के निश्चय को सुना। कुछ समय बीतने पर उसे भलीभाँति युवावस्था में पहुँची हुई देखकर, इकलौती सन्तान होने तथा अपने अत्यन्त प्रेम के कारण उसे समझने में असमर्थ चित्ररथ ने क्षीरोदक नाम के कंचुकी को आज ही प्रातःकाल मेरे पास यह सन्देश लेकर भेजा कि पुत्री महाश्वेते ! अब तुम्हीं कादम्बरी को मना सकती हो। गुरुजनों की आज्ञा के प्रति गौरव की भावना तथा सखी के प्रेम के कारण क्षीरोदक के साथ तरलिका को आज ही यह सन्देश लेकर भेजा है कि सखी कादम्बरी! मुझ दुंखिया को और अधिक दुःखी क्यों बना रही हो ? यदि तुम मुझे जीवित देखना चाहती हो तो गुरुजनों की बात मान लो। उसके जाने के, तुरन्त बाद महानुभाव यहाँ आये हैं, ऐसा कहकर वह चुप हो गयी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गुरुवचनगौरवेण = गुरोः वचनस्य गौरवेण। दुखितमपि = दुखितम्+अपि। चेन्माम् = चेत+माम्। अनन्तरमेव = बाद ही।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''किं दुःखितमपि जनम् अतितरां दुःखयसि? जीवन्तीम् इच्छसि चेन्मां तत् कुरु गुरुवचनम् अवितथम्'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– क्यों इस दुखिया को और भी अधिक दुखित कर रही हो? मुझे जीती हुई देखना चाहती हो तो गुरुजन के वचन को मान लो।
प्रश्न 3. चित्ररथः कस्य निश्चयवचनं शुश्राव?
उत्तर– चित्ररथः आत्मदुहितुः निश्चयवचनं शुश्राव।

प्रश्न 4. कंचुकीयाः का नाम आसीत्?
उत्तर— कंचुकीयाः क्षीरोदक नाम आसीत्।
प्रश्न 5. चित्ररथः क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनं कस्याः समीपं प्रेषितवान्?
उत्तर— चित्ररथः क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनं महाश्वेतायाः समीपं प्रेषितवान्।

63. क्रमेण च उद्गते कुमुदनान्धवे, चन्द्रापीडः सुप्तामालोक्य महाश्वेताम् पल्लवशयने समुपाविशत्। ''किं नु खलु अस्यां वलाया मामन्तरेण चिन्तयति वैशम्पायनः'' इति चिन्तयत्रेव निद्रां ययौ। अथ क्षीणायाम् क्षपायाम्, उषसि सन्ध्याम् उपास्य, शिलातलोपविष्टायां महाश्वेतायाम्, निर्वर्तितप्राभातिकविधौ चन्द्रापीडे, तरलिका षोडशवर्षवयसा केयूरकनाम्ना गन्धर्वदारकेण अनुगम्यमाना प्रादुरासीत्। आगत्य च महाश्वेतायाः समीपम् उपसृत्य कृतप्रणामा, सविनयम् उपाविशत्। महाश्वेता तु तां दृष्ट्वा, ''किं त्त्वया दृष्टा कादम्बरी कुशलिनी? करिष्यति वा तत् अस्मद्वचनम्?'' इत्यपृच्छत्।

शब्दार्थ – उद्गते = निकलने पर। कुमुदबान्धवे = चन्द्रमा। सुप्ताम् = सोयी हुई, आलोक्य = देखकर, समुपाविशम् = बैठ गया, अस्याम् बेलायाम् = इस समय, मामन्तरेण = मेरे बिना, चिन्तयंति = सोचता होगा, चिन्तयन्नेव = सोचते-सोचते, निद्रां ययौ = सो गया, क्षीणायाम् क्षपायाम् = रात बीतने पर, उषसि = प्रातःकाल, सन्ध्यामुपास्य = संध्या करके, शिलातलौपविष्टायाम् = शिला पर बैठी हुई। निर्वर्तितप्राभातिकविधौ = प्रातःकालीन क्रियाओं को कर लेने वाले। षोडशवर्षवयसा = 16 वर्ष वाले, गन्धर्वदारकेण = गन्धर्व पुत्र के साथ, प्रादुरासीत् = आ पहुँची, आगत्य = आकर, उपसृत्य = बैठ कर, कृतप्रणामा = प्रणाम करके, उपाविशत् = बैठ गयी, दृष्टा = देखी गयी, कुशलिनी = कुशल से, करिष्यति = करेगी, अस्मद्वचनम् = हमारी बात।

हिन्दी अनुवाद– धीरे-धीरे चन्द्रमा के उदय हो जाने पर चन्द्रापीड महाश्वेता को सोयी हुई देखकर पल्लव की बनी शय्या पर आ बैठा और इस समय मेरे बिना वैशम्पायन क्या सोचता होगा? ऐसा सोचते-सोचते सो गया। रात के बीत जाने पर प्रातःकाल सन्ध्या करके महाश्वेता जब उसी चट्टान पर आकर बैठ गयी और चन्द्रापीड ने प्रातःकालीन सभी कार्यों को पूरा कर लिया। ठीक उसी समय सोलह वर्ष की अवस्था वाले केयूरक नाम के एक गन्धर्व पुत्र को पीछे-पीछे लिये तरलिका आ पहुँची। वहाँ आकर वह महाश्वेता के पास गयी और प्रणाम करके विनम्रता के साथ बैठ गयी। महाश्वेता ने उसे देखकर पूछा कि क्या तुमने देखा? कादम्बरी कुशलपूर्वक है न? और क्या वह हमारे वचन का पालन करेगी?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कुमुदबान्धवे = (कुमुदः बान्धवः यस्य स तस्मिन्) निर्वर्तितप्राभातिकविधौ = निर्वर्तितः प्राभातिकस्य विधिः येन सः तस्मिन्। समुपाविशम् = सम+उपविशम्। मामन्तरेण = माम्+अन्तरेण। सन्ध्यामुपास्य = सन्ध्याम्+उपास्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर— प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. ''किं नु खलु अस्यां वलाया मामन्तरेण चिन्तयति वैशम्पायनः'' इति। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर— इस समय वैशम्पायन मेरे बिना क्या सोचता होगा?
प्रश्न 3. कः सुप्तामालोक्य महाश्वेतां पल्लवशयने समुपाविशत्?
उत्तर— चन्द्रापीडः सुप्तामालोक्य महाश्वेतां पल्लवशयने समुपाविशत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कां सुप्तामालोक्य पल्लवशयने समुपाविशत्?
उत्तर— चन्द्रापीडः महाश्वेतां सुप्तामालोक्य पल्लवशयने समुपाविशत्?
प्रश्न 5. केयूरकः कः आसीत् ?
उत्तर— केयूरकः एकः गन्धर्वस्य पुत्रः आसीत्।

64. अथ सा तरलिका ''भर्तृदारिके, दृष्टा मया भर्तृदारिका कादम्बरी सर्वतः कुशलिनी। विज्ञापिता च निखिलं भर्तृदुहितुः सन्देशम्। आकर्ण्य च यत् तथा प्रतिसन्दिष्टम्, तदेषः तयैव विसर्जितः तस्या एव वीणावाहकः केयूरकः कथयिष्यति'' इति व्यजिज्ञपत्। विरतवचसि तस्यां केयूरकः अब्रवीत्—''भर्तृदारिके महाश्वेते ! देवी

कादम्बरी त्वां विज्ञापयति–यदियम् आगत्य माम् अवदत् तरलिका किमिदं मच्चित्तपरीक्षणम्? किं प्रेमविच्छेदाभिलाषः? किं वा प्रकोपः? यत्र भर्तृविरहविधुरा प्रियसखी महत् कृच्छ्रम् अनुभवति तत्राहम् अविगणय्य एतत् कथम् आत्मसुखार्थिनी पाणिं ग्राहयिष्यामि? कथं वा मम सुखं भविष्यति? तत् मा कृथाः स्वप्नेऽपि पुनरिममर्थं मनसि'' इति। महाश्वेता तु तत् श्रुत्वा, सुचिरं विचार्य ''गच्छ, स्वयमेव अहम् आगत्य यथाहम् आचरिष्यामि,'' इत्युक्त्वा केयूरकं प्राहिणोत्।

शब्दार्थ– सर्वतः = भलीभाँति। विज्ञापितः = निवेदन किया। निखिलम् = सम्पूर्ण। भर्तृदुहितुः = स्वामिपुत्री के। आकर्ण्य = सुनकर। यत् = जो। प्रतिसन्दिष्टम् = संदेश के उत्तर में जो सन्देश दिया। तयैव विसर्जितः=उसके द्वारा भेजा हुआ। तस्याः एव = उसका ही। वीणावाहकः = वीणा लेकर चलने वाला। कथयिष्यति = कहेगा। व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया। विरतवचसि = चुप हो जाने पर। विज्ञापयति = निवेदन करती है। यदियम् = यह जो। अवदत् = कहा। किमिदम् = क्या यह। मच्चित्त्परीक्षणम् = मेरे हृदय की परीक्षा है। प्रेमविच्छेदाभिलाषः = प्रेम तोड़ने की अभिलाषाः। प्रकोपः = क्रोधः। भर्तृविरहविधुरा = पतिवियोग से दुखी, कृच्छ्रम् = कष्ट को, अविगणय्य = ध्यान न देकर, आत्मसुखार्थिनी = अपने सुख को चाहने वाली। पाणिं ग्राहयिष्यामि = विवाह करूँगी। मा कृथाः = मत करो। स्वप्नेऽपि = स्वप्न में भी। पुनरिममर्थम् = फिर इस विषय को। मनसि = मन में। सुचिरं विचार्य = बड़ी देर तक सोचकर। यथाहम् = यथोचित। आचरिष्यामि = करूँगी। प्राहिणोत् = भेज दिया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद तरलिका ने निवेदन किया कि स्वामिपुत्री! मैंने देखा कि कादम्बरी भलीभाँति कुशलपूर्वक हैं। मैंने राजकुमारी (आप) के सभी सन्देशों को उससे निवेदन किया। उसे सुनकर उत्तर में उसने जो सन्देश दिया है, उसे उसी द्वारा भेजा गया उसी का वीणा-वाहक यह केयूरक कहेगा। उसके चुप हो जाने पर केयूरक ने कहा– राजकुमारी महाश्वेते, देवी कादम्बरी ने आप से निवेदन किया है कि तरलिका ने आकर जो कुछ मुझसे कहा, क्या वह मेरे हृदय की परीक्षा है अथवा प्रेम तोड़ने की अभिलाषा है? अथवा वह मेरे ऊपर क्रोध है? जहाँ पतिवियोग से दुःखी मेरी प्रिय सखी महान् कष्ट का अनुभव करती है वहाँ मैं उसे न देखकर उसके कष्टों की उपेक्षा करके कैसे ब्याह करूँगी? और मुझे सुख कैसे मिलेगा? इसलिए अब स्वप्न में भी फिर इस विषय को वह अपने मन में न लायें। महाश्वेता ने यह सुनकर बड़ी देर तक विचार किया और यह कहकर केयूरक को भेज दिया कि जाओ, मैं स्वयं आकर जैसा उचित होगा वैसा करूँगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यदियम् = यत्+इयम्। किमिदम् = किम्+इदम्। मच्चित्तपरीक्षणम् = मत्+चित्त+परीक्षणम्। प्रेमविच्छेदा भिलाषः = (प्रेम्णः विच्छेदस्य अभिलाषः)। भर्तृविरहविधुरा = (भर्तुः विरहेण विधुरा)। पुनरिममर्थम् = (पुनः+इमम्+अर्थम्)।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''भर्तृदारिके, दृष्टा मया भर्तृदारिका कादम्बरी सर्वतः कुशलिनी।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– स्वामिपुत्रि! मैंने देखा कि कादम्बरी भलीभाँति कुशलपूर्वक है।

प्रश्न 3. तरलिका कया निवेदनम् अकरोत्?

उत्तर– तरलिका महाश्वेतया निवेदनम् अकरोत्।

प्रश्न 4. वीणावाहकः कः आसीत्?

उत्तर– वीणावाहकः केयूरकः आसीत्।

प्रश्न 5. देवी कादम्बरी कां विज्ञापयति?

उत्तर– देवी कादम्बरी महाश्वेतां विज्ञापयति।

65. गते च केयूरके चन्द्रापीडम् उवाच ''राजपुत्र ! रमणीयः हेमकूटः। चित्रा च चित्ररथराजधानी। पेशलो गन्धर्वलोकः। सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी। तत इतः मयैव सह गत्वा हेमकूटम् दृष्ट्वा च मत्रिर्विशेषां कादम्बरीम् अपनीय तस्याः मोहविलसितम्, एकम् अहः विश्रम्य, श्वोभूते प्रत्यागमिष्यसि'' इत्युक्तवतीं,

चन्द्रापीडः, "भगवति ! दर्शनात् प्रभृति, परवान् अयं जनः कर्तव्येषु यथेष्टं नियुज्यताम्" इत्यभिधाय, तया सहैव उदचलत्।

शब्दार्थ– गते = चले जाने पर। उवाच = बोली। रमणीयः = सुन्दर। चित्रा = विचित्र। पेशलः = सुन्दर। चित्ररथराजधानी = चित्ररथ की राजधानी। सरल हृदया = सरल हृदयवाली। गन्धर्वलोकः = गन्धर्वों का देश। इतः = यहाँ से। मयैव सह गत्वा = मेरे साथ चलकर। मत्रिर्विशेषाम् = मुझसे अभिन्न। अपनीय = दूर करके। तस्याः = उसके। मोहविलसितम् = मोह के अज्ञान को। अहः = दिन। विश्रम्य = विश्राम करके। श्वोभूते = दूसरे दिन। प्रत्यागमिष्यसि = लौट आइयेगा। इत्युक्तवतीम् = ऐसा कहने वाली। परवान् = पराधीन, तुम्हारे अधीन। कर्त्तव्येषु = कार्यों में। यथेष्टम् = इच्छानुसार। नियुज्यताम् = लगाइये। अभिधाय = कहकर। उदचलत् = चल पड़ा।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक के चले जाने पर महाश्वेता ने चन्द्रापीड से कहा– हेमकूट बहुत ही मनोहर है। महाराज चित्ररथ की राजधानी अनोखी है। गन्धर्वों का देश अत्यन्त सुन्दर है और कादम्बरी अत्यन्त सरल और उदार स्वभाव की है। इसलिए यहाँ से मेरे साथ हेमकूट चलकर मुझसे अभिन्न कादम्बरी को देखकर उसके मोहरूपी अज्ञान को दूर करके एक दिन वहाँ विश्राम कीजिएगा और दूसरे दिन लौट आइएगा। इस प्रकार कहने वाली महाश्वेता से चन्द्रापीड ने कहा–देवि, मैंने जब से आपको देखा है तभी से मैं आपके अधीन हो चला हूँ। आप अपनी इच्छानुसार मुझसे काम लीजिए। ऐसा कहकर उसके साथ चल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चित्ररथराजधानी = चित्ररथस्य राजधानी। गन्धर्वलोकः =गन्धर्वाणाम् लोकः। मोहविलसितम् = मोहस्य यत् विलसितम् तत्। इत्युक्तवतीम् = इति+उक्तवतीम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. **उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. **"गते च केयूरके चन्द्रापीडम् उवाच "राजपुत्र ! रमणीयः हेमकूटः। चित्रा च चित्ररथराजधानी।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– केयूरक के चले जाने पर महाश्वेता ने चन्द्रापीड से कहा– हेमकूट बहुत मनोहर है। महाराज चित्ररथ की राजधानी अनोखी है।

प्रश्न 3. **केयूरकस्य गते महाश्वेता केन अकथयत्?**

उत्तर– केयूरकस्य गते महाश्वेता चन्द्रापीडेन अकथयत्।

प्रश्न 4. **महाराज चित्ररथस्य राजधानी कीदृशः आसीत्?**

उत्तर– महाराज चित्ररथस्य राजधानी रमणीयः आसीत्।

प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः केन सह उदचलत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेताया उदचलत्।

66. क्रमेण च गत्वा हेमकूटम्, आसाद्य गन्धर्वराजकुलम्, समतीत्य सप्तकक्ष्यान्तराणि, प्रविश्य कन्यान्तःपुरम्, तत्र च कादम्बरीभवनं तन्मध्ये च श्रीमण्डपं ददर्श। तत्र च मध्यभागे, अनेकसहस्त्रसङ्ख्येन कन्यकाजनेन परिवृताम्, नीलप्रच्छदपटप्रावृतस्य नातिमहतः पर्यङ्कस्य आश्रये धवलोपधानन्यस्तभुजलतावष्टम्भेन अवस्थिताम् सर्वरामणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श।

शब्दार्थ– आसाद्य = पहुँचकर। समतीत्य = लाँघकर। सप्तकक्ष्यान्तराणि = सात ड्योढ़ियाँ। प्रविश्य = प्रवेश करके। कन्यान्तःपुरम् = राजकुमारी के महल। तत्र = वहाँ। कादम्बरीभवनम् =कादम्बरी के महल में। तन्मध्ये = उसके बीच। श्रीमण्डपम् = अत्यन्त सुन्दर मण्डप। ददर्श = देखा। मध्यभागे = बीच में । अनेकसहस्त्रसंख्येन = कई हजार। कन्यकाजनेन = कुमारियों द्वारा। परिवृताम् = घिरी हुई। नीलप्रच्छदपटप्रावृतस्य = नीले रंग की चादर से ढके हुए। नातिमहतः = जो बहुत बड़ा नहीं था। पर्यङ्कस्य = पलंग के सहारे। धवलोपधानन्यस्त भुजलतावष्टम्भेन = उज्ज्वल तकिये पर भुजाओं को रखकर उसी के सहारे। अवस्थिताम्

= बैठी हुई। सर्वरामणीयकानाम् = सभी सुन्दरताओं की। एकनिवासभूताम् = एकमात्र निवासभूमि।

हिन्दी अनुवाद– क्रमशः हेमकूट पर्वत पर जाकर और गन्धर्व राजकुल में पहुँचकर चन्द्रापीड सात ड्योढ़ियों को लाँघने के बाद राजकुमारियों के स्थान पर पहुँचा। वहाँ कादम्बरी का महल और उसके बीच बने हुए सुन्दर मण्डप को देखा। उस मण्डप के बीच कई हजार कन्याओं से घिरी नीली चादर से ढँके हुए न बहुत बड़े न बहुत छोटे पलंग के सहारे सफेद तकिये पर भुजाओं को रखकर उसी के सहारे बैठी हुई सभी सुन्दरताओं की एकमात्र निवास भूमि कादम्बरी को उसने देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– नीलप्रच्छदपटप्रावृतस्य = नीलवर्णः यः प्रच्छदपटः तेन आवृतः तस्य। धवलोपधानन्यस्तभुजलतावष्टम्भेन = धवलं यत् उपधानं तत्र न्यस्ता या भुजलता तस्याः अवष्टम्भेन।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?

उत्तर– उपरोक्त गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित चन्द्रापीडकथायाः उद्धृतः?

प्रश्न 2. ''क्रमेण च गत्वा हेमकूटम्, आसाद्य गन्धर्वराजकुलम्, समतीत्य सप्तकक्ष्यान्तराणि, प्रविश्य कन्यान्तःपुरम्, तत्र च कादम्बरीभवनं तन्मध्ये च श्रीमण्डपं ददर्श।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– क्रमशः हेमकूट पर्वत पर जाकर और गन्धर्व राजकुल में पहुँचकर चन्द्रापीड सात ड्योढ़ियों को लाँघने के बाद राजकुमारियों के स्थान पर पहुँचा।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः कुत्र अगच्छत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः हेमकूटम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कन्यान्तःपुरं प्रविश्य किं ददर्श?

उत्तर– कादम्बरी भवनं तन्मध्ये च श्रीमण्डपं ददर्श।

प्रश्न 5. अनेकसहस्रसंख्येन कन्यकाजनेन का परिवृता?

उत्तर– कादम्बरी अनेकसहस्रसंख्येन कन्यकाजनेन परिवृता।

●●

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शूद्रकः कः आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकः राजा आसीत्।
प्रश्न 2. शूद्रकस्य राजधानी का आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकस्य राजधानी विदिशा नाम नगरी आसीत्।
प्रश्न 3. शूद्रकस्य राजधानी कया नद्या परिगता आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकस्य राजधानी वेत्रवत्या नद्या परिगता आसीत्।
प्रश्न 4. शूद्रकस्य प्रधान अमात्यः कः आसीत् ?
उत्तर– शूद्रकस्य प्रधान अमात्यः कुमारपालितः आसीत्।
प्रश्न 5. राजा शूद्रकः पूर्व जन्मनि कः आसीत् ?
उत्तर– राजा शूद्रकः पूर्व जन्मनि चन्द्रापीडः आसीत्।
प्रश्न 6. पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकस्य समीपं का आगता?
उत्तर– पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकसमीपं चाण्डाल-कन्या आगता।
प्रश्न 7. दण्डकारण्यः कुत्र आसीत्?
उत्तर– दण्डकारण्यः विन्ध्याटव्याम् आसीत्।
प्रश्न 8. जीर्णः शाल्मलीवृक्षः कुत्र आसीत्?
उत्तर– जीर्णः शाल्मलीवृक्षः पम्पाभिधानस्य सरसः पश्चिमे तीरे आसीत्।
प्रश्न 9. राज्ञः शूद्रकस्य राजधानी काभिधाना नगरी आसीत्?
उत्तर– राज्ञः शूद्रकस्य राजधानी विदिशाभिधाना नगरी आसीत्।
प्रश्न 10. चन्द्रापीडस्य बालमित्रं कः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य बालमित्रं वैशम्पायनः आसीत्।
प्रश्न 11. शुकनासः कस्य मंत्री आसीत्?
उत्तर– शुकनासः राज्ञः तारापीडस्य मंत्री आसीत्।
प्रश्न 12. नाना-देश-समागतानि शुकशकुनिकुलानि कुत्र प्रतिवसन्ति स्म?
उत्तर– नाना-देश-समागतानि शुक-शकुनिकुलानि शाल्मली वृक्षे प्रतिवसन्ति स्म।
प्रश्न 13. अभिमुखम् आगच्छन्तम् शबरसैन्यम् कः अपश्यत्?
उत्तर– अभिमुखम् आगच्छन्तम् शबरसैन्यम् वैशम्पायनः शुकं अपश्यत्।
प्रश्न 14. चाण्डालकन्या का आसीत् ?
उत्तर– चाण्डालकन्या पुण्डरीकस्य माता आसीत्।
प्रश्न 15. शूद्रकस्य सभायां शुकम् आदाय का आगता?
उत्तर– शूद्रकस्य सभायां शुकम् आदाय चाण्डालकन्या आगता।
प्रश्न 16. शूद्रक सभायां प्राप्तः शुकः केन जनेन तत्रानीतः?
उत्तर– शूद्रक सभायां शुकः चाण्डालकन्यया तत्रानीतः।
प्रश्न 17. चाण्डालकन्यका हस्ते कम् आदाय शूद्रकसभायाम् आगता?
उत्तर– चाण्डालकन्यका हस्ते पञ्जरस्थं शुकम् आदाय आगता।
प्रश्न 18. पत्रलेखा का आसीत्?
उत्तर– पत्रलेखा चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरंकवाहिनी आसीत्।

प्रश्न 19. चन्द्रापीडः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः चन्द्रस्य अवतारः आसीत्।
प्रश्न 20. शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय का अपससार?
उत्तर– शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय चाण्डालकन्या अपससार।
प्रश्न 21. शुकस्य किम् नाम आसीत्?
उत्तर– शुकस्य "वैशम्पायनः" इति नाम आसीत्।
प्रश्न 22. कस्मिन् वृक्षे वैशम्पायनः शुकः अवसत्?
उत्तर– शाल्मली वृक्षे वैशम्पायनः शुकः अवसत्।
प्रश्न 23. इन्द्रायुधः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– इन्द्रायुधः कपिंजलस्य अवतारः आसीत्।
प्रश्न 24. कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य शुकः कुत्र अविशत्?
उत्तर– कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य शुकः स्वपितुः पक्षपुटान्तरम् अविशत्।
प्रश्न 25. चन्द्रापीडम् आनेतुं कः विद्यामन्दिरम् अगच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडम् आनेतुं बलाधिकृतः बलाहकः विद्यामन्दिरम् अगच्छत्।
प्रश्न 26. चन्द्रापीडस्य माता पितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य माता विलासवती पिता च तारापीडः आस्ताम्।
प्रश्न 27. शुकस्य किं नाम आसीत् ?
उत्तर– शुकस्य नाम वैशम्पायनः आसीत्।
प्रश्न 28. कः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– राजा तारापीडः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 29. शुकनासपुत्रः वैशम्पायनः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– शुकनासपुत्रः वैशम्पायनः पुण्डरीकस्य अवतारः आसीत्।
प्रश्न 30. राजानमुद्दिश्य विहंगराजः काम् आर्यां पपाठ ?
उत्तर– सः विहंगराजः कृतजयशब्दः राजानमुद्दिश्य इमाम् आर्याम् पपाठ-
'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।'
प्रश्न 31. कादम्बरी का आसीत् ?
उत्तर– कादम्बरी चित्ररथस्य गन्धर्वराजस्य पुत्री आसीत्।
प्रश्न 32. पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने कः मुनिः प्रतिवसित स्म?
उत्तर– पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनी तपोवने जाबालिः नाम मुनिः प्रतिवसति स्म।
प्रश्न 33. शुक शिशु किं नामधेयः आसीत् ?
उत्तर– शुक शिशु वैशम्पायनः नामधेयः आसीत्।
प्रश्न 34. हारीतः कस्मात् कारणात् शुक-शिशुम् स्वाश्रमं आनीतवान्?
उत्तर– हारीतः शाल्मलीवृक्षस्य तवस्विदुरारोहत्वात् शुकशिशुम् स्वाश्रमम् आनीतवान्।
प्रश्न 35. सकलभूतलरत्नः को नाम शुकः आसीत् ?
उत्तर– सकलभूतलरत्नः वैशम्पायनो नाम शुकः आसीत्।
प्रश्न 36. कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडे अनुरक्ता आसीत्।
प्रश्न 37. कादम्बर्याः माता-पितरौ कौ आस्ताम्?
उत्तर– कादम्बर्याः माता मदिरा पिता च चित्ररथः आस्ताम्।

प्रश्न 38. महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?

उत्तर— महाश्वेता पुण्डरीके अनुरक्ता आसीत्।

प्रश्न 39. महाश्वेतायाः माता पितरौ कौ आस्ताम्?

उत्तर— महाश्वेतायाः माता गौरी पिता च हंसः आस्ताम्।

प्रश्न 40. राजा शूद्रकस्य इष्टदेवः कः आसीत्?

उत्तर— राजा शूद्रकस्य इष्टदेवः पशुपति भगवान् शङ्करः आसीत्।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. 'कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?

(i) शूद्रक (ii) चन्द्रापीड (iii) कुमारपालित (iv) वैशम्पायन

उत्तर— (i) शूद्रक।

2. कस्य विमले कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मीः?

(i) चन्द्रापीडस्य (ii) तारापीडस्य (iii) शूद्रकस्य (iv) शुकनासस्य

उत्तर— (iii) शूद्रकस्य।

3. भगवतः नारायणस्य कः अनुकरोति?

(i) शूद्रकः (ii) शुकनासः (iii) तारापीडः (iv) चन्द्रापीडः

उत्तर— (i) शूद्रकः।

4. अचिरमृदित महिषासुर रुधिररक्तं चरणमिव कात्यायनीम्—यह विशेषण वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?

अथवा **'अरण्यकमलिनीमिव मातङ्गकुलदूषिताम्' यह वाक्यांश किसके लिए प्रयुक्त है?**

(i) महाश्वेता (ii) कादम्बरी (iii) चित्रलेखा (iv) चाण्डालकन्या

उत्तर— (iv) चाण्डालकन्या।

5. 'गङ्गा प्रवाह इव भगीरथपथप्रवृत्तः'—यह विशेषण किसके लिए है?

(i) वैशम्पायन (ii) शूद्रक (iii) चाण्डालदारक (iv) चन्द्रापीड

उत्तर— (ii) शूद्रक।

6. 'विदितसकलशास्त्रार्थः राजनीतिप्रयोगकुशलः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?

(i) शूद्रक के लिए (ii) चन्द्रापीड के लिए
(iii) वैशम्पायन शुक के लिए (iv) कुमारपालित के लिए

उत्तर— (iii) वैशम्पायन शुक के लिए।

7. प्रथमे वयसि कः सुखमतिचिरमुवास?

(i) तारापीडः (ii) शूद्रकः (iii) शुकनासः (iv) वैशम्पायनः

उत्तर— (ii) शूद्रकः।

8. 'देव विदित सकल शास्त्रार्थः राजनीतिप्रयोगकुशलः वैशम्पायनो नाम शुकः'। इस वाक्य का वक्ता कौन है?

(i) शूद्रकः (ii) चाण्डालकन्या (iii) वृद्धपुरुषः (iv) प्रतीहारी

उत्तर— (iii) वृद्धपुरुषः।

9. आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् — यह विशेषण किससे सम्बद्ध है?

अथवा **'कः आसीत् आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्?**

(i) शूद्रक (ii) चन्द्रापीड (iii) वैशम्पायन (iv) कुमारपालित

उत्तर— (i) शूद्रक।

10. 'वनितासम्भोगपराङ्मुखः सुहृत्परिवृतः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) शूद्रक (ii) तारापीड (iii) चन्द्रापीड (iv) वैशम्पायन
उत्तर– (i) शूद्रक।

11. 'रजोजुषे जन्मनि' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) ब्रह्मा (ii) विष्णु (iii) इन्द्र (iv) शिव
उत्तर– (i) ब्रह्मा।

12. कस्य प्रतापानलो दिवानिशं जज्वाल?
(i) शूद्रकस्य (ii) तारापीडस्य (iii) चन्द्रापीडस्य (iv) वैशम्पायनस्य
उत्तर– (i) शूद्रकस्य।

13. 'उत्पातकेतुरहितजनस्य' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) वैशम्पायन (ii) चन्द्रापीड (iii) शूद्रक (iv) प्रतीहारी
उत्तर– (iii) शूद्रक।

14. 'आसीदशेष-नरपति-शिरः समभ्यर्चित-शासन अपर इव पाकशासनः' यह कथन किसका है?
अथवा **''अशेष-नरपति समभ्यर्चित शासनः।'' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) चन्द्रापीड (ii) शुकनास (iii) शूद्रक (iv) तारापीड
उत्तर– (iii) शूद्रक।

15. 'कृत युगानुकारिणी त्रिभुवन प्रसव भूमिरिव विस्तीर्णा।' यह विश्लेषण किसका है?
(i) विदिशा (ii) चम्पा (iii) काशी (iv) मथुरा
उत्तर– (i) विदिशा।

16. 'उदयशैलो मित्रमण्डलस्य' यह पद किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शूद्रक (iii) वृद्ध शबर (iv) वैशम्पायन शुक
उत्तर– (ii) शूद्रक।

17. का दक्षिणपथादागता?
अथवा **दक्षिणापथात् का आगता आसीत्?**
(i) महाश्वेता (ii) कादम्बरी (iii) चाण्डालकन्यका (iv) तरलिका
उत्तर– (iii) चाण्डालकन्यका।

18. विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्–
(i) शुकनासस्य (ii) चन्द्रापीडस्य (iii) शूद्रकस्य (iv) कुमारपालितस्य
उत्तर– (iii) शूद्रकस्य।

19. 'दिग्गज इवानवरतप्रदत्तदानाद्रीकृतकरः' कः आसीत्?
(i) शुकनासः (ii) शूद्रकः (iii) वैशम्पायनः (iv) तारापीडः
उत्तर– (ii) शूद्रकः।

20. 'तस्य च कलिकालभयपुञ्जीभूतकृतयुगानुकारिणी विदिशाभिधाना नगरी राजधानी आसीत्।' वाक्य में 'तस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **''कलिकालभयपुञ्जीभूत कृतयुगानुकारिणी'' विशेषण प्रयुक्त है–**
(i) चन्द्रापीड के लिए (ii) तारापीड के लिए (iii) शूद्रक के लिए (iv) पुण्यवर्मा के लिए
उत्तर– (iii) शूद्रक के लिए।

21. कः आसीदशेषनरपतिसमभ्यर्चितशासनः?
(i) वैशम्पायनः (ii) शुकनासः (iii) तारापीडः (iv) शूद्रकः
उत्तर– (iv) शूद्रकः।

22. मातङ्ग कुमारी को किसने प्रवेश कराया?
(i) प्रतीहारी (ii) द्वारपाल (iii) शूद्रक (iv) बाणभट्ट
उत्तर— (i) प्रतीहारी।

23. विदिशा नगरी किस नदी से परिगत थी?
अथवा **''त्रिभुवन प्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' का नगरी अस्ति?**
अथवा **शूद्रक की राजधानी विदिशा किस नदी से घिरी हुई थी?**
(i) गोदावरी (ii) कावेरी (iii) वेत्रवती (iv) कालिन्दी
उत्तर— (iii) वेत्रवती।

24. 'विन्ध्य वनभूमिरिव वेत्रलतावती' किसके लिए कहा गया है?
(i) चाण्डालकन्या (ii) प्रतीहारी (iii) कादम्बरी (iv) कञ्चुकी
उत्तर— (ii) प्रतीहारी।

25. शूद्रकस्य राजधानी का आसीत्?
अथवा **शूद्रक की राजधानी का नाम था—**
अथवा **''त्रिभुवनप्रसव भूमिरिव विस्तीर्णा'' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?**
अथवा **''त्रिभुवनप्रसव भूमिरिव विस्तीर्णा'' का नगरी अस्ति?**
(i) उज्जयिनी (ii) कान्धारः (iii) विदिशा (iv) काञ्ची
उत्तर— (iii) विदिशा।

26. 'हर इव जितमन्मथः' कः अस्ति?
(i) चन्द्रापीडः (ii) शूद्रकः (iii) वैशम्पायनः (iv) प्रतीहारी
उत्तर— (ii) शूद्रकः।

27. 'कर्त्ता महाश्चर्याणाम्' यह किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **चापकोटि समुत्सारित-सकलाराति-कुलोचलो राजा'' वाक्य प्रयुक्त है—**
(i) शूद्रक के लिए (ii) चन्द्रापीड के लिए (iii) वैशम्पायन के लिए (iv) चाण्डालकन्या के लिए
उत्तर— (i) शूद्रक के लिए।

28. 'वैनतेय इव विनतानन्दजननः' यह वाक्य निम्नलिखित में से किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड के लिए (ii) वैशम्पायन के लिए (iii) शूद्रक के लिए (iv) पुण्डरीक के लिए
उत्तर— (iii) शूद्रक के लिए।

29. 'अन्तःपुराद् वैशम्पायनमादायागच्छ'—यह आदेश किसको दिया गया?
(i) महाश्वेता (ii) कञ्चुकी (iii) ताम्बूलकरङ्कवाहिनी (iv) चाण्डालकन्या
उत्तर— (ii) कञ्चुकी।

30. चाण्डालकन्या कस्मात् पथादागता?
अथवा **चाण्डालकन्या कहाँ से आयी थी?**
(i) पूर्व (ii) पश्चिम (iii) उत्तर (iv) दक्षिण
उत्तर— (iv) दक्षिण।

31. क्रतूनां आहर्ता कः आसीत्?
(i) तारापीडः (ii) वैशम्पायनः (iii) शूद्रकः (iv) पुण्डरीकः
उत्तर— (iii) शूद्रकः।

32. 'प्रतापानुरागावनत समस्त सामन्तचक्रः' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) तारापीड (ii) वैशम्पायन (iii) शूद्रक (iv) चन्द्रापीड
उत्तर— (iii) शूद्रक।

33. शूद्रकस्य राज्ये कलङ्काः कुत्र आसन्?
(i) छत्रेषु (ii) ध्वजेषु (iii) गवाक्षेषु (iv) कवचेषु
उत्तर– (iv) कवचेषु।

34. प्रतीहारी कां प्रावेशयत्?
(i) वैशम्पायनम् (ii) चाण्डालकन्यकाम् (iii) कञ्चुकीम् (iv) चन्द्रापीडम्
उत्तर– (ii) चाण्डालकन्यकाम्।

35. विदिशा नगरी कया नद्या परिगता आसीत्?
(i) गोदावर्या (ii) महानद्या (iii) वेत्रवत्या (iv) भागीरथ्या
उत्तर– (iii) वेत्रवत्या।

36. 'राजानमुद्दिश्यार्यामिमांपपाठ' यह वाक्य निम्नलिखित में से किसके लिए है?
(i) प्रतीहारी के लिए (ii) शुक के लिए (iii) शूद्रक के लिए (iv) पुण्डरीक के लिए
उत्तर– (ii) शुक के लिए।

37. 'आश्रयो रसिकानाम्' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शूद्रक (iii) तारापीड (iv) शुकनास
उत्तर– (ii) शूद्रक।

38. 'दिग्गज इवानवरतप्रवृत्तदानार्द्री कृतकरः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **'अनुकरोति स्म भगवतो नारायणस्य' यह वाक्यांश किसके लिए प्रयुक्त है?**
(i) चाण्डालकन्या के लिए (ii) शूद्रक के लिए (iii) पुण्डरीक के लिए (iv) वैशम्पायन के लिए
उत्तर– (ii) शूद्रक के लिए।

39. 'आगमः काव्यामृतरसानाम्' यह पद किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड के लिए (ii) शूद्रक के लिए (iii) चाण्डालकन्या के लिए (iv) विश्रुत के लिए
उत्तर– (ii) शूद्रक के लिए।

40. 'जामदग्न्यपरशुधारेव वशीकृतसकलराजमण्डला' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?
अथवा **'आलेख्यगतामिव दर्शनमात्रफलाम्' यह पद किसके लिए प्रयुक्त है?**
अथवा **अरण्यकमलिनी इव मातङ्गकुलदूषिता'' का आसीत्?**
(i) चाण्डालकन्या (ii) प्रतीहारी (iii) चामरग्राहिणी (iv) वाराङ्गनाजन
उत्तर– (i) चाण्डालकन्या।

41. 'सन्निहितविषधरेव चन्दनलताभीषणा रमणीयाकृतिः' किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चाण्डालकन्या (ii) प्रतीहारी (iii) चामरग्राहिणी (iv) वाराङ्गना
उत्तर– (ii) प्रतीहारी।

42. 'सकलभूतलरत्नभूतः' कः आसीत्?
अथवा **'कर्ता महाश्चर्याणाम्, आदर्शः सर्वशास्त्राणां कः आसीत्?**
(i) पुण्डरीकः (ii) चन्द्रापीडः (iii) शूद्रकः (iv) वैशम्पायनः
उत्तर– (iv) वैशम्पायनः।

43. 'यस्य च कृपाणेनाकृष्यमाण, अभिसारिके समरनिशासु समीपमसकृदाजगाम राजलक्ष्मीः' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) शूद्रक के लिए (ii) चन्द्रापीड के लिए (iii) अनन्तवर्मा के लिए (iv) विहारभद्र के लिए
उत्तर– (i) शूद्रक के लिए।

44. 'सर्वमेव देवीभिः' स्वयं करतलोपनीयमानममृतायते' यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?
(i) वैशम्पायन (ii) शूद्रक (iii) तारापीड (iv) चन्द्रापीड
उत्तर– (i) वैशम्पायन।

45. 'कच्चित् अभिमतमारचादितमभ्यन्तरे भवता' यह उक्ति किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चाण्डालकन्या के लिए (ii) शूद्रक के लिए (iii) वैशम्पायन के लिए (iv) कादम्बरी के लिए
उत्तर– (iii) वैशम्पायन के लिए।

46. विदित सकलशास्त्रार्थः राजनीति प्रयोग कुशलः कः आसीत्?
(i) शूद्रकः (ii) शुकनासः (iii) वैशम्पायनः (iv) तारापीडः
उत्तर– (iii) वैशम्पायनः।

47. ''उदयशैलः मित्रमण्डलस्य'' यह वाक्य किसके लिए कहा गया है?
अथवा **''को दोषः, प्रवेश्यताम्'' किसका कथन है?**
(i) वैशम्पायन (ii) शूद्रक (iii) प्रतीहारी (iv) चाण्डालकन्या
उत्तर– (ii) शूद्रक।

48. 'आश्रयो रसिकानाम्'–यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शूद्रक (iii) तारापीड (iv) शुकनास
उत्तर– (ii) शूद्रक।

49. 'हर्षचरितम्' किसकी रचना है?
(i) बाणभट्ट (ii) दण्डी (iii) सुबन्धु (iv) भूषणभट्ट
उत्तर– (i) बाणभट्ट।

50. गद्य रचनाकारों में सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है?
(i) सुबन्धु (ii) बाणभट्ट (iii) दण्डी (iv) पं0 अम्बिका दत्त व्यास
उत्तर– (ii) बाणभट्ट।

51. शूद्रकस्य मनसि कः वसति?
(i) कोपः (ii) धर्म (iii) स्नेहः (iv) ममता
उत्तर– (ii) धर्म।

52. 'नृत्तप्रयोगदर्शन निपुणः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(i) चन्द्रापीड (ii) शुक (iii) शूद्रक (iv) तारापीड
उत्तर– (ii) शुक।

53. पञ्जरस्थं शुकमादाय चाण्डालकन्या कुतः आगता?
(i) विदर्भदेशात् (ii) पुष्पपुरात् (iii) कम्बोजप्रान्तात् (iv) दक्षिणापथात्
उत्तर– (iv) दक्षिणापथात्।

54. कः व्यायामभूमिमयासीत्?
(i) चन्द्रापीडः (ii) पुण्डरीकः (iii) तारापीडः (iv) शूद्रकः
उत्तर– (iv) शूद्रकः।

55. 'देव किं किं वा नास्वादितम्'–यह कथन किसका है?
(i) कञ्चुकी (ii) वैशम्पायन (iii) शूद्रक (iv) प्रतीहारी
उत्तर– (ii) वैशम्पायन।

56. शूद्रकस्य प्रधानामात्यः कः आसीत्?
अथवा **राजा शूद्रक के महामात्य का नाम था–**
(i) कुमारपालित (ii) वैशम्पायन (iii) कञ्चुकी (iv) प्रथु
उत्तर– (i) कुमारपालित।

●●

खण्ड - 'ख' (पद्य)

रघुवंश-महाकाव्यम्

(द्वितीयः सर्गः)

महाकवि कालिदास : एक संक्षिप्त परिचय

जीवन-वृत्त एवं जन्म-स्थान—महाकवि कालिदास के जीवन-वृत्त के विषय में कोई भी प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में, महाकवि बाण के तुल्य, अपने जीवन के विषय में कोई सामग्री नहीं दी है, अतः अन्तःसाक्ष्य का अभाव है। परवर्ती काव्यों, महाकाव्यों या नाटकों में भी कहीं कालिदास के जीवन के विषय में कोई उल्लेख नहीं है, अतः बहिःसाक्ष्य का भी प्रायः अभाव है। केवल कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, जिनके आधार पर कालिदास के जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

कालिदास के जन्म-स्थान के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है। कश्मीर के विद्वान् उनको कश्मीरी सिद्ध करते हैं, बंगाल के विद्वान् बंगाली और उज्जैन के विद्वान् उज्जयिनी-निवासी। 'मेघदूत' में कालिदास ने उज्जयिनी के प्रति विशेष आग्रह और आदर-भाव प्रदर्शित किया है, इससे ज्ञात होता है कि वे उज्जयिनी के निवासी थे या अधिक समय तक उज्जयिनी में रहे। 'मेघदूत' में उज्जयिनी नगरी के सौन्दर्य, शिप्रा नदी और महाकाल के मन्दिर का विशेष वर्णन मिलता है। विद्वानों का कहना है कि ये राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से थे। विक्रमादित्य के निम्नलिखित नवरत्न कहे जाते हैं :

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेःसभायां रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य॥

इनके विषय में एक मत यह भी है कि ये उज्जयिनी के राजा भोज के सभासद थे। एक कथा के अनुसार उनका सम्बन्ध श्रीलङ्का के राजा कुमारदास (500 ई०) से बताया जाता है। इनके विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, किन्तु जो किंवदन्ती अधिक चल पड़ी है, उसके अनुसार पहले ये बड़े ही मूर्ख थे। एक बार किसी राजा की कन्या ने जिसका नाम विद्योत्तमा कहा जाता है, प्रतिज्ञा की कि जो विद्वान् शास्त्रार्थ में उसे हरा देगा उसी से वह अपना विवाह करेगी। उसने अनेक उद्भट विद्वानों को हराया जिससे पण्डित-समाज को अपमानित होना पड़ा, अतः उन्होंने एक ऐसा मूर्ख खोज निकाला जो उसी डाल को काट रहा था जिस पर वह बैठा था। उन्होंने उसे ले जाकर राजकुमारी के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि आज पण्डित महाशय का मौन व्रत है, अतः ये संकेत द्वारा शास्त्रार्थ करेंगे। विद्योत्तमा ने इसे स्वीकार कर लिया। शास्त्रार्थ शुरू हुआ, राजकुमारी ने एक उँगली दिखायी। उसके उत्तर में मूर्ख ने दो उँगलियाँ दिखायीं। फिर राजकुमारी ने पाँच उँगलियाँ दिखायीं तो उस मूर्ख ने उत्तर में मुट्ठी दिखायी। उनके प्रश्नोत्तर का जो भी अर्थ रहा हो, किन्तु राजकुमारी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और उस मूर्ख पण्डित से उसका विवाह हो गया।

ऐसा कहा जाता है कि विवाह के बाद एक दिन मूर्ख कालिदास अशुद्ध शब्दों का उच्चारण कर गये, जिससे उनकी धर्मपत्नी ने मूर्ख कहकर उनका बड़ा अपमान किया। इस अपमान से पीड़ित होकर वे घर से बाहर निकल गये और अपना प्राण त्यागने के लिए सरस्वती कुण्ड में कूद पड़े, किन्तु इनकी मृत्यु नहीं हुई। उन्होंने काली देवी की उपासना की और सरस्वती जी ने उनको वरदान दिया, जिसके फलस्वरूप कालिदास इतने प्रकाण्ड विद्वान् हुए।

विद्वान् हो जाने के बाद जब वे घर लौटे तो अपनी पत्नी से कहा 'अनावृतकपाटं द्वारं देहि।' पत्नी ने उनकी आवाज पहचानकर उत्तर दिया– 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः।' कहा जाता है कि कालिदास ने इनमें से तीन शब्दों को लेकर तीन काव्य-ग्रन्थ रचे। 'अस्ति' से कुमारसम्भव की रचना की जिसका प्रारम्भ 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः' आदि श्लोक से होता है। 'कश्चित्' से मेघदूत का निर्माण किया– 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः' और 'वाग्' शब्द से रघुवंश की रचना की– 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।'

कालिदास के ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि वह जन्म से ब्राह्मण थे और शिवभक्त थे, किन्तु अन्य देवताओं का भी आदर करते थे। मेघदूत और रघुवंश इस बात के परिचायक हैं कि उन्होंने भारतवर्ष का विस्तृत भ्रमण किया था। यही कारण है कि उनका भौगोलिक वर्णन बड़ा ही सुन्दर और स्वाभाविक है। उन्हें राजसी जीवन और राज-परिवारों का पूर्ण ज्ञान था। उन्होंने दरिद्रता आदि का वर्णन नहीं किया, जिससे मालूम होता है कि उनका जीवन बड़ा सुखमय और शान्त था। उन्होंने गीता, रामायण, महाभारत, वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, संगीत, व्याकरण, छन्दःशास्त्र और काव्यशास्त्रादि का गम्भीर अध्ययन किया था, ऐसा उनके ग्रन्थों से विदित होता है।

कालिदास की रचनाएँ– कालिदास की सात रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–

➡ नाटक

(1) मालविकाग्निमित्र– यह पाँच अङ्कों का नाटक है, जिसमें विदिशा के राजा अग्निमित्र तथा मालवदेश की राजकुमारी मालविका का प्रेम और उनके विवाह का वर्णन है।

(2) विक्रमोर्वशीय– यह भी पाँच अङ्कों का नाटक है। इसमें राजा पुरूरवा तथा उर्वशी का प्रेम और उनके विवाह की कथा वर्णित है।

(3) अभिज्ञानशाकुन्तल– यह कालिदास का विश्वविख्यात नाटक है, जिसमें आठ अङ्कों में दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की कथा का वर्णन है।

➡ काव्य-ग्रन्थ

(4) कुमारसम्भव– यह सत्रह सर्गों का महाकाव्य है जिसमें शिव-पार्वती के विवाह, कुमार स्वामिकार्तिकेय का जन्म तथा कुमार द्वारा तारकासुर के वध की कथा है, किन्तु यह अधूरा ही उपलब्ध होता है।

(5) रघुवंश– यह उन्नीस सर्गों का महाकाव्य है। इसमें भगवान् रामचन्द्र जी के पूर्वज महाराज रघु के जन्म से लेकर उनके बाद के सभी राजाओं की कथा है।

➡ गीतिकाव्य या खण्डकाव्य

(6) ऋतुसंहार–कालिदास की प्रथम काव्यकृति है। इसमें छहों ऋतुओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन है।

(7) मेघदूत– यह एक खण्डकाव्य है। इसमें एक वियोगी यक्ष का अपनी विरहिणी पत्नी के पास बादल द्वारा सन्देश भेजने का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है।

कालिदास का समय–कालिदास के समय के विषय में प्रामाणिक सामग्री का नितान्त अभाव है। कालिदास ने स्वयं या उनके समकालीन किसी भी लेखक ने उनके विषय में कुछ भी नहीं लिखा है। उनके समय के विषय में जो मत प्रस्तुत किये गये हैं, वे अनुमान पर आधारित हैं। कालिदास के समय के विषय में केवल एक तथ्य अकाट्य माना जाता रहा है, वह है कालिदास का विक्रमादित्य के नवरत्नों में होना।

विक्रमादित्य का समय विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न कालों में निर्धारित कर कालिदास का स्थिति-काल छठी शताब्दी ईसवी से लेकर प्रथम शताब्दी ईसवी पूर्व तक दोलायमान कर रखा है। उनके स्थिति-काल के विषय में निम्न मत प्रस्तुत किये गये हैं–

(1) चतुर्थ–पञ्चम शताब्दी ई0 या गुप्तकालीन मत

(2) द्वितीय शताब्दी ई0 पू0 का मत

(3) षष्ठ शताब्दी ई0 का मत

(4) प्रथम शताब्दी ई0 पू0 का मत

इनमें से प्रथम शताब्दी ई0 पू0 का मत ही युक्तियुक्त है, जिसका उपपादन अन्य मतों का निराकरण करते हुए किया गया है। संक्षेप में–

➡ चतुर्थ–पञ्चम शताब्दी ई0 या गुप्तकालीन मत

यूरोपीय विद्वानों ने गुप्त नरेशों के समुन्नत साम्राज्य-काल में कालिदास का होना माना है। कीथ महोदय इस मत के समर्थक हैं कि शकों को भारत से निकाल बाहर करनेवाले, विक्रमादित्य की उपाधि धारण करनेवाले तथा अपने पूर्व के मालव संवत् को विक्रम संवत् के नाम से प्रचलित करनेवाले द्वितीय गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त (375–413 ई0) थे। उनके मतानुसार भारतीय इतिहास के इसी स्वर्णयुग में महाकवि कालिदास का होना पाया जाता है। इस मत के समर्थन में यह कहा जाता है कि कालिदास के 'कुमारसम्भव' नामक महाकाव्य की रचना सम्भवतः चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त के जन्म को लक्ष्य में रखकर की गयी जान पड़ती है। कालिदास ने गुप् धातु का बार-बार प्रयोग किया है। हरिषेण कृत 'प्रयागवाली प्रशस्ति' में किये गये समुद्रगुप्त (336–375 ई0) के विजय-वर्णन में तथा 'रघुवंश' में वर्णित रघु के दिग्विजय में घटनाओं का बड़ा साम्य दिखायी पड़ता है। कालिदास के ग्रन्थों में वर्णित सुख-शान्ति का समृद्धिकाल गुप्तकाल का ही सूचक है।

➡ द्वितीय शताब्दी ई0 पू0 का मत

डॉ0 कुन्हन राजा कालिदास की स्थिति ई0 पू0 द्वितीय शती में मानते हैं। वे कहते हैं कि कालिदास शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र के समकालीन थे और 'मालविकाग्निमित्र' नाटक के भरत-वाक्य में उन्होंने अग्निमित्र का उल्लेख भी किया है। डॉ0 राजा ने अग्निमित्र की राजधानी विदिशा बतायी है, जिसका उल्लेख कालिदास ने 'मेघदूत' में किया है।

➡ षष्ठ शताब्दी ई0 का मत

डॉ0 हार्नली का मत है कि छठी शताब्दी में मालवदेश के राजा यशोधर्मन ने हूणों को परास्त करके 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। फर्गुसन महोदय के मतानुसार इस विजय के उपलक्ष्य में इसी विक्रमादित्य उपाधिधारी राजा यशोधर्मन ने विक्रम संवत् चलाया और प्राचीनता का पुट देने के लिए 600 वर्ष पूर्व से (57 ई0 पू0 से) प्रचलित किया।

कुछ लोगों का कहना है कि 'मेघदूत' में कालिदास ने दिङ्नाग और निचुल का नामोल्लेख किया है, अतः वह दिङ्नाग का समकालीन था। दिङ्नाग एक बौद्ध दार्शनिक था जो 400–450 ई0 में हुआ था।

➡ प्रथम शताब्दी ई0 पू0 का मत

भारत में यह बात लोक-प्रसिद्ध है कि महाराज विक्रमादित्य उज्जयिनी के राजा थे। उन्होंने शकों को परास्त कर अपनी विजय के उपलक्ष्य में 57 ई0 पू0 में विक्रमीय संवत् का प्रवर्तन किया। सोमदेवकृत 'कथासरित्सागर' में उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य का उल्लेख है। यह ग्रन्थ गुणाढ्य कृत बृहत्कथा पर आधारित है। गुणाढ्य का समय लगभग 78 ई0 माना जाता है। 'कथासरित्सागर' का वृत्तान्त ऐतिहासिक और प्रामाणिक माना जा सकता है, क्योंकि उसके मूल लेखक गुणाढ्य विक्रमादित्य के समय के अत्यधिक समीप थे। 'कथासरित्सागर' में विक्रमादित्य के राज्याभिषेक का वर्णन है–

सोऽपि तद्विक्रमादित्यो राज्यमासाद्य पैतृकम्।
नभो भास्वानिवारेभे राजा प्रतपितुं क्रमात्॥

विक्रमादित्य संस्कृत भाषा का संरक्षक और उद्धारक था। वह कवियों का आश्रयदाता था, अतः वह कालिदास का आश्रयदाता रहा होगा।

कालिदास ने कितने ही अपाणिनीय प्रयोग किये हैं। इससे ज्ञात होता है कि कालिदास उस समय हुए थे, जब पाणिनीय व्याकरण पूर्णतया प्रतिष्ठित नहीं हुआ था। कालिदास की शैली से ज्ञात होता है कि उनके समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। पतञ्जलि (150 ई0पू0) के समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। यह महाभाष्य के सूत्र और वैयाकरण के शास्त्रार्थ से सिद्ध है। कालिदास का समय उनके समीप ही होना चाहिए।

प्रयाग के समीप भीटा ग्राम में एक मुद्रा प्राप्त हुई है। इसका समय ईसा से पूर्व प्रथम शती माना जाता है। इस मुद्रा पर वृक्षों को सींचती हुई दो कन्याओं तथा एक मृग का पीछा करते हुए एक राजा का चित्र अङ्कित किया गया है। विद्वानों का यह निश्चित मत है कि यह चित्र कालिदास के सुप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के प्रथम अङ्क का है। इसलिए यह माना जाता है कि यह नाटक इससे (प्रथम शती ई0 पू0 से) पूर्व अवश्य लिखा गया होगा।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कालिदास का स्थिति-काल प्रथम शताब्दी ई0 पू0 प्रमाणित किया गया है।

कालिदास की शैली– कविता-कामिनी-कान्त कालिदास की शैली में कहीं उपमाओं का लालित्य है, तो कहीं अर्थान्तरन्यास का अर्थ-गाम्भीर्य, कहीं उत्प्रेक्षाओं की ऊँची उड़ान है, तो कहीं प्राञ्जल पदावली का सौकुमार्य; कहीं प्रसाद है तो कहीं माधुर्य;

कहीं कलाप्रधान है, तो कहीं कल्पनाप्रधान। प्रकृति के साथ तादात्म्य की अनुभूति उनके काव्य-गौरव को अधिक समुन्नत करती है।

(क) भाषा—कालिदास की भाषा की प्रमुख विशेषता यह है कि वह सदा रसानुकूल होती है। प्रकरण, प्रसङ्ग, पात्र और वर्ण्य-विषय के अनुरूप शब्दावली की संरचना मिलती है। इस प्रकार के पद-माधुर्य के कारण उनके काव्यों में संगीतात्मकता और लयात्मकता का दर्शन होता है। उनकी भाषा सरस, सरल और मनोरम है। लम्बे समासों का प्रायः अभाव है। कालिदास का यह शब्दलाघव उनकी कलात्मक अभिरुचि का परिचायक है।

(ख) भावाभिव्यक्ति—कालिदास ललित भावों के कवि हैं। उनके काव्यों में कल्पना की ऊँची उड़ान, मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति और भाव-सौन्दर्य पग-पग पर परिलक्षित होता है।

(ग) रस—कालिदास मूलतः शृङ्गार रस के कवि हैं। वे सम्भोग और विप्रलम्भ दोनों प्रकार के शृङ्गार के वर्णन में सिद्धहस्त हैं। करुण रस के भी कतिपय वर्णन अत्यन्त मार्मिक हैं। वीर रस के प्रसङ्ग यद्यपि कम हैं, तथापि उनमें कालिदास की योग्यता किसी भी प्रकार न्यून नहीं है। अन्य रसों के वर्णन अत्यल्प हैं।

(घ) गुण और रीति—कालिदास रस-सिद्ध कवि हैं। उनकी लोकप्रियता का प्रधान कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्ययुक्त और परिष्कृत शैली। उनके सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे गये हैं। मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासयुक्त पदों का होना, यही वैदर्भी रीति है। कालिदास की शैली में प्रसाद, माधुर्य और ओज इन तीनों गुणों की सत्ता है।

(ङ) अलङ्कार—कालिदास के काव्यों में अलङ्कार-विधान अनायास सिद्ध है। पद-पद पर अनुप्रास, उपमा, रूपक, दीपक, अर्थान्तरन्यास और उत्प्रेक्षाओं के दर्शन होते हैं। यद्यपि यमक, अतिशयोक्ति, दीपक, व्यतिरेक, प्रतिवस्तूपमा, श्लेष, निदर्शना, एकावली, दृष्टान्त, विरोधाभास, परिणाम आदि अलङ्कारों के भी सुन्दर प्रयोग मिलते हैं। उपमा कालिदास का अत्यन्त प्रिय अलङ्कार है। उनकी उपमाएँ असाधारण और मनोरम होती हैं। उनकी विशेषता यह है कि उनमें लिङ्ग-साम्य, भाव-साम्य और रमणीयता का अनुपम समन्वय है—

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥ (रघु0 2/20)

नन्दिनी गाय राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा के बीच वैसी शोभा पा रही है, जैसी दिन और रात के मध्य में होनेवाली रक्तवर्ण सन्ध्या।

अवाकिरन् बाललताः प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्याः॥ (2/10)

दिलीप के ऊपर बाललताओं ने फूलों की उसी प्रकार वर्षा की जैसे नगर की कन्याएँ मङ्गलार्थक धान के लावों की वर्षा करती हैं। अर्थान्तरन्यास में कवि का व्यावहारिक ज्ञान उच्च रूप में प्रकट हुआ है। उनके अर्थान्तरन्यास सुभाषित के रूप में प्रचलित हो गये। कहा भी गया है—**अर्थान्तरस्य विन्यासे कालिदासो विशिष्यते।**

(च) वर्णन-वैचित्र्य—कालिदास के वर्णनों में वैचित्र्य और वैविध्य दोनों हैं। उन्होंने अन्तःप्रकृति और बाह्य प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। मनोभावों का विशद वर्णन, प्रकृति का मानवीकरण, प्रकृति के साथ तादात्म्य की अनुभूति, वर्णनों में सजीवता और स्वाभाविकता, भावानुकूल पद-विन्यास, तात्त्विक वर्णनों के साथ व्यञ्जना वृत्ति का आश्रय, कला में कल्पना का संयोग और सरल भाषा में भावों की अभिव्यक्ति आदि गुण कालिदास के वर्णनों की विशेषताएँ हैं। सन्ध्याकाल में सूर्यास्त का कितना मनोरम वर्णन है—

सञ्चारपूतानि दिगन्तराणि कृत्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुम्।
प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः॥ (रघु0 2/15)

छन्दोयोजना—महाकवि कालिदास छन्दों के प्रयोग में अति कुशल हैं। वे भावानुकूल छन्दों का प्रयोग करते हैं। करुण भावों को व्यक्त करने के लिए मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग तथा गहन एवं गम्भीर भावों को व्यक्त करने के लिए वे शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग करते हैं।

रघुवंश और कुमारसम्भव के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिय थे। बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है। छोटे छन्दों में भी अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।

कालिदास की सर्वतोमुखी प्रतिभा उन्हें विश्व-साहित्य में असाधारण स्थान प्रदान करती है। उन्होंने महाकाव्य, गीतिकाव्य तथा नाट्य-रचना सभी में अपनी प्रखर प्रतिभा का समान परिचय दिया है।

●●

रघुवंश महाकाव्य : एक संक्षिप्त परिचय

महाकवि कालिदास की सात रचनाओं में रघुवंश को लेकर कहा जाता है–

''क इह रघुकारे न रमते?।''

अर्थात् संसार में कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे रघुवंश को पढ़ने और सुनने में रमण अर्थात् सम्पूर्ण आनन्द की प्राप्ति नहीं होगी। सम्पूर्ण आनन्द किसी सम्पूर्ण और श्रेष्ठ रचना से ही प्राप्त हो सकता है।

इसी प्रकार से गीतिकाव्यों में मेघदूत को लक्ष्य कर कहा गया है–

''मेघे माघे गतं वयः।''

अर्थात् कालिदास के 'मेघदूत' को तथा माघ के 'शिशुपालवध' को पढ़ने और समझने में एक विद्वान् व्यक्ति की समस्त आयु बीत सकती है। आधा जीवन भी यदि एक मेघदूत में व्यतीत माना जाय तो स्वतः सिद्ध है कि यह गीतिकाव्य अत्युत्तम है।

एवमेव कहा जाता है कि जीवित मनुष्यों को भूलोक का आनन्द मिलता है। देवतागण भुवःलोक में सुख प्राप्त करते हैं और पुण्यात्माओं को स्वर्गलोक का परमानन्द प्राप्त होता है। परन्तु समीक्षक कहते हैं कि जीवित व्यक्ति भूः, भुवः और स्वः – तीनों लोकों का आनन्द एक साथ और एक ही रचना से प्राप्त करना चाहे तो उसे केवल एक 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का पठन, मनन, श्रवण, अधिग्रहण करना चाहिए–

**''वासन्तं कुसुमं फलं च युगपत् ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्,
यच्चानन्यमनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो–
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे शाकुन्तलं सेव्यताम्।।''**

उपर्युक्त तीनों अतिश्रेष्ठ रचनाओं में भी महाकाव्य 'रघुवंश' के नाम की सार्थकता निम्नलिखित वाक्य से स्वतः स्पष्ट होती है–

''रघूणां वंशः वर्ण्यते यस्मिन् तत्काव्यम्।''

अर्थात् जिस महाकाव्य में रघु के वंश का अथवा रघुवंश के राजाओं का वर्णन किया गया है, उसका नाम रघुवंश है।

सम्पूर्ण रघुवंश महाकाव्य का कथानक 19 सर्गों में विभक्त है। सभी सर्गों की कुल श्लोक संख्या 1569 है। कथा के अनुसार प्रत्येक सर्ग का पृथक् से नाम भी रखा गया है। उदाहरण के लिए हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रथम सर्ग में 95 श्लोक हैं और इसका अभिधान है– 'वसिष्ठाश्रमाभिगमन' अर्थात् महर्षि वसिष्ठ के आश्रम की ओर गमन करना।

वैवस्वत मनु के वंशज राजा दिलीप और उनकी रानी सुदक्षिणा के कोई सन्तान नहीं हुई। दुःखी होकर वे दोनों कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम में गए। महर्षि वसिष्ठ ने कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा करने का मार्ग सुझाया, ताकि अभीष्ट फल की प्राप्ति का वरदान पाया जा सके।

राजा दिलीप व रानी सुदक्षिणा ने इक्कीस दिनों तक नन्दिनी की सेवा की। बाईसवें दिन नन्दिनी ने राजा की प्रतिज्ञा व सेवा की परीक्षा ली। एक मायावी सिंह ने गाय को खाना चाहा। राजा ने गाय की रक्षा कर स्वयं को प्रस्तुत किया। विचलित न होते देखकर नन्दिनी प्रसन्न हुई और राजा को पुत्रप्राप्ति का वरदान दिया।

दिलीप व सुदक्षिणा के रघु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। बड़ा हुआ। उसका विवाह किया। युवराज बनाकर राजगद्दी सौंप दी। स्वयं दिलीप ने 100 अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए। रघु को राजा बनाकर वन में चले गए।

रघु ने दिग्विजय यात्रा प्रारम्भ की। चारों दिशाओं में घूमता हुआ हिमालय पर पहुँचा। वहाँ विजयध्वज लहराकर अयोध्या लौटा। विश्वजित् नामक यज्ञ किया।

रघु के अज नामक पुत्र पैदा हुआ। बड़े होने पर अज विवाह के लिए विदर्भ के राजा भोज द्वारा आयोजित स्वयंवर में गए।

स्वयंवर में राजा भोज की बहन इन्दुमती ने सबको छोड़कर अज के गले में वरमाला डाली। राजा भोज ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी बहन का विवाह अज से कर दिया। यहीं पर प्रदत्त एक उपमा के कारण 'दीपशिखा कालिदास' उपाधि प्रसिद्ध हुई।

अज इन्दुमती को लेकर राजधानी में पहुँचे। रघु ने अज का राज्याभिषेक किया और सारा भार उसे सौंपकर वन में चले गए।

अज और इन्दुमती के पुत्र दशरथ का जन्म हुआ। दुर्घटना में इन्दुमती की मृत्यु हो गई। अपनी पत्नी के वियोग में किया गया अज का विलाप सम्पूर्ण साहित्य में प्रसिद्ध है। दशरथ का राज्याभिषेक कर अज ने भी प्राण त्याग दिए।

दशरथ ने कौशल्यादि तीन रानियों से विवाह किया। तमसा नदी के तट पर भूलवश शब्दवेधी बाण से श्रवणकुमार का वध हो गया। उसके अन्धे माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया।

सन्तानहीनता से परेशान दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। तीन रानियों से चार पुत्र पैदा हुए। कौशल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण व शत्रुघ्न और कैकयी के भरत।

विश्वामित्र यज्ञ व तपस्वियों की रक्षा के लिए राम व लक्ष्मण को मांग ले गए। मिथिलानरेश जनक द्वारा आयोजित स्वयंवर में राम ने शिवधनुष तोड़कर सीता का वरण किया। इसी तरह लक्ष्मण का उर्मिला से, भरत का माण्डवी से व शत्रुघ्न का श्रुतकीर्ति से विवाह हुआ।

राम के राज्याभिषेक की घोषणा से तिलमिलाकर कैकयी ने अपने वर मांगकर राम को चौदह वर्षों का वनवास और भरत को राजगद्दी दिलवा दी। पंचवटी में लक्ष्मण ने रावणभगिनी शूर्पणखा के नाक-कान काट लिए। रावण ने क्रुद्ध होकर सीता को चुरा लिया। हनुमान्जी ने सीता को खोजा। राम ने लंका पर चढ़ाई की। रावण को मारा। विभीषण को लंकाधिपति बनाया। स्वयं अयोध्या लौट आए।

पुष्पक विमान में आते समय सीता को पम्पासरोवर, पञ्चवटी, गोदावरी आदि स्थान दिखाए। अयोध्या के उपवन में ठहरे। भरत आकर उनसे मिले।

सीता के चरित्रविषयक सामाजिक कलंक के कारण राम ने सीता का निर्वासन कर दिया। लक्ष्मण गर्भवती सीता को वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आए।

वाल्मीकि आश्रम में सीता के लव और कुश नामक दो पुत्र हुए। बड़े हुए। लक्ष्मण के अंगद व चित्रकेतु, भरत के तक्ष व पुष्कल तथा शत्रुघ्न के शत्रुघाती व सुबाहु दो-दो पुत्र उत्पन्न हुए। सीता की प्रार्थना स्वीकार कर धरती फट गई। सीता धरती में समा गईं। राम भी अपने भाइयों के साथ स्वर्गारोहण कर गए।

शेष सातों भाइयों ने मिलकर कुश को अपने परिवार का मुखिया बनाया। कुश का नागकन्या कुमुद्वती से विवाह हुआ।

कुश व कुमुद्वती के पुत्र अतिथि ने चारों प्रकार की विद्यायें सीखीं। निषधराज की कन्या से अतिथि का विवाह हुआ। कुश की मृत्यु पर कुमुद्वती भी सती हो गई।

अतिथि के निषध और निषध के नल इत्यादि होते-होते रघुवंश में कुल 21 राजा क्रमशः उत्पन्न होकर राजगद्दी सम्भालते रहे। अन्तिम राजा अग्निवर्ण था।

भोगविलास में आकंठ डूबने के कारण अग्निवर्ण को क्षयरोग हो गया। उसका शरीर गल-गल कर पीला पड़ गया। अन्त में मर गया। उसकी गर्भवती रानी सिंहासन पर बैठी। मन्त्रियों की सलाह लेकर राजकाज करने लगी।

यही संक्षिप्त कथानक है, उस रघुवंश नामक महाकाव्य में विद्यमान 19 सर्गों का जिसमें सूर्यवंशी या इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की जीवनगाथा का क्रमशः वर्णन किया गया है। इन सभी 21 राजाओं में क्योंकि राजा रघु ने ही दिग्विजय की थी और अन्य किसी ने दसों दिशाओं को नहीं जीता था। अतः रघु ही प्रधान हुए और उनका तथा उनके वंश का वर्णन होने के कारण इस महाकाव्य का नाम 'रघुवंश' सर्वथा सार्थक सिद्ध हुआ।

➡ रघुवंश : मंगलाचरण एवं कवि की विनम्रता

संस्कृत साहित्य-शास्त्र के आचार्यों के अनुसार महाकाव्य के प्रारम्भ में किया जाने वाला मंगलाचरण तीन प्रकार का हो

सकता है– आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक अथवा वस्तुनिर्देशात्मक। इनमें से प्रथम में महाकवि अपनी रचना की निर्विघ्न पूर्ति के लिए और अपने कार्य में सम्पूर्ण सफलता के लिए अपने आराध्य से आशीर्वाद की कामना करता है।

द्वितीय प्रकार में महाकवि अपने आराध्य के चरणों में नमस्कार करता है और आराध्य की विशेषताओं का बखान करता है। प्रत्यक्ष रूप से किसी कामना या इच्छा के प्रकटीकरण के बिना भी इस प्रकार में भी नमस्कार के प्रतिफलस्वरूप महाकवि को उसकी कामनापूर्ति का मौन आशीर्वाद तो मिल ही जाता है।

अन्तिम प्रकार में मंगलाचरण कथानक के अनुरूप तथ्यात्मक होता है। इस रचना में विद्यमान कथा का, कथा के पात्रों का, मुख्य घटना का अथवा प्रसिद्ध स्थान का सांकेतिक रूप से उल्लेख होता है। इससे रचना की संक्षिप्त भूमिका बन जाती है।

रघुवंश महाकाव्य का मंगलाचरण उपर्युक्त तीनों में से नमस्कारात्मक श्रेणी का है। यह तो सर्वथा स्पष्ट है कि हर व्यक्ति अपने ही आराध्य या इष्ट की वन्दना करता है। महाकवि कालिदास शैव थे। अतः उन्होंने मंगलाचरण में भी शिवशक्ति की ही आराधना की है। पार्वती और परमेश्वर शिव का सम्बन्ध उसी प्रकार से अटूट व अगाध है जिस प्रकार शब्द और अर्थ का होता है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। शब्द के बिना अर्थ की सत्ता नहीं हो सकती और अर्थ के बिना शब्द स्वतः निरर्थक या प्रलाप हो ही जाता है। वैसे ही पार्वती के बिना परमेश्वर की और परमेश्वर के बिना पार्वती की सत्ता हो ही नहीं सकती। शरीर भले ही दो होवें परन्तु आत्मा तो एक ही होता है। 'अर्द्धनारीश्वर' स्वरूप भी इसी बात की पुष्टि करता है। नित्यसम्बन्धयुक्त तत्त्व के विषय में कालिदास लिखते हैं–

''वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥''

इसमें एकशेषद्वन्द्व समास से 'पितरौ' शब्द की सार्थकता अधिक बढ़ जाती है। सृजन करने के लिए दो तत्त्वों का अटूट सम्बन्ध परमावश्यक है। सन्तानोत्पत्ति के लिए माता व पिता दोनों का समभाव सम्बन्ध अत्यावश्यक है। पिता के बिना अकेली माता सन्तति जनन में जैसे सक्षम नहीं, वैसे ही माता के बिना पिता अक्षम है। रज और वीर्य–दोनों का सम्पृक्त सम्बन्ध होता है। पार्वती और परमेश्वर भी इस जगत् के माता-पिता हैं।

सफलता के लिए दोनों का सम्मिलित आशीर्वाद एकीकृत भाव से आवश्यक रूप से चाहिए। मंगलाचरण में उपमालंकार का सुन्दर प्रयोग करते हुए महाकवि ने–

''उपमा कालिदासस्य।''

इस उक्ति को भी प्रथम श्लोक में ही सार्थक और प्रमाणित कर दिया है।

कालिदास की विनम्रता– महान् लोगों की महानता का मूल कारण ही यह होता है कि सारा संसार उन्हें महान् मानता है परन्तु वे स्वयं अपने-आपको ऐसा नहीं मानते हैं। कालिदास भले ही विश्वकवि, कविकुलगुरु, कविकुलशिरोमणि, दीपशिखाकालिदास इत्यादि विशिष्ट उपाधियों से विभूषित किए गए हों परन्तु सूर्यवंश का वर्णन करने में वे अपने-आपको बहुत छोटा मानते हैं–

''क्व सूर्यप्रभवो वंशः, क्व चाल्पविषया मतिः।''

अर्थात् कहाँ तो सूर्य की परम्परा में वैवस्वत मनु का वंश और कहाँ अत्यल्प विषयों को जानने वाली मेरी छोटी-सी बुद्धि?

जिस वाक्य में दो अलग वस्तुओं के लिए दो बार 'क्व' शब्द का प्रयोग होता है, वहाँ पर उन दोनों विषयों में महदन्तर ज्ञात होता है। कालिदास स्वयं को सूर्यवंश के राजाओं का वर्णन करने में समर्थ नहीं मानते हैं और अपने इस प्रयास को उसी तरह का मानते हैं, जैसे कोई अल्पबुद्धि व्यक्ति लकड़ी की छोटी-सी नाव या डोंगी में बैठकर महासागर को तैरने का प्रयास करे।

कालिदास की बुद्धि उडुप है और सूर्यवंश महासागर है। परन्तु ऐसा होने पर भी प्रयास तो करना ही होता है। विशेषता भी इसी बात में है कि डोंगी से महासमुद्र को पार किया जाये। तभी तो वाहवाही मिलती है अन्यथा बड़े जहाज में बैठकर तो कोई भी समुद्र को पार कर सकता है। उसमें कौन-सी बड़ी बात है।

इसी बात का विस्तार करते हुए कालिदास दूसरा उदाहरण देते हैं और कहते हैं कि –

''मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।''

अर्थात् मैं मन्दमति होकर भी एक कवि के रूप में यश को प्राप्त करने की इच्छा रखता हूँ तो उसी प्रकार से उपहास का पात्र बनूँगा जिस प्रकार से वामनशरीरी व्यक्ति उपहासास्पद बन जाता है, जब वह किसी ऊँची डाली पर लगे फल को तोड़ने का प्रयास उछल-उछल कर करता है। लम्बे हाथों वाला भी जिसे आसानी से नहीं प्राप्त कर सकता, उसे बौना व्यक्ति उछलकर प्राप्त करने का प्रयास करे तो हँसी का पात्र तो बनेगा ही।

यहाँ पर वामनशरीरी और मन्दमति होकर भी महाकवि का यश प्राप्त करने का प्रयास करते हुए कालिदास वास्तव में महर्षि वाल्मीकि तथा महर्षि च्यवन की ओर संकेत करते हैं। ये दोनों ही महाशय कालिदास से पूर्ववर्ती हैं। दोनों ने सूर्यवंश में उत्पन्न राजाओं का यशोगान किया है। दोनों ने ही संसार में अपने इस कार्य के लिए महाकवि के रूप में ख्याति प्राप्त की है। स्वयं से पहले यदि कोई व्यक्ति सम्पूर्ण और बड़ी सफलता उसी क्षेत्र में प्राप्त कर चुका होता है तो परवर्ती व्यक्ति के मन में शंकायें और अधिक बढ़ जाती हैं। पूर्ववर्तियों से आगे निकलने की इच्छा तो मन में रहती है परन्तु सफलता को लेकर सन्देह और बढ़ जाता है।

मन में ऐसी और इतनी शंकाओं के होते हुए भी अपने द्वारा किए जा रहे प्रयास के कारण का उल्लेख करते हुए कालिदास कहते हैं कि यूँ देखा जाय तो मेरा मार्ग थोड़ा सरल ही है। मुझसे पूर्ववर्ती विद्वान् महाकवियों ने इस विषय को लेकर और सूर्यवंश का वर्णन कर मुख्य द्वार तो खोल ही रखा है। मुझे पहली बार बन्द दरवाजे को नहीं खोलना है। यह तो सभी जानते हैं कि खुले हुए दरवाजे से किसी भी भवन में प्रवेश करना आसान वैसे ही होता है जैसे किसी कठोरमणि में हीरे से यदि छेद कर दिया जाय तो उस छेद में धागे के लिए प्रवेश करना बहुत आसान हो जाता है। इसलिए जीवन में पथचयन को लेकर कभी सन्देह उत्पन्न होवे तो कहा जाता है–

''महाजनो येन गतः स पन्थाः।''

अर्थात् महान् जन जिस नीति या पद्धति को लेकर चले हों, उसी सिद्धान्तमय पथ पर अग्रसर हो जाना चाहिए। कालिदास ने भी यही किया है।

➠ रघुवंशी राजाओं की विशेषताएँ

'रघुवंश' महाकाव्य के प्रारम्भ में मंगलाचरण और अपनी अल्पज्ञता को उपस्थित करने के बाद तथा पूर्ववर्ती महाकवियों के पदचिह्नों का अनुसरण करने का विचार प्रकट करते हुए कालिदास कहते हैं कि अब मैं उन रघुवंशी राजाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ, जो आजन्म शुद्ध हैं। यहाँ पर आजन्म शुद्धि से तात्पर्य जन्म लेने के पश्चात् उन राजाओं का सभी प्रकार के संस्कारों से संस्कारित होने से है। क्योंकि जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चूड़ाकर्म, उपनयन, वेदारम्भादि संस्कारों को यथासमय सम्पन्न करने पर ही जन्म की शुद्धि होती है। रघुवंशी राजाओं के गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक सभी संस्कार यथाविधि और यथा समय सम्पन्न किए जाते थे।

दूसरी विशेषता है– **'आफलोदयकर्मणाम्'** अर्थात् रघुवंशी राजा फल प्राप्ति हो जाने तक निरन्तर कर्म करते ही हैं। न तो किसी काम को हड़बड़ी में प्रारम्भ करते हैं और न ही विघ्नों के आ जाने पर कभी किसी काम को अधूरा छोड़ते हैं। ये राजा उत्तमगुणी हैं क्योंकि–

''न प्रारब्धमुत्तमगुणाः परित्यजन्ति''

अर्थात् श्रेष्ठगुणसम्पन्न व्यक्ति एक बार प्रारम्भ किए कार्य को पूरा करके ही विश्राम लेते हैं।

तीसरी विशेषता सूर्यवंशी राजाओं की यह है कि वे पृथ्वी के किसी एक छोटे भू-भाग पर राज नहीं करते अपितु समुद्र से लेकर समुद्र पर्यन्त फैली हुई सम्पूर्ण पृथ्वी पर उनका एकच्छत्र राज रहता है। यही कारण है कि वे चक्रवर्ती सम्राट की उपाधि से विभूषित होते हैं।

चौथी विशेषता के अनुसार प्रस्तुत वंश के राजाओं के रथ का मार्ग स्वर्ग तक जाता है।

'अनाकरथवर्त्मनाम्' कहने का यही तात्पर्य है कि इन राजाओं के सम्बन्ध केवल पृथ्वीलोक पर ही नहीं हैं अपितु स्वर्ग के अधिपति इन्द्र और अन्य देवताओं से भी इनके सहज सम्बन्ध हैं।

पाँचवीं विशेषता के अनुसार ये सभी राजा **यथाविधिहुताग्नि** हैं। अर्थात् वैदिक विधि-विधान के अनुसार देवताओं का

पूजन, हवन, यज्ञादि सम्पन्न करते हैं। इससे उनके राज्य में सुखशान्ति व समृद्धि रहती है। कभी अनावृष्टि अथवा अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोप उन्हें झेलने नहीं पड़ते हैं।

छठी विशेषता के अनुसार ये राजा **यथाकामार्चितार्थी** हैं अर्थात् अपने द्वार पर उचित कामना और प्रार्थना लेकर आए हुए याचकों को कभी निराश नहीं करते। उन्हें खाली हाथ नहीं लौटाते हैं। **'अतिथि देवो भव'** की भावना का समुचित रूप से पालन करते हैं।

सप्तम वैशिष्ट्य इन राजाओं का यथापराधदण्डी होना है अर्थात् प्रथमतः तो उनके राज्य में कोई अपराध करने की हिम्मत ही नहीं करता था। यदि कोई अपराध करता तो तत्काल उसे उचित मात्रा में दण्ड मिल जाता। निरपराध को दण्ड नहीं भुगतना होता था। शासन का तीसरा स्तम्भ न्याय व्यवस्था समुचित थी।

आठवीं विशेषता उन राजाओं की यह है कि वे त्यागाय-संभृतार्थ हैं। अर्थात् केवल अपने ऐशो-आराम के लिए अथवा खजाने को भरने मात्र के लिए प्रजा से कर नहीं वसूलते हैं। अपितु व्यक्तिगत रूप से कर इकट्ठा करने के बाद वे प्रजा के हित के लिए सामाजिक और सामूहिक रूप से उसको व्यय कर देते हैं।

अग्रिम वैशिष्ट्य उन राजाओं के द्वारा सदैव सत्य ही बोला जाना है। **''सत्यं वद। धर्मं चर।''** इत्यादि उपनिषद्वाक्यों का वे पूर्णतया पालन करते हैं। सत्य बोलने का एक उत्तम तरीका है– मितभाषी होना अर्थात् कम से कम बोलना। क्योंकि आवश्यकता से अधिक बोलने वाले के झूठ बोलने की सम्भावना भी उतनी ही बढ़ जाती है।

दसवीं विशेषता सूर्यवंशी राजाओं की प्रजार्थ-गृहमेधी होना है। अर्थात् वे राजा वंशवृद्धि करने और सन्तानोत्पत्ति के लिए ही गृहस्थाश्रम का उपभोग करते हैं। केवल अपने इन्द्रियसुख के लिए ही विवाह नहीं करते। सन्तति वृद्धि के अतिरिक्त वे प्रायः तपस्वियों तथा संन्यासियों जैसा संयमित जीवन जीते हैं।

कालिदास इन मनुवंशी की अत्युत्तमजीवनवृत्ति का संक्षेप करते हुए कहते हैं–

''शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥''

अर्थात् शैशवकाल में वे पूर्णतया विद्यार्थी ही होते हैं। विद्या का अभ्यास करते हैं। अपने ज्ञान कोष को बढ़ाते हैं। युवावस्था में गृहस्थ धर्म को निभाने के लिए रूप, रस, गन्धादि सांसारिक विषयों का सेवन करते हैं। वृद्धावस्था में सम्राट होते हुए भी सब कुछ त्याग कर मुनियों के समान आचरण करते हैं। अन्त में योग के द्वारा अपने शरीर का त्याग स्वयं करते हैं अर्थात् किसी रोगादि के कारण उनकी मृत्यु नहीं होती। सूर्यवंशी राजाओं के चरित्र में इतनी सारी उत्तमोत्तम विशेषताओं का प्रतिपादन महाकवि द्वारा किया गया है।

➡ राजा दिलीप का व्यक्तित्व

महाकवि कालिदास सम्पूर्ण 'रघुवंश' महाकाव्य के नायकसमूह सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन करने के बाद प्रथम सर्ग के प्रमुख पात्र राजा दिलीप की पहली विशेषता प्रतिपादित करते हुए लिखते हैं–

''दिलीप इति राजेन्द्ररिन्दुः क्षीरनिधाविव।''

अर्थात् जिस प्रकार से क्षीरसागर से चन्द्रमा उत्पन्न हुए, उसी प्रकार से वैवस्वत नामक मनु के वंश में दिलीप उत्पन्न हुए, जो सभी राजाओं में अतिश्रेष्ठ सम्राट के रूप में विख्यात हुए। यहाँ चन्द्रमा से तुलना करने का तात्पर्य यह है कि दिलीप का स्वभाव भी चन्द्रमा के समान शीतल था और उनके दर्शन से प्रजा को आत्मिक शान्ति मिलती थी।

शारीरिक रूप से दिलीप का वक्षस्थल अत्यन्त विशाल था। उनके कन्धे उभरे हुए तथा अत्यन्त मजबूत हैं ताकि राज्य का भार आसानी से उठा सकें। दिलीप की दोनों भुजायें शालवृक्ष के तने के समान लम्बी और सुदृढ़ थीं। इतनी सारी विशेषताओं से परिपूर्ण दिलीप कैसे जान पड़ते थे? कालिदास लिखते हैं–

''आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः।''

अर्थात् अपने लिए निर्धारित कर्मों को सही ढंग से सम्पन्न करने के लिए स्वयं क्षत्रिय धर्म ने साक्षात् शरीर धारण कर लिया हो। आगे चलकर इसी महाकवि ने परिभाषा देते हुए लिखा है कि जो सभी प्रकार के संकटों से अपने राज्य और अपनी प्रजा

की रक्षा करता है वही सच्चा क्षत्रिय होता है।

कालिदास लिखते हैं कि राजा दिलीप ने अपने व्यक्तित्व के पराक्रम, तेज, विशालकाय शरीर से सभी को पीछे छोड़कर समस्त भूमण्डल को उसी प्रकार से अपने अधीन कर लिया था, जिस प्रकार से अपनी सुदृढ़ता, विशालता और ऊँचाई के कारण बाकी सभी पर्वतों को दबाकर सुमेरुपर्वत ने पृथ्वीलोक को व्याप्त कर रखा है। यहाँ सुमेरुपर्वत से तुलना करना ही दिलीप की विशेषताओं को बताने के लिए पर्याप्त है।

महाकवि कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति का केवल शारीरिक रूप से सुदृढ़ होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु मानसिक और बौद्धिक क्षमता भी उतनी ही आवश्यक है। राजा दिलीप का शरीर जितना विशालकाय था, उनकी बुद्धि भी उतनी ही कुशाग्र थी। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि को वे निरन्तर शास्त्रों के अभ्यास से और तीव्र बनाते थे। शास्त्रों के अभ्यास से प्राप्त ज्ञान के अनुसार वे उत्तमोत्तम कार्यों में भरपूर परिश्रम करते थे और परिश्रमी व्यक्ति का सफलता प्राप्त करना निस्सन्दिग्ध होता ही है।

'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात् जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है अथवा राजा के आचरण को देखकर ही प्रजा भी अपना आचरण निश्चित करती है। इस विषय को लेकर कहा गया है–

''न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः।''

अर्थात् जिस प्रकार से कुशल सारथि के द्वारा चलाए जाने वाले रथ का पीछे वाला पहिया आगे वाले पहिए के निशान से थोड़ा भी इधर-उधर नहीं होता है, उसी प्रकार से दिलीप की प्रजा भी उनके द्वारा निर्धारित आचरण का लेशमात्र भी उल्लंघन नहीं करती थी।

राजा का एक प्रमुख अधिकार और कर्त्तव्य होता है– अपनी प्रजा से षष्ठांश अर्थात् कर वसूल करना। इस कार्य में भी दिलीप की दक्षता यह है कि वे प्रजा से कर वसूल करने के बाद केवल खजाना नहीं भरते थे, अपितु अपनी ओर से उसमें कुछ मिलाकर वापस प्रजा के हितार्थ वैसे ही खर्च कर देते हैं, जैसे सूर्य धरती पर विद्यमान जल को सोखकर उसे हजार गुना कर के पुनः वर्षा कर देता है।

राजा के पास एक अदद सेना का होना आवश्यक है। दिलीप के पास भी चतुरंगिणी सेना थी। परन्तु वह केवल आभूषण के रूप में थी। सेना का प्रयोग करने की उसे आवश्यकता ही नहीं होती थी। क्योंकि उसके सारे कार्य उसकी शास्त्रगत कुशाग्र बुद्धि और धनुष पर चढ़ी हुई प्रत्यञ्चा– इन दो कारणों से सिद्ध हो जाते हैं। सामान्य सी बात है– जब सीधी अंगुली से घी निकल जाये तो उसे टेढ़ा करने की क्या आवश्यकता है?

दिलीप की अनन्यतम विशेषता है– अपनी योजनाओं को गुप्त रखना। अपने कार्यों में लगातार लगे रहना। जैसे विधाता के कार्यों की सफलता उनके पूर्ण होने पर ही ज्ञात होती है, वैसे ही दिलीप की योजनाओं का ज्ञान भी लोगों को फल देखकर होता था। वह पहले से कभी ढोल नहीं पीटता था।

दिलीप के व्यक्तित्व में परस्पर विरोधी गुणों का अभूतपूर्व समन्वय देखने को मिल जाता था। निर्भय होकर भी अपनी रक्षा के प्रति सदैव सतर्क रहता था। निरोग होकर भी लगातार धर्म का पालन करता था। लोभ से रहित रहकर भी धन का संग्रह करता था। आसक्ति रहित होकर भी सुखों का उपभोग करता था। ज्ञानी होकर भी मौन रहता था। शक्तिशाली होकर भी सदैव क्षमा करता था। दान-दक्षिणादि देकर भी अपनी प्रशंसा कभी नहीं करवाता था। मानो ये सारे विरोधी गुण उसके व्यक्तित्व में आकर सहोदर बन गए–

''गुणानुबन्धित्वात्तस्य गुणा सप्रसवा इव।''

दो प्रकार के वृद्ध होते हैं– वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध। युवावस्था में ही दिलीप ने समस्त प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अतः वह ज्ञानवृद्ध का सम्मान पाता था। रूप, रस, गन्धादि सांसारिक विषयों में उसकी आसक्ति नहीं के बराबर थी।

सामान्य रूप से राजा अपनी प्रजा का पिता कहलाता है और प्रजा उसकी सन्तति। परन्तु दिलीप केवल कहलाने मात्र के लिए पिता नहीं था। वह अपनी प्रजाओं के लिए उचित शिक्षा प्रदान करता था। संकटों से अपनी प्रजाओं की रक्षा करता था। उनके भरण-पोषण की पूरी व्यवस्था करता था। इसलिए–

''स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।''

अर्थात् दिलीप ही प्रजाओं का वास्तविक पिता था। प्रजाओं के पिता तो केवल उनको जन्म देने के हेतु मात्र कहे जाते थे।

समाज में कानून व्यवस्था बनी रहे, किसी प्रकार की अशान्ति न फैले, इस बात को ध्यान में रखकर अपराधियों को समुचित दण्ड देता था। वंशवृद्धि के लिए विवाह कर गृहस्थाश्रम में निवास करता था।

मानव जीवन के मानदण्ड पुरुषार्थचतुष्टय में प्रथम तीन की स्थिति यह थी कि दिलीप के अर्थ और काम भी धर्म पर ही आधारित थे। धर्महीन अर्थोपार्जन और नीतिविहीन कामोपभोग अराजकता का ही हेतु बनते हैं। जहाँ धर्म केन्द्र में होता है और बाकी पुरुषार्थ उसकी परिधि में होते हैं वहाँ सुख, शान्ति, सफलता आदि सदैव रहते हैं।

रघुवंशी राजाओं के शासनकाल की पहली विशेषता मानी जाती है कि चोरी-चकारी इत्यादि नहीं होती थी। दिलीप के राज्य में इस विषय की यथास्थिति का वर्णन है–

''**श्रुतौ तस्करता स्थिता**'' अर्थात् चोरी शब्द केवल बोलने और सुनने के लिए ही बचा था। हकीकत में या कार्यरूप में इसकी परिणति नहीं होती थी।

अपने या पराए की भावना सम्बन्ध के आधार पर दिलीप के मन में नहीं रहती थी। विचारों से विरोधी व्यक्ति वैरी होते हुए भी स्वभाव से शिष्ट व सज्जन होने पर दिलीप को वैसे ही प्रिय लगता था जैसे रोगी व्यक्ति को दवा कड़वी होने पर भी प्रिय लगती है, और उसका सगा सम्बन्धी होने पर भी स्वभाव से दुष्ट वैसे ही अप्रिय था, जैसे सर्प के द्वारा काटी गई अंगुली त्याज्य होती है।

चक्रवर्ती सम्राट के रूप में दिलीप की प्रतिष्ठा थी। समुद्र पर्यन्त फैली हुई सम्पूर्ण पृथ्वी पर उसका ही एकच्छत्र राज्य था। सम्पूर्ण वसुधा पर वह एक नगरी या राजधानी के समान ही शासन को चलाता था–

''**अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव।**''

महाकवि कालिदास ने महाराजा दिलीप के साथ ही महारानी सुदक्षिणा का भी संक्षेप में प्रभावी वर्णन उपस्थित किया है। मगधवंश में जन्म लेने वाली सुदक्षिणा अपनी उदारता के कारण और स्वभाव की शिष्टता के कारण अत्यन्त लोकप्रिय थी। दिलीप की धर्मपत्नी के रूप में वह वैसे ही ख्याति प्राप्त थी जैसे यज्ञ की भार्या के रूप में दक्षिणा प्रसिद्ध है। सुदक्षिणा लक्षणों से व स्वभाव से साक्षात् लक्ष्मी थी–

''**तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः।**''

अर्थात् अनेक रानियों के होते हुए भी दिलीप केवल सुदक्षिणा और लक्ष्मी–इन दोनों के कारण ही स्वयं को कलत्रवन्त मानते थे।

➠ रघुवंश में प्रकृति वर्णन

रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का भी नाम है–'वसिष्ठाश्रमाभिगमन' अर्थात् वशिष्ठ ऋषि के आश्रम की ओर जाना। अपनी सन्तानहीनता के निवारण तथा उपाय का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए नायक-नायिका राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा वसिष्ठाश्रम की ओर प्रस्थान करते हैं।

जिस रथ पर आरूढ़ होकर राजा-रानी राजधानी से चले, वह दिखने में अत्यन्त मनोहर और आकार में बादल के समान विशाल था। रथ के पहियों में से गम्भीर ध्वनि सुनाई दे रही थी। महाकवि के शब्दों में–

''**पावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव।**''

अर्थात् रथारूढ़ वे दोनों ऐसे लग रहे थे जैसे घनघोर वर्षाकाल में बादल पर चढ़कर ऐरावत और बिजली– दोनों एक साथ जा रहे हों। इसमें गौरवर्णा सुदक्षिणा विद्युत है। विशालकाय दिलीप ऐरावत हैं। उपमा की सटीकता दर्शनीय है।

प्रथम तो राजा आश्रम में जा रहे थे। द्वितीय उन्हें वहाँ कोई युद्ध नहीं लड़ना था। अतः सेना को उन्होंने साथ नहीं लिया। केवल निजी एकाध सेवक को ही साथ लिया। अधिक सेना ले जाने से आश्रम में विघ्न भी उत्पन्न हो सकते हैं।

राजा और रानी को चलते समय वन में ऐसी वायु स्पर्श करते हुए सुख प्रदान कर रही थी, जो शीतल तो थी ही और साथ ही साथ शाल वृक्षों की गोंद से सुगन्धित भी हो रही थी। सुखद पवन की दोनों विशेषतायें शीतलता व सुगन्धमयता इसमें विद्यमान हैं। वन में विद्यमान वृक्षों के पत्ते धीरे-धीरे लगातार हिल रहे थे।

रथ की मधुर आवाज को सुनकर मयूर अपना सिर ऊपर उठाते और बड़ी ही मीठी आवाज में केका करते थे। मोरों की केका को सुनना आनन्दप्रद था। वनक्षेत्र सामान्य रूप से शान्त होता है। उसमें किसी बाहरी तत्त्व के प्रवेश करने पर वन-निवासी

प्राणियों का आकृष्ट होना स्वाभाविक है। रथ की आवाज को सुनकर मृगों के जोड़े बहुत उत्सुकता से राजा-रानी को देख रहे थे। मृगयुगल की आँखें नरयुगल की आँखों से अत्यन्त समानता रखती हैं।

नीले आकाश में उड़ते हुए सफेद सारस पक्षियों की एकताबद्ध लम्बी कतार ऐसी दिख रही थी, मानो किसी ने बन्दनवार की ऐसी माला उपस्थित कर दी हो, जिसको बाँधने के लिए दीवार या खम्बों की आवश्यकता नहीं होती–

''पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थनासिद्धिशंसिनः।''

अर्थात् मन्द-मन्द चल रही पवन की अनुकूलता दिलीप और सुदक्षिणा के लिए मनोरथसिद्धि का संकेत दे रही थी। किसी भी कार्य को करने के लिए प्रस्थान करने पर प्राकृतिक रूप से शकुनाशकुन हुआ करते हैं। वायु का अनुरूप प्रवाह भी एक मंगल संकेत प्रदान कर रहा था। यही कारण है कि घोड़ों के खुरों से उड़ने वाली धूल दोनों के शरीर का स्पर्श भी नहीं कर पा रही थी।

तालाबों के अन्दर कमल के विभिन्न रंग-बिरंगे पुष्प खिले हुए थे। पानी के कारण शीतल और कमलों की सुगन्ध के कारण सुगन्धित पवन की अनुकूलता वस्तुतः प्रशंसनीय थी। जो ग्राम स्वयं राजा दिलीप ने यज्ञ करने के बाद दक्षिणा के रूप में पुरोहितों को दिए थे, उन ग्रामों में पहुँचने पर ग्रामीण अर्घ्य लेकर राजा-रानी के पास आते और बड़े मुक्त भाव से दोनों को कार्यसिद्धि के लिए मंगलमय शुभकामनायें और आशीर्वचन देते थे।

मार्ग में अनेक प्रकार के ऐसे वृक्ष विद्यमान थे, जिनके नाम दिलीप व सुदक्षिणा नहीं जानते थे। उनके नाम वे उन वृद्ध ग्रामीणों व ग्वालों से पूछ रहे थे, जो अपनी ओर से भेंट के रूप में हैयंगवीन अर्थात् एकदम ताजा मक्खन लेकर आते थे। अपने घर में जो भी पदार्थ विद्यमान होवे, उसे स्नेहपूर्वक समर्पित कर देना गाँव वालों का सहज स्वभाव होता है।

दोनों में राजा दिलीप रानी सुदक्षिणा के लिए मार्गदर्शक का कार्य कर रहे थे। रानी जिन-जिन पदार्थों व वनस्पतियों के बारे में पूछती, राजा यथासम्भव उनका वर्णन करके रानी की जिज्ञासा को शान्त करते थे।

नितान्त श्वेत और शुद्धवेष को धारण करने वाले दिलीप और सुदक्षिणा जाते समय कैसे लग रहे थे, इस विषय में अतीव सुन्दर उपमा इस प्रकार से दी गई है–

''हिमनिर्मुक्तयोर्योगे, चित्राचन्द्रमसोरिव।''

अर्थात् घने कोहरे से मुक्त हो जाने पर चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा के समान ही वे दोनों शोभायमान हो रहे थे।

इस प्रकार से दिन भर यात्रा करके राजा दिलीप अपनी महारानी के साथ सायंकाल महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में पहुँचे।

➡ महर्षि वशिष्ठ का आश्रम

संसार में प्रत्येक स्थान विशेष की अपनी मूल विशेषतायें होती हैं। राजमहल से आश्रम का स्थान भिन्न होता है। प्रथम विशेषता के अनुसार आश्रम के कुलपति और तत्रस्थ तपस्वी स्वभाव से अत्यन्त शान्त तथा संयमी होते हैं। काम, क्रोधादि षड्विकार आश्रमवासियों के जीवन में प्रायः नहीं होते हैं। वे निश्छल और निष्कपट होते हैं।

विश्वकवि कालिदास महर्षि वशिष्ठ के पवित्र आश्रम का स्वरूप बताते हुए लिखते हैं–

''वनान्तरादुपावृत्तैः समित्कुशफलाहरैः।''

अर्थात् वहाँ रहने वाले तपस्वी वन-वनान्तरों से समिधायें, पुष्प, कुशायें, फलादि लेकर सायं आश्रम में लौटते हैं, तो यज्ञ के अग्निदेवता आगे बढ़कर उनका स्वागत उसी प्रकार से करते हैं, जिस प्रकार से अपनी सन्तानों के कार्यस्थल से वापस आने पर मातायें उनका हार्दिक स्वागत करती हैं। 'पूर्यमाण' विशेषण के प्रयोग से ज्ञात होता है कि तपस्वियों से आश्रम भरा रहता था।

आश्रम में चारों ओर पर्णकुटियाँ बनी हुई थीं। पर्णशालाओं के अन्दर ऋषियों की पत्नियाँ अपना-अपना सामान्य कार्य कर रही थीं और दरवाजे पर मृगों के यूथ इस आशा से बैठे हुए थे कि हमें अपना नीवार का भाग थोड़े समय बाद प्राप्त हो जायेगा। यहाँ मृगों और ऋषिपत्नियों के बीच में भी वही शाश्वत् सम्बन्ध है, जो परिवार में सन्तानों और माँ के बीच में होता है।

प्राकृतिक रूप से हरा-भरा वातावरण महर्षि वशिष्ठ के आश्रम की अन्यतम विशेषता है। चारों तरफ बड़े-बड़े पेड़ तो थे ही, परन्तु उन सभी के बीच-बीच में छोटे-छोटे पौधे भी विद्यमान थे। छोटे पौधों को पनपाने के लिए पानी पिलाने की जिम्मेदारी मुनिकन्याओं की थी–

''सेकान्ते मुनिकन्याभिस्तत्क्षणोज्झिवतवृक्षकम्।''

अर्थात् मुनिकन्याओं ने पौधों के चारों ओर मिट्टी के आलवाल बना रखे थे। वे उनमें धीरे से पानी भरती थीं और तत्काल वहाँ से दूर चली जाती थीं,ताकि उस पानी को पीकर अपनी प्यास बुझाने वाले पक्षी निर्भय होकर वहाँ पर आ सकें। उपर्युक्त पंक्ति में 'वृक्ष' शब्द से परे 'कन्' प्रत्यय का प्रयोग पौधों के अतिशय छोटा होने का भाव बताने के लिए है।

प्रातःकाल से लेकर अपराह्न तक मृग आश्रम में विद्यमान पर्णशालाओं के आँगन में बिखरे नीवार नामक धान को खाते थे। पेट भर कर वे वृक्षों की छाया में बैठ जाते थे और धीरे-धीरे रोमन्थ अर्थात् जुगाली का अभ्यास करते थे। रोमन्थ की क्रिया के द्वारा ही पशु अपने द्वारा एक साथ भक्षित भक्ष्य पदार्थ को पचाने का कार्य करते हैं।

''पुनानं पवनोद्धूतैः धूमैराहुतिगन्धिभिः'' इस वाक्य के द्वारा उस विशेषता को रेखांकित किया गया है, जो केवल आश्रम में ही मिलती है। गाँवों में भी चूल्हों से धुआँ निकलता है परन्तु वह न तो सुगन्धित होता है और न दूसरों को पवित्र करने में समर्थ, जबकि सायं आश्रम में हवन में से उठता हुआ सुगन्धित धुआँ दूसरों को पवित्र कर रहा था।

इस प्रकार से आश्रम में पहुँचने पर प्रजापालक, नीति-निपुण तथा सर्वथा समर्थ राजा और रानी का सभ्य और जितेन्द्रिय मुनियों ने आगे बढ़कर हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत किया।

➡ 'वशिष्ठ-दिलीप-सम्वाद'

'रघुवंश' के प्रथम सर्ग में जब राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा आश्रम में पहुँचे तो अन्य सारे ऋषियों से तो उनका मिलन हो गया परन्तु वशिष्ठ के सन्ध्याविधि में व्यस्त होने के कारण उनके दर्शन नहीं हो पाए। इसीलिए कालिदास ने संकेत किया–

''विधेः सायंतनस्यान्ते स ददर्श तपोनिधिम्।''

अर्थात् सायंकाल सन्ध्याविधि के पूर्ण हो जाने पर राजा ने तपोनिधि वशिष्ठ के दर्शन किए। वशिष्ठ के पीछे उनकी धर्मपत्नी अरुन्धती बैठी हुई वैसी ही शोभायमान हो रही थीं, जैसे अग्निदेवता के पीछे बैठी हुई स्वाहादेवी सुशोभित होती हैं। अग्नि की उपमा देने से महर्षि वशिष्ठ की अतितेजस्विता प्रकट होती है।

राजा और रानी– दोनों ने अतिविनम्रतापूर्वक वशिष्ठ और अरुधन्ती के चरणों में सादर प्रणाम किया और उन दोनों ने भी बड़े आनन्द और प्रेमपूर्वक उन दोनों का यथासम्भव सत्कार किया। आतिथ्य को स्वीकारने के फलस्वरूप जब दिलीप और सुदक्षिणा की रथयात्रा से उत्पन्न थकान शान्ति हो गई, तब–

'' पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रममुनिं मुनिः।''

अर्थात् मुनि वशिष्ठ ने उस साम्राज्य रूपी आश्रम के मुनि दिलीप से राज्य की कुशलता के विषय में पूछा। राज्याश्रम का मुनि बताया जाना दिलीप की त्यागशीलता और उदारता का परिचायक है। क्षत्रिय होते हुए भी दिलीप ब्राह्मण की तरह आचरण करते थे, इसीलिए उनसे कुशलता का प्रश्न पूछा गया।

महर्षि वशिष्ठ यों तो सभी वेदों के विज्ञ विद्वान् थे परन्तु अथर्ववेद की वे साक्षात् निधि थे। विषय-विस्तार और वैविध्य की दृष्टि से अथर्ववेद का अपना विशिष्ट महत्त्व है। राजा ने कहा कि हे ऋषि! मेरे राज्य के सातों अंगों में निश्चित रूप से कुशल और मंगल है और इसका मूल कारण है आपकी अनुकम्पा और आशीर्वाद। स्वामी, अमात्य, सुहृत, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, बल– ये राज्यांग होते हैं। महर्षि ने ही अपने प्रभाव से–

''दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम्॥''

अर्थात् दैवीय तथा मानुषी– दोनों प्रकार की आपत्तियों का हरण कर लिया है। अतः कुशलता तो होनी ही है। अग्नि, जल, रोग, अकाल, मरण– ये पाँच दैवीय आपत्तियाँ कही जाती हैं तथा मन्त्री, चोर, शत्रु, पक्षपाती, लोभी स्वभाव– ये पाँच मानुषी विपत्तियाँ मानी जाती हैं। महर्षि वशिष्ठ अपने मन्त्रों के सात्त्विक प्रभाव से इतनी दूर से ही सारी बाधाओं को शान्त कर देते हैं। इसलिए राजा कहता है कि मेरे शरों को तो लक्ष्यभेद करने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता।

ऋषि वशिष्ठ आश्रम में नित्य और निरन्तर हवन करते हैं। हवन के धुएँ से बादलों का निर्माण होता है। बादलों से भरपूर वर्षा होती है। वर्षा के कारण पूरी खेती होती है। अतः अन्नादि का अभाव तो कभी हो ही नहीं सकता।

हे महर्षि! आपके अतिशय ब्रह्मतेज के कारण मेरी सारी प्रजायें आतंकरहित और निरोग रहती हैं। इसलिए एक आदर्श

मानवायु अर्थात् शतवर्ष पर्यन्त स्वस्थ जीवन जीती है। इस विषय का पटाक्षेप करते हुए सम्राट दिलीप कहते हैं कि–

''सानुबन्धाः कथं नु स्युः सम्पदो मे निरापदः।''

अर्थात् हे ब्रह्मा के साक्षात् पुत्र! आप जैसे गुरु जब मेरे और राज्य के विषय में इतनी चिन्ता करते हैं तो मेरी सारी सम्पत्तियाँ तो निरापद रहनी ही हैं। आप को गुरु रूप में पाकर मैं और मेरा सूर्यवंश निश्चित ही कृतकृत्य है।

➨ दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा

संस्कृत में धातु और प्रत्यय मिलकर एक निश्चित शब्द रूप का निर्माण करते हैं। यदि उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन करना हो तो पूर्व में उपसर्ग का योग होता है। इसी परम्परा में नन्दि धातु से ल्यु प्रत्यय का योग होने पर 'नन्दन' शब्द बनता है और स्त्रीलिङ् की विवक्षा में ईदन्त 'नन्दिनी' रूप होता है। इसका अर्थ है–

''नन्दयति या सेति नन्दिनी।''

अर्थात् जो आनन्द प्रदान करती है, वह 'नन्दिनी' कही जाती है। अनेकानेक प्रकार के पशुओं में गाय सर्वाधिक पवित्र होती है। इसके विभिन्न शरीरावयवों में विभिन्न मंगलकारी देवताओं का निवास होता है।

महर्षि वशिष्ठ राजा दिलीप की समस्या के निवारण के उपायरूप में नन्दिनी की सेवा का निर्देश दे ही रहे थे कि उसी समय नन्दिनी वन से लौटकर आश्रम में आई। उसकी कतिपय विशेषतायें इस प्रकार से थीं–

''ललाटोदयमाभुग्नं पल्लवस्निग्धपाटला।
बिभ्रती श्वेतरोमांकं सन्ध्येव शशिनं नवम्॥''

अर्थात् नन्दिनी गाय कोंपल के समान कतिपय लाल रंग वाली थी। कोंपल का रंग बड़ा ही आकर्षक और आनन्दित करने वाला होता है। उसके ललाट पर श्वेत रंग का कुछ-कुछ टेढ़ा टीका या तिलक विद्यमान था। इस तिलक के कारण वह ऐसी लग रही थी मानो द्वितीया के चन्द्रमा को टीके के रूप में अपने मस्तक पर धारण किए हुए लाल रंग की सन्ध्या होवे। टीके की उपमा चन्द्रमा से और नन्दिनी की सन्ध्या से दी गई है।

दिन भर जंगल में चरकर सायं नन्दिनी जब आश्रम में लौटी तो सन्तान के प्रति स्नेहाधिक्य के कारण उसके थनों से दूध स्वयं ही टपकने लगा। दूध कुछ-कुछ गर्म और अत्यन्त गुणकारी था। यों भी अन्य पशुओं की तुलना में गाय का दूध अधिक गुणकारी और पौष्टिक माना जाता है। उस टपकते हुए दूध से पृथ्वी पर धारा का निशान बनता जा रहा था। पवित्रता में वह दूध यज्ञान्त में स्नानार्थ काम में लिए जाने वाले दूध से भी अधिक पवित्र था।

रात-दिन के चौबीस घन्टों के समय में गोधूलि वेला सर्वाधिक पवित्र मानी जाती है क्योंकि इस समय गायों के खुरों से उड़ाई हुई धूल वातावरण को शुद्ध करती है। वैवाहिक आयोजनों में भी इस वेला को अत्यन्त मंगलकारी माना जाता है। नन्दिनी गाय के खुरों से उड़ाई गई धूल राजा दिलीप के शरीर को निकट से स्पर्श कर रही थी और इसके प्रभाव से–

''तीर्थाभिषेकजां शुद्धिमादधाना महीक्षितः।''

अर्थात् राजा दिलीप उतनी ही शुद्धता और पवित्रता को प्राप्त कर रहे थे, जितनी कि तीर्थस्थान पर पवित्रजल से स्नान करने पर प्राप्त हुआ करती है।

ये सारे शुभशकुन और कल्याणकारी क्रियायें देखकर महर्षि वशिष्ठ को आत्मिक प्रसन्नता और शान्ति का अनुभव हुआ क्योंकि उनकी कही हुई बात भविष्य में सफल होती हुई लग रही थी। अपने मनोभावों को यजमान दिलीप के लिए प्रोत्साहन वचनों के रूप में उपस्थित करते हुए कहने लगे–

''अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन् विगणयात्मनः।''

अर्थात् हे राजन्! नाम लेते ही यह कल्याणकारी गाय आश्रम में आ गई। यह शुभ शकुन है। अपनी मनोरथ सिद्धि को अपने निकट आया हुआ ही समझिए।

वशिष्ठ का निर्देश–राजा दिलीप को नन्दिनी गाय की सेवा इस प्रकार से करनी चाहिए कि अल्पकाल में ही प्रसन्न होकर वह गाय राजा के लिए अभीष्ट वरदान प्रदान कर देवे। इस विषय में प्रथम निर्देश देते हुए वशिष्ठ कहते हैं कि जिस प्रकार निरन्तर

अभ्यास से कठिनतम विद्या को भी अधिगम किया जाता है, उसी प्रकार से आप भी बिना थकान और आलस्य के एक ग्वाले की तरह इस गाय का लगातार अनुगमन करें। इसकी सेवा करने के दौरान जैसे यह वन में उपलब्ध घास आदि को ही खाएगी, वैसे ही आपको भी वन में प्राप्त होने वाले कन्द, मूल, फलादि ही खाना होगा। साधक और साधित में भेद नहीं होना चाहिए।

मुख्य रूप से चार कार्यों को करते समय राजा दिलीप के द्वारा संधारणीय सावधानियों की ओर संकेत करते हुए कहा गया है–

''प्रस्थितायां प्रतिष्ठेथाः स्थितायां स्थितिमाचरेः।
निषण्णायां निषीदास्यां पीताम्भसि पिबेरपः॥''

अर्थात् हे राजन्! आप अपनी इच्छानुसार नन्दिनी गाय को चलाने का प्रयास मत कीजिए। अपितु आप स्वयम् अपनी दिनचर्या को इस गाय की इच्छानुसार ही ढाल लेवें। जब यह गाय चले, तभी आप भी इसके पीछे-पीछे इसी की गति से ताल बैठाकर चलें। जब नन्दिनी खड़ी हो जावे, तो आप भी थोड़ी दूरी बनाकर खड़े हो जावें। जब थक कर के यह गाय आराम करने के लिए बैठ जावे तो आप भी थोड़ा सुस्ताने के लिए बैठ सकते हैं। जब नन्दिनी गाय प्यास लगने पर पानी पीवे, तो ही आप भी पानी पीने का प्रयास करें। सारांश में आपको इस नन्दिनी गाय की सेवा करते समय उसी प्रकार से आचरण करना है, जिस प्रकार से हमारे शरीर की छाया हमारे शरीर के अनुसार ही आचरण करती है। शरीर के हिलने पर छाया भी हिलती है। दौड़ने पर दौड़ती है। बैठने पर बैठती है।

सेवा का यह तन्मय भाव हे राजन्! केवल आपको ही नहीं रखना है अपितु महारानी सुदक्षिणा को भी उतना ही और उसी प्रभाव से रखना है। क्योंकि सन्तानप्राप्ति अकेले आपको नहीं, अपितु आप दोनों को होनी है। शुद्ध अन्तःकरण से पवित्र और भक्तिभाव को धारण करते हुए सुदक्षिणा प्रातःकाल तपोवन की सीमा तक नन्दिनी के पीछे-पीछे उसे विदा करने के लिए जावे और सायंकाल भी वापस उसी आश्रम सीमा पर जाकर गाय का स्वागत और अभिनन्दन करे। इस प्रकार से नन्दिनी की सेवा वन में आप करेंगे और तपोवन में सुदक्षिणा करेगी।

इस प्रकार से नन्दिनी की सेवा करने की अवधि निर्धारित नहीं है। क्योंकि कार्य को प्रारम्भ करने के बाद उसका पूरा हो जाना ही उसकी निर्धारित समयसीमा होती है। महर्षि कहते हैं–

''इत्याप्रसादादस्यास्त्वं परिचर्यापरो भव।
अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणाम्॥''

अर्थात् जब तक यह गाय प्रसन्न होकर के आप दोनों को मनोरथसिद्धि का वरदान नहीं देती है, तब तक आप दोनों को इसकी सेवा में इसी प्रकार लगे रहना है। इसका आशीर्वाद मिल जाने पर निर्विघ्न रूप से आप भी उसी प्रकार से श्रेष्ठतम सन्तान को प्राप्त करोगे, जिस प्रकार से आपके पिता ने अत्युत्तम सन्तान के रूप में आपको प्राप्त किया है। राजा दिलीप ने सपत्नीक नतमस्तक होकर महर्षि वशिष्ठ के आदेश को स्वीकार किया।

●●

रघुवंश महाकाव्यम्
(द्वितीय सर्ग) का सारांश

मनु के वंश में उत्पन्न राजा दिलीप कुलगुरु वशिष्ठ की आज्ञानुसार सन्तान-प्राप्ति की अभिलाषा से कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गाय की सेवा में प्रवृत्त हुए।

प्रातःकाल होते ही जब रानी सुदक्षिणा नन्दिनी गाय की पूजा कर चुकीं और उसका बछड़ा दूध पी चुका, तब राजा दिलीप ने नन्दिनी को जङ्गल में चरने के लिए छोड़ दिया और स्वयं उसके पीछे-पीछे चल पड़े। कुछ दूर तो रानी सुदक्षिणा एवं अनुचर साथ गये, पर बाद में राजा ने उन्हें लौटा दिया और स्वयं नन्दिनी को स्वादिष्ट घास खिलाकर, उसको खुजलाकर, उस पर से मक्खियाँ उड़ाकर उसकी सेवा में लग गया। जब गाय खड़ी होती थी तब राजा भी खड़ा होता था, जब वह बैठती थी तो राजा भी बैठता था और जब वह जल पीती थी तो राजा भी जल पीने का इच्छुक हो जाता था। इस प्रकार छाया की तरह गाय के पीछे-पीछे चलता रहता था।

राजा को गाय की सेवा करते-करते इक्कीस दिन बीत गये। तब गाय ने राजा की परीक्षा लेनी चाही कि देखूँ ये केवल स्वार्थ-भाव से मेरी सेवा करते हैं या सच्चे भाव से। ऐसा विचार करके वह बाईसवें दिन जङ्गल में चरते-चरते हिमालय की एक गुफा में घुस गयी। उसके घुसते ही उस पर एक सिंह टूट पड़ा। राजा ने उसकी जान बचाने के लिए ज्यों ही तरकश से बाण निकालना चाहा, त्योंही उनकी उँगलियाँ बाणों में चिपक गयीं। तब सिंह ने मनुष्य की बोली में कहा–''राजा, मैं कुम्भोदर नाम का शङ्कर का सेवक हूँ। इस सामनेवाले देवदारु के वृक्ष को पार्वती जी ने लगाकर बड़ा किया है। एक बार एक हाथी ने इसकी छाल रगड़ दी। इस पर पार्वती जी को बड़ा दुःख हुआ, अतः शङ्कर जी ने मुझे इसकी रखवाली करने के लिए नियुक्त किया है और कहा है कि जो भी जानवर यहाँ आवे उसे तुम मारकर खा जाओ। इसलिए तुम मुझे मारने की कोशिश मत करो। तुम्हारा प्रयत्न व्यर्थ जायगा।'' राजा ने कहा–''तुम अपनी भूख मिटाने के लिए मुझे खा डालो, लेकिन इस गाय को छोड़ दो।'' सिंह ने कहा–''राजन्! तुम बड़े मूर्ख मालूम होते हो क्योंकि एक छोटी-सी गाय के लिए अपना प्राण गँवा रहे हो, अपना सारा राज्य चौपट करना चाहते हो। यदि जीवित रहोगे तो अनेक गायों की रक्षा कर सकते हो।'' राजा ने एक न सुनी। सिंह राजा को खाने के लिए तैयार हो गया और राजा की उँगलियाँ छूट गयीं। ज्योंही वे सिंह के सामने अपने को समर्पण करने के लिए गिरे, त्योंही देवताओं ने उनके ऊपर फूलों की वर्षा की और उनको मधुर वचन सुनायी पड़े। ''उठो बेटा! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। वर माँगो!'' राजा ने सिर उठाकर देखा तो सिंह गायब था। तब नन्दिनी ने मनुष्य की बोली में कहा–''राजन्! मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। अब मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। तुम मनचाहा वरदान माँगो।'' राजा ने कहा–''मेरे ऐसा पुत्र हो जो मेरे वंश को चलानेवाला हो।'' नन्दिनी ने कहा–''तुम्हारी मनःकामना पूरी होगी।'' राजा उसे लेकर आश्रम में चले आये। वशिष्ठ जी ने गो-सेवा का व्रत पूरा हुआ, जानकर राजा व रानी को आशीर्वाद दिया और उन्हें अयोध्या के लिए विदा किया। अयोध्या में आने पर रानी सुदक्षिणा गर्भवती हुई।

महाकविकालिदासविरचितम्

रघुवंश महाकाव्यम्

द्वितीयः सर्गः

➡ **प्रसङ्ग**–प्रस्तुत श्लोक में गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से राजा दिलीप का नन्दिनी की सेवा में प्रवृत्त होने का वर्णन किया गया है–

अथ प्रजानामधिपः प्रभाते
जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्।
वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां
यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच॥1॥

अन्वय–अथ प्रभाते यशोधनः प्रजानाम् अधिपः जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्यां पीतप्रतिबद्धवत्साम् ऋषेः धेनुं वनायं मुमोच।

हिन्दी व्याख्या–प्रातःकाल प्रजा के स्वामी यशोधन (राजा दिलीप) ने मुनि की गाय को, जब उसका बछड़ा दूध पीने के बाद बाँध दिया गया और (पत्नी) सुदक्षिणा गन्ध और माला से उसकी पूजा कर चुकी, वन में चरने के लिए छोड़ दिया।

संस्कृत व्याख्या–**अथ**–अनन्तरं, **प्रभाते**–प्रातःकाले, **यशोधनः**–कीर्तिधनः, **प्रजानां**–लोकानाम्, **अधिपः**–स्वामी, **जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्यां**–जायया सुदक्षिणया प्रतिग्राहिते स्वीकारिते गन्धमाल्ये चन्दनमाले यया सा ताम्, **पीतप्रतिबद्धवत्सां**–पीतः पीतवानित्यर्थः प्रतिबद्धः बन्धनं नीतः वत्सः यस्याः सा ताम्, **ऋषेः**–मुनेः वशिष्ठस्य, **धेनुं**–गां नन्दिनीमित्यर्थः, **वनाय**–काननाय, **मुमोच**–मुक्तवान्।

संस्कृत भावार्थ–प्रभातसमये नृपमहिषी मालाचन्दनादिभिः नन्दिनीं पूजितवती। वत्सं च प्रथमम् स्तन्यम् पाययित्वा पश्चात् बबन्ध। ततश्च यशस्वी स राजा दिलीपः वने स्वच्छन्दगमनाय तां नन्दिनीं मुक्तवान् इति भावः।

शब्दार्थ–**अथ**–तब, रात्रि बीतने पर। **प्रभाते**–सुबह। **यशोधनः**–यश ही है धन जिसका अर्थात् यशस्वी। यशः एव धनं यस्य सः यशोधनः बहुब्रीहि समास। यह प्रजानामधिपः का विशेषण है। **प्रजानाम्**–प्रजाओं का। **अधिपः**–स्वामी। **जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्**–सुदक्षिणा के द्वारा गन्ध और माला स्वीकार करवाया गया है जिससे (उस) गाय को अर्थात् रानी के द्वारा दी हुई गन्ध और माल्य को स्वीकार कर लिया है जिसने। **पीतप्रतिबद्धवत्साम्**–दूध पी चुकने के बाद जिसका बछड़ा बाँध दिया गया (उस गाय को)। **वत्स**–बछड़ा-वत्सः। **ऋषेः**–मुनि (वशिष्ठ) की। **धेनुम्**–गाय को-गाम्। **वनाय**–वन में चरने के वास्ते। **मुमोच**–छोड़ा।

➡ **प्रसङ्ग**–नन्दिनी के मार्ग का अनुसरण करती हुई सुदक्षिणा का वर्णन है–

तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसु-
मपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।
मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी
श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्॥2॥

अन्वय–अपांसुलानाम् धुरि कीर्तनीया मनुष्येश्वरधर्मपत्नी खुरन्यासपवित्र पांसुम् तस्याः मार्गं श्रुतेः अर्थं स्मृतिः इव अन्वगच्छत्।

हिन्दी व्याख्या–पतिव्रताओं में श्रेष्ठ राजा की धर्मपत्नी सुदक्षिणा ने गाय के मार्ग का, जिस मार्ग की धूल (नन्दिनी के) खुर के स्पर्श से पवित्र हो गयी थी, उसी प्रकार अनुसरण किया, जैसे श्रुति के अर्थ के अनुसार स्मृति चलती है।

संस्कृत व्याख्या–अपांसुलानां–पतिव्रतानां, **धुरि**–अग्रे, **कीर्तनीया**–परिगणनीया, **मनुष्येश्वरधर्मपत्नी**–राजमहिषी सुदक्षिणा, **खुरन्यासपवित्रपांसुं**–खुरन्यासैः पादनिक्षेपैः पवित्राः पूताः पांसवो रजांसि यस्य तं, **तस्याः**–नन्दिन्याः, **मार्गं**–पन्थानं, **श्रुतेः**–वेदस्य, **अर्थं**–प्रतिपाद्यं, **स्मृतिः**–मन्वादिवाक्यम्, **इव**–तद्वत्, **अन्वगच्छत्**–अनुसृतवती।

संस्कृत भावार्थ–पतिव्रतासु श्रेष्ठा नृपस्य दिलीपस्य पत्नी राज्ञी सुदक्षिणा तस्याः धेनोः खुरप्रक्षेपपूतरजस्कम् पन्थानम् तथा एव अनुससार यथा श्रुतेः अर्थम् स्मृतिः अनुसरति। तथा स्मृतिः श्रुतिक्षुण्णमेवार्थमनुसरति तथा साऽपि गोखुरक्षुण्णमेव अनुससार।

शब्दार्थ–अपांसुलानाम् धुरि कीर्तनीया–पतिव्रताओं में सर्वश्रेष्ठ समझी जानेवाली। **मनुष्येश्वरधर्मपत्नी**–मनुष्यों के ईश्वर की धर्मपत्नी अर्थात् रानी। **खुरन्यासपवित्रपांसुम्**–खुरों के (रखने) से पवित्र हो गयी है धूलि जिसकी, ऐसा मार्ग। **अन्वगच्छत्**–अनुसरण किया।

विशेष–श्रुति जो कुछ कहती है स्मृतियाँ ठीक-ठीक उसका अनुसरण करती हैं। उसी प्रकार रानी ने भी ठीक-ठीक गाय के चले हुए मार्ग का अनुसरण किया।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा के द्वारा सुदक्षिणा को लौटा देने का वर्णन है–

निवर्त्य राजा दयितां दयालु–
स्तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।
पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां
जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्॥3॥

अन्वय– यशोभिः सुरभिः दयालुः राजा तां दयिताम् निवर्त्य पयोधरीभूत-चतुःसमुद्रां गोरूपधराम् उर्वीम् इव तां सौरभेयीं जुगोप।

हिन्दी व्याख्या – यश से सुन्दर दयालु राजा ने नन्दिनी के मार्ग का अनुसरण करती हुई प्रिया (सुदक्षिणा) को लौटाकर चारों समुद्र ही हैं स्तन जिसके ऐसी सुरभि की पुत्री (नन्दिनी) की गऊ रूप में पृथ्वी के समान रक्षा की।

संस्कृत व्याख्या– यशोभिः– कीर्तिभिः, **सुरभिः**–मनोज्ञः, **दयालुः**–कारुणिकः, **राजा**–दिलीपः, **ताम्**– अनुगच्छन्तीं, **दयितां**–प्रियां भार्या, **निवर्त्य**–परावर्त्य, **पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां**–स्तनीभूतचतुःसागरां, **गोरूपधरां**–धेनुस्वरूपधारिणीम्, **उर्वीम्** – पृथ्वीम्, इव, तां, **सौरभेयीं**–नन्दिनीं, **जुगोप**–ररक्ष।

संस्कृत भावार्थ–परमदयालुः राजा प्रियतमां तां सुदक्षिणाम् सुदूरगमनात् निवर्तयामास स्वयं च तां नन्दिनीम् सर्वभावेन गोप्तुमारेभे। मन्ये नन्दिनीरूपेण प्राप्तां चतुर्भिः जलधिभिः युक्ताम् साक्षात् धराम् स ररक्ष इति।

शब्दार्थ – यशोभिः - कीर्ति से। **सुरभिः** - सुन्दर। यह राजा का विशेषण है। **दयिताम्** - प्रिया को। **निवर्त्य** - लौटाकर। **पयोधरीभूतचतुःसमुद्राम्** - यह सौरभेयीं तथा उर्वीम् दोनों का विशेषण है। गाय के पक्ष में इसका अर्थ है, जिसके दूध से चारों समुद्र भी तिरस्कृत हो गये थे यानी जिसके स्तन में इतना दूध था कि चारों समुद्रों में उतना पानी भी न रहा होगा। चारों समुद्र ही हैं स्तन जिसके ऐसी पृथ्वी। **गोरूपधराम्** - गऊरूप में पृथ्वी। **उर्वीम्** - पृथ्वी को। **सौरभेयीम्** - कामधेनु की कन्या नन्दिनी को। **जुगोप** - रक्षा की।

➡ **प्रसङ्ग**– राजा के द्वारा अनुचर वर्ग को लौटा देने का वर्णन है–

व्रताय तेनानुचरेण धेनो-
र्न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः।
न चान्यतस्तस्य शरीररक्षा
स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः ॥4॥

अन्वय– व्रताय धेनोः अनुचरेण तेन शेषोऽपि अनुयायिवर्गः न्यषेधि। तस्य शरीररक्षा च अन्यतः न। हि मनोः प्रसूतिः स्ववीर्यगुप्ता।

हिन्दी व्याख्या – व्रत के लिए (न कि जीविकोपार्जन के लिए) जो राजा गाय का अनुचर बना था, उसने शेष सभी अनुचरों को (साथ चलने से) मना कर दिया। क्योंकि अपनी शरीर-रक्षा के वास्ते उसे दूसरे व्यक्ति की आवश्यकता न थी।

कारण कि मनु की सन्तान अपने ही बल से रक्षित होती है (अपने ही पराक्रम से अपनी रक्षा करती है)।

संस्कृत व्याख्या– व्रताय–व्रतपालनार्थं, **धेनोः**–गोःनन्दिन्या इत्यर्थः, **अनुचरेण**–सेवकेन, **तेन**–दिलीपेन, **शेषोऽपि**–अवशिष्टोऽपि, **अनुयायिवर्गः**–अनुचरसमुदायः, **न्यषेधि**–निवर्तितः, **तस्य**–राज्ञः, **शरीररक्षा**– देहसंरक्षणं, **च अन्यतः**–पुरुषान्तरात्, **न**–नहि (अभूयत)। **हि**–यतः, **मनोः**–महीक्षितामाद्यस्य, **प्रसूतिः**–सन्ततिः, **स्ववीर्यगुप्ता**– स्वपराक्रमेण रक्षिता (भवति)।

संस्कृत भावार्थ– व्रतपालनार्थम् अरण्ये गामनुगच्छन् नृपतिः प्राक् महिषीम् निवर्तयामास पश्चात् अन्यानपि सेवकान् अनुचलनात् निवारितवान्। एकाकिनोऽपि तस्य दिलीपस्य निजरक्षणविधो कापि चिन्ता न वभूव यतः मनोः कुलधराः नृपाः स्वबाहुबलेनैव सर्वत्र निजरक्षां कुर्वन्तीति भावः।

शब्दार्थ – व्रताय - व्रत के वास्ते, राजा ने गाय की सेवा का जो व्रत धारण किया था, वह जीविका के लिए नहीं था बल्कि सन्तान-प्राप्ति के लिए था। **अनुचरेण** - सेवक से। **शेषोऽपि** - शेष बचे हुए भी। सुदक्षिणा को तो राजा ने पहले ही लौटा दिया था। उसके बाद जो कुछ भी नौकर-चाकर साथ-साथ चल रहे थे उन्हें भी राजा ने लौटा दिया। **न्यषेधि** - मना कर दिये गये अर्थात् राजा ने अपने साथ चलने से उन्हें रोक दिया। **अनुयायिवर्गः** - नौकर-चाकर। **शरीर-रक्षा** - शरीर की रक्षा। **अन्यतः** - दूसरों से। पुरुषान्तरात्, अन्येभ्यः। राजा को अपनी शरीर-रक्षा के लिए अन्य किसी की आवश्यकता न थी। **यतः** - क्योंकि। **मनोःप्रसूतिः** - मनु की सन्तान। **स्ववीर्यगुप्ता** - अपने ही पराक्रम से रक्षित। राजा ने अन्य नौकरों को भी साथ चलने से इसलिए रोक दिया कि उनकी रक्षा के वास्ते अन्य लोगों की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि मनु के वंशवाले अपनी रक्षा स्वयं कर लेते हैं।

➡ **प्रसङ्ग**–सम्राट् की गो-सेवा का वर्णन किया गया है–

आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानां
कण्डूयनैर्दंशनिवारणैश्च।
अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः
सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत् ॥5॥

अन्वय–सः सम्राट् आस्वादवद्भिः तृणानां कवलैः कण्डूयनैः दर्शनिवारणैः अव्याहतैः स्वैरगतैः तस्याः समाराधनतत्परः अभूत्।

हिन्दी व्याख्या – वह राजा गाय को घास का स्वादिष्ट कौर खिलाकर, उसको खुजलाकर और मक्खियों को उड़ाकर तथा उसे (गाय को) बिना रोक-टोक स्वच्छन्द विचरण करने देकर उसकी सेवा में लग गया।

संस्कृत व्याख्या– सः–प्रसिद्धः, **सम्राट्**–सार्वभौमो राजा दिलीपः, **आस्वादवद्भिः**–स्वादयुक्तैः, **तृणानां**–शष्पाणां, **कवलैः**–ग्रासैः, **कण्डूयनैः**–खर्जनैः **दंशनिवारणैः**–वनमक्षिकादूरीकरणैः, **अव्याहतैः**–बाधारहितैः, **स्वैरगतैः**–स्वच्छन्दगमनैः, **तस्याः**–नन्दियाः, **समाराधनतत्परः**–शुश्रूषासक्तः, **अभूत्**–जातः।

संस्कृत भावार्थ– तस्याः भोजनार्थं स्वादयुक्तं तृणं प्रयच्छन् तस्याः, शरीरखर्जनम् अपनयन् तथा पीडाकरान् दंशमशकादीन् निवारयन् तस्याः स्वेच्छाविहारं चानुवर्तमानः स सर्वप्रकारेण नन्दिन्याः सेवामकरोत्।

शब्दार्थ – सम्राट् - राजा, नृपः। जो राजसूय यज्ञ कर चुका हो, राजमण्डल का प्रभु हो तथा राजाओं का शासक हो उसे सम्राट् कहते हैं। **आस्वादवद्भिः** - स्वादिष्ट। **कवलैः** - कौर। **तृणानाम्** - घास का। राजा गाय को स्वादिष्ट घास खिलाते थे। **कण्डूयनैः** - खुजलाकर। **दंशनिवारणैः** - मक्खियों तथा मच्छरों को उड़ाकर। **अव्याहतैः** - बे-रोक-टोक। **स्वैरगतैः** - स्वतन्त्रतापूर्वक जाने देकर। **समाराधनतत्परोऽभूत्** - सेवा में लग गये। गाय जहाँ जाती थी राजा बे-रोक-टोक उसे वहाँ जाने देते थे। इस (पूर्वोक्त) प्रकार से राजा गाय की सेवा में लग गये।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा दिलीप की गो-सेवा का ही वर्णन है–

स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां
निषेदुषीमासनबन्धधीरः।

जलाभिलाषी जलमाददानां
छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥6॥

अन्वय—स्थिताम् भूपतिः स्थितः प्रयाताम् उच्चलितः निषेदुषीम् आसनबन्धधीरः जलम् आददानाम् जलाभिलाषी तां छाया इव अन्वगच्छत्।

हिन्दी व्याख्या — जब गाय खड़ी होती थी तब राजा भी खड़ा हो जाता था, जब गाय चलती थी तब राजा भी चलने लगता था और जब वह बैठती थी तो राजा भी आसन लगाकर बैठ जाता था। जब वह जल पीती थी तो राजा भी जल पीने का इच्छुक हो जाता था। इस प्रकार राजा परछाईं की तरह उस गाय के पीछे-पीछे बना रहता था।

संस्कृत व्याख्या— स्थिताम्—ऊर्ध्वावस्थितां (दृष्ट्वा), **भूपतिः**—राजा, **स्थितः—ऊर्ध्वावस्थितः, प्रयातां**—प्रस्थितां (दृष्ट्वा), **उच्चलितः**—प्रस्थितः (सन्), **निषेदुषीम्**—उपविष्टाम्, **आसनबन्धधीरः**—आसनबन्धे उपवेशने धीरः स्थितः उपविष्टः सन्नित्यर्थः, **जल**—पानीयम्, **आददानां**—गृहणन्तीं (दृष्ट्वा), **जलाभिलाषी**—जलेच्छुकः पिबन्नित्यर्थः, **तां**— नन्दिनीं, **छाया इव**—प्रतिबिम्ब इव, **अन्वगच्छत्**—अनुसृतवान्।

संस्कृत भावार्थ— नन्दिनी यदा चलितुमारेभे तदा दिलीपोऽपि चचाल, यदा सा गमनात् विरराम, नृपोऽपि तदा विरराम, सा यदा निषसाद तदा राजापि निषसाद, सा प्रथमं जलं पपौ नृपः पश्चात् सलिलमपिबत्। इत्थं सर्वप्रकारेण राजा तां छाया इव अनुजगाम।

शब्दार्थ — **स्थिताम्** - खड़ी हुई को। **स्थितः** - खड़ा हो गया, यह भूपतिः का विशेषण है। **उच्चलितः** - चलता हुआ। **प्रयाताम्** - चलती हुई को। **निषेदुषीम्** - बैठी हुई को। **आसनबन्धधीरः** - धीरतापूर्वक आसन ग्रहणकर बैठ जाते थे। **जलम् आददानाम्** - जल पीती हुई को। जब गाय पानी पीती थी, राजा भी पानी पीते थे। **जलाभिलाषी** - प्यासा। **छाया** - परछाईं। **इव** - तरह। **अन्वगच्छत्** - पीछे-पीछे गया। जिस प्रकार छाया हर समय मनुष्य के साथ रहती है, उसी प्रकार राजा भी हर समय गाय के पीछे-पीछे रहते थे और दत्तचित्त होकर उसकी सेवा करते थे।

➡ **प्रसङ्ग**— राजा दिलीप की तत्कालीन शोभा वर्णित है—

स न्यस्तचिह्नामपि राजलक्ष्मीं
तेजोविशेषानुमितां दधानः।
आसीदनाविष्कृतदानराजि-
रन्तर्मदावस्थ इव द्विपेन्द्रः ॥7॥

अन्वय—न्यस्तचिह्नामपि तेजोविशेषानुमिताम् राजलक्ष्मीम् दधानः सः अनाविष्कृतदानराजिः अन्तर्मदावस्थः द्विपेन्द्रः इव आसीत्।

हिन्दी व्याख्या — (जङ्गल में गाय की सेवा के लिए) जाते समय राजा ने राजलक्ष्मी के सारे चिह्नों (छत्र, चामर आदि) को त्याग दिया था, फिर भी अपने विशेष तेज के कारण वह छिप न सका (सबको यह मालूम हो ही जाता था कि यही राजा दिलीप हैं)। इसी प्रकार राजा उस समय उस मदवाले हाथी की तरह प्रतीत होता था, जिसकी मदरेखा बाहर न निकली हो बल्कि अन्दर ही छिपी हो।

संस्कृत व्याख्या— न्यस्तचिह्नामपि—न्यस्तानि परिहृतानि चिह्नानि छत्र-चामरादीनि यस्याः तां, **तेजोविशेषानुमितां**—तेजोविशेषेण प्रभावातिशयेन अनुमिताम् ऊहितां, **राजलक्ष्मीं**—राजश्रियं, **दधानः**—धारयन्, **सः**—राजा दिलीपः, **अनाविष्कृतदानराजिः**—बहिरप्रकटीकृतमदरेखः, **अन्तर्मदावस्थः**—अन्तर्गता मदस्य अवस्था दशा यस्य तादृशः, **द्विपेन्द्रः**—गजराजः, **इव**—यथा, **आसीत्**—जातः।

संस्कृत भावार्थ— गोसेवायै वनं गच्छता दिलीपेन छत्रचामरादीनि त्यक्तानि तथापि तस्य प्रभावातिशयेन तथा प्रभावशालिना मूर्तिविशेषेणैव जनः तस्य राजश्रियमनुमातुं शशाक अर्थात् राजा एव अयं भवेत् इति सर्वेःअनुमितम्। तस्मिन् काले स राजा बहिरप्रकटीकृतमदरेखः हस्ती इव आसीत्।

शब्दार्थ — **न्यस्तचिह्नामपि** - राजचिह्नों से रहित। राजा का चिह्न छत्र और चामर होता है, परन्तु वन में जाते समय उसने इन बाहरी चिह्नों को छोड़ दिया था, अर्थात् जङ्गल में छत्र-चामर लेकर राजा नहीं गया था। **राजलक्ष्मीम्** - राजा की

लक्ष्मी। **तेजोविशेषानुमिताम्** - विशेष तेज के कारण जिसका अनुमान किया जाता था। यद्यपि राजा ने उस समय छत्र और चामर नहीं धारण किया था, तथापि उसमें ऐसा कुछ विशेष तेज था कि लोग यह अनुमान कर लेते थे कि यही राजा दिलीप है। **दधानः** - धारण करते हुए। **अनाविष्कृतदानराजिः** - जिसके मद की रेखा प्रकट न हो। **अन्तर्मदावस्थः** - जिसके मद की अवस्था भीतर ही छिपी हो। **द्विपेन्द्रः** - हाथियों का राजा।

➡ **प्रसङ्ग–**राजा दिलीप के वन-विचरण का वर्णन है–

लताप्रतानोद्ग्रथितैः स केशै-
रधिज्यधन्वा विचचार दावम्।
रक्षापदेशान्मुनिहोमधेनो-
र्वन्यान् विनेष्येन्निव दुष्टसत्त्वान् ॥8॥

अन्वय–लताप्रतानोद्ग्रथितैः केशैः सः अधिज्यधन्वा मुनिहोमधेनोः रक्षापदेशात् वन्यान् दुष्टसत्त्वान् विनेष्यन्निव दावं विचचार।

हिन्दी व्याख्या – लताओं के तन्तुओं से बँधे हुए बालों से सुशोभित राजा दिलीप प्रत्यञ्चा चढ़े हुए धनुष को धारण किये हुए, मुनि वशिष्ठ की होमधेनु की रक्षा करने के बहाने मानो जङ्गली दुष्ट जीवों को शिक्षा देने के लिए जङ्गल में घूम रहे थे।

संस्कृत व्याख्या–लताप्रतानोद्ग्रथितैः–लतानां वल्लीनां प्रतानानि कुटिल तन्तवः तैः उद्ग्रथितैः गुम्फितैः, **केशैः–**कचैः (उपलक्षितः), **सः–**राजा दिलीपः, **अधिज्यधन्वा–**अधिगता आरोपिता ज्या मौर्वी यस्मिन् तादृशं धनुः चापो यस्य तथाभूतः (सन्), **मुनिहोमधेनोः–**मुनेः वशिष्ठस्य होमसाधनभूतायाः धेनोः नन्दिन्याः, **रक्षापदेशात्–**रक्षणव्याजात्, **वन्यान्–**अरण्यान्, **दुष्टसत्त्वान्–**हिंसकजन्तून्, **विनेष्यन् इव–**शिक्षयिष्यन् इव, **दावं–**वनं, **विचचार–**विचरितवान्।

संस्कृत भावार्थ–वल्लीकुटिलतन्तुसदृशशाखादिभिरुन्नमय्य गुम्फितैः केशैः (उपलक्षितः) सः राजा दिलीपः आरोपितमौर्वीकधनुष्मान् (सन्निति शेषः) मुनिहोमधेनोः नन्दिन्याः रक्षणव्याजात् काननसमुद्भवान् सिंहादीन् हिंस्रजन्तून् शिक्षयिष्यन् इव काननं वनं वा व्यचरत्।

शब्दार्थ – लताप्रतानोद्ग्रथितैः - लताओं की टेढ़ी-मेढ़ी तन्तुओं से बँधे हुए। **केशैः** - बालों से। **अधिज्यधन्वा** - धनुष की डोरी चढ़ाये हुए। **मुनिहोमधेनोः** - मुनि की होमधेनु। अर्थात् मुनि की गाय जो हवन की सामग्री, जैसे-घी, दूध आदि देती थी। **रक्षापदेशात्** - रक्षा करने के बहाने से। **वन्यान्** - जङ्गली। **दुष्टसत्त्वान्** - भयङ्कर हिंसक जीवों को। **विनेष्यन् इव** - शिक्षा देता हुआ। **दावम्** - जङ्गल। **विचचार** - घूम रहा था।

➡ **प्रसङ्ग–** वन में वृक्ष, पक्षी आदि भी राजा दिलीप का स्वागत कर रहे हैं–

विसृष्टपार्श्वानुचरस्य तस्य,
पार्श्वद्रुमाः पाशभृता समस्य।
उदीरयामासुरिवोन्मदाना-
मालोकशब्दं वयसां विरावैः ॥9॥

अन्वय–विसृष्टपार्श्वानुचरस्य, पाशभृता समस्य तस्य पार्श्वद्रुमाः उन्मदानां वयसां विरावैः आलोकशब्दम् उदीरयामासुरिव।

हिन्दी व्याख्या –अगल-बगल स्थित सेवकों को विदा कर देनेवाले तथा वरुण के समान प्रभावशाली उस राजा के आस-पास के वृक्षों ने, उन्मत्त पक्षियों के शब्द के द्वारा मानो जय शब्द का उच्चारण किया।

संस्कृत व्याख्या– विसृष्टपार्श्वानुचरस्य–विसृष्टाः त्यक्ताः पार्श्वानुचराः अन्तिकवर्तिसेवकाः येन तस्य, **पाशभृता–**वरुणेन, **समस्य–**तुल्यस्य, **तस्य-**दिलीपस्य, **पार्श्वद्रुमाः–**समीपवर्तिवृक्षाः, **उन्मदानाम्–**उत्कटमदानां, **वयसां–**खगानां, **विरावैः-**शब्दः, **आलोकशब्दं–**जयशब्दम्, **उदीरयामासुः इव–**अवदन् इव।

संस्कृत भावार्थ– यथा राजमन्दिरे सेवकाः मङ्गलध्वनिभिः तं संवर्द्धयन्ति स्म तथाऽरण्येऽपि तन्निकटवर्तिनः तरवः पार्श्वचरविहीनम् वरुणवत् प्रभावशालिनम् तं नृपं मत्तखगकुलकूजितरूपेण जयशब्देन संवर्द्धयामासुः इति भावः।

शब्दार्थ – विसृष्टपार्श्वानुचरस्य - जिसने अपने निकटवर्ती भृत्यों को छोड़ दिया था। **पार्श्वद्रुमाः** - अगल-बगल

के पेड़। **पाशभृता समस्य** - वरुण के समान (उस राजा का)। **उन्मदानाम्** - मतवाले। **वयसाम्** - पक्षियों के। **विरावैः** - शब्दों के द्वारा। **आलोकशब्दम्** - जय शब्द। **उदीरयामासुः** - उच्चारण करते थे।

➡ **प्रसङ्ग**–यहाँ राजा पर लताओं द्वारा पुष्प-वर्षा किये जाने का वर्णन है–

मरुत्प्रयुक्ताश्च मरुत्सखाभं
तमर्च्यमारादभिवर्तमानम्।
अवाकिरन् बाललताः प्रसूनै-
राचारलाजैरिव पौरकन्याः ॥10॥

अन्वय– मरुत्प्रयुक्ताः बाललताः मरुत्सखाभम् आरात् अभिवर्तमानम् अर्च्यम् तम् प्रसूनैः पौरकन्याः आचारलाजैः इव अवाकिरन्।

हिन्दी व्याख्या – वायु से हिलती हुई छोटी-छोटी लताओं ने अग्नितुल्य तेजस्वी, समीप में स्थित तथा पूज्य उस राजा दिलीप के ऊपर इस प्रकार फूलों की वर्षा की जैसे नगरवासियों की कन्याएँ मङ्गल के लिए धान के लावों की वर्षा करती थीं।

संस्कृत व्याख्या– मरुत्प्रयुक्ताः–मरुता वायुना प्रयुक्ताः प्रेरिताः, **बाललताः**–कोमलवल्लयः, **मरुत्सखाभम्**–अग्नितुल्यतेजस्विनम्, **आरात् –** समीपे, **अभिवर्तमानं**–विद्यमानम्, **अर्च्यम्–** पूज्यं, **तं**–दिलीपं, **प्रसूनैः–** पुष्पैः, **पौरकन्याः**–नगरबालाः, **आचारलाजैः**–मङ्गललाजैः इव, **अवाकिरन्**–प्रचिक्षिपुः।

संस्कृत भावार्थ– वह्निना तुल्यं कान्तियुक्तम् दिलीपमागतं वीक्ष्य कोमललताः समीपस्थस्य तस्योपरि पुष्पवर्षणं कृतवत्यः यथा पुरकन्यकाः तस्योपरि मङ्गलार्थान् निर्मलान् लाजान् वर्षन्ति स्म।

शब्दार्थ – मरुत्प्रयुक्ताः - हवा से हिलती हुई। **बाललताः** - छोटी-छोटी, कोमल लताएँ। **मरुत्सखाभम्** - वायु के मित्र अग्नि के समान कान्तिवाले को। **अर्च्यम्** - पूजायोग्य। **अभिवर्तमानम्** - उपस्थित। **पौरकन्याः** - नगर की कन्याएँ। **आचारलाजैः** - मङ्गल के लिए फेंके जानेवाले लावे। जब कभी कोई राजा अथवा कोई महान् व्यक्ति किसी नगर में प्रवेश करता है तो नगर की कुमारी कन्याएँ भूँजे हुए धान के लावे उसके स्वागत के वास्ते फेंकती हैं, उसी प्रकार लताओं से जब फूल गिरे तो ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके (राजा के) स्वागत के लिए पुर की कन्याएँ लावों की वर्षा कर रही हैं।

➡ **प्रसङ्ग**–वन में हरिणियाँ निःशङ्क भाव से राजा को निहार रही हैं–

धनुर्भृतोऽप्यस्य दयाऽऽर्द्रभाव-
माख्यातमन्तः करणैर्विशङ्कैः।
विलोकयन्त्यो वपुरापुरक्ष्णाम्
प्रकामविस्तारफलं हरिण्यः ॥11॥

अन्वय–धनुर्भृतः अपि अस्य विशङ्कैः अन्तःकरणैः दयार्द्रभावम् आख्यातम् वपुः विलोकयन्त्यः हरिण्यः अक्ष्णां प्रकामविस्तारफलम् आपुः।

हिन्दी व्याख्या – यद्यपि राजा दिलीप ने धनुष धारण किया था फिर भी उनके हृदय का दयायुक्त भाव हरिणियों को मालूम हो गया। वे निर्भय होकर उनके शरीर को देख रहीं थीं। इस प्रकार उनके शरीर को देखती हुई हरिणियों को अपने नेत्र के बड़ा होने का फल मिल गया।

संस्कृत व्याख्या– धनुर्भृतः अपि– चापधारिणःअपि, **अस्य**–दिलीपस्य, **विशङ्कैः**–निर्भीकैः, **अन्तःकरणैः**–चित्तैः, **दयार्द्रभावं**–कृपारसार्द्राभिप्रायम्, **आख्यातं**–सूचितं, **वपुः**–शरीरं, **विलोकयन्त्यः**–पश्यन्त्यः, **हरिण्यः**–मृग्यः, **अक्ष्णां**–नेत्राणां, **प्रकामविस्तारफलं** -प्रकामं यथेष्ट विस्तारस्य विशालतायाः फलम्, **आपुः**–प्राप्नुवन्।

संस्कृत भावार्थ– धनुर्धारिणमपि तमायान्तं विलोक्य यतो भीतानामपि हरिणीनां मनसि भयमात्रमपि न जज्ञे अतएव ताः बुबुधिरे यदयं नृपः यद्यपि भीषण चापं धत्ते तथापि अस्य हृदये दया अस्ति अतएव ताः नृपस्य मनोहरां मूर्तिम् पश्यन्त्यः स्वस्य नयनानां विशालतायाः सफलतामधिजग्मुः।

शब्दार्थ – धनुर्भृतः - धनुष को धारण करनेवाले का। **अस्य** - राजा का। **विशङ्कैः** - निडर होकर। **अन्तःकरणैः** -

चित्त से। **दयार्द्रभावम्** - दया से जिसका भाव कोमल है। **आख्यातम्** - बताया गया। उन हरिणियों के निर्भय चित्त ने यह बताया कि इसका शरीर दया से परिपूर्ण है। **वपुः** - शरीर। **विलोकयन्त्यः** - देखती हुई। **हरिण्यः** - हरिणियाँ। **अक्ष्णाम् प्रकाम-विस्तारफलम्** - आँखों के बड़े होने का फल। **आपुः** - पाया। हरिणियों ने राजा के दयापूर्ण शरीर को देखा, इससे उनकी आँखों के बड़ा होने का फल उन्हें मिल गया। यद्यपि राजा धनुष धारण किये था और उसे देखकर मृगादिकों को भय से भागना चाहिए था, तथापि उसे देखकर उनके मन में किसी भी प्रकार का भय नहीं आया, अतः उन्होंने यह समझ लिया कि राजा दयालु है और हम लोगों का वध नहीं करेगा। शत्रु और मित्र की पहचान करने में मनुष्य का अन्तःकरण ही प्रधान होता है।

➡ **प्रसङ्ग**—वन-देवताओं द्वारा राजा के यशोगान किये जाने का वर्णन–

स कीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैः
कूजद्भिरापादितवंशकृत्यम्।
शुश्राव कुञ्जेषु यशः स्वमुच्चै–
रुद्गीयमानं वनदेवताभिः ॥12॥

अन्वय—सः मारुतपूर्णरन्ध्रः कूजद्भिः कीचकैः आपादितवंशकृत्यम् कुञ्जेषु वनदेवताभिः उच्चैः उद्गीयमानं स्वं यशः शुश्राव।

हिन्दी व्याख्या — उस राजा ने शब्द करते हुए कीचकसंज्ञक बाँसों के द्वारा, जो वंशी (बाँसुरी) का काम कर रहे थे, लता-गृहों में वनदेवताओं से ऊँचे स्वरों में गाये जाते हुए अपने यश को सुना।

संस्कृत व्याख्या— सः–दिलीपः, **मारुतपूर्णरन्ध्रैः**–वायुपूरितच्छिद्रैः, **कूजद्भिः**– शब्दं कुर्वद्भिः, **कीचकैः**–वेणुविशेषैः, **आपादितवंशकृत्यम्**–आपादितं सम्पादितं वंशकृत्यं वेणुवाद्यकार्यं यस्मिन् कर्मणि तद्यथा स्यात् तथा, **कुञ्जेषु**–लतागृहेषु, **वनदेवताभिः**–वनदेवीभिः, **उच्चैः**–तारस्वरेण, **उद्गीयमानं**–स्तूयमानं, **स्वं**–निजं, **यशः**–कीर्ति, **शुश्राव**–श्रुतवान्।

संस्कृत भावार्थ—तस्मिन्वने एकान्तशीतलेषु वल्लरीकुञ्जेषु सुखासीनाः वनदेवताः मङ्गलगायिका इव तस्य नृपतेः यशः गायन्त्यः तस्य कर्णसुखं चक्रिरे वनजातैः कीचकैश्च पवनपूर्णरन्ध्रतया मधुरध्वनिभिः तासां गानस्य अनुरञ्जकम् वंशीवाद्यकार्यं सम्पादितम् इति भावः।

शब्दार्थ — **मारुतपूर्णरन्ध्रैः** - हवा से पूर्ण छिद्रवाले (बाँस)। **कीचकैः** - कीचक एक प्रकार का बाँस है जो हवा से हिलने पर शब्द करता है। **कूजद्भिः** - आवाज करते हुए। **आपादितवंशकृत्यम्** - जिसमें वीणा का काम (कीचकों द्वारा) किया जा रहा था। कीचकों के छेदों में हवा भर जाने से वे भी शब्द कर रहे थे। उनका शब्द करना ऐसा प्रतीत होता था, मानो बाँसुरी बज रही हो। **वनदेवताभिः** - वनदेवताओं से। **उद्गीयमानम्** - गाया जाता हुआ। **शुश्राव** - सुना। वनदेवता राजा का यश गा रहे थे और बाँस मानो बाँसुरी का काम कर रहे थे। क्योंकि उनके छेदों में जब हवा भर गयी तो वे स्वयं शब्द करने लगे। उनका शब्द करना मानो बाँसुरी का बजाना है।

➡ **प्रसङ्ग**—वायु द्वारा राजा की सेवा किये जाने का वर्णन–

पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणा-
मनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी।
तमातपक्लान्तमनातपत्र-
माचारपूतं पवनः सिषेवे ॥13॥

अन्वय—गिरिनिर्झराणां तुषारैः पृक्तः अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी पवनः अनातपत्रम्, आतपक्लान्तम् आचारपूतं सिषेवे।

हिन्दी व्याख्या — पहाड़ी झरनों के जल-बिन्दुओं से भींगे हुए वृक्षों के कुछ-कुछ हिलते हुए पुष्पों की गन्ध से वायु ने छत्ररहित, धूप से व्याकुल सदाचार के कारण पवित्र उस राजा की सेवा की।

संस्कृत व्याख्या— गिरिनिर्झराणां– गिरिषु पर्वतेषु निर्झराः वारिप्रवाहाः तेषाम्, **तुषारैः**–सीकरैः, **पृक्तः**– सम्पृक्तः, **अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी**– अनोकहानां वृक्षाणाम् आकम्पितानि ईषत्कम्पितानि यानि पुष्पाणि कुसुमानि तेषां गन्धः आमोदः अस्यास्तीति एवंविधः (शीतलो मन्दः सुगन्धः), **पवनः**– वायुः, **अनातपत्रं**– छत्ररहितम्, **आतपक्लान्तम्**– आतपेन

सूर्यातपेन क्लान्तं पीडितम्, **आचारपूतम्**–आचारेण नियमपालनेन पूतं पवित्रं, **तं**– राजानं, **सिषेवे**– सेवितवान्।

संस्कृत भावार्थ– पर्वतवारिप्रवाहाणाम् तुषारैः पृक्तः पादपानाम् ईषच्चलितप्रसूनेन आमोदवान् अनिलः छत्ररहितम् व्रतार्थमस्वीकृतच्छत्रमिति भावः अतएव सूर्यकिरणम्लानम् सदाचारपवित्रम् तं राजानं सेवितान्। शीतलान् वारिकणान् वहन् ईषत्कम्पितानां तरुपुष्पाणाम् गन्धं हरन् मन्दो गन्धवहस्तस्मिन् वने छत्रहीनम् धर्मतापितम् सदाचारपवित्रं तं दिलीपं सेवितवान् इति भावः।

शब्दार्थ–गिरिनिर्झराणाम्-पर्वतों के झरनों के। **तुषारैः** - कणों से। **अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी**-वृक्षों के कुछ-कुछ हिलते हुए फूलों की गन्धवाला। **आतपक्लान्तम्** - धूप से व्याकुल। **अनातपत्रम्** - जिसके पास छाता नहीं था। **आचारपूतम्** - (अपने) सदाचार से पवित्र।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा के प्रवेश करने से वन में पड़नेवाले प्रभाव का चित्रण है–

शशाम वृष्ट्यापि विना दवाग्नि-
रासीद्विशेषा फलपुष्पवृद्धिः।
ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे
तस्मिन् वनं गोप्तरि गाहमाने ॥14॥

अन्वय– तस्मिन् गोप्तरि वनं गाहमाने दवाग्निः वृष्ट्या विनापि शशाम फलपुष्पवृद्धिः विशेषा आसीत्। सत्त्वेषु अधिकः ऊनं न बबाधे।

हिन्दी व्याख्या – प्रजारक्षक उस राजा दिलीप ने जब वन में प्रवेश किया तो वन की आग बिना पानी के ही शान्त हो गयी, फल और पुष्पों की अधिकता हो गयी, बलवान् (जैसे व्याघ्रादि) ने अपने से निर्बल जानवर (मृगादि) को नहीं सताया।

संस्कृत व्याख्या–गोप्तरि–रक्षके, **तस्मिन्**–दिलीपे, **वनं**–काननं, **गाहमाने**– प्रविशति (सति), **दवाग्निः**–दावानलः, **वृष्ट्या**–वर्षणेन, **विनापि**–ऋतेऽपि, **शशाम**–शान्तिमभजत, **फलपुष्पवृद्धिः**–फलकुसुमसमृद्धिः, **विशेषा**–अधिका, आसीत्, **सत्त्वेषु**– जन्तुषु, **अधिकः**–प्रबलः (व्याघ्रादिः) **ऊनं**–दुर्बलं (हरिणादिकं), **न बबाधे**–न पीडयामास।

संस्कृत भावार्थ–अहो महिमा तस्य राजर्षेः यस्मिन् प्रविष्टमात्र एव तस्मिन् कानने विना वृष्ट्यापि वनाग्निः शशाम। वृक्षाः महता बाहुल्येन फलानि पुष्पाणि च धारयामासुः। अधिकबलशाली पशुः निर्बलं न पीडयामास इति भावः।

शब्दार्थ – गोप्तरि - रक्षा करनेवाला। **गाहमाने** - प्रवेश करने पर। **वृष्ट्या विनापि** - बिना जल-वृष्टि के ही। **दवाग्निः** - वन की आग - दावानलः। **शशाम** - शान्त हो गयी। **फलपुष्पवृद्धिः** - फलों और फूलों की अधिकता। **सत्त्वेषु** - जीवों में। **अधिकः** - बलवान्। **ऊनम्** - कमजोर को।

➡ **प्रसङ्ग**–दिन के अन्त में नन्दिनी के अपने स्थान को लौटने का वर्णन–

सञ्चारपूतानि दिगन्तराणि
कृत्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुम्।
प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा
प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः ॥15॥

अन्वय–पल्लवरागताम्रा पतङ्गस्य प्रभा मुनेः धेनुः च सञ्चारपूतानि दिगन्तराणि कृत्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुं प्रचक्रमे।

हिन्दी व्याख्या – नवीन पत्तों के समान रङ्गवाली (लाल) सूर्य की किरणें और वशिष्ठ की गाय ये दोनों अपने गमन से दिशाओं के अन्त को पवित्र करके दिन के अन्त में अपने-अपने स्थान की ओर चलने लगीं।

संस्कृत व्याख्या–पल्लवरागताम्रा– किसलयवर्णारुणा, **पतङ्गस्य**–सूर्यस्य, **प्रभा**–कान्तिः, **मुनेः**–वशिष्ठस्य, **धेनुःच**– गौः च नन्दिनीत्यर्थः, **सञ्चारपूतानि**– सञ्चारेण भ्रमणेन पूतानि पवित्राणि, **दिगन्तराणि**–दिशामवकाशान्, **कृत्वा**–विधाय, **दिनान्ते**–सायंकाले, **निलयाय**–वशिष्ठाश्रमाय (प्रभापक्षे अस्तमयाय), **गन्तुं**– चलितुं, **प्रचक्रमे**–प्रक्रान्तवती।

संस्कृत भावार्थ–सन्ध्यासमये नवकिसलयवर्णारुणा सूर्यप्रभा किरणैः दिगन्तराणि निर्मलीकुर्वाणा अस्ताचलं चलितुं प्रववृते तावत् नवपल्लवारुणा सा नन्दिनी निजगमनेन मार्ग पवित्रीकुर्वन्ती तपोवनं गन्तुं प्रववृते इति भावः।

शब्दार्थ – पल्लवरागताम्रा - पत्ते के रङ्ग के समान लाल वर्णवाली। सूर्य की प्रभा तथा मुनि की गाय दोनों पत्तों

के रङ्ग के समान लाल वर्ण थीं। **पतङ्गस्य प्रभा** - सूर्य की कान्ति (किरण)। **दिगन्तराणि** - दिशाओं के मध्यभाग को। दिशाओं के बीच के प्रदेशों को। **सञ्चारपूतानि** - अपने गमन से पवित्र करके। **दिनान्ते** - दिन बीतने पर। **निलयाय** - गृहाय, अस्तमयाय। गाय के साथ अर्थ करने में निलयाय का अर्थ घर होगा और प्रभा के साथ अर्थ करने में अस्त होना होगा। सूर्य की प्रभा अस्त होने की तैयारी करने लगी और गाय घर जाने लगी। **गन्तुम्** - जाने के लिए। **प्रचक्रमे** - तैयारी करने लगीं।

➡ **प्रसङ्ग–** राजा के आगे चलती हुई नन्दिनी की शोभा का वर्णन–

तां देवतापित्रतिथिक्रियार्था-
मन्वग्ययौ मध्यमलोकपालः।
बभौ च सा तेन सतां मतेन
श्रद्धेव साक्षाद्विधिनोपपन्ना ॥16॥

अन्वय– मध्यमलोकपालः देवतापित्रतिथिक्रियार्थां ताम् अन्वग् ययौ सतां मतेन तेन उपपन्ना सा विधिना (उपपन्ना) साक्षात् श्रद्धा इव बभौ च।

हिन्दी व्याख्या – भूलोक के पालन करनेवाले राजा दिलीप देवता, पितर और अतिथियों के कार्य (यज्ञ, श्रद्धा, भोजनादि) को पूरा करनेवाली उस गाय के पीछे चले। सज्जनों के द्वारा पूजित राजा से युक्त वह नन्दिनी भी उस समय वैसी ही सुशोभित थी, जैसे सज्जनों के किये गये अनुष्ठान से युक्त श्रद्धा शोभा पाती है।

संस्कृत व्याख्या–मध्यमलोकपालः–भूपालो दिलीपः, **देवतापित्रतिथिक्रियार्थां–**देवतापित्रतिथीनां क्रिया यागश्राद्धदानानि ता एवार्थः प्रयोजनं यस्याः तादृशी, **तां–**धेनुम्, **अन्वग्–**अनुपदं, **ययौ–**चलितवान् च, पुनः, **सतां–**सज्जनानां, **मतेन–**मान्येन, **तेन–**राज्ञा दिलीपेन, **उपपन्ना–**युक्ता, **सा–**धेनुः, **विधिना–**अनुष्ठानेन (उपपन्ना), **साक्षात्–**प्रत्यक्षा, **श्रद्धा इव–**आस्तिक्यबुद्धिरिव, **बभौ–**शोभितवती।

संस्कृत भावार्थ–पृथ्वीपतिः दिलीपो देवादिनिमित्तकयागादिसाधिकां तां धेनुम् अनुगच्छन् सन् ययौ साधुजनसेवितेन तेन दिलीपेन युक्ता साऽपि साक्षादनुष्ठानेन युक्ता श्रद्धा इव शुशुभे।

शब्दार्थ – मध्यमलोकपालः - अर्थात् पृथ्वी का पालन करनेवाला। ऊपर आकाश है, नीचे पाताल है और बीच में पृथ्वी है। इसी से इसका मध्यमलोक नाम पड़ा। **देवतापित्रतिथिक्रियार्थाम्** - जो (गाय) देवता, पितर तथा अतिथियों के सत्कार की सामग्री देती थी। **अन्वग्** - पीछे-पीछे। **ययौ** - चला। **सतां मतेन** - सज्जनों द्वारा सम्मानित। **उपपन्ना** - युक्तः। **विधिना** - अनुष्ठान से। **श्रद्धा** - आस्तिक्यबुद्धि। श्रद्धा (विश्वास) जैसे शोभा पाती है, उसी प्रकार साधुजन सम्मानित उस राजा के साथ गाय शोभा पाती थी।

➡ **प्रसङ्ग–**वन की सन्ध्याकालीन शोभा का वर्णन है–

स पल्वलोत्तीर्णवराहयूथा-
न्यावासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि।
ययौ मृगाध्यासितशाद्वलानि
श्यामायमानानि वनानि पश्यन् ॥17॥

अन्वय–सः पल्वलोत्तीर्णवराहयूथानि आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि मृगाध्यासितशाद्वलानि श्यामायमानानि वनानि पश्यन् ययौ।

हिन्दी व्याख्या – राजा दिलीप उस वन को देखता हुआ गया जिसमें छोटे-छोटे तालाबों से जङ्गली सुअर के झुण्ड-के-झुण्ड निकल रहे थे और जिसमें मोर पक्षी अपने बसेरे के वृक्षों की ओर जाने के लिए उन्मुख थे तथा जिसमें हरी घास के ऊपर हरिण बैठे थे। अतएव जो सर्वत्र श्याम-ही-श्याम प्रतीत होता था।

संस्कृत व्याख्या– सः–राजा दिलीपः, **पल्वलोत्तीर्णवराहयूथानि–**क्षुद्रजलाशयनिर्गतशूकरसमूहानि, **आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि–**आवासवृक्षान् प्रति निवासतरून् प्रति उन्मुखाः बर्हिणाः मयूराः येषु तानि, **मृगाध्यासितशाद्वलानि–**मृगैः हरिणैः अध्यासिताः अधिष्ठिताः शाद्वलाः येषु तानि, **श्यामायमानानि–**कृष्णीभूतानि, **वनानि–**काननानि, **पश्यन्–**

अवलोकयन्, **ययौ–** जगाम।

संस्कृत भावार्थ–स राजा स्वल्पजलाशयेभ्यो विनिर्गतानां सूकरयूथानां स्वनिवासवृक्षान् प्रति गन्तुमुत्सुकानाम् मृगैः अधिश्रितानाम् शष्पैः हरितानां वनप्रदेशानां च श्यामतया सर्वत्र कृष्णवर्णानि वनानि पश्यन् मुनेराश्रमं प्रति अगच्छत्।

शब्दार्थ – पल्वलोत्तीर्णवराहयूथानि - वह वन जहाँ जङ्गली सुअरों के झुण्ड-के-झुण्ड तालाबों से निकल रहे थे। गर्मी से व्याकुल होकर तालाबों में अपने को ठण्डा कर रहे सुअर शाम को उसमें से निकल रहे थे। **आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि** - जिस वन में मोर अपने-अपने निवासवाले वृक्षों को जाने के लिए उत्सुक थे। शाम के समय मोर भी अपने-अपने आवास-वृक्षों की ओर उड़ रहे थे। **मृगाध्यासितशाद्वलानि** - वे वन जहाँ कोमल घास से युक्त स्थान पर हिरण बैठे हुए थे। **श्यामायमानानि**- जो श्याम वर्ण के हो रहे थे उन (वनों को)। **पश्यन्** - देखता हुआ।

➡ **प्रसङ्ग–**स्थूलता के कारण नन्दिनी और राजा दोनों की गति मन्थर है–

आपीनभारोद्वहनप्रयत्नाद्
गृष्टिर्गुरुत्वाद्वपुषो नरेन्द्रः।
उभावलञ्चक्रतुरञ्चिताभ्यां
तपोवनावृत्तिपथं गताभ्याम् ॥18॥

अन्वय–गृष्टिः नरेन्द्रश्च उभौ आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात् वपुषः गुरुत्वात् च अञ्चिताभ्यां गताभ्यां तपोवनावृत्तिपथम् अलञ्चक्रतुः।

हिन्दी व्याख्या – स्तनों के भार को धारण करने के परिश्रम से एक बार की ब्यायी हुई गाय तथा शरीर के भारीपन से राजा दोनों ही ने अपनी सुन्दर गति से तपोवन से लौटने के रास्ते को सुशोभित किया।

संस्कृत व्याख्या–गृष्टिः–सकृत्प्रसूता गौः नन्दिनी, **नरेन्द्रश्च–**भूपश्च, **उभौ–**द्वौ, **आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात्–**आपीनमूधस्तस्य भारतस्य उद्वहनं नयनं तस्मिन् प्रयत्नः प्रयासः तस्माद् हेतोः, **वपुषः–**शरीरस्य, **गुरुत्वात् च–**आधिक्याच्च, **अञ्चिताभ्यां–**दर्शनीयाभ्यां, **गताभ्यां–**गमनाभ्यां, **तपोवनावृत्तिपथं–**तपसां तपश्चर्याणां वनमरण्यम् तस्मादावृत्तेः परावर्तनस्य पन्थाः मार्गस्तम्, **अलञ्चक्रतुः–**शोभयामासतुः।

संस्कृत भावार्थ–सा नन्दिनी महोधोभारात् दिलीपः च विपुलशरीरभारात् मृदुपदं जग्मतुः तेन च मनोहरेण चरणक्षेपेण उभौ आगमपन्थानम् भूषितवन्तौ इति भावः।

शब्दार्थ – आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात् - स्तन के बोझ को धारण करने के परिश्रम से। **गृष्टिः** - एक बार की ब्यायी हुई गाय। **वपुषः गुरुत्वात्** - शरीर के भारीपन के कारण। **अञ्चिताभ्याम्** - सुन्दर। **गताभ्याम्** - चाल से। **उभौ** - दोनों (राजा दिलीप तथा नन्दिनी)। **तपोवनावृत्तिपथम्** - तपोवन से लौटने का रास्ता। **अलञ्चक्रतुः** - सुशोभित किया।

➡ **प्रसङ्ग–**तपोवन से लौटे हुए राजा को सुदक्षिणा द्वारा अपलक नेत्रों से देखने का वर्णन है–

वशिष्ठधेनोरनुयायिनं त-
मावर्त्तमानं वनिता वनान्तात्।
पपौ निमेषालसपक्ष्मपङ्क्ति-
रुपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् ॥19॥

अन्वय–वशिष्ठधेनोः अनुयायिनम् वनान्तात् आवर्त्तमानं तं वनिता निमेषालसपक्ष्मपंक्तिः (सती) उपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् पपौ।

हिन्दी व्याख्या – वशिष्ठ की गाय के पीछे-पीछे चलनेवाले तपोवन से लौटते हुए उस राजा को सुदक्षिणा ने टकटकी लगाये हुए नेत्रों से पी लिया, मानो उसके नेत्र प्यासे थे।

संस्कृत व्याख्या–वशिष्ठधेनोः–नन्दिन्याः, **अनुयायिनम्–**अनुव्रजन्तम्, **वनान्तात्–** अरण्यप्रान्तात्, **आवर्त्तमानं–**प्रत्यागच्छन्तं, **तं–**दिलीपं, **वनिता–**सुदक्षिणा, **निमेषालसपक्ष्मपंक्तिः–**निमीलननिष्क्रिय-नेत्रलोमावलिः (सति), **उपोषिताभ्यामिव–**कृतोपवासाभ्यामिव, **लोचनाभ्यां–**नयनाभ्यां, **पपौ–**पीतवती सादरमधिकं व्यलोकयदित्यर्थः।

संस्कृत भावार्थ–वल्लभस्यादर्शनेन अधीरा सुदक्षिणा नन्दिन्या सह नृपं वनात् प्रत्यागच्छन्तं दृष्ट्वा तृष्णाविस्फारितेन नेत्रद्वयेन

ददर्श। यथा कश्चित् उपोषितः शीतलं जलं पुनः पुनः पीत्वाऽपि तृप्तिं न प्राप्नोति तथैव सुदक्षिणायाः प्रियतमदर्शनवियोगतापितम् नेत्रयुगलमपि कमनीयं वल्लभस्य रूपं विलोक्य तृप्तिं न लेभे।

शब्दार्थ – वशिष्ठधेनोः - वशिष्ठ की गाय का। **अनुयायिनम्** - अनुयायी। **वनान्तात्** - जङ्गल से। **आवर्त्तमानम्** - लौटते हुए। **वनिता** - स्त्री, सुदक्षिणा। **निमेषालसपक्ष्मपंक्तिः** - जिसकी बरौनियाँ बन्द होने या गिरने में अलसाती थीं। अर्थात् जो टकटकी लगाकर देख रही थी। **उपोषिताभ्याम्** - सुदक्षिणा के लोचनों ने मानो उपवास-से किये हों। ऐसे नेत्रों से उसने राजा को देखा। **पपौ** - पिया। सतृष्ण नेत्रों से टकटकी लगाकर राजा को देखा। जिस प्रकार भूखा व्यक्ति खाद्य पदार्थ को बड़े चाव से खाता है, उसी प्रकार सुदक्षिणा ने बड़े चाव से बिना पलकों को गिराये सतृष्ण नेत्रों से राजा को देखा, क्योंकि उन्होंने बहुत देर से राजा को नहीं देखा था।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा और रानी के बीच में स्थित नन्दिनी की शोभा का वर्णन है–

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन
प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनु-
र्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या ॥20॥

अन्वय–वर्त्मनि पार्थिवेन पुरस्कृता पार्थिवधर्मपत्न्या (च वर्त्मनि) प्रत्युद्गता सा धेनुः तदन्तरे (सुदक्षिणादिलीपान्तरे) दिनक्षपामध्यगता सन्ध्या इव विरराज।

हिन्दी व्याख्या – राजा गाय को आगे किये हुए आ रहे थे (और) रानी ने आगे बढ़कर गाय की अगवानी की। इस प्रकार राजा और रानी दोनों के बीच में वह गाय ऐसी शोभा देती थी, जैसे रात और दिन के बीच सन्ध्या शोभा देती है।

संस्कृत व्याख्या–वर्त्मनि–मार्गे, **पार्थिवेन**–राज्ञा, **पुरस्कृता**–अग्रतःकृता, **पार्थिवधर्मपत्न्या**–सुदक्षिणया, **प्रत्युद्गता**–स्वागतार्थमभ्युद्गता, **सा धेनुः**–नन्दिनी, **तदन्तरे**–तयोर्दम्पत्योर्मध्ये, **दिनक्षपामध्यगता**–दिनोरात्र्योर्मध्यगता, **सन्ध्या इव**–सायंकाल इव, **विरराज**–शुशुभे।

संस्कृत भावार्थ–यस्मिन् समयेऽग्रेकृत्य नन्दिनीं दिलीपो वशिष्ठाश्रमं प्रापत् तदा दिलीपानुगम्यमानां तामानेतुं सुदक्षिणा प्रत्युद्ययौ। तस्मिन्काले सुदक्षिणदिलीपयोः मध्ये गच्छन्ती नन्दिनी पाटलवर्णतया दिवसरजन्यौः मध्ये सन्ध्येव शुशुभे।

शब्दार्थ – वर्त्मनि - मार्ग में। **पार्थिवेन** - राजा से। **पुरस्कृता** - आगे की हुई। आगे गाय थी पीछे-पीछे राजा थे। **पार्थिवधर्मपत्न्या** - राजा की धर्मपत्नी से। **प्रत्युद्गता** - जिसका स्वागत आगे से किया गया। **तदन्तरे** - उन दोनों के बीच में। आगे से सुदक्षिणा आ गयी, पीछे राजा थे। इस प्रकार उन दोनों के बीच में। **दिनक्षपामध्यगता** - दिन और रात के बीच में। राजा अपनी कान्ति के कारण दिन के समान था, रानी अपनी सुन्दरता के कारण रात्रि के समान थी और गाय अपने पाटल वर्ण के कारण लाल रङ्गवाली सन्ध्या के समान थी।

➡ **प्रसङ्ग**–सुदक्षिणा के द्वारा नन्दिनी की पूजा का वर्णन है–

प्रदक्षिणीकृत्य पयस्विनीं तां
सुदक्षिणा साक्षतपात्रहस्ता।
प्रणम्य चानर्च विशालमस्याः
शृङ्गान्तरं द्वारमिवार्थसिद्धेः ॥21॥

अन्वय–साक्षतपात्रहस्ता सुदक्षिणा पयस्विनीं तां प्रदक्षिणीकृत्य प्रणम्य च अर्थसिद्धेः द्वारम् इव अस्याः विशालम् शृङ्गान्तरम् आनर्च।

हिन्दी व्याख्या – अक्षतों से युक्त पात्र को हाथ में लेकर रानी सुदक्षिणा ने उत्तम दूधवाली उस नन्दिनी की प्रदक्षिणा तथा वन्दना करके उसके विशाल सींगों के बीच के भाग की इस प्रकार पूजा की मानो वह उनकी मनःकामना की सिद्धि का द्वार हो।

संस्कृत व्याख्या–साक्षतपात्रहस्ता–अक्षतानां तण्डुलविशेषाणां पात्रं भाजनं तेन सह वर्तते इति साक्षतपात्रौ तादृशौ हस्तौ

यस्याः सा, **सुदक्षिणा**–दिलीपभार्या, **पयस्विनीं**–प्रशस्तदुग्धां, **तां**–नन्दिनी, **प्रदक्षिणीकृत्य**–परिक्रम्य, प्रणम्यनत्वा, च, **अर्थसिद्धेः**–कार्यसिद्धेः, **द्वारम् इव**–प्रवेशमार्गमिव, **अस्याः**–नन्दिन्याः, **विशालं**–प्रशस्तं, **शृङ्गान्तरं**–विषाणमध्यम्, **आनर्च**–पूजयामास।

संस्कृत भावार्थ–यदा नन्दिनी आश्रमम् आगता तदा सुदक्षिणा अक्षतयुक्तपात्रं हस्ते गृहीत्वा तस्याः प्रदक्षिणां कृतवती तथा च तां प्रणम्य तस्याः विशालं मस्तकं निजाभीष्टसिद्धेः कारणम् मत्वा पूजयामास।

शब्दार्थ – साक्षतपात्रहस्ता - अक्षतयुक्त पात्र हाथ में लेकर। **पयस्विनीम्** - उत्तम दूध देनेवाली को। **प्रदक्षिणीकृत्य** - प्रदक्षिणा करके। **प्रणम्य** - प्रणाम करके। **अर्थसिद्धेः** - अर्थ की सिद्धि, मनोकामना की पूर्ति। **शृङ्गान्तरम्** - दोनों सींगों के बीच का भाग अर्थात् मस्तक। **आनर्च** - पूजा। **द्वारम्** - दरवाजा। नन्दिनी के मस्तक की पूजा सुदक्षिणा ने की मानो वह उसके मनोरथ-सिद्धि का द्वार था। अर्थात् उसकी मनोरथ-सिद्धि वहीं से प्राप्त होगी।

➡ **प्रसङ्ग**–नन्दिनी ने सुदक्षिणा द्वारा की गयी पूजा को स्वीकार किया–

वत्सोत्सुकाऽपिस्तिमिता सपर्यां
प्रत्यग्रहीत्सेति ननन्दतुस्तौ।
भक्त्योपपन्नेषु हि तद्विधानां,
प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि ॥22॥

अन्वय–वत्सोत्सुकापि सा स्तिमिता (सती) सपर्याम् प्रत्यग्रहीत् इति तौ ननन्दतुः। भक्त्या उपपन्नेषु तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरःफलानि (भवन्ति)।

हिन्दी व्याख्या – अपने बछड़े को देखने के लिए उत्कण्ठित होने पर भी स्थिर होकर उस (नन्दिनी) ने सुदक्षिणा द्वारा की गयी पूजा को स्वीकार किया। यह देखकर वे दोनों (राजा और रानी) प्रसन्न हुए। क्योंकि नन्दिनी के समान महात्मा लोग जब अपने भक्तों की पूजा स्वीकार करते हैं और प्रसन्नता का चिह्न दिखाते हैं तो इससे प्रतीत होता है कि उसका फल शीघ्र मिलेगा और अभीष्ट-सिद्धि होगी।

संस्कृत व्याख्या–**वत्सोत्सुकापि**–वत्सोत्कण्ठितापि, **सा**–नन्दिनी, **स्तिमिता**– निश्चला (सती), **सपर्यां**–पूजां, **प्रत्यग्रहीत्**–स्वीकार, **इति**–हेतोः, **तौ**–दम्पती, **ननन्दतुः**–प्रसन्नौ बभूवतुः। **भक्त्या**–श्रद्धया, **उपपन्नेषु**–युक्तेषु, **तद्विधानां**–तस्याः धेन्वाः विधा इव विधा प्रकारो येषां येषां महतामित्यर्थः, प्रसादचिह्नानि-प्रसन्नतालक्षणानि, **पुरःफलानि**–आसन्नलाभवन्ति (भवन्ति)।

शब्दार्थ – वत्सोत्सुका - बछड़े के लिए उत्कण्ठित। **स्तिमिता** - निश्चल होकर। **सपर्याम्** - पूजा को। सुदक्षिणा द्वारा की गयी पूजा को। **प्रत्यग्रहीत्** - स्वीकार किया। शाम का समय था। नन्दिनी अपने बछड़े को देखने के लिए बड़ी उत्सुक थी तथापि शान्तिपूर्वक खड़ी होकर उसने सुदक्षिणा की पूजा को स्वीकार किया। **इति** - इस कारण। शान्त होकर पूजा स्वीकार करने के कारण। **तौ ननन्दतुः** - दोनों राजा और रानी आनन्दित हुए। **भक्त्या उपपन्नेषु** - भक्तियुक्त लोगों पर (में), **तद्विधानां** - उसके (नन्दिनी के) समान लोगों का। **प्रसादचिह्नानि** - प्रसन्नता के लक्षण। **पुरःफलानि** - शीघ्र फल देनेवाला। नन्दिनी के समान महापुरुष जब अपने भक्तों के ऊपर प्रसन्नता दिखाते हैं, तो उसका अर्थ यह होता है कि भक्त की अभीष्टसिद्धि शीघ्र ही होगी। नन्दिनी ने शान्तिपूर्वक ठहरकर जब रानी की पूजा को स्वीकार किया तब राजा और रानी ने यह समझ लिया कि अब उनका मनोरथ जल्दी सिद्ध होगा, इसलिए वे दोनों प्रसन्न हुए।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा के सायंकालीन कृत्य का वर्णन–

गुरोः सदारस्य निपीड्यपादौ
समाप्य सान्ध्यञ्च विधिं दिलीपः।
दोहावसाने पुनरेव दोग्ध्रीं
भेजे भुजोच्छिन्नरिपुर्निषण्णाम् ॥23॥

अन्वय–भुजोच्छिन्नरिपुः दिलीपः सदारस्य गुरोः पादौ निपीड्य सान्ध्यं विधिं च समाप्य दोहावसाने निषण्णाम् दोग्ध्रीम् एव पुनर्भेजे।

हिन्दी व्याख्या – अपने भुजबल से शत्रुओं का नाश करनेवाले राजा दिलीप सपत्नीक गुरु के चरणों की वन्दना करके और सायङ्कालीन कृत्यों को समाप्त करके दुही जाने के बाद बैठी हुई गाय की फिर से सेवा करने लगे।

संस्कृत व्याख्या–भुजोच्छिन्नरिपुः–भुजाभ्यां बाहुभयम् उच्छिन्नाः विनाशिताः रिपवः शत्रवो येन तादृशः, दिलीपः, **सदारस्य–**सपत्नीकस्य, **गुरोः–**वशिष्ठस्य, **पादौ–**चरणौ, **निपीड्य–**अभिवन्द्य, **सान्ध्यं–**सायङ्कालीन, **विधिम्–**अनुष्ठानं, च, **समाप्य–**सम्पाद्य, **दोहावसाने–**दुग्धदोहनान्ते, **निषण्णाम्–**उपविष्टं, **दोग्ध्रीं–**धेनुम्, एव, **पुनः–**भूयः, **भेजे–**सेवितवान्।

संस्कृत भावार्थ–आश्रमं प्रत्यागत्य दिलीपः सपत्नीकस्य वशिष्ठस्य पादसेवां कृत्वा सन्ध्योपासनमपि विधाय दोहनान्ते सुखोपविष्टां तां नन्दिनीं भूयोऽपि सेवितुम् प्रचक्रमे।

शब्दार्थ –भुजोच्छिन्नरिपुः - अपनी भुजाओं के बल से दुश्मनों का नाश करनेवाला। **सदारस्य** - पत्नी सहित का। गुरु वशिष्ठ और उनकी पत्नी दोनों का। **पादौ निपीड्य** - पैरों को दबाकर, सेवा करके। **सान्ध्यम्** - सायङ्कालीन। **विधिम्** - अनुष्ठान को। **समाप्य** - समाप्त करके। **दोहावसाने** - दुहने के बाद। **निषण्णाम्** - (सुख से) बैठी हुई। **दोग्ध्रीम्** - गाय को। **पुनः भेजे** - फिर से सेवा की।

➡ **प्रसङ्ग–**राजा और रानी द्वारा रात्रि में की जानेवाली नन्दिनी की सेवा का वर्णन है–

तामन्तिकन्यस्तबलिप्रदीपा-
मन्वास्य गोप्ता गृहिणीसहायः।
क्रमेण सुप्तामनुसंविवेश
सुप्तोत्थितां प्रातरनूदतिष्ठत् ॥24॥

अन्वय–गृहिणीसहायः गोप्ता अन्तिकन्यस्तबलिप्रदीपां तां (धेनुम्) अन्वास्य क्रमेण सुप्ताम् अनुसंविवेश, प्रातः सुप्तोत्थिताम् अनु उदतिष्ठत्।

हिन्दी व्याख्या –स्त्री समेत रक्षा करनेवाले उस राजा ने गाय के पास दीपक तथा पूजा की सामग्रियों को रख दिया। फिर उसके पीछे बैठकर क्रम से उस (नन्दिनी) के सोने के अनन्तर वह सोया और प्रातःकाल उसके जागने पर स्वयं भी जागा।

संस्कृत व्याख्या–गृहिणीसहायः–पत्नीसहितः **गोप्ता–**रक्षिता, **अन्तिकन्यस्तबलिप्रदीपाम्–**अन्तिके समीपे नयस्ताः स्थापिताः बलयः भोज्यपदार्थाः प्रदीपाः दीपकाश्च यस्याः तादृशीं, **ताम्–**नन्दिनीम्, **अन्वास्य–**अनूपविश्य, **क्रमेण–**परिपाट्या, **सुप्तां–**निद्रिताम्, **अनु–** पश्चात्, **संविवेश–**सुष्वाप, **प्रातः–**प्रभाते, **सुप्तोत्थितां–**स्वापानन्तरमुत्थितां जागरितामिति यावत्, **अनु–**पश्चात्, **उदतिष्ठत्–**उत्थितवान्।

संस्कृत भावार्थ–तस्याः निकटे पूजासामग्रीं निधाय स्थितायाः तस्याः पृष्ठतः सुदक्षिणादिलीपौ स्थितवन्तौ, क्रमेण तावपि निद्रां प्राप्तवन्तौ, प्रातःकाले सुप्तोत्थितायाम् तस्याम् तावपि उदतिष्ठताम् इति भावः।

शब्दार्थ – गृहिणीसहायः - स्त्री सहित। **गोप्ता** - रक्षक। **अन्तिकन्यस्तबलिप्रदीपाम्** - जिसके पास ही बलि (पूजा की सामग्री) तथा दीपक रखा है उस (गाय) को। **अन्वास्य** - पीछे बैठकर। **क्रमेण** - क्रम से। **सुप्ताम्** - सोयी हुई को। **अनुसंविवेश** - बाद में सोते थे। उसके सो जाने पर सोते थे। **सुप्तोत्थिताम्** - सोकर उठी हुई को। **अनु उदतिष्ठत्** - बाद में उठते थे। जब वह नन्दिनी सोकर उठती थी तब वह भी उठते थे। नन्दिनी के सोकर उठने के बाद राजा भी सोकर उठते थे।

➡ **प्रसङ्ग–**नन्दिनी की सेवा में निरत रहते राजा के इक्कीस दिन बीत गये–

इत्थं व्रतं धारयतः प्रजार्थं,
समं महिष्या महनीयकीर्तेः।
सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य,
दिनानि दीनोद्धरणोचितस्य ॥25॥

अन्वय–इत्थं प्रजार्थं महिष्या समं व्रतं धारयतः महनीयकीर्तेः दीनोद्धरणोचितस्य तस्य सप्त त्रिगुणानि दिनानि व्यतीयुः।

हिन्दी व्याख्या – इस प्रकार सन्तान के निमित्त स्त्री सहित व्रत धारण करनेवाले, महाकीर्तिमान्, दीनों के उद्धार करनेवाले उस राजा के इक्कीस दिन बीत गये।

संस्कृत व्याख्या–इत्थम्–अनेन प्रकारेण, **प्रजार्थं–**पुत्राय, **महिष्या–**अभिषिक्तपत्न्या सुदक्षिणया, **समं–**सह, **व्रतं–**नियमं, **धारयतः–**पालयतः, **महनीयकीर्तेः–**महनीया पूज्या कीर्तिःयशो यस्य तादृशस्य, **दीनोद्धरणोचितस्य–**दीनजनरक्षणतत्परस्य, **तस्य–**दिलीपस्य, **सप्तत्रिगुणानि–** एकविंशति, **दिनानि–**दिवसाः, **व्यतीयुः–**व्यतिक्रान्तानि समाप्तानीत्यर्थः।

संस्कृत भावार्थ–दीनवत्सलः पुण्यकीर्तिः सपत्नीकः दिलीपः पुत्रलाभाय अनेन प्रकारेण नन्दिनीसेवारूपं व्रतम् कुर्वन् एकविंशति दिनानि निनाय।

शब्दार्थ – इत्थम् - इस प्रकार से, पूर्वोक्त प्रकार से। **प्रजार्थम्** - सन्तान के लिए। **धारयतः** - व्रत का पालन करते हुए (राजा) का। **महिष्या समम्** - रानी के साथ। **महनीयकीर्तेः** - पूज्य कीर्तिवाले राजा का। **दीनोद्धरणोचितस्य** - गरीबों का उद्धार करने में समर्थ या तत्पर। जो दीनों की रक्षा करने के लिए सदैव तैयार रहता था। **सप्तत्रिगुणानि** - सात के तिगुने अर्थात् इक्कीस। **व्यतीयुः** - बीत गये।

➡ **प्रसङ्ग–**बाईसवें दिन नन्दिनी दिलीप की परीक्षा लेने का उपक्रम करती है–

अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं
जिज्ञासमानामुनिहोमधेनुः।
गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पं
गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश ॥26॥

अन्वय–अन्येद्युः आत्मानुचरस्य भावं जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पं गौरीगुरोः गह्वरम् आविवेश।

हिन्दी व्याख्या – दूसरे दिन अर्थात् बाईसवें दिन मुनि की वह होमधेनु अपने अनुचर राजा की भक्ति की परीक्षा करने के लिए गङ्गा के झरने के पास हिमालय की उस गुफा में घुसी जिसमें घास उगी हुई थी।

संस्कृत व्याख्या–अन्येद्युः–अन्यस्मिन् दिवसे, **आत्मानुचरस्य–**आत्मनः स्वस्य अनुचरस्य सेवकस्य, **भावम्–**अभिप्रायं, **जिज्ञासमाना–**ज्ञातुमिच्छन्ती, **मुनिहोमधेनुः–**मुनेः वशिष्ठस्य होमधेनुः हवनसाधनभूता गौः (नन्दिनी), **गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पं–**गङ्गाप्रवाहपतनसमीपोत्पन्नमृदुतृणं, **गौरीगुरोः–**हिमालयस्य, **गह्वरं–**गुहाम्, **आविवेश–**प्रविष्टवती।

संस्कृत भावार्थ–द्वाविंशे दिने धेनुः निजसेवकस्याभिप्रायं ज्ञातुमिच्छन्ती सुरसरित्प्रपातान्तविरूढनवाङ्कुरं हिमालयगुहाम् आविवेश।

शब्दार्थ –अन्येद्युः - दूसरे दिन अर्थात् बाईसवें दिन। **आत्मानुचरस्य** - अपने सेवक के अर्थात् राजा के। **भावम्** - अभिलाषा, भक्ति। मुझमें राजा की भक्ति है या नहीं। **जिज्ञासमाना** - जानने की इच्छुक। **मुनिहोमधेनुः** - मुनि के हवन की सामग्री प्रदान करनेवाली गाय अर्थात् नन्दिनी। **गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पम्** - जिस (गुफा में) गङ्गा के झरने के पास उगी हुई कोमल घासवाली। **गौरीगुरोः** - पार्वती के पिता के अर्थात् हिमालय की। **गह्वरम्** - गुफा में। **आविवेश** - घुस गयी।

➡ **प्रसङ्ग–**नन्दिनी पर सिंह के आक्रमण का वर्णन–

सा दुष्प्रधर्षा मनसापि हिंस्त्रै-
रित्यद्रिशोभाप्रहितेक्षणेन।
अलक्षिताभ्युत्पतनो नृपेण
प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष ॥27॥

अन्वय–सा हिंस्त्रैः मनसापि दुष्प्रधर्षा इति अद्रिशोभाप्रहितेक्षणेन नृपेण अलक्षिताभ्युत्पतनः सिंहः तां प्रसह्यं चकर्ष किल।

हिन्दी व्याख्या – यह नन्दिनी हिंसक व्याघ्रादि दुष्ट जीवों द्वारा मन से भी बड़ी कठिनाई से कष्ट पहुँचाने योग्य है। ऐसा सोचकर राजा निश्चिन्त होकर हिमालय की शोभा को देखने में दृष्टि लगाये हुए था। उसी बीच में सहसा एक सिंह, जिसका कूदना राजा न देख सका, उस गाय को खींच ले गया।

संस्कृत व्याख्या– सा–नन्दिनी, **हिंस्त्रैः–**हिंसकैः जन्तुभिः, **मनसापि–**चित्तेनापि, **दुष्प्रधर्षा–**दुर्दमना, **इति–**अस्माद्धेतोः,

अद्रिशोभाप्रहितेक्षणेन–अद्रेः हिमालयस्य शोभायां सौन्दर्ये प्रहितं दत्तम् ईक्षणं दृष्टिः येन तादृशेन, **नृपेण**–राज्ञा, **अलक्षिताभ्युत्पतनः**– अलक्षितम् अदृष्टम् अभ्युत्पतनमाभिमुख्येन आक्रमणं यस्य तादृशः, **सिंहः**–केसरी, **तां**–नन्दिनीं, **प्रसह्य**–हठात्, **चकर्ष**– आकृष्टवान्, **किल**–इत्यलीके।

संस्कृत भावार्थ– धेनुः व्याघ्रादिभिः मनसापि अगम्या इति हेतोः पर्वतशोभायां दत्तदृष्टिना दिलीपेन सिंहस्याभ्युत्पतनम् न दृष्टम्। तदैव सिंहः हठात् तां चकर्ष। शैलशोभावलोकने अतीव दत्तचित्तत्वाद्राजा सिंहस्याक्रमणं द्रष्टुं नाशक्नोत्।

शब्दार्थ – हिंस्रैः - हिंसक पशुओं द्वारा अर्थात् सिंह व्याघ्रादिकों से। **मनसापि दुष्प्रधर्षा** - मन से भी कठिनता से आक्रमण करने योग्य। सिद्धिरूपा नन्दिनी पर हिंसक पशु मन से भी आक्रमण नहीं कर सकते थे, प्रत्यक्ष आक्रमण करना तो दूर रहा। **अद्रिशोभाप्रहितेक्षणेन** - पर्वत की शोभा देखने में दृष्टि लगाये राजा से। **अलक्षिताभ्युत्पतनः** - जिसका आक्रमण (कूदना) नहीं देखा गया। **चकर्ष** - खींच ले गया। **प्रसह्य** - बलपूर्वक। **किल** -अलीके, मल्लिनाथ का कथन है कि यह आक्रमण माया द्वारा रचा हुआ था, वास्तविक नहीं था, अतः किल शब्द का प्रयोग हुआ है।

➡ **प्रसङ्ग**–नन्दिनी के आर्त्तनाद ने राजा का ध्यान गाय की ओर आकृष्ट किया।

तदीयमाक्रन्दितमार्त्तसाधो-
गुंहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम्।
रश्मिष्विवादाय नगेन्द्रसक्तां,
निवर्तयामास नृपस्य दृष्टिम् ॥28॥

अन्वय–गुहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम् तदीयम् आक्रन्दितम् आर्त्तसाधोः नृपस्य नगेन्द्रसक्तां दृष्टिम् रश्मिषु आदाय इव निवर्तयामास।

हिन्दी व्याख्या – गुफा में गूँज उठने के कारण गाय के तीव्र आर्त्तनाद ने दुःखियों के रक्षक उस राजा की दृष्टि को, जो पर्वत की शोभा देखने में लगी हुई थी, अपनी (गाय की) ओर उस तरह लौटाया मानो रस्सी में बाँधकर किसी को अपनी ओर खींच ले।

संस्कृत व्याख्या– गुहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम्–गुहायां गह्वरे निबद्धः व्याप्तः प्रतिशब्दः प्रतिध्वनिः तेन दीर्घम् उच्चतरं, **तदीयं**–तस्याः नन्दिन्याः इदम्, **आक्रन्दितम्**–आर्त्तनादम्, **आर्त्तसाधोः**–आर्त्तेषु विपन्नेषु साधुः हितकारी तस्य, **नृपस्य**–राज्ञः, **नगेन्द्रसक्तां**–नगेन्द्रे पर्वतराजे हिमालये सक्तां लग्नां, **दृष्टिम्**–ईक्षणं, **रश्मिषु**–प्रग्रहेषु, **आदाय इव**–गृहीत्वा इव, **निवर्तयामास**– अपसारयामास।

संस्कृत भावार्थ– सिंहाक्रमणेन गुहायां प्रतिहतेन प्रतिध्वनिना दीर्घ नन्दिन्या आक्रन्दनं शैलशोभादर्शनलग्नां दिलीपदृष्टिं तथैव निवर्तयामास यथा सारथिः अन्यतो धावन्तम् अश्वं रश्मिभिः आकृष्य निवर्तयति।

शब्दार्थ – गुहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम् - गुफा में उत्पन्न हुई गूँज के कारण अधिक तीव्र। **तदीयम्** - गाय का। **आक्रन्दितम्** - आर्त्तनाद, पीड़ायुक्त स्वर। **आर्त्तसाधोः** - दुःखियों की रक्षा करनेवाले का। **नगेन्द्रसक्ताम्** - पर्वतराज हिमालय में लगी हुई। **दृष्टिम्** - आँख। **रश्मिषु** - रस्सी से। **आदाय इव** - मानो बाँधकर। **निवर्त्तयामास** - लौटाया। जैसे कोई किसी को रस्सी से बाँधकर लौटाता है। अथवा जैसे लगाम पकड़कर किसी घोड़े को लौटाया जाता है, उसी प्रकार राजा की दृष्टि को गाय के आर्त्तनाद ने उस ओर से (पर्वत की शोभा देखने से) अपनी ओर लौटा लिया। तात्पर्य यह है कि गाय का आर्त्तनाद सुनकर राजा उसकी ओर देखने लगे।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा ने गाय पर बैठे हुए एक सिंह को देखा–

स पाटलायां गवि तस्थिवासं
धनुर्धरः केसरिणं ददर्श।
अधित्यकायामिव धातुमय्यां
लोध्रद्रुमं सानुमतः प्रफुल्लम् ॥29॥

अन्वय–धनुर्धरः सः पाटलायां गवि तस्थिवासम् केसरिणं सानुमतः धातुमय्याम् अधित्यकायाम् प्रफुल्लम् लोध्रद्रुमम् इव ददर्श।

हिन्दी व्याख्या – धनुष को धारण करनेवाले राजा दिलीप ने लाल रङ्ग की गाय के ऊपर बैठे हुए सिंह को पहाड़ की गेरूमयी शिखर-भूमि के ऊपर उगे हुए लोध्र वृक्ष की भाँति देखा।

संस्कृत व्याख्या– धनुर्धरः–चापधारी, **सः**–दिलीपः, **पाटलायां**–रक्तवर्णायां, **गवि**–धेनौ (नन्दिन्यां), **तस्थिवासं**–स्थितं, **केसरिणं**–सिंहं, **सानुमतः**–पर्वतस्य, **धातुमय्यां**–गैरिकवत्याम्, **अधित्यकायाम्**–ऊर्ध्वभूमौ, **प्रफुल्लं**–विकसितं, **लोध्रद्रुमं**–लोध्रनामकं वृक्षमिव, **ददर्श**–अपश्यत्।

संस्कृत भावार्थ– दिलीपः रक्तवर्णायां नन्दिन्यामाक्रम्य स्थितं सिंहम् पर्वतस्य गैरिकमय्याम् ऊर्ध्वभूमौ विकसितं लोध्रद्रुममिवापश्यत्।

शब्दार्थ – धनुर्धरः - धनुष को धारण करनेवाला। **पाटलायाम्** - लाल रङ्ग की। **तस्थिवांसम्** - बैठे हुए। **केसरिणम्** - सिंह को। **सानुमतः** - पर्वत की। **धातुमय्याम्** - गेरू से परिपूर्ण। **अधित्यकायाम्** - ऊपर की जमीन में। पर्वत की ऊपरी भूमि को अधित्यका और निचली या समीपवर्ती भूमि को उपत्यका कहते हैं। **प्रफुल्लम्** - उगा हुआ। **लोध्रद्रुमम्** - लोध्र नाम का पेड़।

➡ **प्रसङ्ग**–राजा ने बाण से सिंह को मारने का प्रयत्न किया–

ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी
वधाय वध्यस्य शरं शरण्यः।
जाताभिषङ्गो नृपतिर्निषङ्गा-
दुद्धर्तुमैच्छत्प्रसभोद्धृतारिः ॥30॥

अन्वय–ततः मृगेन्द्रगामी शरण्यः प्रसभोद्धृतारिः नृपतिः जाताभिषङ्गः सन् वध्यस्य मृगेन्द्रस्य वधाय निषङ्गात् शरम् उद्धर्त्तुम ऐच्छत्।

हिन्दी व्याख्या – तब (सिंह को देखने के बाद) सिंह के समान चलनेवाले शरणागतवत्सल, शत्रुओं का बलपूर्वक नाश करनेवाले, पराभव पाये हुए उस राजा ने वध योग्य सिंह को मारने के लिए तरकश से बाण निकालना चाहा।

संस्कृत व्याख्या– ततः–सिंहदर्शनानन्तरम्, **मृगेन्द्रगामी**–सिंहगतिः, **शरण्यः**–शरणागतपालकः, **प्रसभोद्धतारिः**–प्रसभेन हठात् उद्धृताः उन्मूलिताः अरयः शत्रवो येन तादृशः, **नृपतिः**–राजा, **जाताभिषङ्गः**–प्राप्तपराभवः (सन्), **वध्यस्य**–मारणीयस्य, **मृगेन्द्रस्य**–सिंहस्य, **वधाय**–हननाय, **निषङ्गात्**–तूणीरात्, **शरं**–बाणम्, **उद्धर्तुं**–ग्रहीतुम्, **ऐच्छत्**–अवाञ्छत्।

संस्कृत भावार्थ– विपन्नरक्षको को राजा सिंहकृतं नन्दिनीप्रधर्षणारूपमपमानं नैव सेहे। अतः अपमानकारिणम् तं वध्यं सिंहम् हन्तुम् तूणीरात् बाणम् गृहीतुम् इयेष।

शब्दार्थ – ततः - तब, सिंह को देखने के बाद। **मृगेन्द्रगामी** - सिंह के समान चलनेवाला। **शरण्यः** - शरण में आये हुए की रक्षा करने में निपुण। **प्रसभोद्धृतारिः** - बलपूर्वक शत्रुओं का नाश करनेवाला। **जाताभिषङ्गः** - जिसका अपमान हुआ हो। सिंह ने जो गाय पर आक्रमण किया था यही मानो राजा का अपमान या पराभव था। **वध्यस्य** - वध करने योग्य। सिंह ने गाय पर आक्रमण किया था, इसलिए वह वध करने योग्य था। **मृगेन्द्रस्य** - सिंह के। **निषङ्गात्** - तरकश से। **उद्धर्तुम्** - निकालने के लिए। **ऐच्छत्** - इच्छा की। राजा दीन जन-पालक था, राजा के सामने सिंह ने जो गाय के ऊपर आक्रमण किया मानो वह राजा का अपमान किया। इसीलिए उस अपमान करनेवाले सिंह को राजा ने मारना चाहा।

➡ **प्रसङ्ग**–नन्दिनी की माया से राजा का हाथ बाणों से चिपक गया–

वामेतरस्तस्य करः प्रहर्तु-
र्नखप्रभाभूषितकङ्कपत्रे ।
सक्ताङ्गुलिः सायकपुङ्ख एव
चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे ॥31॥

अन्वय–प्रहर्तुः तस्य वामेतरः करः नखप्रभाभूषितकङ्कपत्रे सायकपुङ्खे एव सक्ताङ्गुलिः चित्रार्पितारम्भ इव अवतस्थे।

हिन्दी व्याख्या – जब राजा ने मारने की इच्छा की तो उनके दाहिने हाथ की उँगलियाँ नखों की प्रभा से भूषित कङ्कपत्रवाले बाणों की पूँछ में ही चिपक गयीं और उस समय ऐसा प्रतीत होता था मानो उनके दाहिने हाथ का कार्य चित्र में लिखा हुआ है।

संस्कृत व्याख्या– प्रहर्तुः–प्रहारकर्तुः, **तस्य**–दिलीपस्य, **वामेतरः**–दक्षिणः, **करः**–हस्तः, **नखप्रभाभूषितकङ्कपत्रे**–नखप्रभाभिः नखरश्मिभिः भूषितानि सुशोभितानि कङ्कपत्राणि कङ्कस्य पक्षिविशेषस्य पत्राणि पक्षाः यस्य तस्मिन्, **सायकपुङ्खे**–शरमूले, **एव, सक्ताङ्गुलिः**–सक्ताः लग्ना अङ्गुलयः करशाखाः यस्य तादृशः, **चित्रार्पितारम्भ इव**–चित्रेऽर्पितः लिखितः आरम्भः शरनिष्कासनोद्योगः यस्य तादृश इव, **अवतस्थे**–स्थितोऽभूत्।

संस्कृत भावार्थ– प्रहर्तुः तस्य दक्षिणः करः नखकान्तिभूषितकङ्कपत्रे बाणमूल-प्रदेशे निहिताङ्गुलिः सन् शरोद्धरणोद्योगे चित्रलिखित इव अवतस्थे इति भावः।

शब्दार्थ – प्रहर्तुः - प्रहार करने की इच्छा करनेवाले का। जब दिलीप ने सिंह को मारने की इच्छा की। **वामेतरः** - दाहिना, बायें से भिन्न। **नखप्रभाभूषितकङ्कपत्रे** - नाखूनों की कान्ति से झिलमिलाये हुए हैं कङ्क नामक पक्षी के पंख जिसमें। **सायकपुङ्खे** - बाण की पूँछ में। **सक्ताङ्गुलिः** - जिस हाथ की उँगलियाँ चिपक गयीं। **चित्रार्पितारम्भ इव** - जिसका कार्य तसवीर में खिंचे हुए के समान था। **अवतस्थे** - रह गया। जब राजा ने सिंह को मारने की इच्छा से बाण निकालने के लिए तरकश में अपना दाहिना हाथ डाला तो उनकी उँगलियाँ बाण के मूल भाग में जिसमें कङ्कपत्र लगे थे, फँस गयीं। इस कारण राजा का हाथ इधर-उधर न हो सका और राजा भी जड़वत् वहाँ खड़े रहे। उस समय ऐसा मालूम हो रहा था मानो वह दृश्य तसवीर में खिंचा हुआ है। क्योंकि जिस प्रकार चित्रलिखित वस्तु इधर-उधर हिल-डुल नहीं सकती, उसी प्रकार हाथ भी हिल-डुल नहीं सकता था।

➡ **प्रसङ्ग**–दिलीप कुछ कर न सकने के कारण अपने तेज से जलने लगे–

बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्यु-
रभ्यर्णमागस्कृतमस्पृशद्भिः।
राजा स्वतेजोभिरदह्यतान्त-
र्भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः ॥32॥

अन्वय–बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्युः राजा अभ्यर्णम् आगस्कृतम् अस्पृशद्भिः स्वतेजोभिः मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः भोगी इव अन्तः अदह्यत।

हिन्दी व्याख्या – हाथ के रुक जाने के कारण राजा का क्रोध और भी बढ़ गया और सामने उपस्थित अपराधी (सिंह) को स्पर्श न करनेवाले अपने तेज से वह उस सर्प की भाँति भीतर-ही-भीतर जल उठे जिसका पराक्रम मन्त्र और ओषधि (जड़ी-बूटियों) से बाँध दिया गया है।

संस्कृत व्याख्या– बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्युः–बाहोः भुजस्य प्रतिष्टम्भेन प्रतिबन्धेन विवृद्धः उद्दीप्तः मन्युः क्रोधो यस्य तादृशः, **राजा**–दिलीपः, **अभ्यर्णम्**–अन्तिकम्, **आगस्कृतम्**–अपराधिनम्, **अस्पृशद्भिः**–अनामृशद्भिः, **स्वतेजोभिः**–निजवचोभिः, **मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः**–मन्त्रौषधिभ्यां रुद्धं प्रतिबद्धं वीर्यं सामर्थ्यं यस्य तादृशः, **भोगी इव**– सर्प इव, **अन्तः**–अभ्यन्तरे, **अदह्यत**–दग्धोऽभवत्।

संस्कृत भावार्थ– बाहुस्तम्भेन प्रवृद्धरोषो दिलीपः समीपस्थमप्यपराधकारिणं सिंहम् हन्तुमसमर्थो मन्त्रौषधिसंरुद्धपराक्रमः सर्प इव स्वतेजोभिरतप्यत इति भावः।

शब्दार्थ – बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्युः - हाथ के रुक जाने के कारण क्रोध बढ़ गया है जिसका, ऐसा वह राजा। **अभ्यर्णम्** - समीप में स्थित। **आगस्कृतम्** - अपराधी। **अस्पृशद्भिः** - न छूनेवाले, प्रहार करने में असमर्थ। **स्वतेजोभिः** - अपने तेज से। राजा सामने खड़े हुए अपराधी को मार न सका, इस कारण अपने तेज से वह भीतर-ही-भीतर जल उठा। **मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः** - मन्त्र और ओषधियों से रुके हुए पराक्रमवाले साँप की तरह। **भोगी** - साँप। **अन्तः अदह्यत** - भीतर-ही-भीतर जल उठा।

➡ **प्रसङ्ग**–सिंह राजा से मनुष्य की वाणी में बोला–

तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनु-
र्मनुष्यवाचा मनुवंशकेतुम्।

विस्माययन्विस्मितमात्मवृत्तौ
सिंहोरुसत्त्वं निजगाद सिंहः ॥33॥

अन्वय–निगृहीतधेनुः सिंहः, आर्यगृह्यं, मनुवंशकेतुं सिंहोरुसत्त्वम् आत्मवृत्तौ विस्मितम् तं मनुष्यवाचा विस्माययन् निजगाद।

हिन्दी व्याख्या – गाय को पीड़ित करनेवाला सिंह सज्जनों द्वारा माननीय, मनुवंश के पताका रूप, सिंह के समान बलवान् और अपने (बाहुस्तम्भरूप) व्यापार के विषय में आश्चर्य करनेवाले उस राजा को पुनः चकित करता हुआ मनुष्य-वाणी में बोला।

संस्कृत व्याख्या– **निगृहीतधेनुः**–निगृहीता पीडिता धेनुर्येन तादृशः, **सिंहः**–केसरी, **आर्यगृह्यम्**–आर्याणां सतां गृह्यां पक्ष्यं, **मनुवंशकेतुं**–मनोः वैवस्वतस्य वंशः कुलं तस्य केतुं ध्वजं, **सिंहोरुसत्त्वं**–सिंहसदृशपराक्रमम्, **आत्मवृत्तौ**–आत्मनः स्वस्य वृत्तिः - बाहुप्रतिष्टम्भरूपा दशा तस्यां विषये, **विस्मितं**–चकितं, **तं**–राजानं, **मनुष्यवाचा**–मनुष्यस्य मानवस्य वाचा वाण्या, **विस्माययन्**–आश्चर्यं प्रापयन्, **निजगाद**–उवाच।

संस्कृत भावार्थ– सिंहः गां निपीडयन् सतां सम्मतम् मनुकुलकेतुं भुजस्तम्भरूपे व्यापारे चकितम् महाबलिष्ठं दिलीपम् मनुष्यभाषया आश्चर्यं प्रापयन् उवाच इति भावः।

शब्दार्थ – **निगृहीतधेनुः** - गाय के ऊपर आक्रमण करनेवाला सिंह। **आर्यगृह्यम्** - सज्जनों द्वारा मान्य। **मनुवंशकेतुम्** - मनुवंश के शिरोमणि। **सिंहोरुसत्त्वम्** - सिंह के समान महाबलवान्। **आत्मवृत्तौ विस्मितम्** - अपने कार्य पर विस्मित हुए दिलीप को। **विस्माययन्** - फिर से चकित करता हुआ। दिलीप को पहले से ही आश्चर्य हो रहा था कि उनका हाथ कैसे फँस गया, फिर सिंह जब मनुष्य की बोली में बोला तो उन्हें और भी आश्चर्य हुआ। **मनुष्यवाचा** - मनुष्य की बोली में। **निजगाद** - बोला।

➡ **प्रसङ्ग**–सिंह राजा से कहता है–

अलं महीपाल ! तव श्रमेण
प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्।
न पादपोन्मूलनशक्ति रंहः
शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥34॥

अन्वय–महीपाल तव श्रमेण अलम् इतः प्रयुक्तम् अपि अस्त्रम् वृथा स्यात् हि मारुतस्य पादपोन्मूलनशक्ति रंहः शिलोच्चये न मूर्च्छति।

हिन्दी व्याख्या – हे पृथ्वी के पालन करनेवाले महाराज दिलीप! आपका श्रम करना व्यर्थ है, अतः रहने दीजिये। मेरे ऊपर छोड़ा हुआ अस्त्र भी व्यर्थ हो जायगा। पेड़ों के उखाड़ने में समर्थ वायु का वेग पर्वतों पर नहीं चलता। अर्थात् वह पर्वतों को नहीं उखाड़ सकता।

संस्कृत व्याख्या– **महीपाल**–राजन् !, **तव**–ते, **श्रमेण**–आयासेन, **अलं**–न किञ्चित् साध्यम्, **इतः**–अस्मिन् मयि, **प्रयुक्तमपि**–प्रक्षिप्तमपि, **अस्त्रम्**–आयुधं, **वृथा**–व्यर्थं, **स्यात्**–भवेत्, **हि**–यतः, **मारुतस्य**–पवनस्य, **पादपोन्मूलनशक्ति**–पादपानां वृक्षाणाम् उन्मूलने त्रोटने, **शक्तिः**–सामर्थ्यं यस्य तादृशं, **रंहः**–वेगः, **शिलोच्चये**–पर्वते, **न मूर्च्छति**–न प्रभवति।

संस्कृत भावार्थ– हे पृथ्वीपते ! मयि रुद्रानुचरे तव श्रमेण किमपि न भविष्यति। किन्तु मयि प्रेरितमप्यस्त्रं व्यर्थं भविष्यति। वृक्षनाशनसमर्थः पवनस्य वेगः पर्वते विफलो भवति।

शब्दार्थ – **महीपाल** - राजन्!। **तव श्रमेण अलम्** - आप परिश्रम न करें, रहने दीजिये। **इतः** - मेरे ऊपर। **प्रयुक्तम्** - चलाया हुआ। **वृथा स्यात्** - बेकार होगा। **मारुतस्य** - वायु का। **पादपोन्मूलनशक्ति** - पेड़ों को उखाड़ने की शक्तिवाला। **रंहः** - वेग। **शिलोच्चये** - पर्वत पर। **न मूर्च्छति** - काम नहीं देती, असफल होती है। वृक्षों को उखाड़नेवाली पवन की शक्ति पहाड़ों पर काम नहीं देती।

➡ **प्रसङ्ग**–सिंह राजा को अपना परिचय दे रहा है–

कैलासगौरं वृषभारुरुक्षोः
पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्।

अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः
कुम्भोदरं नाम निकुम्भमित्रम् ॥35॥

अन्वय–कैलासगौरं वृषम् आरुरुक्षोः अष्टमूर्तेः पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम् निकुम्भमित्रम् कुम्भोदरं नाम किङ्करम् माम् अवेहि।

हिन्दी व्याख्या – कैलास पर्वत की तरह सफेद बैल पर चढ़ने की इच्छा करनेवाले अष्टमूर्ति शिव जी के चरण रखने के कारण पवित्र पीठवाले मुझको तू निकुम्भ का मित्र कुम्भोदर नामवाला सेवक जान।

संस्कृत व्याख्या– कैलासगौरं–कैलासः तन्नामकः पर्वतः स इव गौरः शुभ्रवर्णः तं, **वृषं–**वृषभम्, **आरुरुक्षोः–**आरोढुमिच्छोः, **अष्टमूर्तेः–**शिवस्य, **पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठं–**पदयोः चरणयोः अर्पणं न्यासः तदेवानुग्रहः प्रसादः कृपा वा तेन पूतं पृष्ठं पृष्ठभागो यस्य तं, **निकुम्भमित्रं–**निकुम्भाख्यशिवानुचरसुहृद्, **कुम्भोदरं नाम–**कुम्भोदरनामकं, **किङ्करं–**सेवकम्, **अवेहि–**जानीहि।

संस्कृत भावार्थ– श्वेतवृषभोपरि सर्वदा आरोहणं कर्त्तुमिच्छोः शिवस्य पादन्यासेन पूतपृष्ठभागं निकुम्भमित्रम् कुम्भोदरं नाम रुद्रानुचरम् मां विद्धि।

शब्दार्थ – कैलासगौरम् - कैलास पर्वत के समान श्वेत। **वृषभ्** - बैल, (नन्दी बैल पर शङ्कर जी सवारी करते हैं)। **आरुरुक्षोः** - चढ़ने की इच्छा करनेवाले। **अष्टमूर्तेः** - शिव का। **पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्** - पैर रखने की कृपा से पवित्र पीठवाले (को)। **निकुम्भमित्रम्** - निकुम्भ का मित्र। **किङ्करम्** - नौकर। **कुम्भोदरम् नाम** - कुम्भोदर नाम का। **अवेहि** - जानो।

➡ **प्रसङ्ग–**सिंह राजा को सामने के एक देवदारु वृक्ष का परिचय दे रहा है—

अमुं पुरः पश्यसि देवदारुं
पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन।
यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां
स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः॥36॥

अन्वय–पुरः अमुं देवदारुं पश्यसि असौ वृषभध्वजेन पुत्रीकृतः यः स्कन्दस्य मातुः हेमकुम्भस्तननिःसृतानां रसज्ञः।

हिन्दी व्याख्या – हे राजन् ! आगे स्थित इस देवदारु के पेड़ को देख रहे हो, इसे शङ्कर जी ने पुत्र माना है। इसने स्वामिकार्तिकेय की माता (पार्वती) के सोने के घटरूपी स्तनों से निकले हुए जल का स्वाद लिया है।

संस्कृत व्याख्या– पुरः–अग्रे, **अमुम्–**एनं, **देवदारुं–**तमन्नामकं, वृक्षं, **पश्यसि–**अवलोकयसि, **असौ–**देवदारुः, **वृषभध्वजेन–**शिवेन, **पुत्रीकृतः–**पुत्रत्वेन स्वीकृतः, **यः–**देवदारुः, **स्कन्दस्य–**स्वामिकार्तिकेयस्य, **मातुः–**जनन्याः, **हेमकुम्भस्तननिःसृतानां–**स्वर्णघटकुचनिर्गतानां, **पयसां–**जलानां, **रसज्ञः–**स्वादवित् अस्ति।

शब्दार्थ – पुरः – सामने। **अमुम्** – इसको। **वृषभध्वजेन** – बैल की ध्वजावाला; शिव। **पुत्रीकृतः** – पुत्र के समान मान लिया गया। **स्कन्दस्यः मातुः** – षडानन (स्वामिकार्तिकेय) की माता का। **हेमकुम्भस्तननिःसृतानाम्** – सुवर्णघटरूपी स्तन से निकला हुआ जल। **पयसां रसज्ञः** – जल का आस्वादन किया है। **हेमकुम्भस्तननिः सृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः** – स्वर्णकलश के जल से पार्वती जी उसे सींचती थीं। पार्वती जी के स्वर्णकलशरूपी स्तन के जल से सींचा हुआ।

➡ **प्रसङ्ग–**हाथी द्वारा देवदारु वृक्ष को रगड़ने पर पार्वती ने शोक किया था—

कण्डूयमानेन कटं कदाचिद्
वन्यद्विपेनोन्मथिता त्वगस्य।
अथैनमद्रेस्तनया शुशोच
सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः ॥37॥

अन्वय–कदाचित् कटं कण्डूयमानेन वन्यद्विपेन अस्य त्वग् उन्मथिता अथ अद्रेः तनया असुरास्त्रैः आलीढंसेनान्यम् इव एनं शुशोच।

हिन्दी व्याख्या – एक समय अपने गण्डस्थल को खुजलाते हुए किसी जङ्गली हाथी ने इसकी छाल को उधेड़ डाला।

इसे देख पार्वती ने इस प्रकार शोक किया जैसा कि (देवासुर संग्राम में) राक्षसों के शस्त्रों से घायल स्वामिकार्तिकेय को देखकर किया था।

संस्कृत व्याख्या– कदाचित्–कस्मिंश्चित्समये, **कटं**–कपोलं, **कण्डूयमानेन**–घर्षयता, **वन्यद्विपेन**–आरण्यगजेन, **अस्य**–देवदारोः, **त्वक्**–त्वचा, **उन्मथिता**–उत्पाटिता, **अथ**–ततः, **अद्रेः तनया**–पार्वती, **असुरास्त्रैः**–दैत्यायुधः, **आलीढं**–क्षतं, **सेनान्यं**–स्कन्दम्, **इव**–यथा, **एनं**–देवदारुं, **शुशोच**–शोचितवती।

संस्कृत भावार्थ– एकदा कश्चिद् वन्यद्विपः गण्डं कण्डूयमानः अस्य देवदारोः वल्कलम् उत्पाटितवान् तदुपश्रुत्य पार्वती शोकार्त्ता सती तथैव विललाप यथा असुरास्त्रैः क्षतम् कार्तिकेयं दृष्ट्वा विलपिवती।

शब्दार्थ – कदाचित् – एक समय। **कण्डूयमानेन** – खुजलाते हुए। **कटम्** – गण्डस्थल। **वन्यद्विपेन** – जङ्गली हाथी के द्वारा। **त्वक्** – खाल, पेड़ की छाल। **उन्मथिता** – उधेड़ दी गयी। जब हाथी अपने गण्डस्थल की खुजलाहट को दूर करने के लिए पेड़ से उसे रगड़ने लगा उस समय पेड़ की छाल उधड़ गयी। **अद्रेः तनया** – हिमालय की कन्या, पार्वती। **अथ** – तब इस घटना को देखकर। **एनं शुशोच** – देवदारु का सोच किया, इसे देखकर दुःखी हुईं। **असुरास्त्रैः आलीढम्** - राक्षसों के अस्त्रों से घायल, क्षत-विक्षत। एक बार देवासुर-सङ्ग्राम में स्कन्द राक्षसों के अस्त्रों से बहुत घायल हो गये थे। जिस प्रकार उनको घायल देखकर पार्वती दुःखी हुई थीं, उसी प्रकार उधड़ी हुई छालवाले देवदारु को भी देखकर उन्होंने शोक किया। **सेनान्यम्** - देवताओं के सेनापति स्वामिकार्तिकेय को।

➡ **प्रसङ्ग**–सिंह राजा से कह रहा है कि उस देवदारु की रक्षा के लिए शङ्कर ने मुझे नियुक्त किया है—

तदाप्रभृत्येव वनद्विपानां
त्रासार्थमस्मिन्नहमद्रिकुक्षौ।
व्यापारितः शूलभृता विधाय
सिंहत्वमङ्कागतसत्त्ववृत्तिः॥38॥

अन्वय–तदाप्रभृति एव वनद्विपानां त्रासार्थं शूलभृता अङ्कागतसत्त्ववृत्तिः सिंहत्वं विधाय अस्मिन् अद्रिकुक्षौ अहं व्यापारितः।

हिन्दी व्याख्या – उसी दिन से जङ्गली हाथियों को डराने के लिए महादेव जी ने मुझे सिंह का रूप देकर इस गुफा में नियुक्त किया और दैवयोग से जो जीव मेरे पास आ जायँ उन्हें खाकर मैं अपना जीवन-निर्वाह करूँ, यही मेरी वृत्ति उन्होंने दी है।

संस्कृत व्याख्या–तदा प्रभृति एव–तत्कालादारभ्य एव, **वनद्विपानाम्**–आरण्यकगजानां, **त्रासार्थं**–भयार्थं, **शूलभृता**–शिवेन, **अङ्कागतसत्त्ववृत्तिः**–अङ्कसमीपमागताः प्राप्ताः सत्त्वाः प्राणिनः वृत्तिः जीवनोपायः यस्मिन् तत्, **सिंहत्वं**–मृगेन्द्रत्वं, **विधाय**–कृत्वा, **अस्मिन्**–दृश्यमाने, **अद्रिकुक्षौ**–गिरिगह्वरे, अहं कुम्भोदरः, **व्यापारितः**–नियुक्तः।

संस्कृत भावार्थ– तस्मात्कालादारभ्य वन्यगजान् त्रासयितुं शिवः मां सिंहरूपिणं कृत्वा अस्यां पर्वतकन्दरायां नियोजयामास तथा चेति अनुज्ञापितवान् यत् दैववशात् समीपागतजीवाः मम भक्ष्याः भविष्यन्ति।

शब्दार्थ – तदाप्रभृति – उसी समय से। **वनद्विपानाम्** – जङ्गली हाथियों के। **त्रासार्थम्** – डराने के लिए। **शूलभृता** – त्रिशूल धारण करनेवाले (शिव) के द्वारा। **अङ्कागतसत्त्ववृत्ति** – समीप में आये हुए प्राणी ही हैं वृत्ति (जीवनोपाय) जिसकी। **सिंहत्वम्** – सिंह का रूप। शिव ने सिंह का रूप मुझे देकर यह भी निश्चित कर दिया कि जो जन्तु अकस्मात् मेरे पास आ जायँ उन्हें खाकर मैं अपना जीवन-निर्वाह करूँ। **विधाय** – बनाकर। **अद्रिकुक्षौ**– पहाड़ की गुफा में। **व्यापारितः** – नियुक्त किया गया।

➡ **प्रसङ्ग**–सिंह नन्दिनी को अपना पुष्कल आहार बताता है—

तस्यालमेषा क्षुधितस्य तृप्त्यै
प्रदिष्टकाला परमेश्वरेण।
उपस्थिता शोणितपारणा मे
सुरद्विषश्चान्द्रमसी सुधेव॥39॥

अन्वय–परमेश्वरेण प्रदिष्टकाला उपस्थिता एषा शोणितपारणा सुरद्विषः चान्द्रमसी सुधा इव क्षुधितस्य मे तृप्त्यै अलम्।

हिन्दी व्याख्या – भगवान् ने उसका समय नियत कर दिया था। इसी से यह यहाँ आकर उपस्थित हुई है। जिस प्रकार चन्द्रमा का अमृतपान करने से राहु की तृप्ति हो जाती है, उसी प्रकार इसका खून पीने से मुझ भूखे (सिंह) की भी तृप्ति हो जायगी। यह मेरी क्षुधा के निवारण के लिए पर्याप्त है।

संस्कृत व्याख्या– परमेश्वरेण–शिवेन, **प्रदिष्टकाला–**प्रदिष्ट निर्दिष्टः कालो भोजनवेला यस्याः तादृशी, **उपस्थिता–**प्राप्ता, **एषा–**इयं, **शोणितपारणा–**शोणितस्य रुधिरस्य पारणा व्रतान्तभोजनं, **सुरद्विषः–**राहोः, **चान्द्रमसी–**ऐन्दवी, **सुधा इव–**अमृतमिव, **क्षुधितस्य–**बुभुक्षितस्य, **मे–**मम, **तृप्त्यै–**सन्तोषाय, **अलं–**पर्याप्ता (अस्ति)।

संस्कृत भावार्थ– चिरकालात् क्षुधितस्य अङ्कागतप्राणिवृत्त्या जीवनं यापयतः मे पूर्णरूपेण क्षुधानिवारणाय स्वयमत्र प्राप्ता एषा गोरूपा शोणितपारणा राहोः चन्द्रसम्बन्धि अमृतमिव पर्याप्ता भविष्यति।

शब्दार्थ – परमेश्वरेण – महादेव से। **प्रदिष्टकाला** – भगवान् शङ्कर ने जिसका समय निश्चित कर दिया है कि इसी समय यह मेरा भोजन बनेगी। **उपस्थिता** – आयी है। **एषा शोणितपारणा** – वह शोणितापारणा। **पारणा** – किसी व्रत के बाद जो भोजन किया जाता है वह पारणा कहलाता है। सिंह के कहने का तात्पर्य यह है कि आज गाय का रुधिर ही व्रतपारणा होगा। मैं कई दिन का भूखा हूँ और आज इसे ही खाकर व्रत का पारण करूँगा। **चान्द्रमसी** - चन्द्रमा का। **सुरद्विषः** देवताओं के शत्रु राहु का। ग्रहण लगने पर राहु चन्द्रमा को ग्रसता है और उसका अमृत पीता है। सिंह का कहना है कि जिस प्रकार चन्द्रमा का अमृत पीकर राहु अपनी तृप्ति करता है, उसी प्रकार मैं भी इसका शोणित पीकर अपनी तृप्ति करूँगा। **तस्य मे क्षुधितस्य** - मुझ भूखे की। **तृप्त्यै अलम्** - तृप्ति के लिए काफी है, मेरी तृप्ति उससे हो जायगी।

➡ **प्रसङ्ग–**सिंह राजा को गाय छोड़कर लौट जाने की सलाह देता है—

स त्वं निवर्तस्व विहाय लज्जां
गुरोर्भवान्दर्शितशिष्यभक्तिः।
शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं
न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति ॥40॥

अन्वय–स त्वं लज्जां विहाय निवर्तस्व भवान् गुरोः दर्शितशिष्यभक्तिः अस्ति यद् रक्ष्यं शस्त्रेण अशक्यरक्ष्यं तद् शस्त्रभृतां यशः न क्षिणोति।

हिन्दी व्याख्या – आप लज्जा को छोड़कर लौट जाइये। गुरु के सम्बन्ध में आपने शिष्योचित भक्ति दिखला दी है। जो रक्षणीय वस्तु शस्त्र से नहीं बचायी जा सकती वह शस्त्रधारी की कीर्ति को नष्ट नहीं करती।

संस्कृत व्याख्या– सः –एवमुपायशून्यः, त्वं, **लज्जां–**त्रपां, **विहाय–**त्यक्त्वा, **निवर्तस्व–**परावर्तस्व, **भवान्–**त्वं, **गुरोः–**वशिष्ठस्य, **दर्शितशिष्यभक्तिः–**दर्शिता प्रकाशिता शिष्यस्य अन्तेवासिनः भक्तिः पूज्येष्वनुरागबुद्धिः येन तादृशः, **अस्ति–**विद्यते, यद्, **रक्ष्यं–**रक्षितुं योग्यं, **शस्त्रेण–**आयुधेन, **अशक्यरक्ष्यं–**रक्षितुं न शक्यं, तद्, **रक्ष्यं–**रक्षणीयं (वस्तु), **शस्त्रभृतां–**शस्त्रधारिणां, **यशः–**कीर्तिं, **न क्षिणोति–**न नाशयति।

संस्कृत भावार्थ– हे राजन् ! बाहुस्तम्भत्वात् मद्वधे निरुपायस्त्वं लज्जां त्यक्त्वा स्वाश्रमं याहि। अपि च यद् रक्षणीयं वस्तु शस्त्रेण न रक्ष्यते तद् रक्ष्यं वस्तु नष्टमपि शस्त्रधारिणां कीर्तिं न नाशयति। अतस्तव निजाश्रमगमने न कोऽपि दोषः।

शब्दार्थ – स त्वम् – वह तुम, अर्थात् बाहु रुक जाने से जो मुझे मारने में असमर्थ हो। **लज्जाम्** – सिंह को मार न सकने के कारण लज्जा को। **विहाय** – छोड़कर। **निवर्तस्व** –लौट जाओ। **दर्शितशिष्यभक्तिः** – जिसने शिष्यों के योग्य भक्ति दिखा दी है। **यद् रक्ष्यम्** – रक्षा करने योग्य जो वस्तु। **शस्त्रेणाशक्यरक्ष्यम्** – शस्त्र से नहीं बचायी जा सकती। **तत्** – वह। **शस्त्रभृताम्** – शस्त्र धारण करनेवालों की। **क्षिणोति** – कम करता है। सिंह के कहने का भाव यह है कि आपने तो प्रयत्न किया और गुरु के प्रति शिष्योचित भक्ति भी दिखायी। परन्तु आप गाय की रक्षा नहीं कर सकते, इससे लज्जा छोड़कर वापस चले जाइये। क्योंकि यदि कोई रक्षणीय वस्तु शस्त्र से न बचायी जा सके तो उससे शस्त्रधारी का यश कम नहीं होता।

●●

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कः वनाय धेनुं मुमोच?
उत्तर– नृपदिलीपः वनाय धेनुं मुमोच।
प्रश्न 2. दिलीपः ऋषेः धेनुं वनाय कदा मुमोच?
उत्तर– दिलीपः ऋषेः धेनुं वनाय प्रभाते मुमोच।
प्रश्न 3. प्रजानामधिपः कीदृशीं धेनुं वनाय मुमोच?
उत्तर– प्रजानामधिपः जायाप्रतिग्रहितगन्धमाल्यां पीतप्रतिबद्धवत्सां च धेनुं वनाय मुमोच।
प्रश्न 4. मनुष्येश्वरधर्मपत्नी कीदृशी आसीत्?
उत्तर– मनुष्येश्वरधर्मपत्नी अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया आसीत्।
प्रश्न 5. अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया का आसीत्?
उत्तर– अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया महाराज्ञी सुदक्षिणा आसीत्।
प्रश्न 6. मनुष्येश्वरधर्मपत्नी का इव मार्गम् अन्वगच्छत्?
उत्तर– मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।
प्रश्न 7. दिलीपः नन्दिनीं काम् इव जुगोप?
उत्तर– दिलीपः नन्दिनीं गोरूपधराम् उर्वीम् इव जुगोप।
प्रश्न 8. राजा किम्भूतां सौरभेयीं जुगोप?
उत्तर– राजा पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां सौरभेयीं जुगोप।
प्रश्न 9. कस्य शरीररक्षा अन्यतः न करोति?
उत्तर– मनोः प्रसूतेः शरीररक्षा अन्यतः न करोति।
प्रश्न 10. मनोः प्रसूतिः कीदृशी आसीत्?
उत्तर– मनोः प्रसूतिः स्ववीर्यगुप्ता आसीत्।
प्रश्न 11. दिलीपेन शेषोऽपि अनुयायिवर्गः केन हेतुना निवर्तितः?
उत्तर– दिलीपेन शेषोऽपि अनुयायिवर्गः 'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः' इति निवर्तितः।
प्रश्न 12. दिलीपः नन्दिनीसेवायां कथं तत्परोऽभूत्?
उत्तर– दिलीपः आस्वादवद्भिः तृणानां कवलैः कण्डूयनैः दंशनिवारणैः अव्याहतैः स्वैरगतैः नन्दिनीसेवायां तत्परोऽभूत्।
प्रश्न 13. दिलीपः कामिव नन्दिनीम् अन्वगच्छत्?
उत्तर– दिलीपः छाया इव नन्दिनीम् अन्वगच्छत्।
प्रश्न 14. राजा दिलीपो मुनिहोमधेनोः रक्षापदेशात् किं करिष्यन्निव दावं विचचार?
उत्तर– राजा दिलीपो मुनिहोमधेनोः रक्षापदेशात् दुष्टसत्त्वान् विनेष्यन्निव दावं विचचार।
प्रश्न 15. मरुत्प्रयुक्ताः बाललताः प्रसूनैः कम् अवाकिरन्?
उत्तर– मरुत्प्रयुक्ताः बाललताः प्रसूनैः नृपं दिलीपं अवाकिरन्।
प्रश्न 16. हरिण्यः किं विलोकयन्त्योऽक्ष्णां प्रकामविस्तारफलमापुः?
उत्तर– हरिण्यो दिलीपस्य वपुर्विलोकयन्त्योऽक्ष्णां प्रकामविस्तारफलमापुः।
प्रश्न 17. राजा दिलीपः स्व यशः कुत्र अशृणोत्?
उत्तर– राजा दिलीपः स्व यशः कुञ्जेषु अशृणोत्।

प्रश्न 18. कीदृशः पवनः दिलीपः सिषेवे?
उत्तर— अनोकहाकम्पित पुष्पगन्धी पवनः दिलीपः सिषेवे।
प्रश्न 19. दिनान्ते निललाय गन्तुं का प्रचक्रमे?
उत्तर— दिनान्ते निललाय गन्तुं पतङ्गस्य प्रभा मुनेश्च धेनुः प्रचक्रमे।
प्रश्न 20. देवतापित्रतिथिक्रियार्था काऽऽसीत्?
उत्तर— देवतापित्रतिथिक्रियार्था नन्दिनी आसीत्।
प्रश्न 21. कौ उभौ कस्मात्तपोवनावृत्तिपथम् अलञ्चक्रतुः?
उत्तर— गृष्टिः आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात् नरेन्द्रश्च वपुषः गुरुत्वात् उभौ तपोवनावृत्तिपथम् अलञ्चक्रतुः।
प्रश्न 22. का कम् उपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् पपौ?
उत्तर— वनिता (सुदक्षिणा) तं (दिलीपं) उपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् पपौ।
प्रश्न 23. सुदक्षिणा दिलीपयोर्मध्ये नन्दिनी कथं विरराज?
उत्तर— सुदक्षिणा दिलीपयोर्मध्ये नन्दिनी दिनक्षपामध्यगता सन्ध्या इव विरराज।
प्रश्न 24. सुदक्षिणा साक्षातपात्रहस्ता किम् आनर्च?
उत्तर— सुदक्षिणा साक्षातपात्रहस्ता नन्दिनीमस्तकम् (शृङ्गान्तरम्) आनर्च।
प्रश्न 25. सुदक्षिणा नन्दिन्याः शृङ्गान्तरं किमिवानर्च?
उत्तर— सुदक्षिणा नन्दिन्याः शृङ्गान्तरम् अर्थसिद्धेः द्वारमिवानर्च।
प्रश्न 26. तौ (सुदक्षिणादिलीपौ) किमिति नन्दतुः?
उत्तर— वत्सोत्सुकाऽपि नन्दिनी स्तिमिता सती सपर्यां प्रत्यग्रहीदिति तौ (सुदक्षिणादिलीपौ) नन्दतुः।
प्रश्न 27. भक्तयोपपन्नेषु तद्विधानां प्रसादचिह्नानि कीदृशानि भवन्ति?
उत्तर— भक्तयोपपन्नेषु तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरःफलानि भवन्ति।
प्रश्न 28. दिलीपः कीदृशीं नन्दिनीम् अन्वास्य क्रमेण सुप्ताम् अनुसंविवेश?
उत्तर— दिलीपः अन्तिकन्यस्तबलिप्रदीपां नन्दिनीम् अन्वास्य क्रमेण सुप्ताम् अनुसंविवेश।
प्रश्न 29. व्रतं धारयतः तस्य (दिलीपस्य) कति दिनानि व्यतीयुः?
उत्तर— व्रतं धारयतः तस्य (दिलीपस्य) त्रिगुणानि सप्त दिनानि व्यतीयुः।
प्रश्न 30. दिलीपः कया सह प्रजार्थं व्रतमधारयत्?
उत्तर— दिलीपः महिष्या सह प्रजार्थं व्रतमधारयत्।
प्रश्न 31. अन्येद्युः कं जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः गौरीगुरोः गह्वरम् आविवेश?
उत्तर— अन्येद्युः आत्मानुचरस्य (दिलीपस्य) भावं जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः गौरीगुरोः गह्वरम् आविवेश।
प्रश्न 32. को जीवः वशिष्ठधेनुं प्रसह्य चकर्ष?
उत्तर— सिंहः वशिष्ठधेनुं प्रसह्य चकर्ष।
प्रश्न 33. आर्तसाधोः नृपस्य नगेन्द्रसक्तां दृष्टिं किं निवर्तयामास?
उत्तर— आर्तसाधोः नृपस्य नगेन्द्रसक्तां दृष्टिं नन्दिन्याः आक्रन्दितम् निवर्तयामास।
प्रश्न 34. धनुर्धरोः दिलीपः पाटलायां गवि तस्थिवासं केसरिणं कथम्भूतं ददर्श?
उत्तर— धनुर्धरो दिलीपः पाटलायां गवि तस्थिवासं केसरिणं सानुमतो धातुमय्यामधित्यकायां प्रफुल्लं लोध्रद्रुममिव ददर्श।
प्रश्न 35. राजा निषङ्गात् शरं किमर्थम् उद्धर्तुम् ऐच्छत्?
उत्तर— राजा निषङ्गात् शरं मृगेन्द्रस्य वधाय उद्धर्तुम् ऐच्छत्।

प्रश्न 36. पर्वतगुहायां दिलीपस्य केन सह संवादः अभवत्?
उत्तर– पर्वतगुहायां दिलीपस्य सिंहेन सह संवादः अभवत्।
प्रश्न 37. सिंहः राजानं कया भाषया अवदत्?
उत्तर– सिंहः राजानं मनुष्य भाषया अवदत्।
प्रश्न 38. 'अलं महीपाल! तव श्रमेण' इति को निजगाद?
उत्तर– 'अलं महीपाल! तव श्रमेण' इति सिंहो निजगाद।
प्रश्न 39. मारुतस्य रंहः कस्मिन् न मूर्च्छति?
उत्तर– मारुतस्य रंहः शिलोच्चये न मूर्च्छति।
प्रश्न 40. सिंहेन स्व किं नाम उक्तम्?
उत्तर– सिंहेन स्वनाम कुम्भोदरं उक्तम्।
प्रश्न 41. कुम्भोदरः कोऽस्ति?
उत्तर– कुम्भोदरः अष्टमूर्तेः शिवस्य किङ्करोऽस्ति।
प्रश्न 42. वृषभध्वजेन कः पुत्रीकृतः आसीत्?
उत्तर– वृषभध्वजेन देवदारुद्रुमः पुत्रीकृतः आसीत्।
प्रश्न 43. 'स त्वं लज्जां विहाय निवर्त्तस्व' इति को कं जगाद?
उत्तर– 'स त्वं लज्जां विहाय निवर्त्तस्व' इति सिंहो दिलीपं जगाद।
प्रश्न 44. यद् रक्ष्यं शस्त्रेणाशक्यरक्ष्यं तत् शस्त्रभृतां किं न क्षिणोति?
उत्तर– यद् रक्ष्यं शस्त्रेणाशक्यरक्ष्यं तत् शस्त्रभृतां यशो न क्षिणोति।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. नन्दिनी सेवा कृता?
(i) दिलीपेन (ii) अजेन
(iii) दशरथेन (iv) रामेण **उत्तर–** (i) दिलीपेन।

2. कः राजा नन्दिनी सिषेवे?
(i) अजः (ii) दिलीपः
(iii) रघुः (iv) दशरथः **उत्तर–** (ii) दिलीपः।

3. नन्दिनी कस्य गौः आसीत्?
(i) दिलीपस्य (ii) रघोः
(iii) वशिष्ठस्य (iv) दशरथस्य **उत्तर–** (iii) वशिष्ठस्य।

4. नन्दिनी का आसीत्?
(i) धेनुः (ii) कामधेनुः
(iii) पशुः (iv) देवी **उत्तर–** (ii) कामधेनुः।

5. (कामधेनुः) नन्दिनी कस्य ऋषे धेनुः आसीत्?
(i) विश्वामित्रस्य (ii) वशिष्ठस्य
(iii) दिलीपस्य (iv) कण्वस्य **उत्तर–** (ii) वशिष्ठस्य

6. दिलीपस्य पत्न्याः नाम किं आसीत्?

(i) मालती (ii) वसुमती

(iii) सुदक्षिणा (iv) दमयन्ती **उत्तर–** (iii) सुदक्षिणा।

7. ''प्रयुक्तमप्यश्रमितो वृथा स्यात्'' इयं कस्योक्तिः?

(i) रघोः (ii) सिंहस्य

(iii) दिलीपस्य (iv) दशरथस्य **उत्तर–** (ii) सिंहस्य।

8. 'एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम्' इति कं प्रयुक्तम्?

(i) रघुम् (ii) दिलीपम्

(iii) वशिष्ठम् (iv) अजम् **उत्तर–** (ii) दिलीपम्।

9. सौरभेयीं कः जुगोप?

(i) दशरथः (ii) अजः

(iii) दिलीपः (iv) रघुः **उत्तर–** (iii) दिलीपः।

10. दिलीपः नन्दिनी सेवायाम् किं तत्परोऽभूत्?

(i) स्वान्तःसुखाय (ii) लोकहिताय

(iii) धनार्जनाय (iv) पुत्रलाभाय **उत्तर–** (iv) पुत्रलाभाय।

11. वशिष्ठ धेनोः आराधन तत्परः कः अभूत्?

(i) अजः (ii) रघुः

(iii) दशरथः (iv) दिलीपः **उत्तर–** (iv) दिलीपः।

12. दिलीपस्य दयिता का आसीत्?

(i) वसुमती (ii) सुदक्षिणा

(iii) सुलक्षणा (iv) सुभद्रा **उत्तर–** (ii) सुदक्षिणा।

13. वशिष्ठः कस्य गुरुः आसीत्?

(i) रामस्य (ii) दशरथस्य

(iii) लक्ष्मणस्य (iv) सुमन्त्रस्य **उत्तर–** (ii) दशरथस्य।

14. दिलीपः नन्दिन्या सेवायां तत्परोऽभूत्?

(i) स्वान्तःसुखाय (ii) लोकाराधनाय

(iii) सन्तानकामाय (iv) गुरोराज्ञानुपालनाय **उत्तर–** (iv) गुरोराज्ञानुपालनाय।

15. महाकवि कालिदास का 'रघुवंश क्या है?

(i) नाटक (ii) गद्यकाव्य

(iii) महाकाव्य (iv) खण्डकाव्य **उत्तर–** (iii) महाकाव्य।

16. उपमा प्रयोग के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं?

(i) भारवि (ii) श्री हर्ष

(iii) कालिदास (iv) दण्डी **उत्तर–** (iii) कालिदास।

17. महाकवि कालिदास की रचनाएँ हैं?

(i) छह (ii) तीन

(iii) सात (iv) पाँच **उत्तर–** (iii) सात।

18. दिनक्षपामध्यगता का इव धेनुः विरराज?

(i) रात्रिः (ii) सन्ध्या
(iii) प्रातः (iv) मध्याह्न। **उत्तर–** (ii) सन्ध्या।

19. किमर्थं दिलीपः नन्दिनीम् सेवत?

(i) राज्याय (ii) धनाय
(iii) स्वान्तःसुखाय (iv) सन्तानाय **उत्तर–** (iv) सन्तानाय।

20. द्वाविंशे दिवसे नन्दिनी कुत्र प्रविष्टा?

(i) गृहे (ii) गुहायाम्
(iii) प्रासादे (iv) गोशालायाम् **उत्तर–** (ii) गुहायाम्।

21. नन्दिनी का आसीत्?

(i) धेनुः (ii) अजा
(iii) महिषी (iv) सेविका **उत्तर–** (i) धेनुः।

22. दिलीपः कदा ऋषेः धेनुं वनाय मुमोच?

(i) रात्रिकाले (ii) सायंकाले
(iii) मध्याह्नकाले (iv) प्रभाते **उत्तर–** (iv) प्रभाते।

23. दिलीपस्य परीक्षार्थं नन्दिनी कुत्र प्रविष्टा?

(i) गृहे (ii) आश्रमे
(iii) गिरिगुहायाम् (iv) उपवने **उत्तर–** (iii) गिरिगुहायाम्।

24. दिलीपः कस्य आश्रमम् अगच्छत्?

(i) कण्वस्य (ii) विश्वामित्रस्य
(iii) वशिष्ठस्य (iv) अगस्त्यस्य **उत्तर–** (iii) वशिष्ठस्य।

25. दिलीपः कस्याः समाराधनतत्परोऽभूत्?गज

(i) सुदक्षिणायाः (ii) गुरुपत्न्याः
(iii) नन्दिन्याः (iv) पार्वत्याः **उत्तर–** (iii) नन्दिन्याः।

●●

खण्ड - 'ग' (नाटक)

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(चतुर्थोऽङ्कः दशं श्लोकपर्यन्तः)

महाकवि कालिदास

➡ कालिदास का जीवन-परिचय एवं समय

नोट—कालिदास का जीवन-परिचय, रचनाएँ एवं समय पुस्तक के द्वितीय भाग 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में देखें।

➡ कालिदास की नाट्य-कला

कालिदास प्रत्येक वस्तु का चित्र नेत्रों के सामने उपस्थित करने में सक्षम हैं। वे मानव हृदय की कोमल भावनाओं, उसकी उत्सुकता, विह्वलता और भावावेशों का अत्यन्त सुन्दर वर्णन करते हैं। उनका प्रकृति-वर्णन केवल मनोरञ्जन का साधन मात्र नहीं है, वह मनुष्य को शिक्षा भी प्रदान करता है। कालिदास ने चरित्र-चित्रण और वस्तुओं के सजीव वर्णन में कुशलता दिखायी है।

घटना-संयोजन— 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में घटनाओं का संयोजन पूर्णरूप से स्वाभाविक है, साथ ही उसमें असाधारण सौष्ठव भी विद्यमान है। प्रत्येक घटना सार्थक है, अतः कथानक के विकास में पूरी तरह सहायक है। फलतः नाटक की गति स्वाभाविक और अविच्छिन्न है। जैसे– राजा का शकुन्तला से गान्धर्व-विवाह, दुर्वासा का शाप, दुष्यन्त का अपने नाम की अँगूठी देना, दुर्वासा द्वारा उसी अँगूठी को दिखाने पर शाप-मोचन आदि सभी घटनाएँ सुसम्बद्ध हैं।

घटनाओं की सार्थकता— 'अभिज्ञानशाकुन्तल' की प्रत्येक घटना सार्थक है और किसी विशेष उद्देश्य से रखी गयी है। जैसे–दुर्वासा के शाप से दुष्यन्त का शकुन्तला को भूलना, अँगूठी खोना, पुनः अँगूठी का मिलना, शकुन्तला-दुष्यन्त का मिलन, कण्व का शकुन्तला की विपत्ति दूर करने के लिए सोमतीर्थ जाना आदि।

रचना-कौशल— महाभारत के एक नीरस कथानक को कालिदास ने अपने रचना-कौशल से 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नामक एक सरस सुविख्यात नाटक में परिवर्तित कर दिया है।

चरित्र-चित्रण—कालिदास चरित्र-चित्रण में सिद्धहस्त हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं। उसके प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है, जैसे– दुर्वासा अत्यन्त क्रोधी, शकुन्तला लज्जाशील, अनसूया शान्त व विवेकशील एवं प्रियंवदा हास्य-प्रिय है।

पात्रों के अनुकूल भाषा—कालिदास के प्रत्येक पात्र अपनी स्थिति के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रियंवदा और अनसूया सखीजनोचित हास-परिहास करती हैं। कण्व पिता के समान शकुन्तला का अभिनन्दन करते हैं– **सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में रस-निरूपण– शाकुन्तल श्रृङ्गार रस प्रधान नाटक है। इसमें सम्भोग श्रृङ्गार अङ्गी रस है और विप्रलम्भ श्रृङ्गार है। करुण, वीर, अद्भुत, हास्य, भयानक, वत्सल, शान्त ये अङ्ग रस हैं। यद्यपि शाकुन्तल में विप्रलम्भ श्रृङ्गार का विस्तार है तथापि नाटक सुखान्त है। अन्त में दुष्यन्त-शकुन्तला का मिलन है, अतः शाकुन्तलम् श्रृङ्गार प्रधान नाटक है।

कालिदास का काव्य-सौन्दर्य—शाकुन्तलम् में कालिदास ने कई ऐसे प्रसङ्ग उपस्थित किये हैं जो भावों की दृष्टि से अत्यन्त मार्मिक हैं। इनमें कालिदास की कल्पना-शक्ति व नाट्य-कुशलता का विशेष परिचय प्राप्त होता है। जैसे– चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई।

कालिदास का प्रकृति-प्रेम—कालिदास प्रकृति को सजीव और मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत मानते हैं। शकुन्तला वृक्षों को भाई और लताओं को बहन की तरह मानती है और उनकी सेवा करती है। इस प्रकृति-प्रेम से अभिभूत होकर शकुन्तला को पति-गृह जाने के समय वृक्ष और लताएँ वस्त्राभूषण तथा अन्य प्रसाधन उपहार आशीर्वादस्वरूप प्रदान करते हैं।

भाषा एवं शैली—कालिदास की लोकप्रियता का कारण उनकी सरल, परिष्कृत और प्रसाद गुण युक्त शैली है। कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और वैदर्भी की प्रमुख विशेषता है–मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासों का होना। इनकी रचनाओं में प्रसाद-माधुर्य गुणों का प्राधान्य है, ओज गुण कम मात्रा में मिलता है।

भाषा सरल, सरस व मनोरम है। उनका शब्दकोश अगाध है। इसी कारण भाषा में असाधारण मनोरमता व प्रवाह है। कालिदास की शैली संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक है। वह सुन्दर भावों को सुन्दर भाषा में प्रकट करते हैं। कालिदास ने कथोपकथन में पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

अलङ्कार—कालिदास ने शाकुन्तलम् में प्रायः सभी प्रचलित अलङ्कारों का प्रयोग किया है। प्रमुख रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, तुल्ययोगिता, समासोक्ति, व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास आदि। कालिदास अपनी उपमाओं के लिए विश्व-विख्यात हैं।

●●

चतुर्थ अङ्क का सारांश

फूल चुनती हुई प्रियंवदा और अनसूया के आपसी वार्त्तालाप से चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है। अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह कर लिया है, परन्तु मेरे हृदय में शान्ति नहीं है। आज ही वह राजर्षि यज्ञ की समाप्ति पर ऋषियों से विदा लेकर अपने नगर को चला जायगा। वहाँ जाकर इस शकुन्तला का स्मरण करेगा या नहीं? पर्णशाला में दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला बैठी हुई थी। इसी बीच दुर्वासा ऋषि का अतिथि रूप में आश्रम में आगमन होता है। अतिथि-सत्कार प्राप्त न होने पर क्रुद्ध दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं कि जिसका स्मरण करती हुई तू मुझ–जैसे तपस्वी का आतिथ्य नहीं कर रही है, वह याद दिलाने पर भी तुझे स्मरण नहीं करेगा। प्रियंवदा के अनुनय-विनय से प्रसन्न होकर दुर्वासा शापमुक्त होने का उपाय बताते हैं कि यदि वह उसके पहचान का आभूषण दिखा देगी तो शाप समाप्त हो जायगा। अनसूया और प्रियंवदा शाप की बात न शकुन्तला को बताती हैं और न अन्य किसी भी व्यक्ति को, क्योंकि वे समझ रही थीं कि दुष्यन्त की नामाङ्कित अँगूठी शकुन्तला के पास है। वह उसे दिखला देगी तो शाप स्वतः समाप्त हो जायगा। शाप की बात बताने से सभी अकारण चिन्तित हो जायँगे।

सोमतीर्थ यात्रा से लौटे महर्षि कण्व को आकाशवाणी से ज्ञात हुआ कि शकुन्तला का गान्धर्व विवाह राजा दुष्यन्त के साथ हो गया है और वह गर्भिणी भी है। कण्व शकुन्तला के इस कृत्य का अभिनन्दन करते हैं। दुर्वासा के शाप के प्रभाव से शकुन्तला को बुलाने के लिए राजर्षि दुष्यन्त ने किसी भी व्यक्ति को नहीं भेजा। शकुन्तला को पतिगृह भेजने के लिए कण्व प्रबन्ध करते हैं। शकुन्तला की विदाई की तैयारी होती है। वनवृक्षों द्वारा शकुन्तला के लिए रेशमी वस्त्र, पैरों पर लगाने के लिए अलक्त (महावर) तथा विभिन्न अङ्गों में पहनने योग्य आभूषण प्रदान किये जाते हैं। उन्हें लेकर तापस कुमार नारद आता है और उन्हें गौतमी को देता है कि इनसे शकुन्तला को अलङ्कृत कीजिये। प्रियंवदा और अनसूया शकुन्तला को सुसज्जित करती हैं। इसी बीच में हस्तिनापुर जानेवाले ऋषि शार्ङ्गरव आदि बुलाये जाते हैं। ऋषि कण्व शकुन्तला की विदा के समय उसके वियोग में करुण रस से ओतप्रोत हो जाते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों और सहचरी मृगियों आदि से विदा लेती है। महर्षि कण्व शकुन्तला को लेकर जा रहे ऋषिकुमारों के द्वारा राजा दुष्यन्त के लिए सन्देश भेजते हैं कि आप अपने उच्च कुल के अनुसार शकुन्तला की स्नेह प्रवृत्ति पर विचारकर अपनी अन्य पत्नियों के सदृश इससे व्यवहार करें। महर्षि कण्व सामान्य गृहस्थ पिता के समान पतिगृह जाती हुई पुत्री को व्यावहारिक उपदेश देते हैं कि पतिगृह पहुँचने पर सास-ससुर की सेवा, परिजनों के प्रति सहृदयता, पति के प्रति कभी भी विरुद्ध आचरण न करना, अहंकार न करना आदि कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। कण्व से विदा लेते हुए शकुन्तला पूछती है कि मैं कब इस आश्रम का पुनः दर्शन करूँगी? कण्व आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि दुष्यन्त से उत्पन्न पुत्र को राज्यभार सौंपकर अपने पति के साथ इस आश्रम में शान्ति लाभ के लिए पुनः आओगी। तत्पश्चात् गौतमी और ऋषिकुमारों के साथ शकुन्तला पतिगृह के लिए प्रस्थान करती है। दोनों सखियाँ शकुन्तला से रहित सूने आश्रम में प्रवेश करती हैं। कण्व पुत्री को पति के घर भेजकर हार्दिक प्रसन्नता व सन्तोष का अनुभव करते हुए कहते हैं–

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

शकुन्तला का चरित्र-चित्रण

शकुन्तला अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है। वह ऋषि कण्व की पालिता-पुत्री है। उसके वास्तविक जननी-जनक मेनका और विश्वामित्र हैं। शकुन्तला का चरित्र एक आदर्श भारतीय नारी का चरित्र है। उसके चरित्र में अनेक ऐसे गुण हैं, जो उसे नाटक का एक प्रभावशाली पात्र बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

(1) अनुपम सुन्दरी—शकुन्तला अत्यन्त सुन्दर है। उसके प्राकृतिक सौन्दर्य को बाह्य शृङ्गार की आवश्यकता नहीं है–

''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी।''

राजा दुष्यन्त उसके अलौकिक रूप-सौन्दर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं और उसके सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं–

''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।''

(2) शालीनता—शकुन्तला में शालीनता कूट-कूटकर भरी है। वह सुशीला और लज्जाशीला है। राजा दुष्यन्त के सान्निध्य की आकाङ्क्षिणी होते हुए भी जब उसे ऐसा अवसर प्राप्त होता है, तो वह राजा से कहती है—

''मुञ्च तावन्मां भूयोऽपि सखीजनमनुमानयिष्ये।''

(3) पति-प्रेम—शकुन्तला अपने पति राजा दुष्यन्त से अत्यन्त प्रेम करती है, वह उनके वियोग में इतनी व्याकुल हो जाती है कि आश्रम में आये हुए ऋषि दुर्वासा का अतिथि-सत्कार नहीं करती है और उनके शाप की भागी बनती है–

''विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।''

(4) प्रकृति-प्रेम—शकुन्तला को पेड़-पौधों, लता-कुञ्जों, पशु-पक्षियों से विशेष अनुराग है। आश्रम से विदा होते समय वह आश्रम के वृक्षों, लताओं के साथ हरिणियों आदि से भी विदाई लेती है– **अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्।**

(5) पितृ-प्रेम—अपने पिता ऋषि कश्यप के लिए उसके हृदय में अत्यधिक प्रेम एवं श्रद्धा है। अतएव पतिगृह जाते समय वह अपने पिता से बार-बार मिलती है और कहती है–

''कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टमलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि।''

(6) सखी-प्रेम—शकुन्तला एक सच्ची सखी है। वह अपनी सखियों प्रियंवदा एवं अनुसूया से विशेष अनुराग रखती है। आश्रम से विदा के समय सखियों से विदा होने का उसे अपार दुःख होता है। वह ऐसा अनुभव करती है कि सखियों के बिना उसका शृङ्गार दुर्लभ हो जायगा–

''इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति।।''

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि कालिदास को शकुन्तला के रूप में एक आदर्श भारतीय नारी के प्रेममयी रूप का चित्रण करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

अनसूया का चरित्र-चित्रण

अनसूया शकुन्तला की प्राण-प्यारी सखी है। वह शकुन्तला से हार्दिक प्रेम करती है और उसे प्रसन्न रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। अनसूया के व्यक्तित्व में हमें निम्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

(1) गम्भीर स्वभाव–अनसूया गम्भीर स्वभाव की है, उसमें प्रौढ़ता और परिपक्वता अधिक है। ऋषि दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा घबड़ा जाती है, तो अनसूया ही उसे ऋषि दुर्वासा को मनाकर शाप की समाप्ति का उपाय जानने के लिए प्रेरित करती है।

(2) स्वल्पभाषिणी–अनसूया कम बोलती है, हँसी-मजाक की बातों में उसकी विशेष रुचि नहीं है, वह अकेले में स्वयं से अधिक बातें करती है। पर्याप्त ऊहापोह करके ही वह किसी बात का उत्तर देती है।

(3) शङ्कालु प्रकृति–अनसूया शङ्कालु प्रकृति की है, वह सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती है, दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह को लेकर उसका मन आशङ्कित है। उसे इस बात की चिन्ता रहती है कि हस्तिनापुर जाकर दुष्यन्त, शकुन्तला को याद भी करेगा कि नहीं– **इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**

(4) दूरदर्शिनी–अनसूया दूरदर्शिनी है। प्रियंवदा भयभीत है कि ऋषि कण्व शकुन्तला के गान्धर्व विवाह पर कैसी प्रतिक्रिया करेंगे, परन्तु अनसूया उसे आश्वस्त करती है कि ऋषि इसका अनुमोदन करेंगे।

(5) शकुन्तला की शुभचिन्तक–अनसूया शकुन्तला की हितैषिणी है। ऋषि दुर्वासा के शाप से वह बहुत दुःखी हो जाती है और प्रियंवदा से कहती है कि शाप का वृत्तान्त हम दोनों के बीच रहे। वह शकुन्तला की प्रसन्नता के लिए हर समय चिन्तित रहती है। शकुन्तला की विदाई के समय के लिए अनसूया न जाने कब से केसर की माला सँजोकर रखती है।

वस्तुतः कवि कालिदास ने अनसूया का चरित्र शकुन्तला की एक भावुक सखी के रूप में चित्रित किया है जिसके व्यक्तित्व में संवेदना, सहानुभूति, लज्जाशीलता, गम्भीरता एवं बुद्धिमत्ता आदि गुण समाहित हैं।

प्रियंवदा का चरित्र-चित्रण

प्रियंवदा नाटक की नायिका शकुन्तला की प्रिय सखी है। वह आयु में शकुन्तला के बराबर है और उसी के समान रूपवती है। वह शकुन्तला की हितैषिणी है और उसे सदैव प्रसन्न देखना चाहती है। उसके चरित्र की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(1) विनोदशीला–प्रियंवदा विनोदप्रिय स्वभाववाली है। शकुन्तला को केसर वृक्ष के पास खड़ा देखकर वह कहती है, तुम्हारे संयोग से यह वृक्ष ऐसा लग रहा है, जैसे लता का संयोग पा गया हो।

(2) आश्वस्त स्वभाव–प्रियंवदा आश्वस्त स्वभाववाली है। जब अनसूया का मन इस बात से आशङ्कित होता है कि हस्तिनापुर जाकर राजा दुष्यन्त शकुन्तला को याद करेंगे कि नहीं, तब प्रियंवदा उसे आश्वस्त करते हुए कहती है–**''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।''**

(3) वाक्चातुर्य–शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा के शाप से मुक्त कराने हेतु वह अपने वाक्चातुर्य से ऋषि दुर्वासा को प्रसन्न करती है और उनसे शाप की समाप्ति का उपाय ज्ञात करती है–

अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।

(4) शकुन्तला की हितैषिणी–प्रियंवदा शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती है और उसे बहन के समान मानती है। वह शकुन्तला के प्रत्येक मनोरथ को पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहती है। ऋषि दुर्वासा से शाप की समाप्ति का उपाय

वही ज्ञात करती है। शकुन्तला की विदाई के समय वह सहर्ष गोरोचन, तीर्थमृत्तिका, दूर्वाकिसलय आदि माङ्गलिक अङ्गराग एकत्र करती है और उसे राजा की दी हुई अँगूठी सँभालकर रखने की सलाह देती है—

यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्य
इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

संक्षेप में प्रियंवदा शकुन्तला की परम स्निग्ध सखी है, जो उसके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी रहती है। वह व्यावहारिक शिष्टाचार, नम्रता एवं वाक्पटुता में कुशल है।

कण्व (काश्यप) का चरित्र-चित्रण

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ऋषि कण्व आश्रम के पूज्य कुलपति हैं। उनका दूसरा नाम ऋषि काश्यप भी है। उन्होंने नाटक की नायिका शकुन्तला का पितृ-रूप में लालन-पालन किया था। वे कालदर्शी ऋषि और वात्सल्य से परिपूर्ण पिता हैं। उनके चरित्र का अध्ययन निम्न रूपों में किया जा सकता है–

(1) पुत्री-प्रेम–शकुन्तला ऋषि कण्व की पालिता पुत्री थी, परन्तु उसके लिए उनका पितृ-हृदय स्नेह से कूट-कूटकर भरा था। शकुन्तला की विदाई का विचार आते ही उनका हृदय उत्कण्ठायुक्त हो उठता है, गला रुँध जाता है और दृष्टि चिन्ता से जड़ हो जाती है–

''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।''

वह स्वयं से पूछते हैं कि मेरा दुःख कैसे दूर हो सकता है–

''शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः॥''

(2) कठोर तपस्वी–ऋषि कण्व का तपोबल अनुपम है, उनका शरीर तपस्या के कारण दुर्बल हो चुका है। शकुन्तला की विदाई के समय अत्यन्त शोकाकुल होते हुए भी उन्हें अपने तपोऽनुष्ठान का ध्यान रहता है और वे उसके अन्तराल को सहन न कर पाने के कारण शकुन्तला से शीघ्र जाने को कहते हैं–

''वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।''

(3) सिद्ध पुरुष–ऋषि कण्व सिद्ध पुरुष थे, उन्हें भूत-भविष्य सभी का ज्ञान था। तभी तो यज्ञ के समय आकाशवाणी द्वारा ही उन्हें शकुन्तला के गर्भवती होने की सूचना मिलती है। उनके प्रभाव के कारण ही शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष-वन देवता उसे वस्त्राभूषण आदि प्रसाधन सामग्री प्रदान करते हैं।

(4) लोक-व्यवहार में पारङ्गत–यद्यपि वे ऋषि हैं तथापि लौकिक व्यवहार को भली-भाँति जानते हैं। विदाई के समय शकुन्तला को दिया गया उनका गृहस्थाश्रम-सम्बन्धी उपदेश स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। वे शकुन्तला से कहते हैं–

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्त्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्तेवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

(5) उदात्त व्यक्तित्व–ऋषि कण्व दुष्यन्त के साथ सम्पन्न शकुन्तला के गान्धर्व विवाह के औचित्य को जिस सहजता से स्वीकार करते हैं, वह उनके उदात्त व्यक्तित्व का द्योतक है।

वस्तुतः कण्व का जीवन गङ्गा के प्रवाह की भाँति पावन, हिम की भाँति उज्ज्वल, सागर की भाँति विस्तृत और त्रिवेणी की तरह सरल और स्निग्ध है।

दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण

महाराजा दुष्यन्त हस्तिनापुर के राजा हैं। वह सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और युवा हैं। उनके सौन्दर्य को देखकर शकुन्तला प्रथम बार में ही आकृष्ट हो जाती है। उनके चरित्र की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं–

(1) बुद्धिमान्–दुष्यन्त के चरित्र में बुद्धिमत्ता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वह शकुन्तला के रूप से आकृष्ट होने के बाद विवाह करने की तभी सोचता है, जब उसे यह पता चल जाता है कि वह ब्राह्मण की कन्या नहीं है।

(2) मातृभक्त–द्वितीय अङ्क में जब करभक उसकी माता का सन्देश देकर आता है कि "आज से चौथे दिन मेरे उपवास की पारणा होगी। उस समय तुम यहाँ अवश्य उपस्थित रहना" तो वह विवेक से तपस्वियों का भी उल्लंघन नहीं करना चाहता और माता की आज्ञा का पालन भी करना चाहता है।

(3) कलामर्मज्ञ–संगीत और चित्रकला के साथ-साथ दुष्यन्त युद्धकला में भी निपुण है। पञ्चम अङ्क में हंसपदिका की गीति पर उसकी 'अहो, रागपरिवाहिणी गीतिः' यह टिप्पणी उसकी संगीतज्ञता की द्योतक है। वह शकुन्तला का चित्र बनाकर अपनी चित्रकला-पारङ्गतता की सिद्धि करता है। उसकी युद्धकला का पता तब चलता है, जब इन्द्र उसे दानवों से युद्ध करने के लिए स्वर्ग बुलाते हैं।

(4) सहृदय–दुष्यन्त ऋषि-मुनियों का सच्चे मन से सम्मान करनेवाला है। वह आश्रम के मृगों एवं पशु-पक्षियों पर शर-सन्धान नहीं करता है, आश्रम में विनम्र भाव से प्रवेश करता है और आश्रम में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा नहीं डालता।

(5) कुशल शासक–वह सफल शासक है, प्रजापालक है, कर्त्तव्यनिष्ठ है, शूरवीर तथा पराक्रमशील है। वह आश्रम में बाधा उपस्थित करनेवालों से आश्रम की सुरक्षा करता है।

(6) सच्चा प्रेमी–राजा दुष्यन्त एक आदर्श प्रेमी हैं। प्रेम के क्षेत्र में उसका नाम आज भी अमर है। ऋषि शाप से मुक्त होने पर वह अपने परिचय, प्रणय एवं गन्धर्व-विवाह, शकुन्तला एवं उसकी सन्तति सबकी रक्षा करता है तथा अपने वचन का पालन करने का पूरा प्रयास करता है।

(7) नायक–राजा दुष्यन्त अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का नायक है। उसमें नायकत्व सम्बन्धी सभी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उसका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली है।

महर्षि दुर्वासा का चरित्र-चित्रण

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास ने जिन तीन महर्षियों को पात्र के रूप में लिया है, वे हैं—कण्व, दुर्वासा और मारीच। महर्षि दुर्वासा का उपयोग उन्होंने शकुन्तला को शाप देने और फिर शापमुक्त होने का उपाय बताने में किया है। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) क्रोधी– दुर्वासा बहुत क्रोधी हैं। प्रियंवदा उन्हें लौटाकर आश्रम में लाना चाहती है, किन्तु वे नहीं आते। प्रियंवदा उन्हें 'प्रकृतिवक्र' कहती है, वे किसी के अनुनय-विनय पर ध्यान नहीं देते–'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।' प्रियंवदा के शब्दों में वे सुलभकोप महर्षि हैं–'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः।' उनके व्यक्तित्व में कोप अग्नि की तरह है–'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।' वह जैसे शाप देने के अभ्यस्त हैं। वे इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि मैं किसे शाप दे रहा हूँ। उन्होंने शकुन्तला को ऐसा कठोर शाप दिया है जिसकी काट उनके ही पास है।

(2) अतिथि– कण्व के अतिथि के रूप में दुर्वासा की उपस्थिति हुई है। उनके 'अयमहं भोः।' वाक्य को अनसूया अतिथि की आवाज के रूप में ही लेती है। – 'सखि! अतिथीनामिव निवेदितम्।' वे अपनी उपेक्षा से शकुन्तला को अतिथि का तिरस्कार करनेवाली ही समझते हैं–'आः, अतिथिपरिभाविनि।' क्योंकि वे अतिथि हैं, अतः पूजा के लिए अर्ह हैं।

(3) अहङ्कारी – दुर्वासा के व्यक्तित्व में अहंकार साफ झलकता है। वे आश्रम में आते ही जिस स्वर में 'अयमहं भोः' कहते हैं, उससे लगता है कि वे अपेक्षा रखते हैं कि इतना कह देने से ही लोग उन्हें पहचान लेंगे। अपने अहंकार की रक्षा के लिए वे शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं।

गौतमी का चरित्र-चित्रण

गौतमी अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) वात्सल्यमयी– गौतमी में वात्सल्य और भावुकता का स्पष्ट रूप दिखायी देता है। जब शारद्वत आदि उसे आगे कर आश्रम के लिए प्रस्थान करते हैं, तब राजदरबार में शकुन्तला पर उसे तरस आती है और वह शार्ङ्गरव से कहती है– "वत्स शार्ङ्गरव, देखो, रोती हुई शकुन्तला हमारे पीछे-पीछे आ रही है। पति के कठोर हो जाने पर यह करे भी तो क्या करे?"

(2) सामाजिक परम्पराओं की जानकार– गौतमी शब्दशास्त्र की जानकार तो है ही, लोकव्यवहार और शिष्टाचार भी खूब जानती है। जब वनदेवियाँ शकुन्तला के लिए मङ्गलकामना करती हैं, तब वही शकुन्तला को इन्हें प्रणाम करने का निर्देश करती है–"जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।" पाँचवें अङ्क में गौतमी दुष्यन्त को समझाती है कि शकुन्तला का विवाह तुम्हारी सहमति से ही हुआ है। जब राजा दुष्यन्त यह पूछता है क्या मेरा इनसे अर्थात् शकुन्तला से विवाह हुआ है? तब गौतमी ही शकुन्तला का घूँघट हटाकर उसे राजा को दिखाती है, ताकि वह उसे स्वयं देख ले।

(3) सहृदया– गौतमी शकुन्तला की शुभचिन्तक मानी जाती है। शिष्य उसी के हाथों शान्त्युदक भिजवाता है। वही ज्वरग्रस्त शकुन्तला पर दर्भोदक का प्रयोग कर उसे विश्वास दिलाती है कि इससे तुम ठीक हो जाओगी। वह कण्व की आदेशपालिका भी है। कण्व उसे पुकारकर ही कहते हैं कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

(4) जिज्ञासु– शकुन्तला की विदाई के समय आशीर्वाद देती तापसियों के साथ वह भी उपस्थित है। उनके चले जाने के पश्चात् गौतम और नारद दो ऋषिकुमार अलङ्कार लेकर उपस्थित होते हैं, जिन्हें देखकर सबके साथ गौतमी भी आश्चर्यचकित हो जाती है और दो प्रश्न करके अपनी जिज्ञासा व्यक्त करती है–'वत्स नारद, कुत एतत्।' 'किं मानसी सिद्धिः।'

●●

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशतः कुसुमावचयं नाटयन्त्यौ सख्यौ।)

अनसूया – हला प्रियंवदे, यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृत्तं मे हृदयम्, तथाप्येतावच्चिन्तनीयम्।

प्रियंवदा - कथमिव।

अनसूया - अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्यर्षिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।

प्रियंवदा - विस्रब्धा भव। न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति। तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति।

अनसूया - यथाऽहं पश्यामि, तथा तस्यानुमतं भवेत्।

प्रियंवदा - कथमिव?

अनसूया - गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः सङ्कल्पः। तं यदि दैवमेव सम्पादयति नन्वप्रयासेन कृतार्थो गुरुजनः।

प्रियंवदा - (पुष्पभाजनं विलोक्य) सखि, अवचितानि बलिकर्मपर्याप्तानि कुसुमानि।

अनसूया - ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया।

प्रियंवदा - युज्यते।

(इति तदेव कर्माभिनयतः।)

(तदनन्तर पुष्प तोड़ने का अभिनय करती हुई दोनों सखियाँ प्रवेश करती हैं।)

अनसूया - सखि प्रियंवदा, यद्यपि गान्धर्व विधि से जिसका विवाहरूपी मङ्गल कार्य सम्पन्न हो गया है, ऐसी शकुन्तला अपने योग्य पति को प्राप्त हो गयी है, अतः मेरा हृदय सुखी है, फिर भी इतनी बात सोचने की है।

प्रियंवदा - कौन-सी?

अनसूया - आज वह राजर्षि यज्ञ को समाप्त करके (अर्थात् यज्ञ की समाप्ति पर) ऋषियों के द्वारा विदा होकर, अपने नगर में प्रवेश करके अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर, यहाँ के वृत्तान्त को याद करेगा अथवा नहीं?

प्रियंवदा - निश्चिन्त रहो। उस तरह की मनोहर आकृतियोंवाले पुरुष गुणविहीन नहीं हुआ करते। (किन्तु) पिता (कण्व) इस समाचार को सुनकर पता नहीं क्या करेंगे?

अनसूया - जहाँ तक मैं सोचती हूँ, यह उन्हें अभीष्ट ही होगा।

प्रियंवदा - कैसे?

अनसूया - गुणशाली व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह तो (माँ-बाप की) प्रथम अभिलाषा होती है। उसे यदि भाग्य ही सम्पन्न कर देता है, तब तो गुरुजन बिना प्रयास के ही कृतार्थ हो गये।

प्रियंवदा - (फूलों की टोकरी को देखकर) सखि, पूजा-कार्य के लिए पर्याप्त फूल तोड़ लिये गये।
अनसूया - अरे, सखी शकुन्तला के विवाह-देवता की भी पूजा होनी चाहिए।
प्रियंवदा - ठीक है।
(ऐसा कहकर उसी कार्य का अभिनय करती हैं।)

शब्दार्थ - कुसुमावचयम् - पुष्प तोड़ने का, **निर्वृत्तकल्याणा -** जिसका विवाहरूपी मङ्गलकार्य सम्पन्न हो गया है ऐसी, **अनुरूपभर्तृगामिनी -** अपने योग्य पति से संगत, **संवृत्ता -** हो गयी है, **निर्वृत्तम् -** सुखी, प्रसन्न, **चिन्तनीयम् -** सोचने की है, **इष्टिम् -** यज्ञ को, **परिसमाप्य -** समाप्त करके, **अन्तःपुरसमागतः -** अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर, **इतोगतम् -** यहाँ के, **विस्रब्धा** - निश्चिन्त, **गुणविरोधिनः -** गुणविहीन, **पश्यामि -** समझती हूँ, **अनुमतम् -** अभीष्ट, स्वीकृति, **गुणवते-** गुणवान्, **प्रतिपादनीया -** देना चाहिए, **सङ्कल्पः -** अभिलाषा, **दैवम् -** भाग्य, **कृतार्थः -** कृतकार्य, **गुरुजनः -** बड़े लोग, **पुष्पभाजनम् -** फूलों की टोकरी, **अवचितानि -** तोड़ लिये गये, **बलिकर्मपर्याप्तानि -** पूजा कार्य के लिए पर्याप्त, **सौभाग्य देवता -** विवाह के देवता, पूजने चाहिए।

विशेष– राजर्षिः .... ऋषिभिर्विसर्जितः - ऋषियों का यज्ञ निर्विघ्न समाप्त करवाकर, उनसे विदा लेकर राजा दुष्यन्त अपनी राजधानी को लौट गया है। उसके चले जाने के बाद अनसूया वितर्क कर रही है–"यहाँ से लौटकर राजा अब अपनी रानियों के साथ आनन्द का उपभोग करने में मग्न हो जायगा, तब वह शकुन्तला को और उसे दिये अपने वचन को याद करेगा अथवा नहीं?"

आकृतिविशेषा - यह लोकमान्यता है कि 'जिसका स्वरूप सुन्दर होता है, वह अवश्य ही गुणी होता है।' दुष्यन्त का रूप सुन्दर है, अतः वह अवश्य ही सद्गुणों से विभूषित होगा। इसलिए जैसा उसने कहा है, वैसा अवश्य करेगा।

तस्यानुमतं - अनसूया के कहने का अभिप्राय है कि "प्रत्येक लड़की का पिता यह सोचता है कि मेरी कन्या योग्य वर के साथ ब्याही जाय। शकुन्तला ने अपना विवाह चक्रवर्ती सम्राट् से किया है। निश्चय ही पिता कण्व इस कार्य का समर्थन ही करेंगे।

सौभाग्यदेवता- विवाह के अनन्तर कुछ देवी-देवता पूजे जाते हैं। इन्हें सौभाग्य-देवता कहा जाता है। यद्यपि शकुन्तला का गान्धर्व विवाह था, फिर भी उसकी सखियाँ इस माङ्गलिक कृत्य को सम्पन्न कर रही हैं।

(नेपथ्ये)

अयमहं भोः।
अनसूया - (कर्णं दत्त्वा) सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्।
प्रियंवदा - ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।
अनसूया - अद्य पुनर्हृदयेनासन्निहिता। अलमेतावद्भिः कुसुमैः। (इति प्रस्थिते)

(पर्दे के पीछे)

अरे, यह मैं (आ गया) हूँ।
अनसूया - (कान लगाकर) सखि, पूज्य अतिथि की-सी आवाज है।
प्रियंवदा - शकुन्तला तो कुटी में स्थित ही है।
अनसूया - किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है (अर्थात् आज उसका मन कहीं और लगा है।) तो बस, इतना ही फूल पर्याप्त है (ऐसा कहकर दोनों जाने लगीं)।
शब्दार्थ - कर्णं दत्त्वा - कान लगाकर। **अतिथीनाम्** - पूज्य अतिथि की। **उटजसन्निहिता** - कुटी में उपस्थित। **असन्निहिता** - अनुपस्थित।
विशेष - हृदयेनासन्निहिता - कुछ काल तक शकुन्तला के साथ रहकर, विहारकर, दुष्यन्त अपनी राजधानी को वापस चला गया है। उसके बिना शकुन्तला को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। उसकी इन्द्रियाँ आज सही-

सही काम नहीं कर रही हैं। उसका हृदय एकमात्र दुष्यन्त का चिन्तन कर रहा है। यही कारण है कि अनसूया उसे हृदय से अनुपस्थित बता रही है।

(नेपथ्ये)

आः, अतिथिपरिभाविनि,

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥1॥

(पर्दे के पीछे)

ओह, अतिथि का तिरस्कार करनेवाली,

अनन्यहृदयवाली (तुम) जिसको सोचती हुई आये हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही हो, वह उन्मत्त पहले की गयी बात की तरह, याद दिलाने पर भी तुझे नहीं स्मरण करेगा।।1।।

अन्वयः–अनन्यमानसा, (त्वम्), यम्, विचिन्तयन्ती, उपस्थितम्, माम्, तपोधनम्, न, वेत्सि, सः, प्रमत्तः, प्रथमम्, कृताम्, कथाम्, इव, बोधितः सन्, अपि, त्वाम्, न, स्मरिष्यति।।1।।

शब्दार्थ– अनन्यमानसा- अनन्यहृदयवाली, (**त्वम्** - तुम), **यम्** - जिसको, **विचिन्तयन्ती** - सोचती हुई, **उपस्थितम्** - आये हुए, **माम्** - मुझ, **तपोधनम्** - तपस्वी को, **न** - नहीं, **वेत्सि** - देख रही हो, **सः** - वह, **प्रमत्तः** - उन्मत्त। **प्रथमम्** - पहले, **कृताम्** - की गयी, **कथाम्** - बात की, **इव** - तरह, **बोधितः सन्** - याद दिलाने पर, **अपि** - भी, **त्वाम्** - तुझे, **न** - नहीं, **स्मरिष्यति** - याद करेगा।।1।।

विशेष - प्रमत्तः - शराबी व्यक्ति किसी से कोई बात करता है और कुछ क्षणों के बाद ही उसे भूल जाता है। वह बात उसे याद नहीं रहती। यदि कोई उस बात को याद भी दिलाता है, तो वह उसे स्मरण नहीं कर पाता। इसी प्रकार दुष्यन्त न तो स्वयं तुझे पहचानेगा और न याद दिलाने पर ही याद करेगा।

इस श्लोक में काव्यलिङ्ग और उपमा अलङ्कार तथा वंशस्थ छन्द है।

प्रियंवदा - हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तम्। कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला। (पुरोऽवलोक्य) न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः। तथा शप्त्वा वेगबलोत्फुल्लया दुर्वारया गत्या प्रतिनिवृत्तः।

अनसूया - कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। गच्छ। पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं यावदहमर्घोदकमुपकल्पयामि।

प्रियंवदा - तथा। (इति निष्क्रान्ता।)

अनसूया - (पदान्तरे स्खलितं निरूप्य) अहो, आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं ममाग्रहस्तात् पुष्पभाजनम्। (इति पुष्पोच्चयं रूपयति।)

(प्रविश्य)

प्रियंवदा - सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति। किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः।

प्रियंवदा - हाय धिक्कार है, हाय धिक्कार है! अनर्थ ही हुआ। शून्यहृदया शकुन्तला ने किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति अपराध कर दिया है। (सामने देखकर) अरे! जिस किसी (साधारण) व्यक्ति के प्रति ही नहीं (अपराध कर दिया है), यह शीघ्र क्रुद्ध हो जानेवाले महर्षि दुर्वासा हैं। इस प्रकार (शकुन्तला को) शाप देकर अति तीव्र एवं दुर्निवार्य गति से लौट गये।

अनसूया - अग्नि के अलावा और कौन जलाने में समर्थ हो सकता है? जाओ, पैरों पर पड़कर इन्हें लौटा लाओ, जब तक मैं अर्घ और जल (पूजन-सामग्री) तैयार करती हूँ।

प्रियंवदा - ठीक है। (ऐसा कहकर निकल गयी।)

अनसूया - (कुछ चलने पर ठोकर खाकर गिरने का अभिनय करके) ओह, घबराहट से लड़खड़ाती हुई चाल के कारण मेरे हाथ से फूलों की डलिया गिर गयी। (ऐसा कहकर फूलों को बटोरने का अभिनय करती है।)

(प्रवेश करके)

प्रियंवदा - सखि, स्वभाव से ही टेढ़े वह (दुर्वासा) (भला) किसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं? फिर भी कुछ दयालु बना लिये गये हैं।

शब्दार्थ - संवृत्तम् - घटित हुआ, **पूजार्हे** - पूजा के योग्य, **अपराद्धा** - अपराध कर दिया है, **शून्यहृदया** - शून्यहृदय, **सुलभकोपः** - शीघ्र क्रुद्ध हो जानेवाले, **शप्त्वा** - शाप देकर, **वेगबलोत्फुल्लया** - अतितीव्र, **प्रतिनिवृत्तः** - लौटे जा रहे हैं, **हुतवहात् अन्यः** - अग्नि के अलावा, **प्रभवति** - समर्थ हो सकता है। **अर्घोदकम्** - अर्घ और जल, **उपकल्पयामि** - तैयार करती हूँ, **स्खलितम्** - ठोकर खाकर गिरने का, **अभिनीय** - अभिनय करके, **आवेगस्खलितया** - घबराहट से लड़खड़ाती हुई, **गत्या** - चाल के कारण, **पुष्पभाजनम्** - फूलों की डलिया, **पुष्पोच्चयम्** - फूलों को बटोरने का, **रूपयति** - अभिनय करती है, **प्रकृतिवक्रः** - स्वभाव से ही टेढ़े, **अनुनयम्** - प्रार्थना को, **प्रतिगृह्णाति** - स्वीकार करते हैं, **सानुक्रोशः** - दयार्द्र हृदय।

विशेष - शून्यहृदया - शकुन्तला का हृदय दुष्यन्त के चले जाने से विरह-विह्वल है। वह एकमात्र दुष्यन्त के ही विषय में सोच रही है। आस-पास क्या हो रहा है? यह सब उसे कुछ भी ज्ञात नहीं है।

दुर्वासा - महर्षि अत्रि और अनसूया के पुत्र थे। पुराणों में उन्हें अतिक्रोधी के रूप में वर्णित किया गया है।

कोऽन्यो दग्धुम् - भाव यह है कि क्रोधी तपस्वी दुर्वासा जैसा ऋषि ही कण्वपुत्री शकुन्तला को शाप देकर दण्डित कर सकता है, कोई साधारण व्यक्ति नहीं।

अर्घोदकम् - अर्घ और जल। अर्घ - पूजा-सामग्री। इसमें आठ वस्तुएँ रहती हैं– 'आपः क्षीरं कुशाग्रश्च दधि सर्पिः सतण्डुलम्। यवः सिद्धार्थकश्चैवाष्टाङ्गोऽर्घः प्रकीर्तितः।

प्रभ्रष्टम् - हाथ से फूलों की डलिया का गिरना अपशकुन है। इससे यह सूचित होता है कि क्रुद्ध दुर्वासा वापस नहीं लौटेंगे।

अनसूया - (सस्मितम्) तस्मिन् बह्वेतदपि। कथय।

प्रियंवदा - यदा निवर्तितुं नेच्छति तदा विज्ञापितो मया। भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपःप्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।

अनसूया - ततस्ततः।

प्रियंवदा - ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।

अनसूया - शक्यमिदानीमाश्वसितुम्। अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्। तस्मिन् स्वाधीनोपाया शकुन्तला भविष्यति।

अनसूया - (मुस्कराकर) उनके विषय में इतना भी बहुत है। (तो) बतलाओ (आगे क्या हुआ)?

प्रियंवदा - जब वे लौटने के लिए राजी न हुए तब मैंने उनसे प्रार्थना की। भगवन्, (आपके) तप के प्रभाव को न जाननेवाली पुत्री (शकुन्तला) का यह पहला अपराध है, यह जानकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा किया जाना चाहिए।

अनसूया - उसके बाद, उसके बाद?

प्रियंवदा - उसके बाद 'मेरा वचन बदल नहीं सकता, किन्तु पहचान के आभूषण के दिखलाने से शाप समाप्त हो जायगा' – यह कहते हुए ही वे अदृश्य हो गये।

अनसूया - अब धैर्य रखा जा सकता है। प्रस्थान करते हुए स्वयं उस राजर्षि (दुष्यन्त) के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में पहनायी गयी है। उससे शकुन्तला (शाप छुड़ाने के) उपाय में स्वतन्त्र होगी।

शब्दार्थ - निवर्तितुम् - लौटने के लिए, **प्रेक्ष्य** - समझकर, **अविज्ञाततपःप्रभावस्य** - तपस्या के प्रभाव को न जाननेवाली, **दुहितृजनस्य** - पुत्री का, **मर्षयितव्यः** - क्षमा करने के योग्य है, **अन्यथा** - दूसरा, **अभिज्ञानाभरणदर्शनेन** - पहचान का आभूषण दिखलाने से, **मन्त्रयमाणः** - कहते हुए ही, **अन्तर्हितः** - अदृश्य हो गये, **स्वनामधेयाङ्कितम्** - अपने नाम से अङ्कित, **अङ्गुलीयकम्** - अँगूठी, **स्मरणीयम्** - स्मृतिचिह्न, **पिनद्धम्** - पहनायी गयी, **स्वाधीनोपाया** - स्वतन्त्र।

विशेष - अभिज्ञानाभरणदर्शनेन - सदा ही प्रेमी युगल बिछुड़ते हैं तो निशानी के रूप में एक-दूसरे को कुछ-न-कुछ दे देते हैं। इस तरह की निशानी प्रायः अँगूठी, गले की माला आदि ही हुआ करती है। यह साधारण और सर्वप्रचलित बात है। शाप से छूटने के लिए दुर्वासा यही उपाय बतला रहे हैं।

स्वाधीनोपाया - भाव यह है कि यदि दुष्यन्त शकुन्तला को पहचानने में देर करे या न पहचाने तो शकुन्तला इस अँगूठी को दिखलाकर उसे स्मरण करा सकती है। ऐसा करने में शकुन्तला समर्थ तथा स्वतन्त्र रहेगी।

प्रियंवदा - सखि, एहि। देवकार्यं तावद् निर्वर्तयावः। (इति परिक्रामतः।)

प्रियंवदा - (विलोक्य) अनसूये, पश्य तावत्। वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी। भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।

अनसूया - प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु। रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।

प्रियंवदा - को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।

(इत्युभे निष्क्रान्ते।)

विष्कम्भकः।

प्रियंवदा - सखि, आओ। इस समय देवकार्य (अर्थात् देव-पूजा) पूरा करें। (ऐसा कहकर दोनों घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) अनसूया, देखो तो। बायें हाथ पर मुँह रखे हुए प्रियसखी (शकुन्तला) चित्रित-सी (बैठी) है। पति में लगी चिन्ता के कारण यह अपने-आपको भी भूल गयी है, फिर अतिथि के विषय में क्या कहना?

अनसूया - प्रियंवदा, यह वृत्तान्त हम दोनों तक ही सीमित रहे। निश्चय ही, स्वभाव से ही सुकुमार प्रियसखी (शकुन्तला) रक्षा करने के योग्य है।

प्रियंवदा - भला कौन व्यक्ति गरम जल से नवमालिका को सींचेगा (इस प्रकार बात-चीत करके दोनों निकल गयीं।)

।विष्कम्भक समाप्त।

शब्दार्थ - निर्वर्तयावः - निभायें, पूरा करें, **वामहस्तोपहितवदना** - बायें हाथ पर मुँह रखे हुए, **आलिखिता** - चित्रित, **विभावयति** - पहचान रही है, **आगन्तुकम्** - अतिथि को, **रक्षितव्या** - रक्षा करने के योग्य, रक्षणीय है, **प्रकृतिपेलवा** - स्वभाव से ही सुकुमार, **उष्णोदकेन** - गरम जल से, **विष्कम्भकः** - प्रवेशक।

रक्षितव्या - अनसूया के कहने का भाव यह है कि दुर्वासा के शाप की बात हम दोनों के अलावा कोई तीसरा व्यक्ति न जानने पाये। यदि यह समाचार कर्णपरम्परा से शकुन्तला तक पहुँचा तो अनर्थ ही हो जायगा। सुनते ही वह प्राणों को छोड़ सकती है, क्योंकि वह अत्यन्त सुकुमार है। इसलिए रक्षितव्या कहा है।

उष्णोदकेन - नवमालिका अत्यन्त सुकोमल लता होती है। अति सावधानी से पालन करने पर ही बढ़ती है। यदि उसकी जड़ में गरम जल डाला जाय, तो वह कुछ ही घण्टों में सूखकर विनष्ट हो जायगी। शकुन्तला को दुर्वासा के शाप की बात बताना नवमालिका को गरम जल से सींचना है।

विष्कम्भक - नाटकों के अङ्कों के मध्य में मध्यरंग का दृश्य, जो दो मध्यम अथवा निम्न दर्जे के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें श्रोताओं के सामने अङ्कों के अन्तराल में तथा बाद में होनेवाली घटनाओं को संक्षेप में कहकर नाटक की कथावस्तु के अवान्तर भागों का नाटक की मुख्यकथा से सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाता है। साहित्यदर्पण में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी जाती है – 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भः आदावङ्कस्य दर्शितः।'

(ततः प्रविशति सुप्तोत्थितः शिष्यः।)

शिष्यः - वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि तत्रभवता प्रवासादुपावृत्तेन काश्यपेन। प्रकाशं निर्गतस्तावदवलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्या इति। (परिक्रम्यावलोक्य च) हन्त, प्रभातम्। तथाहि–

(तदनन्तर सोकर उठा हुआ शिष्य प्रवेश करता है।)

शिष्य - प्रवास से वापस आये हुए आदरणीय कण्व के द्वारा समय का परिज्ञान करने के लिए आदेश दिया गया हूँ। तो (बाहर) प्रकाश में निकलकर देखता हूँ कि रात्रि कितनी अवशिष्ट है। (चारों ओर घूमकर और देखकर) वाह, प्रातःकाल हो गया है। जैसे कि–

शब्दार्थ - सुप्तोत्थितः - सोकर उठा हुआ, **वेलोपलक्षणार्थम्** - समय का परिज्ञान करने के लिए, **आदिष्टः** - आज्ञप्त, **प्रवासात्** - प्रवास से, **उपावृत्तेन** - वापस आये हुए, **काश्यपेन** - कश्यप के कुल में उत्पन्न कण्व के द्वारा, **रजन्याः** - रात्रि का, **हन्त** - यह प्रसन्नता-सूचक अव्यय है।

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु॥2॥

एक ओर (धान आदि) शस्यों का स्वामी (चन्द्रमा) अस्ताचल के शिखर को जा रहा है। (और) दूसरी ओर अरुण (नामक अपने सारथि) को आगे किये हुए सूर्य उदित हो रहा है। (इस प्रकार) यह संसार दो तेजों के एक साथ अस्त एवं उदित होने से, अपनी अवस्थाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो शिक्षा दिया जा रहा है।।2।।

अन्वय–एकतः, ओषधीनाम्, पतिः, अस्तशिखरम्, याति, एकतः, अरुणपुरःसरः, अर्कः आविष्कृतः, लोकः, तेजोद्वयस्य, युगपत्, व्यसनोदयाभ्याम्, आत्मदशान्तरेषु, नियम्यते, इव।।2।।

शब्दार्थ - एकतः - एक ओर, **ओषधीनाम्** - (धान आदि) शस्यों का, **पतिः** - स्वामी (चन्द्रमा), **अस्तशिखरम्** - अस्ताचल के शिखर को, **याति** - जा रहा है, **एकतः** - एक ओर, **अरुणपुरःसरः** - अरुण को आगे किये हुए, **अर्कः** - सूर्य, **आविष्कृतः** - प्रकट हो रहा है, उदित हो रहा है; **लोकः** - संसार, **तेजोद्वयस्य** - दो तेजों के, **युगपत्** - एक साथ, **व्यसनोदयाभ्याम्** - एक साथ अस्त एवं उदित होने से, **आत्मदशान्तरेषु** - अपनी अवस्थाओं के परिवर्तित होने के विषय में, सुख-दुःख के विषय में; **नियम्यते** - शिक्षा दिया जा रहा है, **इव** - सा, तरह।।2।।

विशेष - ओषधीनां पतिः - यहाँ अत्यन्त मनोरम अर्थ सूचित किया गया है। कवि का भाव यह है - "ओषधियाँ अत्यन्त दुःसह मरण आदि हजारों विपत्तियों को विनष्ट करनेवाली हैं, किन्तु समय आ जाने पर, उनकी क्या बात, उनका पति चन्द्र भी नाश को प्राप्त हो रहा है।"

दशान्तरेषु - सूर्य और चन्द्र देव हैं। दूसरों को वरदान देने में समर्थ हैं, किन्तु काल-क्रम से वे भी उन्नति तथा अवनति को प्राप्त करते हैं, अतः वे सारी जगती को शिक्षा दे रहे हैं कि उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम है। देवता भी इस नियम से नहीं बच सकते हैं। इसलिए मनुष्यों को भी चाहिए कि वे अपनी उन्नति के समय हर्ष तथा अवनति के समय विषाद न करें।

महाकवि कालिदास ने ही मेघदूत (2/48) में भी कहा है–

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

इस श्लोक में समासोक्ति, तुल्ययोगिता, उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा वसन्ततिलका छन्द है।

अपि च–

अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे
दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।
इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि॥3॥

और भी—

चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर स्मरणीय शोभावाली वही कुमुदिनी मेरी आँखों को नहीं आनन्दित कर रही है। वस्तुतः स्त्रियों का (अपने) प्रेमी व्यक्ति के परदेश-गमन से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य हुआ करता है।।3।।

अन्वय–शशिनि, अन्तर्हिते, संस्मरणीयशोभा सा, एव, कुमुद्वती, मे, दृष्टिम्, न, नन्दयति; नूनम्, अबलाजनस्य, इष्टप्रवासजनितानि, दुःखानि, अतिमात्रसुदुःसहानि, (भवन्ति) ।।3।।

शब्दार्थ– शशिनि - चन्द्रमा के, **अन्तर्हिते -** अस्त हो जाने पर, **संस्मरणीयशोभा -** केवल स्मरण का विषय है शोभा जिसकी ऐसी, **सा -** वह, **एव -** ही, **कुमुद्वती -** कुमुदिनी, **मे -** मेरी, **दृष्टिम् -** आँख को, **न -** नहीं, **नन्दयति -** आनन्दित कर रही है, **नूनम् -** वस्तुतः निश्चय ही, **अबलाजनस्य -** स्त्रियों के लिए, **इष्टप्रवासजनितानि -** प्रेमी व्यक्ति के परदेश-गमन से उत्पन्न, **दुःखानि -** दुःख, **अतिमात्रसुदुःसहानि -** अत्यन्त असह्य, (**भवन्ति -** हुआ करते हैं) ।।3।।

विशेष–संस्मरणीयशोभा–केवल स्मरण का विषय है शोभा जिसकी ऐसी। चन्द्रमा के रहने पर रात में ही कुमुदिनी विकसित होती है। चन्द्रमा की अनुपस्थिति में कुमुदिनी मलिन हो जाती है। विकास की अवस्था में कुमुदिनी लोगों की आँखों को अपनी ओर आकृष्ट करती है, परन्तु मलिनावस्था में वही कुमुदिनी आँखों को आनन्दित नहीं करती है। यहाँ कुमुदिनी को नायिका और चन्द्र को नायक के रूप में चित्रित किया गया है। नायक चन्द्र यद्यपि सकलङ्क है, फिर भी कुमुदिनी उसके लिए मलिन हो रही है। इसी प्रकार नायक दुष्यन्त भी सकलङ्क है, किन्तु शकुन्तला उसके लिए विकल है।

इस श्लोक में समासोक्ति, काव्यलिङ्ग, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार तथा वसन्ततिलका छन्द है।

जीवनानन्द विद्यासागर, शारदारञ्जन राय तथा चौखम्भा के संस्करणों में निम्नलिखित दो और श्लोक दिये गये हैं। काले तथा निर्णयसागर के संस्करणों में ये श्लोक नहीं हैं–

1 - अपि च –

कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या
दार्भं मुञ्चत्युटजपटलं वीतनिद्रो मयूरः।
वेदिप्रान्तात् खुरविलिखितादुत्थिश्चैष सद्यः
पश्चादुच्चैर्भवति हरिणः स्वाङ्गमायच्छमानः॥

और भी -

प्रातःकालीन सन्ध्या बेर की झाड़ियों के ऊपर ओस की बूँदों को रक्तवर्ण की बना रही है। जगा हुआ मोर कुशनिर्मित कुटीर की छत को छोड़ रहा है और यह हरिण खुर से खोदे गये यज्ञ-वेदी के पार्श्वभाग से उठकर अपने शरीर को फैलाता हुआ शीघ्र ही शरीर के पिछले भाग से ऊँचा हो रहा है।

अन्वय–अग्रसन्ध्या कर्कन्धूनाम् उपरि तुहिनं रञ्जयति। वीतनिद्रः मयूरः दार्भम् उटजपटलं मुञ्चति। खुरविलिखितात्, वेदिप्रान्तात् उत्थितः एषः हरिणः च स्वाङ्गमायच्छमानः सद्यः पश्चात् उच्चैः भवति।

शब्दार्थ– अग्रसन्ध्या - प्रातःकालीन सन्ध्या, **कर्कन्धूनाम् -** बेर की झाड़ियों के, **उपरि -** ऊपर, **तुहिनम् -** ओस

की बूँदों को, **रञ्जयति** - रक्तवर्ण की बना रही है, **वीतनिद्रः** - जागा हुआ, **मयूरः** - मोर, **दार्भम्** - कुशनिर्मित, **उटजपटलम्** - कुटीर की छत को, **मुञ्चति** - छोड़ रहा है, **च** - और, **एषः** - यह, **हरिणः** - हरिण, **खुरविलिखितात्** - खुर से खोदे गये, **वेदिप्रान्तः** - यज्ञ-वेदी के पार्श्वभाग से, **उत्थितः** - उठकर, **स्वाङ्गम्** - अपने शरीर को, **आयच्छमानः** - फैलाता हुआ, **सद्यः** - शीघ्र ही, **पश्चात्** - शरीर के पिछले भाग से, **उच्चैः** - ऊँचा, **भवति** - हो रहा है।

2 - अपि च –

पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः
क्रान्तं येन क्षपिततमसा मध्यमं धाम विष्णोः।
सोऽयं चन्द्रः पतति गगनादल्पशेषैर्मयूखै-
रत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा॥

और भी -

अन्धकार को नष्ट करके जिसने पर्वतराज सुमेरु के शृङ्ग पर पैर (किरण) विन्यास करके विष्णु के मध्यम स्थान (आकाश) को व्याप्त कर लिया था, वहीं यह चन्द्रमा थोड़े बचे हुए किरणों के साथ आकाश से गिर रहा है। महान् लोगों की अत्यधिक उन्नति पतन का कारण हुआ करती है।

अन्वय–क्षपिततमसा येन क्षितिधरगुरोः सुमेरोः मूर्ध्नि पादन्यासं कृत्वा विष्णोः मध्यमं धाम क्रान्तं सः अयं चन्द्रः अल्पशेषैः मयूखैः गगनात् पतति। महताम् अपि अत्यारूढिः अपभ्रंशनिष्ठा भवति।

शब्दार्थ– क्षपिततमसा - अन्धकार को नष्ट करके, **येन** - जिसने, **क्षितिधरगुरोः** - पर्वतराज, **सुमेरोः** - सुमेरु के, **मूर्ध्नि** - शृङ्ग पर, **पादन्यासम्** - पैर (किरण) विन्यास को, **कृत्वा** - करके, **विष्णोः** - विष्णु के, **मध्यमम्** - मध्यम, **धाम** - स्थान को, **क्रान्तम्** - व्याप्त कर लिया था, **सः** - वही, **अयम्** - यह, **चन्द्रः** - चन्द्रमा, **अल्पशेषैः** - थोड़े बचे हुए, **मयूखैः** - किरणों के साथ, **गगनात्** - आकाश से, **पतति** - गिर रहा है, **महताम्** - महान् लोगों की, **अत्यारूढिः** - अत्यधिक उन्नति, **अपभ्रंशनिष्ठा** - पतन का कारण, **भवति** - हुआ करती है।

(प्रविश्यापटीक्षेपेण)

अनसूया–यद्यपि नाम विषयपराङ्मुखस्य जनस्यैतन्न विदितं तथापि तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।

शिष्यः–यावदुपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि।

(इति निष्क्रान्तः।)

अनसूया–प्रतिबुद्धाऽपि किं करिष्यामि। न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु हस्तपादं प्रसरति। काम इदानीं सकामो भवतु, येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता। अथवा दुर्वाससः शाप एष विकारयति। अन्यथा कथं स राजर्षिस्तादृशानि मन्त्रयित्वैतावतः कालस्य लेखमात्रमपि न विसृजति। तदितोऽभिज्ञानमङ्गुलीयकं तस्य विसृजावः। दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति व्यवसिताऽपि न पारयामि प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य तातकाश्यपस्य दुष्यन्तपरिणीतामापन्नसत्त्वां शकुन्तलां निवेदयितुम्। इत्थंगतेऽस्माभिः किं करणीयम्।

(बिना पर्दा हटाये ही प्रवेश करके)

अनसूया–यद्यपि विषयों से विमुख जन (हम लोगों) को यह सब ज्ञात नहीं है, तो भी उस राजा (दुष्यन्त) के द्वारा शकुन्तला के साथ अभद्र आचरण किया गया है।

शिष्यः–तो उपस्थित इस हवन की वेला को गुरु (कण्व) से निवेदन करता हूँ अर्थात् गुरु से निवेदन करता हूँ कि हवन की वेला हो गयी है।

(ऐसा कहकर निकल गया।)

अनसूया–जगकर भी क्या करूँगी? दैनिक कार्यों में भी हाथ-पैर नहीं चल रहे हैं। काम अब सफलमनोरथ हो, जिसने झूठी प्रतिज्ञावाले व्यक्ति के साथ निष्कपट हृदयवाली सखी (शकुन्तला) का प्रेम कराया है अथवा दुर्वासा का शाप यह गड़बड़

उत्पन्न कर रहा है। नहीं तो, कैसे वह राजर्षि उस प्रकार के आश्वासनों को देकर भी इतने दिनों से एक पत्र भी नहीं भेज रहा है। तो यहाँ से, पहचान के लिए दी गयी अँगूठी उसके पास हम भेजेंगी। निरन्तर कष्ट सहन करनेवाले तपस्विजनों में किससे प्रार्थना की जाय? सखी (शकुन्तला) पर दोष जायगा। इसलिए (कहने के लिए) उद्यत होकर भी मैं प्रवास से वापस आये हुए पिता कण्व से यह निवेदन करने में असमर्थ हूँ कि शकुन्तला दुष्यन्त के साथ विवाहित हो गयी है और वह गर्भिणी है। ऐसी दशा में हमें क्या करना चाहिए?

शब्दार्थ– अपटीक्षेपेण - बिना पर्दा हटाये ही, अपने हाथ से पर्दा हटाकर, **प्रविश्य -** प्रवेश करके, **विषयपराङ्मुखस्य -** विषयों से विमुख, **अनार्यम् -** अनुचित, अभद्र; **आचरितम् -** आचरण किया गया है, **होमवेलाम् -** हवन की वेला को, **प्रबुद्धा -** जगी हुई, **उचितेषु -** अभ्यस्त, **निजकरणीयेषु -** अपने दैनिक कार्यों में, **सकामः -** सफल मनोरथ, **असत्यसन्धे -** झूठी प्रतिज्ञावाले, **शुद्धहृदया -** निष्कपटहृदयवाली, **अभिज्ञानम् -** निशानी, पहचान के लिए दी गयी, **अङ्गुलीयकम् -** अँगूठी, **सखीगामी -** सखी पर आ पड़ेगा, **व्यवसिता -** तत्पर, **प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य -** परदेश से वापस आये हुए, **दुष्यन्तपरिणीताम् -** दुष्यन्त के साथ विवाहित, **आपन्नसत्त्वाम् -** गर्भिणी, **इत्थंगते -** ऐसी दशा में।

विशेष–अपटीक्षेपेण–नियम यह है कि बिना पूर्व सूचना के किसी पात्र का रङ्गमञ्च पर प्रवेश नहीं हुआ करता, किन्तु जब कभी कोई अत्यावश्यक सूचना देनी होती है अथवा किसी घबराहट की अवस्था में पात्र अपने हाथ से पर्दे को जरा एक ओर करके बगल से रङ्गमञ्च पर आ जाते हैं तो इसे अपटीक्षेप प्रवेश कहते हैं।

अनार्यम्–दुष्यन्त जब से आश्रम से गया तब से शकुन्तला का कोई हाल-चाल भी नहीं मँगाया। अपने वादों को पूरा नहीं किया। यही कारण है कि अनसूया उसके व्यवहार को अनुचित बतला रही है।

कामः–युवक-युवतियों को प्रेम-पाश में फँसाकर पीड़ित करना ही कामदेव की इच्छा रहती है, अतः अब उसकी इच्छा पूरी हो गयी है, क्योंकि शकुन्तला दुष्यन्त के लिए मर रही है और वह इसकी खबर भी नहीं ले रहा है।

अङ्गुलीयकम्–अनसूया उस अँगूठी की बात कर रही है, जिसे दुष्यन्त ने जाने के समय शकुन्तला को दिया था।

दुःखशीले–तपस्वी लोग दुःख झेलकर तपस्या करनेवाले हैं, अतः प्रेमसन्देश को ले जाने में कौन सहायक होगा?

(प्रविश्य)

प्रियंवदा –(सहर्षम्) सखि, त्वरस्व त्वरस्व शकुन्तलायाः प्रस्थानकौतुकं निर्वर्तयितुम्।

अनसूया – सखि, कथमेतत्।

प्रियंवदा – शृणु। इदानीं सुखशयितपृच्छिका शकुन्तलासकाशं गताऽस्मि।

अनसूया – ततस्ततः।

प्रियंवदा – तावदेनां लज्जावनतमुखीं एनां परिष्वज्य तातकाश्यपे-नैवमभिनन्दितम्। दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि पावक एवाहुतिः पतिता। वत्से, सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता। अद्यैव ऋषिरक्षितां त्वां भर्तुः सकाशं विसर्जयामि।

(प्रवेश करके)

प्रियंवदा – (प्रसन्नतापूर्वक) सखि, शकुन्तला के पतिगृह-गमन-काल के मङ्गल को पूरा करने के लिए जल्दी करो, जल्दी करो।

अनसूया – सखि, यह कैसे (सम्भव हुआ)?

प्रियंवदा – सुनो। सुखपूर्वक सोना हुआ या नहीं, यह पूछने की इच्छा से मैं अभी-अभी शकुन्तला के पास गयी थी।

अनसूया – उसके बाद, उसके बाद (क्या हुआ)?

प्रियंवदा – तब लज्जा के कारण नीचे मुख झुकाये हुए इस (शकुन्तला) को गले लगाकर पिता कण्व के द्वारा इस प्रकार अभिनन्दन किया गया–'सौभाग्य से धुएँ से विह्वल आँखवाले भी यजमान की आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी है। बेटी, योग्य शिष्य को प्रदान की गयी विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गयी हो। आज ही ऋषियों की देख-रेख में तुम्हें (तुम्हारे) पति के पास भेज दे रहा हूँ।'

शब्दार्थ–प्रस्थानकौतुकम् – प्रस्थान के समय किये जानेवाले मङ्गल को, **निर्वर्तयितुम् -** निष्पन्न करने के लिए, पूरा करने के लिए, **सुखशयनपृच्छिका -** सुखपूर्वक सोना हुआ या नहीं यह पूछने की इच्छा से, **लज्जावनतमुखीम् -** लज्जा के कारण नीचे मुख झुकाये हुए, **परिष्वज्य -** गले लगाकर, **अभिनन्दितम् -** अभिनन्दन किया गया, **दिष्ट्या -** सौभाग्य से, **धूमाकुलितदृष्टेः -** धुएँ से विह्वल आँखवाले, **अशोचनीया -** अशोचनीय , **संवृत्ता -** हो गयी हो, **ऋषिरक्षिताम् -** ऋषियों की देख-रेख में।

टिप्पणी–प्रस्थानकौतुकम् - कौतुक का अर्थ है– माङ्गलिक कार्य अथवा मङ्गलाचार। प्रस्थान के समय किये जानेवाले माङ्गलिक कृत्य को प्रस्थानकौतुक कहते हैं।

धूमाकुलितदृष्टेः–यजमान हवन कर रहा था। धुएँ से उसकी आँखें व्याकुल हो उठीं। आँखें मूँदे ही उसने आहुति फेंकी। पर सौभाग्य तो यह कि वह जाकर सीधे आग में ही पड़ी। ठीक यही बात शकुन्तला की है। शकुन्तला ने अपने पिता कण्व की अनुपस्थिति में दुष्यन्त से विवाह किया। पर संयोग और सौभाग्य की बात यह है कि उसने अभिभावक की अनुपस्थिति में भी सुयोग्य वर का वरण किया है।

सुशिष्यपरिदत्ता–जिस प्रकार अत्यन्त योग्य शिष्य को पढ़ायी गयी विद्या के विषय में गुरु नहीं सोचता कि मेरी पढ़ायी विद्या का सदुपयोग होगा या नहीं। वह यह खूब जानता है कि मेरी विद्या अवश्य ही बढ़ेगी, फैलेगी। इसी प्रकार योग्य पात्र के हाथ में शकुन्तला के पड़ जाने से कण्व को भी उसके विषय में सोच करने की आवश्यकता नहीं है।

अनसूया – अथ केन सूचितस्तातकाश्यपस्य वृत्तान्तः।
प्रियंवदा – अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।
अनसूया – (सविस्मयम्) कथमिव।

अनसूया – अच्छा, किसके द्वारा तात काश्यप (कण्व) को यह समाचार बतलाया गया?

प्रियंवदा – यज्ञशाला में गये हुए (उनको) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी के द्वारा (यह सूचना दी गयी)।

अनसूया – (आश्चर्य के साथ) किस प्रकार?

शब्दार्थ – सूचितः - बतलाया गया, **वृत्तान्तः -** समाचार, **अग्निशरणम् -** यज्ञशाला में, **सविस्मयम् -** आश्चर्य के साथ।

विशेष – अग्निशरणम् - यज्ञशाला को अग्निशरण कहते हैं। इसमें तीन कुण्ड बने होते हैं। तीनों में तीन अग्नियाँ स्थापित रहती हैं। इनके नाम हैं - गार्हपत्य अग्नि, आहवनीय अग्नि तथा दक्षिणाग्नि।

छन्दोमय्या – छन्दोबद्ध आकाशवाणी के द्वारा।

प्रियंवदा – (संस्कृतमाश्रित्य)
दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥4॥

प्रियंवदा–(संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर अर्थात् संस्कत में)

हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज (वीर्य) को, भूमण्डल के कल्याण के लिए, धारण की हुई पुत्री को, अपने अन्दर आग को धारण करनेवाली शमी की तरह पवित्र समझो।।4।।

अन्वय–ब्रह्मन्, दुष्यन्तेन, आहितम्, तेजः, भुवः, भूतये, दधानाम्, तनयाम्, अग्निगर्भाम् शमीम्, इव, अवेहि।।4।।

शब्दार्थ– ब्रह्मन् - हे ब्रह्मन्, **दुष्यन्तेन -** दुष्यन्त के द्वारा, **आहितम् -** स्थापित, **तेजः -** तेज को, **भुवः -** भूमण्डल के, **भूतये -** कल्याण के लिए, **दधानाम् -** धारण की हुई, **तनयाम् -** पुत्री को, **अग्निगर्भाम् -** अपने अन्दर आग को धारण करनेवाली, **शमीम् -** शमी की, **इव -** तरह, **अवेहि -** समझो।।4।।

विशेष–भूतये भुवः - इससे यह सूचित होता है कि शकुन्तला का यह गर्भस्थ पुत्र आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट् होगा।

अग्निगर्भां शमीम् - शमी वृक्ष के अन्दर अग्नि के प्रवेश की घटना महाभारत के अनुशासन तथा शल्य पर्व में वर्णित

है। अनुशासन पर्व के अनुसार घटना इस प्रकार है – देवों की प्रार्थना पर अग्नि ने शिव के वीर्य को धारण किया, किन्तु वीर्य के तेज को सहन करने की शक्ति अग्नि में न थी, अतः उसने क्रमशः पीपल और शमी में प्रवेश किया। देवों ने अग्नि को ढूँढ़कर शमी को अग्नि का स्थायी आधार बना दिया। दूसरी कथा शल्य पर्व में इस प्रकार है– भृगु के शाप से भयभीत अग्नि ने शमी वृक्ष में प्रवेश किया। यही कारण है कि थोड़ी रगड़ से भी शमी से आग प्रकट हो जाती है।

अनसूया – (प्रियंवदामाश्लिष्य) सखि, प्रियं मे। किन्त्वद्यैव शकुन्तला नीयत इत्युत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि।

प्रियंवदा – सखि, आवां तावदुत्कण्ठां विनोदयिष्यावः। सा तपस्विनी निर्वृता भवतु।

अनसूया – तेन ह्येतस्मिंश्चूतशाखावलम्बिते नारिकेलसमुद्गके एतन्निमित्तमेव कालान्तरक्षमा निक्षिप्ता मया केसरमालिका। तदिमां हस्तसंनिहितां कुरु। यावदहमपि तस्यै गोरोचनां तीर्थमृत्तिकां दूर्वाकिसलयानीति मङ्गलसमालम्भनानि विरचयामि।

अनसूया–(प्रियंवदा का आलिङ्गन करके) सखि, मेरे लिए बहुत प्रिय (समाचार) है, किन्तु आज ही शकुन्तला (पतिगृह) ले जायी जा रही है, इसलिए उत्कण्ठा (खेद) के कारण सामान्य सन्तोष का अनुभव कर रही हूँ।

प्रियंवदा–सखि, हम दोनों तो (अपने) खेद को दूर कर लेंगी। वह तपस्विनी सुखी हो।

अनसूया–तो ठीक है। इस आम की डाली में लटकते हुए नारियल के डिब्बे में बहुत दिनों तक ताजी रहनेवाली केसर की एक सुन्दर-सी माला, इसी अवसर के लिए, मेरे द्वारा रखी गयी है। तो इसे तुम हाथ में ले लो। मैं भी तब तक उसके लिए गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी तथा दूब के अग्रभाग आदि माङ्गलिक अङ्गराग (की सामग्री) को तैयार करती हूँ।

शब्दार्थ– उत्कण्ठासाधारणम् - खेद के कारण सामान्य, **परितोषम् -** सन्तोष को, सन्तोष का, **तपस्विनी -** बेचारी, **निर्वृता -** सुखी, **चूतशाखावलम्बिते -** आम की डाली में लटकते हुए, **नारिकेलसमुद्गके -** नारियल के गोल्लक (डिब्बे) में, **कालान्तरक्षमा -** बहुत दिनों तक ताजी रहनेवाली, **निक्षिप्ता -** रखी गयी, **केसरमालिका -** केसर की सुन्दर-सी माला, **हस्तसंनिहिताम् -** हाथ में स्थापित, हाथ में लेना, **मङ्गलसमालम्भनानि -** माङ्गलिक लेपन को, शरीर पर लगाने के लिए माङ्गलिक अङ्गराग अथवा उबटन को।

विशेष– कालान्तरक्षमा - इस कथन से प्रतीत होता है कि कालिदास के समय में भी आज के रेफ्रिजरेटर का कोई छोटा रूप प्रचलित था। उस समय लोग नारियल के गोल्लक में कोई पालिश लगाते थे, जिससे उसके भीतर रखी गयी चीज बहुत दिनों तक अपने स्वाभाविक रूप में वर्तमान रहा करती थी।

प्रियंवदा- तथा क्रियताम्।

(अनसूया निष्क्रान्ता। प्रियंवदा नाट्येन सुमनसो गृह्णाति।)

(नेपथ्ये)

गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय।

प्रियंवदा - (कर्णं दत्त्वा) अनसूये, त्वरस्व त्वरस्व। एते खलु हस्तिनापुरगामिनः ऋषयः शब्दाय्यन्ते।

प्रियंवदा- वैसा ही करो।

(अनसूया निकल गयी। प्रियंवदा फूलों को लेने का अभिनय करती है।)

(पर्दे के पीछे)

गौतमी, शकुन्तला को (हस्तिनापुर) पहुँचाने के लिए श्रेष्ठ शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

प्रियंवदा– (कान लगाकर) अनसूया, शीघ्रता करो, शीघ्रता करो। निश्चय ही ये हस्तिनापुर को जानेवाले ऋषि बुलाये जा रहे हैं।

शब्दार्थ– सुमनसः - फूलों को, **शार्ङ्गरवमिश्राः -** शार्ङ्गरव हैं प्रधान जिनमें, शार्ङ्गरव आदि, **हस्तिनापुरगामिनः -** हस्तिनापुर को जानेवाले।

विशेष– शार्ङ्गरवमिश्राः – मिश्र शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है– (1) मिश्रित अथवा इत्यादि तथा (2) पूज्य अथवा प्रधान। यहाँ मिश्र शब्द प्रधान अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

(प्रविश्य समालम्भनहस्ता)

अनसूया - सखि, एहि। गच्छावः। (इति परिक्रामतः।)

प्रियंवदा - (विलोक्य) एषा सूर्योदय एव शिखामज्जिता प्रतीष्टनीवारहस्ताभिः स्वस्तिवाचनिकाभिस्तापसीभिरभिनन्द्यमाना शकुन्तला तिष्ठति। उपसर्पाव एनाम्। (इत्युपसर्पतः।)

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टव्यापारा आसनस्था शकुन्तला)

तापसीनामन्यतमा - (शकुन्तलां प्रति) जाते, भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व।

द्वितीया - वत्से, वीरप्रसविनी भव।

तृतीया - वत्से, भर्तुर्बहुमता भव।

(इत्याशिषो दत्त्वा गौतमीवर्जं निष्क्रान्ताः।)

सख्यौ - (उपसृत्य) सखि, सुखमज्जनं ते भवतु।

शकुन्तला -स्वागतं मे सख्योः। इतो निषीदतम्।

(माङ्गलिक लेपन को हाथ में लिये हुए प्रवेश करके)

अनसूया - सखि, आओ, चलें (ऐसा कहकर दोनों चारों ओर घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) सूर्योदय के समय ही पूर्ण स्नान किये हुए यह शकुन्तला, नीवार हाथ में लिये हुए स्वस्तिवाचन का पाठ करती हुई, तपस्विनियों से अभिनन्दन की जाती हुई बैठी है। (तो) हम दोनों इसके पास चलें। (ऐसा कहकर उसके पास जाती हैं।)

(तदनन्तर पूर्वनिर्दिष्ट रूप से आसन पर बैठी हुई शकुन्तला प्रवेश करती है)

तपस्विनियों में से एक - (शकुन्तला के प्रति) बेटी, पति के अत्यन्त आदरसूचक महादेवी शब्द को प्राप्त करो।

दूसरी - पुत्री, वीर पुत्र को जन्म देनेवाली हो।

तीसरी - बेटी, पति की अत्यन्त प्यारी बनो।

(इस प्रकार आशीर्वाद देकर गौतमी को छोड़कर सभी निकल गयीं।)

दोनों सखियाँ - (पास जाकर) सखि, तेरा स्नान सुखकारक हो (अर्थात् तुम सर्वदा सुखी रहो)।

शकुन्तला - मेरी सखियों का स्वागत है। इस ओर बैठिये।

शब्दार्थ– समालम्भनहस्ता - माङ्गलिक लेपन को हाथ में लिये हुए, **शिखामज्जिता -** सिर धोकर स्नान किये हुए, पूर्ण स्नान किये हुए, **प्रतीष्टनीवारहस्ताभिः -** लिया है नीवार हाथ में जिन्होंने, नीवार हाथ में लिये हुए, **स्वस्तिवाचनिकाभिः -** स्वस्तिवाचन का पाठ करती हुई, **तापसीभिः -** तपस्विनियों से, **अभिनन्द्यमाना -** अभिनन्दन की जाती हुई, **यथोद्दिष्टव्यापारा -** पुर्वनिर्दिष्ट रूप से, **भर्तुः -** पति के, **बहुमानसूचकम् -** अत्यन्त आदर को सूचित करनेवाले, **महादेवीशब्दम् -** महादेवी शब्द को, **वीरप्रसविनी -** वीर पुत्र को जन्म देनेवाली, **बहुमता -** अत्यन्त प्रिय, **गौतमीवर्जम् -** गौतमी को छोड़कर, **सुखमज्जनम् -** सुखदायक स्नान, **इतः -** इस ओर।

विशेष–नीवारहस्ताभिः - आज भी स्त्रियाँ विवाह आदि किसी माङ्गलिक कार्य में खाली हाथ नहीं जातीं। वे हाथ में कोई-न-कोई अन्न लेकर ही जाती हैं, क्योंकि खाली हाथ जाना अशुभ माना जाता है।

महादेवीशब्दम्–राजा अपनी अत्यन्त प्रियतमा पटरानी को सर्वदा महादेवी कहा करता था। महादेवी का ही बेटा राज्य का उत्तराधिकारी हुआ करता था।

उभे – (मङ्गलपत्राण्यादाय। उपविश्य) हला, सज्जा भव। यावत्ते मङ्गलसमालम्भनं विरचयावः।

शकुन्तला -इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति। (इति बाष्पं विसृजति।)

उभे – **सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्। (इत्यश्रूणि प्रमृज्य नाट्येन प्रसाधयतः।)**

प्रियंवदा – आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते।

(प्रविश्योपायनहस्तावृषिकुमारकौ)

उभौ – **इदमलंकरणम्। अलंक्रियतामत्रभवती।**

(सर्वा विलोक्य विस्मिताः।)

गौतमी – वत्स नारद, कुत एतत्।

प्रथमः – तातकाश्यपप्रभावात्।

गौतमी – किं मानसी सिद्धिः।

दोनों – (माङ्गलिक पत्तों को लेकर और बैठकर) सखि, सावधान हो जाओ। हम लोग तुम्हारा माङ्गलिक अलङ्करण (सजावट) करेंगी।

शकुन्तला – यह भी बहुत मानने के योग्य है। (क्योंकि) अब मेरे लिये सखियों के द्वारा अलंकृत होना दुर्लभ हो जायगा। (ऐसा कहकर आँसू बहाती है।)

दोनों – सखि, मङ्गल के समय पर तुम्हारा रोना उचित नहीं है। (ऐसा कहकर आँसू पोंछकर सजाने का अभिनय करती हैं।)

प्रियंवदा – आभूषणों के योग्य (शकुन्तला का यह) सौन्दर्य आश्रम में प्राप्त पुष्प आदि प्रसाधनों से विकृत किया जा रहा है।

(हाथ में उपहार लिये हुए दो ऋषिकुमार प्रवेश करके)

दोनों–यह है आभूषण। आदरणीया (शकुन्तला) को अलंकृत किया जाय।

(सभी देखकर आश्चर्यचकित होती हैं।)

गौतमी – वत्स नारद, कहाँ से यह प्राप्त हुआ?

पहला – पिता कण्व के प्रभाव से।

गौतमी – क्या (यह उनके) मानसिक संकल्प के फल हैं?

शब्दार्थ– मङ्गलपत्राणि - माङ्गलिक पत्तों को, **सज्जा -** सावधान, **सखीमण्डनम् -** सखियों के द्वारा अलंकृत होना, **प्रसाधयतः -** अलंकृत करती हैं, **आभरणोचितम् -** आभूषणों के योग्य, **आश्रमसुलभैः -** आश्रम में प्राप्य, **प्रसाधनैः -** प्रसाधनों से, **विप्रकार्यते-** विकृत किया जा रहा है, **उपायनहस्तौ -** हाथ में उपहार लिये हुए, **अलङ्करणम् -** आभूषण, **अत्रभवती -** आदरणीया शकुन्तला, **विस्मिताः -** आश्चर्य से चकित, **मानसी -** मानसिक, **सिद्धिः -** सफलता।

विशेष–मङ्गलसमालम्भनम् - विवाह आदि के अवसर पर युवतियों के गालों पर कस्तूरी आदि से फूल-पत्तियाँ बनायी जाती थीं। उनके जूड़े में, कानों में तथा बाँहों आदि में फूल तथा पत्तियाँ बाँधी जाती थीं। यही मङ्गलसमालम्भन कहलाता है।

आभरणोचितम्–संसार की बहुत-सी वस्तुएँ सजा देने से द्विगुणित सुन्दर हो जाती हैं। शकुन्तला का अनुपम सौन्दर्य बहुमूल्य अलङ्कारों से सजा देने पर अत्यन्त लुभावना बन जाता है। यही कारण है कि प्रियंवदा उसे आभरणों के योग्य बतला रही है।

विप्रकार्यते–विकृत किया जा रहा है। आभूषणों से चेहरे का सौन्दर्य बढ़ता है, किन्तु इन फूलों-पत्तों से तो शकुन्तला का दमकता रूप कुछ विकृत-सा प्रतीत होता है। इनसे शकुन्तला के सौन्दर्य की श्रीवृद्धि नहीं हो रही है, अपितु शकुन्तला के सौन्दर्य से इनकी श्रीवृद्धि हो रही है।

मानसी सिद्धिः – मन से सोचते ही जो वस्तु आकर सामने उपस्थित हो जाय उसे मानसी सिद्धि अथवा मानसिक संकल्प का फल कहते हैं।

द्वितीयः – न खलु। श्रूयताम्। तत्रभवता वयमाज्ञप्ताः शकुन्तलाहेतोर्वनस्पतिभ्यः कुसुमान्याहरतेति। तत इदानीम् –

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं

निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुभगो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै-
र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः॥5॥

दूसरा—नहीं। सुनो। पूज्य पिता कण्व के द्वारा हम लोगों को आज्ञा मिली कि शकुन्तला के लिए पेड़-पौधों से फूलों को चुनकर लाओ। उसके बाद अब-

किसी वृक्ष के द्वारा चन्द्रमा की तरह धवल माङ्गलिक रेशमी वस्त्र प्रकट किया गया। किसी (वृक्ष) के द्वारा पैरों में उपयोग के योग्य अलक्तक टपकाया गया। अन्य (वृक्षों) के द्वारा कलाई तक निकले हुए तथा उनके निकलते हुए किसलयों (कोपलों) की प्रतिस्पर्धा करनेवाले वन-देवता के करतलों से आभूषण दिये गये।।5।।

अन्वय—केनचित्, तरुणा, इन्दुपाण्डु, माङ्गल्यम्, क्षौमम्, आविष्कृतम्; केनचित्, चरणोपभोगसुलभः, लाक्षारसः, निष्ठ्यूतः, अन्येभ्यः, आपर्वभागोत्थितैः, तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः, वनदेवताकरतलैः, न आभरणानि दत्तानि।।5।।

शब्दार्थ— केनचित् - किसी, **तरुणा -** वृक्ष के द्वारा, **इन्दुपाण्डु -** चन्द्रमा की तरह धवल, **माङ्गल्यम् -** माङ्गलिक, **क्षौमम् -** रेशमी वस्त्र, **आविष्कृतम् -** प्रकट किया गया, प्रकट करके दिया गया, **केनचित् -** किसी (वृक्ष) के द्वारा, **चरणोपभोगसुलभः -** पैरों में उपयोग के योग्य, **लाक्षारसः -** अलक्तक, महावर, **निष्ठ्यूत -** चुवाया गया, टपकाया गया; **अन्येभ्यः -** अन्य (वृक्षों) से, **आपर्वभागोत्थितैः -** कलाई तक निकले हुए, **तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः -** उनके निकलते हुए किसलयों (कोंपलों) की प्रतिस्पर्धा करनेवाले, **वनदेवताकरतलैः -** वनदेवता के करतलों से, **आभरणानि -** आभूषण, **दत्तानि -** दिये गये।।5।।

विशेष— वनस्पतिभ्यः — आजकल वनस्पति शब्द का प्रयोग वृक्षमात्र के लिए किया जाता है, किन्तु वनस्पति का पारिभाषिक अर्थ है– बिना पुष्प के ही फल प्रदान करनेवाले वृक्ष। 'अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः।' (मनु0 3-47)।

उपमा अलङ्कार, शार्दूलविक्रीडित छन्द।

प्रियंवदा — (शकुन्तलां विलोक्य) हला, अनयाऽभ्युपपत्त्या सूचिता ते भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः।
(शकुन्तला व्रीडां रूपयति।)

प्रथमः — गौतम, एह्येहि। अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय वनस्पतिसेवां निवेदयावः।

द्वितीयः — तथा। (इति निष्क्रान्तौ।)

सख्यौ — अये, अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः। चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु ते आभरणविनियोगं कुर्वः।

शकुन्तला — जाने वां नैपुणम्। (उभे नाट्येनालंकुरुतः।)

प्रियंवदा — (शकुन्तला को देखकर) सखि, (वनस्पतियों के) इस अनुग्रह से सूचित होता है कि तुम्हारे द्वारा पति के घर में राजलक्ष्मी अनुभव की जायगी (अर्थात् तुम पति-गृह में राजलक्ष्मी का उपभोग करोगी)।

(शकुन्तला लज्जा का अभिनय करती है।)

पहला — गौतम आओ-आओ। स्नान करके (नदी से) निकले हुए काश्यप से वृक्षों की (इस) सेवा को निवेदित कर दें।

दूसरा — ठीक है। (इस प्रकार दोनों निकल गये।)

दोनों सखियाँ — ओह, हम लोगों ने कभी आभूषणों का उपयोग नहीं किया है। (तो भी) चित्रों को देखने से प्राप्त अनुभव के द्वारा तुम्हारे अंगों में आभूषणों को पहना रहे हैं।

शकुन्तला — मैं तुम दोनों की निपुणता को जानती हूँ।

(दोनों अभिनयपूर्वक आभूषण पहनाती हैं।)

शब्दार्थ— हला - सखी, **अभ्युपपत्त्या -** अनुग्रह से, **अनुभवितव्या -** अनुभव की जायगी, **अभिषेकोत्तीर्णाय -** स्नान करके (नदी से) निकले हुए, **वनस्पतिसेवाम् -** वृक्षों की सेवा को, **अनुपयुक्तभूषणः -** जिसने कभी आभूषण का

उपयोग नहीं किया है ऐसा, **चित्रकर्मपरिचयेन -** चित्रकारी से परिचय होने के कारण या चित्रों को देखने से प्राप्त अनुभव के कारण, **आभरणविनियोगम् -** आभूषणों का विन्यास, **नैपुणम् -** निपुणता को।

विशेष– राजलक्ष्मीः - वनदेवता के द्वारा अकस्मात् बहुमूल्य आभूषणों के दिये जाने से यह बात सूचित होती है कि भविष्य में तुम ऐश्वर्य का उपभोग करोगी। आभूषणों की उपलब्धि भावी सुख के लिए शकुन है।

चित्रकर्मपरिचयेन–इसके दो अर्थ हो सकते हैं - स्वयं चित्र बनाने के कार्य से परिचित होने के कारण अथवा दूसरों के द्वारा निर्मित चित्रों के देखने से प्राप्त संस्कार के कारण।

(ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः।)

काश्यपः -

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः॥6॥
(इति परिक्रामति।)

(तदनन्तर स्नान करके आये हुए काश्यप प्रवेश करते हैं।)

काश्यप–आज शकुन्तला (पतिगृह) जायगी, इसलिए हृदय दुःख से भर रहा है। गला अश्रु रोकने से अवरुद्ध है, दृष्टि चिन्ता के कारण निश्चेष्ट हो गयी है। वन में निवास करनेवाले मुझे इस समय शकुन्तला के प्रति स्नेह के कारण ऐसी विकलता है, तो गृहस्थ लोग पहली बार होनेवाले पुत्री के वियोग से उत्पन्न महान् दुःख से कितना पीड़ित होते होंगे?।।6।।

(ऐसा कहते हुए चारों ओर घूमते हैं।)

अन्वय–अद्य, शकुन्तला, यास्यति, इति, हृदयम्, उत्कण्ठया, संस्पृष्टम्, कण्ठः, स्तम्भितवाष्पकलुषः, (आस्ते), दर्शनम्, चिन्ताजडम् (वर्तते); अरण्यौकसः, मम, तावत्, स्नेहात्, ईदृशम्, इदम्, वैक्लव्यम्, (आस्ते, तर्हि), गृहिणः, नवैः, तनयाविश्लेषदुःखैः, कथं नु, पीड्यन्ते।।6।।

शब्दार्थ– अद्य - आज, **शकुन्तला -** शकुन्तला, **यास्यति -** जायगी, **इति -** इसलिए, **हृदयम् -** हृदय, **उत्कण्ठया -** दुःख से, **संस्पृष्टम् -** संस्पृष्ट हो रहा है, भर रहा है, **कण्ठः -** गला, **स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषः -** रोके गये अश्रु-प्रवाह से भरा हुआ है, **दर्शनम् -** दृष्टि, **चिन्ताजडम् -** चिन्ता के कारण निश्चेष्ट, (**वर्तते** - हो गयी है), **अरण्यौकसः -** वन में निवास करनेवाले, **मम -** मुझे, **तावत् -** इस समय, **स्नेहात् -** स्नेह के कारण, **ईदृशम् -** ऐसी, **इदम् -** यह, **वैक्लव्यम् -** विकलता, (**आस्ते -** है, **तर्हि -** तो,) **गृहिणः -** गृहस्थ लोग, **नवैः -** पहली बार होनेवाले, **तनयाविश्लेषदुःखैः -** पुत्री के वियोग से उत्पन्न महान् दुःख से, **कथं नु -** क्यों न, कितना, **पीड्यन्ते -** पीड़ित होते होंगे?।।6।।

विशेष–अरण्यौकसः....गृहिणः - वन में वे लोग निवास करते हैं, जो सांसारिक मोह-माया छोड़ चुके होते हैं, गृहस्थी में होनेवाले सम्बन्धों से ऊपर उठ चुके रहते हैं। शकुन्तला के पतिगृह-गमन के समय जब वनवासी कण्ठ को इतनी विह्वलता है, तो गृहस्थ लोगों को कितनी होती होगी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

सख्यौ - हला शकुन्तले, अवसितमण्डनाऽसि। परिधत्स्व साम्प्रतं क्षौमयुगलम्। (शकुन्तलोत्थाय परिधत्ते।)
गौतमी - जाते, एष ते आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व।
शकुन्तला - (सव्रीडम्) तात, वन्दे।

दोनों सखियाँ– सखि शकुन्तला, तुम्हें सजाने-सँवारने का कार्य पूरा हो गया। अब (तुम) दोनों रेशमी वस्त्रों को धारण करो। (शकुन्तला उठकर पहनती है।)

गौतमी– बेटी, आनन्द से उमड़े हुए आँसुओं को बहानेवाले नेत्रों से तुम्हें गले से लगाते हुए तेरे पिता यहाँ उपस्थित हैं, अतः शिष्टाचार पूरा करो।

शकुन्तला– (लज्जापूर्वक) पिता जी, प्रणाम कर रही हूँ।

शब्दार्थ– हला - हे सखि, **अवसितमण्डना -** समाप्त मण्डनवाली, जिसका शृङ्गार पूरा हो गया है, **परिधत्स्व -** पहनो, धारण करो, **साम्प्रतम् -** अब, **क्षौमयुगलम् -** दोनों रेशमी वस्त्रों को, **आनन्दपरिवाहिणा -** आनन्द से (उमड़े हुए आँसुओं को) बहानेवाले, **परिष्वजमानः -** गले लगाते हुए या आलिङ्गन करते हुए। **आचारम् -** शिष्टाचार को, **प्रतिपद्यस्व -** सम्पन्न करो। **सव्रीडम् -** लज्जापूर्वक।

विशेष– आचारं प्रतिपद्यस्व - पिता आदि गुरुजनों के आ जाने पर उठकर अगवानी करना, उन्हें प्रणाम करना तथा योग्य आसन पर बैठाना आदि आचार कहा गया है। इसी आचार को सम्पन्न करने के लिए गौतमी शकुन्तला से कह रही है।

काश्यपः - वत्से–

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि॥7॥

गौतमी– भगवन्, वरः खल्वेषः। नाशीः।

काश्यपः - वत्से, इतः सद्योहुतानग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व।

(सर्वे परिक्रामन्ति।)

काश्यप - पुत्री,

शर्मिष्ठा ययाति की (जैसे अतिप्रिय रानी थी उसी) तरह (तुम भी) पति की अत्यन्त प्रिया बनो। उस (शर्मिष्ठा) ने जैसे (सम्राट् पुत्र) पुरु को (प्राप्त किया), (उसी प्रकार) तुम भी सम्राट् पुत्र को प्राप्त करो।।7।।

गौतमी - भगवन्; निश्चय ही यह वर है, केवल आशीर्वाद नहीं।

काश्यप - पुत्री, इधर अभी हवन की गयी अग्नियों की प्रदक्षिणा करो।

(सभी प्रदक्षिणा करते हैं।)

अन्वय–शर्मिष्ठा, ययातेः, इव; भर्तुः, बहुमता, भव; सा, पूरुम्, इव; त्वम्, अपि, सम्राजम्, सुतम्, अवाप्नुहि।।7।।

शब्दार्थ– शर्मिष्ठा - शर्मिष्ठा, **ययातेः -** ययाति की, **इव -** तरह, **भर्तुः -** पति की, **बहुमता -** अत्यन्त प्रिया, **भव -** बनो, **सा-** वह, **पूरुम् -** पुरु को, **इव -** जैसे, **त्वम् -** तुम, **अपि-** भी, **सम्राजम् -** सम्राट्, **सुतम् -** पुत्र को, **अवाप्नुहि -** प्राप्त करो।।7।।

विशेष– ययातेः इव - ययाति नहुष का पुत्र था। उसने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा दासी के रूप में देवयानी के साथ गयी। इसका कारण यह था कि शर्मिष्ठा ने किसी समय देवयानी का अपमान किया था। इसी अपमान की क्षतिपूर्ति के लिए शर्मिष्ठा को देवयानी की सेविका बनना पड़ा, परन्तु ययाति इस दासी के सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया और उसने इससे गान्धर्व विवाह कर लिया। इस बात से खिन्न होकर देवयानी अपने पिता के पास चली गयी। शुक्राचार्य ने ययाति को शाप दिया कि वह शीघ्र असमय में ही वृद्ध हो जाय। ययाति ने जब बहुत अनुनय-विनय किया, तब प्रसन्न होकर शुक्राचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बुढ़ापे को जिस किसी को दे सकता है, यदि वह लेना स्वीकार करे तो। उसने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा, किन्तु सबसे छोटे पुत्र को छोड़कर किसी ने भी बुढ़ापा लेना स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप ययाति ने अपना बुढ़ापा पुरु को देकर उसकी युवावस्था ले ली। अन्त में ययाति ने पुरु को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। पुरु शर्मिष्ठा का बेटा था।

उपमा अलङ्कार, अनुष्टुप् छन्द।

काश्यपः– (ऋक्छन्दसाऽऽशास्ते।) वत्से,

अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः
समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।
अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धै–

वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु॥8॥

प्रतिष्ठस्वेदानीम्। (सदृष्टिक्षेपम्) क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः।

काश्यप - (ऋग्वेद के छन्द में बने श्लोक से आशीर्वाद देते हैं) पुत्री,

समिधाओं से प्रज्वलित, वेदी के चारों ओर प्रतिष्ठित, किनारे पर बिछाये गये कुशों से युक्त ये यज्ञीय अग्नियाँ हवन की गयी वस्तुओं की सुगन्ध से पाप को विनष्ट करती हुई तुझे पवित्र करें।।8।।

अब प्रस्थान करो। (इधर-उधर दृष्टि डालकर) कहाँ हैं शार्ङ्गरव आदि?

अन्वय - समिद्वन्तः, वेदिम्, परितः, क्लृप्तधिष्ण्याः, प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः, वैतानाः, अमी, वह्नयः, हव्यगन्धैः, दुरितम्, अपघ्नन्तः, त्वाम्, पावयन्तु।।8।।

शब्दार्थ– समिद्वन्तः - समिधाओं से प्रज्वलित, **वेदिम् -** वेदी के, **परितः -** चारों ओर, **क्लृप्तधिष्ण्याः -** प्रतिष्ठित, **प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः -** किनारे पर बिछाये गये कुशों से युक्त, **वैतानाः -** यज्ञीय, **अमी -** ये, **वह्नयः -** अग्नियाँ, **हव्यगन्धैः -** हवन की गयी वस्तुओं की सुगन्ध से, **दुरितम् -** पाप को, **अपघ्नन्तः -** विनष्ट करती हुई, **त्वाम् -** तुझे, **पावयन्तु -** पवित्र करें।।8।।

विशेष– क्लृप्तधिष्ण्याः - वेदी में तीन अग्नियों की स्थापना की जाती है। इन तीन अग्नियों के नाम हैं (1) गार्हपत्य (2) दक्षिण और (3) आहवनीय। इनमें गार्हपत्य अग्नि वेदी के पश्चिम हिस्से में, दक्षिण अग्नि वेदी के दक्षिण-पश्चिम कोने में तथा आहवनीय अग्नि वेदी के पूर्व हिस्से में स्थापित होती है।

संस्तीर्णदर्भाः– वेदी के चारों ओर कुशा बिछायी जाती है।

परिकर अलङ्कार, वैदिक त्रिष्टुप् छन्द।

(प्रविश्य)

शिष्यः - भगवन्, इमे स्मः।

काश्यपः - भगिन्यास्ते मार्गमादेशय।

शार्ङ्गरवः - इत इतो भवती। (सर्वे परिक्रामन्ति।)

काश्यपः - भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः।

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥9॥

(प्रवेश करके)

शिष्य - भगवन्, यह हम लोग हैं।

काश्यप - अपनी बहन (शकुन्तला) को मार्ग बतलाओ।

शार्ङ्गरव - आप इधर से, इधर से चलें। (सभी घूमते हैं।)

काश्यप - हे हे समीपस्थ तपोवन के तरुओ !

आप लोगों को बिना जल पिलाये जो पहले जल पीने के लिए प्रयास नहीं करती थी (अर्थात् जल नहीं पीती थी), आभूषणप्रिय होते हुए भी जो आप लोगों पर स्नेह के कारण नवीन पत्तों को नहीं तोड़ती थी, आप लोगों के प्रथम फूल निकलने के समय पर जिसका उत्सव होता था, वही यह शकुन्तला पतिगृह जा रही है, सभी लोग अनुमति दें।।9।।

अन्वय–युष्मासु, अपीतेषु, या प्रथमम्, जलम्, पातुम्, न व्यवस्यति, प्रियमण्डना, अपि, या, भवताम्, स्नेहेन, पल्लवम्, न, आदत्ते; वः, आद्ये, कुसुमप्रसूतिसमये, यस्याः, उत्सवः, भवति, सा, इयम्, शकुन्तला, पतिगृहम्, याति, सर्वैः, अनुज्ञायताम्।।9।।

शब्दार्थ - युष्मासु - तुम लोगों को, आप लोगों को, **अपीतेषु -** बिना जल पिलाये, **या -** जो, **प्रथमम् -** पहले, **जलम् -**

जल, **पातुम् -** पीने के लिए, **न -** नहीं, **व्यवस्यति -** प्रयास करती थी, **प्रियमण्डना -** आभूषणप्रिय होते हुए, **अपि -** भी, **या -** जो, **भवताम् -** आप लोगों पर, **स्नेहेन -** स्नेह के कारण, **पल्लवम् -** नवीन पत्तों को, **न -** नहीं, **आदत्ते -** तोड़ती थी, **वः-** आप लोगों के, **आद्ये-** प्रथम, **कुसुमप्रसूतिसमये -** फूल निकलने के समय पर, **यस्याः -** जिसका, **उत्सवः -** उत्सव, **भवति -** होता था, **सा -** वही, **इयम् -** यह, **शकुन्तला -** शकुन्तला, **पतिगृहम् -** पतिगृह, ससुराल, **याति -** जा रही है, **सर्वैः -** सभी लोग, **अनुज्ञायताम् -** अनुमति दें।।9।।

विशेष– प्रथमम् - शकुन्तला प्रातःकाल उठकर अपने दैनन्दिन कार्यों से निवृत्त होकर पहले आश्रम के वृक्षों को सींचती थी। उसके बाद ही स्वयं जल पीती थी। वृक्षों को बिना सींचे वह कभी जल न पीती थी।

उत्सवः - वृक्षों में पहले-पहल पुष्प निकलने पर शकुन्तला प्रसन्न होकर उत्सव मनाती थी।

काव्यलिङ्ग, समासोक्ति अलङ्कार, शार्दूलविक्रीडित छन्द।

(कोकिलरवं सूचयित्वा)

अनुमतगमना शकुन्तला
तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।
परभृतविरुतं कलं यथा
प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्।।10।।

(कोयल की कूक के सुनने का अभिनय करके)

यह शकुन्तला वनवास के साथी वृक्षों के द्वारा जाने की अनुमति पा गयी, क्योंकि मनोहर कोकिल की कूक को इन्होंने इस प्रकार (अपना) प्रत्युत्तर बनाया है।।10।।

अन्वय–इयम्, शकुन्तला, वनवासबन्धुभिः, तरुभिः, अनुमतगमना; यथा, कलम्, परभृतविरुतम्, एभिः ईदृशम्, प्रतिवचनीकृतम्।।10।।

शब्दार्थ– इयम् - यह, **शकुन्तला-** शकुन्तला, कण्वपुत्री, **वनवासबन्धुभिः -** वनवास के साथी, **तरुभिः -** वृक्षों के द्वारा, **अनुमतगमना -** जाने की अनुमति पा गयी, **यथा -** जैसे कि, क्योंकि, **कलम् -** मनोहर, **परभृतविरुतम् -** कोकिल की कूक को, **एभिः -** इन्होंने, **ईदृशम् -** इस प्रकार, **प्रतिवचनीकृतम् -** (अपना) प्रत्युत्तर बनाया है।।10।।

विशेष– परभृतविरुतम्– यात्रा के समय कोकिल का कूजन मङ्गलसूचक माना गया है। स्वजन भी यात्रा के प्रारम्भ में मङ्गल वचन बोलते हैं। मङ्गल वचन सुनकर व्यक्ति यात्रा आदि कार्य प्रारम्भ करते हैं। वृक्ष शकुन्तला के स्वजन हैं, अतः उन्होंने कोयल की आवाज के बहाने शकुन्तला को प्रस्थान करने की अनुमति प्रदान की है।

परभृत– कोयल अपने छोटे बच्चों को कौवे के घोंसले में रख देती है। मूर्ख कौवा रङ्ग की समानता के कारण कोयल के बच्चे को अपना बच्चा समझकर पालता-पोसता है। बड़ा होने पर कोयल का बच्चा उड़कर अपनी जाति के साथ जाकर मिल जाता है। यही कारण है कि कोयल को **पर -** दूसरे के द्वारा **भृत -** पाला-पोसा गया कहा जाता है।

परिणाम अलङ्कार, अपवक्त्र छन्द।

●●

सूक्तिपरक वाक्यों की संदर्भ सहित व्याख्या

1. गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया।

सन्दर्भ – प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या–शकुन्तला के साथ गान्धर्व विवाह के पश्चात् दुष्यन्त हस्तिनापुर चला गया। प्रियंवदा चिन्तित है कि पिता कण्व प्रवास से लौटने के बाद इस विवाह से प्रसन्न होंगे अथवा नहीं। अनसूया का कहना है कि तात काश्यप इससे प्रसन्न होंगे, क्योंकि ऐसा गुणवान् व्यक्ति उन्हें घर-बैठे ही मिल गया है और गुणवान् व्यक्ति को ही कन्या देनी चाहिए।

2. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्?

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – अनसूया चिन्तित है कि यहाँ से जाने के पश्चात् दुष्यन्त ने यहाँ का कोई समाचार जानने का प्रयास नहीं किया। वह सोचती है कि यदि किसी सन्देशवाहक से पता लगाया जाय, तो यहाँ से किसे भेजा जाय। यहाँ के तपस्वी भला प्रेम-प्रसंग को क्या जानें। इसलिए इन चिड़चिड़े, तपस्वियों में से किससे प्रार्थना की जाय, समझ में नहीं आता।

3. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – अनसूया की चिन्ता का समाधान करती हुई प्रियंवदा कहती है कि "विश्वास रखो। राजा दुष्यन्त की जैसी सुन्दर आकृति है ऐसी आकृतियाँ कभी गुण विरोधिनी नहीं होती हैं क्योंकि 'यत्राकृति तत्र गुणा वसन्ति' ऐसा भी कहा जाता है।" इस प्रकार राजा भव्याकृति है और वह शकुन्तला को भुला नहीं सकता।

4. कोऽन्यो हुतवहाद् दुग्धुं प्रभवति।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – ऋषि दुर्वासा लौटते समय कुपित होकर शकुन्तला को शाप दे देते हैं, तब घबरायी हुई प्रियंवदा कहती है कि अग्नि के अतिरिक्त भला कौन जला सकता है! प्रियंवदा का मानना है, जिस प्रकार जलाना अग्नि का सहज गुण है, उसी प्रकार एकदम क्रोध आना और शाप देना दुर्वासा ऋषि का स्वभाव है। अतः ये निश्चित ही दुर्वासा हैं।

5. को नाम उष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति?

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – प्रियंवदा से अनसूया कहती है कि दुर्वासा के शाप का वृत्तान्त वह शकुन्तला को न बताये। प्रियंवदा कहती है कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो गर्म जल से नवमालिका को सींचे। भाव यह है कि नवमालिका बहुत कोमल लता होती है, उसे यदि गर्म जल से सींचा जाये तो वह मुरझा जाती है। शकुन्तला भी स्वभाव से कोमल है, यदि उसे शाप की बात बतायी जायेगी तो उसकी वही दशा होगी जो गर्म जल से सींचने पर नवमालिका की होती है।

6. तेजो द्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां,

अथवा लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – समय का पता लगाने के लिए महर्षि काश्यप का एक शिष्य कुटिया से बाहर आता है। वह देखता

है कि प्रभात हो गया। एक ओर चन्द्रमा छिप रहा है, तो दूसरी ओर सूर्य का उदय हो रहा है। इस प्रकार दो तेजस्वी पदार्थ एक ही समय में अस्त और उदय होकर अपनी विशेष दशाओं में मानो संसार को नियमित कर रहे हैं। संसार में दुःख-सुख का कोई नियम नहीं। यहाँ एक ही समय में एक दुःखी तो दूसरा सुखी, रहता है। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता रहता है। इससे शकुन्तला के भावी दुःख की व्यंजना होती है।

7. दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एव आहुतिः पतिता।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – अनसूया को प्रियंवदा बताती है कि तीर्थयात्रा से वापस आने पर तात काश्यप ने शकुन्तला से कहा था कि पुत्री! यह बहुत शुभ है कि यजमान की दृष्टि धुएँ से व्याकुल होने पर भी आहुति अग्नि में ही पड़ी। महर्षि का तात्पर्य यह है कि यदि यज्ञ करनेवाले की दृष्टि धुएँ से व्याकुल होने पर भी आहुति अग्नि में ही पड़े तो सौभाग्य की बात है। इसी प्रकार कोई युवती कामातुर होने पर किसी अयोग्य पुरुष से भी प्रेम कर सकती है। किन्तु शकुन्तला ने कामुक होकर भी दुष्यन्त जैसे योग्य राजा को पति बनाया, यह उसके लिए सौभाग्य की बात है।

8. वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येव अशोचनीया संवृत्ता।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – यह काश्यप ऋषि की प्रियंवदा द्वारा पुनरुक्ति है। महर्षि ने दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह के बाद कहा था कि तुम सुयोग्य शिष्य को दी गयी विद्या के समान अशोचनीय हो गयी हो। उनका तात्पर्य यह है कि कुशिष्य विद्या का दुरुपयोग करता है इसलिए कुशिष्य को दी गयी विद्या शोक का कारण हो जाती है। किन्तु सुयोग्य शिष्य को दी गयी विद्या सफल होती है, उसके विषय में कभी शोक नहीं होता। इस प्रकार सुयोग्य वर को दी गयी कन्या शकुन्तला के विषय में भी चिन्ता करने की कोई बात नहीं।

9. पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – काश्यप ऋषि शकुन्तला के वियोग की आशंका में दुःखी हैं तथा वे कहते हैं कि जब हम जैसे वनवासी तपस्वी भी अपनी पुत्री के वियोग में इस प्रकार दुःखी होते हैं तब गृहस्थ लोग पुत्री के वियोग के दुःख में अधिक पीड़ित क्यों न होंगे।

10. इष्ट प्रवासजनितान्यबलाजनस्य,
दुःखानिनूनमतिमात्रसुदुःसहानि॥

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत सूक्ति में कवि प्रकृति के माध्यम से मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रवास जाने से उत्पन्न वियोग के दुःख का प्रातःकाल की बेला में शिष्य के द्वारा चित्रण करा रहा है।

हिन्दी अनुवाद – निश्चय ही स्त्रीजनों को प्रियजन के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असहनीय होते हैं।

हिन्दी व्याख्या – महाकवि कालिदास वस्तुस्थिति का यथावत् वर्णन करने में सिद्ध हस्त हैं। यहाँ पर सोकर उठे हुए कण्व-शिष्य ने प्रातःकाल में चन्द्रमा को अस्त होते हुए देखा एवं कुमुदनी ने भी अपनी सुन्दरतम् आभा को समेटे हुए देखा है। कुमुदनी को प्रकाशित करने वाला चन्द्रमा मानो उसका प्रियजन है। उसके प्रवास में जाने से कुमुदनी मुरझा गयी है। वस्तुतः प्राकृतिक निर्जीव पदार्थों का स्वभाव है कि वे भी संयोग वियोग की संवेदना को अपनी प्रक्रिया से अभिव्यक्त कर देते हैं। इन्हें भी अपने प्रिय के समागम की अपेक्षा बनी रहती है।

वस्तुतः जब कुमुदनी की चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर यह दशा हो जाती है। इसी प्रकार निश्चय ही स्त्रीजनों का

प्रियजन के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असहनीय एवं कान्ति हीन हो जाता है। इसी प्रकार शकुन्तला की भी स्थिति दुष्यन्त के बिना ऐसी ही हो गयी है।

11. चित्रकर्म परिचयेनाङ्गेषु ते आभरण विनियोग कुर्वः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत अभिकथन शकुन्तला की दोनों सखियों द्वारा किया जा रहा है। वन में वृक्षों के अनुग्रह से शकुन्तला को अलंकृत करने के लिए प्राकृतिक आभूषण उपलब्ध करा दिये गये हैं। आश्रमवासी तपस्वी सदा अध्ययन में निरत रहने वाले हैं। वहाँ आभूषणों के माध्यम से कोई भी और कभी अपने को सजाता-संभारता नहीं है। इसलिए प्राप्त आभूषणों का उपयोग किन अंगों पर कैसे किया जाये का सजीव एवं सहज चित्रण किया गया है।

हिन्दी अनुवाद – चित्रों में जैसा अलंकरण देखा है उससे परिचित होने से तुम्हारे अंगों पर आभूषण पहनाती हैं।

हिन्दी व्याख्या – प्रस्तुत अभिकथन का आशय कवि तद्कालीन आश्रम निवासियों के सरलतम जीवन-शैली का स्वाभाविक एवं सहज चित्रण कर रहा है। गुरु और शिष्य एवं शिष्यायें आश्रम में रहते हुए सांसारिक भोग-विलासिताओं की वस्तुओं एवं साधनों से सर्वथा अपरिचित हैं। यथा– शकुन्तला के लिए वनदेवता ने वृक्षों के अनुग्रह से आभूषण उपलब्ध करा दिये हैं। परन्तु पूर्व में उनका प्रयोग कभी नहीं किया और न किसी नगरीय जन को करते देखा है। इसलिए अब वे सखियाँ शकुन्तला को चित्रों में देख-देखकर ही आभूषण अनुकूल अंगों में पहनाती हैं।

12. अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत सूक्ति में आश्रम से पतिगृह जाने से पूर्व शकुन्तला को विभिन्न प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित किया जा रहा है। दोनों सखियाँ शकुन्तला को आभूषण धारण कराते हुए कहती हैं कि–

हिन्दी अनुवाद – हम दोनों आभूषणों के उपयोग से अनभिज्ञ हैं अर्थात् आभूषणों का उपयोग नहीं किया गया है।

हिन्दी व्याख्या – इस प्रकार शकुन्तला की सखियाँ (अनसूया और प्रियंवदा) शकुन्तला को विदा करते हुए विभिन्न प्रकार के आभूषण पहना रही हैं। अनभिज्ञ होने के कारण वे पुनः चित्रावली को देखते हुए विभिन्न अंगों पर आभूषण पहनाती हैं।

13. स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – आश्रम-द्वार पर उपस्थित हुए दुर्वासा का स्वागत शकुन्तला नहीं करती, क्योंकि दुष्यन्त के ध्यान में तल्लीन उसे दुर्वासा के आगमन का पता ही नहीं चला। क्रोध में दुर्वासा शकुन्तला को शाप दे देते हैं जिसके ध्यान में डूबी हुई तुम द्वार पर उपस्थित अतिथि को भी नहीं देख रही, वह तुम्हें उसी प्रकार स्मरण नहीं करेगा जैसे कोई पागल आदमी पहले की गयी बात को भूल जाता है।

14. आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग– शकुन्तला आश्रम से विदा होकर पति परिवार को प्रस्थान करने के लिए सखियों के द्वारा तैयार की जा रही है। विदाई के अवशोषित आभूषणों, वस्त्रों आदि से सजाई जा रही है। परन्तु शकुन्तला की स्वाभाविक सुन्दरता इतनी अत्यधिक है कि अलंकरणों की शोभा भी उसके सामने फीकी पड़ रही है। शकुन्तला की सखी प्रियंवदा ऐसा अभिव्यक्त कर रही है–

हिन्दी अनुवाद – आभूषणों के योग्य रूप आश्रम में प्राप्त अलंकारों से विकृत किया जा रहा है।

हिन्दी व्याख्या – यह स्वाभाविक है कि शकुन्तला आश्रम में रहने वाली तपस्विनी की भाँति जीवन जीने वाली ऋषि पुत्री है। उसके पितृ परिवार से पति परिवार की ओर प्रस्थान करने के अवसर के अनुकूल सभी जन उपस्थित हैं। अपनी-अपनी योग्यतानुसार विदाई से सम्बन्धित कार्यों में लगे हैं। सखियाँ सुसज्जित करने में व्यस्त हैं। परन्तु दुःख है कि पति पक्ष की ओर से विदाई की कोई पहल नहीं है। आभूषणों का अभाव है, आश्रमवासियों के पास कीमती आभूषणों का होना सर्वथा असम्भव है। ऐसी स्थिति में प्रियंवदा दुःखी होकर कह रही है कि शकुन्तला के रूप-सौन्दर्य के अनुकूल आश्रम में उपलब्ध अलंकार नहीं हैं। ये आभूषण तो शकुन्तला की सुन्दरता बढ़ाने के बजाय और घटा रहे हैं। वास्तविकता यही है कि महिलायें सदा आभूषणप्रिय होती हैं। ऐसे अवसर पर आभूषणों का अभाव उनके मन में हीनता एवं दयनीयता को जन्म देता है। गौरव और शोभा को बढ़ाने के लिए आभूषणों की अपेक्षा होना स्वाभाविक ही है। इसका चित्रण महाकवि ने सहज शब्दों में किया है जो मनोवैज्ञानिक एवं सहज स्वभाव है।

15. रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग– प्रस्तुत सूक्तिपरक वाक्य में अनसूया शकुन्तला के शाप से सम्बन्धित समाचार को अपने तक सीमित रखने के लिए प्रियंवदा से निवेदन कर रही है।

हिन्दी अनुवाद – निश्चय ही स्वभाव से कोमल प्रियसखी (शकुन्तला) की रक्षा करनी चाहिए।

हिन्दी व्याख्या – इस प्रकार अनसूया का कहने का आशय अपने आप में इसलिए यथोचित है कि शकुन्तला जब अपने पति के वियोग जनित शोक में पूर्णरूपेण डूबी हुई है। उसे स्वयं अपना ही ध्यान नहीं है तो वह किसी दूसरे अभ्यागत का क्या ध्यान रख सकती है? इसलिए ऐसे समय में हम दोनों (अनसूया और प्रियंवदा) को यह शाप वृत्तान्त अपने तक ही सीमित रखना चाहिए। अन्यथा वह (शकुन्तला) जानकर और भी दुःखी होगी। जो कि हम दोनों के लिए चिन्ता का विषय हो जायेगा। यह सोचना स्वाभाविक रूप से सखियों का धर्म होता है।

16. अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से ली गयी है।

हिन्दी व्याख्या–प्रियंवदा अनसूया से कहती है कि महर्षि कण्व को शकुन्तला विषयक ज्ञान आकाशवाणी से इस प्रकार हुआ है–"हे ब्रह्मन्! पृथ्वी के कल्याण हेतु दुष्यन्त द्वारा स्थापित वीर्य को धारण करती हुई पुत्री शकुन्तला को तुम अग्नि धारण करनेवाले शमी वृक्ष की भाँति समझो।"

17. ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से ली गयी है। इसके रचयिता महाकवि कालिदास हैं।

हिन्दी व्याख्या–'अयमहम् भोः।' महर्षि दुर्वासा के इस नेपथ्य कथन को सुनकर अनसूया एवं प्रियंवदा उसे ध्यान से सुनकर आपस में वार्त्तालाप करती हुई मञ्च से निकल जाती हैं। अनसूया ध्यान केन्द्रित कर सुनती है तथा प्रियंवदा से कहती है कि हे सखि! यह आवाज तो किसी अतिथि-जैसी प्रतीत होती है। इस पर प्रियंवदा उत्तर देती है कि हे सखि, अतिथि आये हैं तो ठीक है, कोई चिन्ता की बात नहीं है क्योंकि निश्चय ही कुटिया में अतिथि सत्कारार्थ शकुन्तला मौजूद है। इसके तुरन्त बाद ही वह सोचती है कि अरे! शकुन्तला तो शरीर से ही कुटिया में स्थित है, लेकिन उसका हृदय तो हस्तिनापुर में है। बेचारी शून्य हृदय से वहाँ बैठी है। इस प्रकार उसके पर्णशाला में रहने या न रहने से तो कोई लाभ नहीं है।

●●

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शकुन्तलायाः सख्यौ के आस्ताम्?
उत्तर– शकुन्तलायाः सख्यौ अनसूया, प्रियंवदा आस्ताम्।
प्रश्न 2. पर्णकुटी स्थिता शकुन्तला केन शप्ता?
उत्तर– पर्णकुटी स्थिता शकुन्तला दुर्वाससा शप्ता।
प्रश्न 3. दुर्वासा स्वभावेन कीदृशः महर्षिः आसीत्?
उत्तर– दुर्वासा स्वभावेन क्रोधी महर्षिः आसीत्।
प्रश्न 4. ओषधीनां पतिः एकतः कुत्र यति?
उत्तर– ओषधीनां पतिः एकतः अस्तशिखरं यति।
प्रश्न 5. कन्या कस्मै दातव्यम्?
उत्तर– कन्या गुणवते दातव्यम्।
प्रश्न 6. शकुन्तला हृदयेन कुत्र स्थिता?
उत्तर– शकुन्तला हृदयेन राजा दुष्यन्त ध्याने स्थिता।
प्रश्न 7. का पुष्पोच्चयं रूपयति?
उत्तर– अनसूया पुष्पोच्चयं रूपयति।
प्रश्न 8. शकुन्तला कीदृशी अस्ति?
उत्तर– शकुन्तला प्रकृतिपेलवा अस्ति।
प्रश्न 9. कस्याः सुखमञ्जनं भवतु?
उत्तर– शकुन्तलायाः सुखमञ्जनं भवतु।
प्रश्न 10. दुष्यन्तः कः आसीत्?
उत्तर– दुष्यन्तः हस्तिनापुर राजा आसीत्।
प्रश्न 11. 'आः अतिथिपरिभाविनि।' इति केन उक्तम्?
उत्तर– 'आः अतिथिपरिभाविनि' इति दुर्वासामुनिना उक्तम्।
प्रश्न 12. शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं कां गता?
उत्तर– शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं गौतमी गता।
प्रश्न 13. प्रियंवदा का आसीत्।
उत्तर– प्रियंवदा शकुन्तलायाः प्रियसखी आसीत्।
प्रश्न 14. कस्य वचनं अन्यथां भवितुं न अर्हति?
उत्तर– दुर्वाससः अन्यथा वचनं न अर्हति।
प्रश्न 15. राजलक्ष्मीः कया अनुभवितव्याः?
उत्तर– राजलक्ष्मीः शकुन्तलया अनुभवितव्याः।
प्रश्न 16. अद्य का यास्यति?
उत्तर– अद्य शकुन्तला यास्यति।
प्रश्न 17. तनयाविश्लेषदुःखैः नवैः के पीड्यन्ते?
उत्तर– तनयाविश्लेषदुःखैः नवैः गृहिणः पीड्यन्ते।
प्रश्न 18. अभिज्ञानशाकुन्तलम् केन विरचितम्?
उत्तर– अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदासेन विरचितम्।

प्रश्न 19. पाठ्यक्रमे कः अङ्कः निर्धारितः?
उत्तर– पाठ्यक्रमे चतुर्थ अङ्कः निर्धारितः ?
प्रश्न 20. नाटकेषु किं रम्यम्?
उत्तर– नाटकेषु 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' रम्यम्।
प्रश्न 21. अनसूया केसरमालिका कुत्र निक्षिप्ता?
उत्तर– अनसूया केसरमालिका नालिके रसमुद्गके निक्षिप्ता।
प्रश्न 22. सूर्योदये एव का शिखामज्जिता?
उत्तर– सूर्योदये एव शकुन्तला शिखामज्जिता।
प्रश्न 23. अलङ्करणानि कुतः प्राप्तानि?
उत्तर– अलङ्करणानि तातकाश्यपप्रभावात् प्राप्तानि।
प्रश्न 24. महर्षेः दुर्वाससः आगमनकाले शकुन्तला कुत्र सन्निहिता आसीत्।
उत्तर– महर्षेः दुर्वासा आगमनकाले शकुन्तला उटजे सन्निहिता आसीत्।
प्रश्न 25. शकुन्तला का आसीत्?
उत्तर– शकुन्तला मेनका विश्वामित्रयोः कन्या आसीत्।
प्रश्न 26. के गुणविरोधिनो न भवन्ति?
उत्तर– आकृतिविशेषाः गुणविरोधिनो न भवन्ति।
प्रश्न 27. शकुन्तला को न स्मरिष्यति?
उत्तर– शकुन्तला यस्मिन् ध्यानमग्ना सः एव (दुष्यन्तः) तां न स्मरिष्यति।
प्रश्न 28. सम्प्रस्थितेन राज्ञा शकुन्तला किम् पिनद्धम्?
उत्तर– सम्प्रस्थितेन राज्ञा शकुन्तला स्वनामधेयांकितम् अंगुलीयकम् पिनद्धम्।
प्रश्न 29. आश्रमवृक्षैः शकुन्तलायै किं दत्तम्?
उत्तर– केनचित् मांगल्यं क्षौमम् केनचित् लाक्षारसः निष्ठ्यूतः अन्यैः आभरणानि दत्तानि।
प्रश्न 30. दुष्यन्तनामाङ्कितं किमाभरणम् शकुन्तला पार्श्वे आसीत्।
उत्तर– दुष्यन्तनामाङ्कितं अङ्गुलीयकं शकुन्तला पार्श्वे आसीत्।
प्रश्न 31. धूमाकुलितदृष्टेः यजमानस्य आहुतिः कुत्र पतिता?
उत्तर– धूमाकुलितदृष्टेः यजमानस्य आहुतिः पावके एव पतिता।
प्रश्न 32. सुशिष्यदत्ता विद्या इव का?
उत्तर– सुशिष्यदत्ता विद्या इव शकुन्तला।
प्रश्न 33. अग्निगर्भा शमीव का?
उत्तर– अग्निगर्भा शमीव शकुन्तला।
प्रश्न 34. शकुन्तला कुत्र स्थिता?
उत्तर– शकुन्तला उटजसन्निहिता स्थिता।
प्रश्न 35. 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इति कस्योक्तिः?
उत्तर– 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इति अनसूयायाः उक्तिः।
प्रश्न 36. कः महर्षिः सुलभकोपः आसीत्।
उत्तर– दुर्वासा महर्षिः सुलभकोपः आसीत्।
प्रश्न 37. शकुन्तलायाः सख्यौ मङ्गलसमालम्भनं कां विरचयतः?
उत्तर– शकुन्तलायाः सख्यौ मङ्गलसमालम्भनं शकुन्तलाम् विरचयतः।
प्रश्न 38. 'कोऽन्यः हुत वहाद् दग्धुं प्रभवति' इति केनोक्तम्?
उत्तर– 'कोऽन्यः हुत वहाद् दग्धुं प्रभवति' इति प्रियंवदया उक्तम्।

प्रश्न 39. केनचित् तरुणा चरणोपभोगसुलभः कः निष्ठ्यूतः।
उत्तर– केनचित् तरुणा चरणोपभोगसुलभः लाक्षारसः निष्ठ्यूतः।
प्रश्न 40. काश्यपेन कः आशिषः दत्तः?
उत्तर– काश्यपेन सम्राजं सुतमवाप्नुहि इत्याशिषः दत्तः।
प्रश्न 41. शकुन्तलया पुत्रकृतकः कः स्वीकृतः आसीत्?
उत्तर– शकुन्तलया पुत्रकृतकः मृगः आसीत्।
प्रश्न 42. वेलोपलक्षणार्थं शिष्यः केनोपदिष्टः आसीत्?
उत्तर– वेलोपलक्षणार्थं शिष्यः प्रवासादुपावृतेन काश्यपेन उपदिष्टः आसीत्।
प्रश्न 43. मङ्गलकाले रोदितुम् उचितानुचितं वा?
उत्तर– मङ्गलकाले रोदितुम् अनुचितम् अस्ति (वा)।
प्रश्न 44. शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या संस्कृतमाश्रित्य किम् उक्तम्?
उत्तर– 'हे ब्रह्मन्! स्वपुत्रीं शकुन्तलां दुष्यन्त तेजो दधानां गर्भवती जानीहि' इति शरीरं बिना छान्दोमय्या वाण्या उक्तम्।
प्रश्न 45. प्रियंवदा शकुन्तलासकाशं कथं गता?
उत्तर– प्रियंवदा शकुन्तलासकाशं सुखशयनपृच्छिका गता।
प्रश्न 46. वामहस्तोपहितवदना का अस्ति।
उत्तर– वामहस्तोपहितवदना शकुन्तला अस्ति।
प्रश्न 47. तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां किं दर्शयते?
उत्तर– तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोकः आत्मदशान्तरेषु नियम्यते इव दर्शयते।
प्रश्न 48. वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला किंकर्तुं न व्यवस्यति?
उत्तर– वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति।
प्रश्न 49. प्रियमण्डनापि शकुन्तला स्नेहेन वृक्षाणां किं न आदत्ते।
उत्तर– प्रियमण्डनापि शकुन्तला स्नेहेन वृक्षाणां पल्लवम् न आदत्ते?
प्रश्न 50. शकुन्तलायाः सखीमण्डनं कीदृशं भविष्यति?
उत्तर– शकुन्तलायाः सखीमण्डनं दुर्लभं भविष्यति।
प्रश्न 51. दुर्वासाः शकुन्तलां किं शशाप?
उत्तर– दुर्वासाः शकुन्तलां शशाप– 'स्मरिष्यति त्वां न स प्रबोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कथामिव'।
प्रश्न 52. दुर्वाससाः शकुन्तला कस्मात् कारणात् शप्ता?
उत्तर– शकुन्तला दुर्वाससः अतिथि सत्कारं न अकरोत् तेन सा शकुन्तलां शप्ता।
प्रश्न 53. अभिज्ञानभरण दर्शनेन को निवर्तिष्यते।
उत्तर– अभिज्ञानभरण दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते।
प्रश्न 54. दुर्वासा किं मन्त्रयन् स्वयमन्तर्हितः?
उत्तर– 'अभिज्ञानाभरण दर्शनेन शापोनिवर्तिष्यते' इति मन्त्रयन् दुर्वासा स्वयमन्तर्हितः।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट–निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. शकुन्तलां शापं कः अददात्?
अथवा शकुन्तलायै केन शापः दत्तः?
अथवा शकुन्तला केन शप्ताऽभूत्?

(i) कण्वः (ii) गौतमी (iii) दुर्वासाः (iv) विश्वामित्रः

उत्तर– (iii) दुर्वासाः।

2. **शकुन्तलां शापं कः अददात्?**

(i) कण्वः (ii) दुर्वासाः (iii) गौतमी (iv) प्रियंवदा

उत्तर– (ii) दुर्वासाः।

3. **'कोऽन्योहुतवहाद् दग्धुं प्रभवति' – यह कथन किसका है?**

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) कण्व

उत्तर– (i) प्रियंवदा।

4. **अवसितमण्डना का आसीत्?**

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) शकुन्तला (iv) गौतमी

उत्तर– (iii) शकुन्तला।

5. **'उपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि' यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?**

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) शिष्य

उत्तर– (iv) शिष्य।

6. **निम्न में से कौन-सी रचना कालिदास की है?**

(i) उत्तररामचरितम् (ii) मृच्छकटिकं (iii) मेघदूतं (iv) प्रतिमा नाटकं

उत्तर– (iii) मेघदूतं।

7. **प्रतिपेलवा का?**

(i) प्रियंवदा (ii) गौतमी (iii) शकुन्तला (iv) अनसूया

उत्तर– (iii) शकुन्तला।

8. **कन्या कीदृशोऽर्थः?**

(i) परकीयो (ii) स्वकीयो (iii) पितरौ (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर– (i) परकीयो।

9. **दुष्यन्तः कस्य राज्यस्य (कुत्रत्यः) राजा आसीत्?**

(i) कोशलस्य (ii) विदर्भस्य (iii) मथुरायाः (iv) हस्तिनापुरस्य

उत्तर– (iv) हस्तिनापुरस्य।

10. **'शिवास्ते पन्थानः सन्तु' यह कथन किसका है?**

(i) गौतमी का (ii) काश्यप का (iii) प्रियंवदा का (iv) अनसूया का

उत्तर– (ii) काश्यप का।

11. **कालिदासस्य प्रसिद्धोऽलङ्कारोऽस्ति–**

(i) अर्थान्तरन्यासः (ii) श्लेषः (iii) उपमा (iv) रूपकम्

उत्तर– (iii) उपमा।

12. **'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इस उक्ति का वक्ता है–**

(i) दुष्यन्त (ii) नारद (iii) अनसूया (iv) शकुन्तला

उत्तर– (iii) अनसूया।

13. **'सौभाग्यदेवताऽर्चनीया' वाक्य आया है–**

(i) प्रियंवदा के लिए (ii) शकुन्तला के लिए (iii) अनसूया के लिए (iv) गौतमी के लिए

उत्तर– (ii) शकुन्तला के लिए।

14. ''एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'' केन कथितम् इदं वाक्यम्?
(i) अनसूयया (ii) गौतम्या (iii) प्रियंवदया (iv) शकुन्तलया
उत्तर– (iii) प्रियंवदया।

15. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' वाक्य की वक्ता है–
(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) मैत्रेयी
उत्तर– (i) प्रियंवदा।

16. कस्मिन् समये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति?
(i) कुसुम प्रसूति समये (ii) वर्षाकाले (iii) वसन्तागमने (iv) मृगीप्रसूति समये
उत्तर– (i) कुसुम प्रसूति समये।

17. चतुर्थे अंके कस्य रसस्य निष्पत्तिः अभवत् ?
(i) संयोग शृंगारस्य (ii) वियोग शृंगारस्य (iii) अद्भुत रसस्य (iv) हास्य रसस्य
उत्तर– (ii) वियोग शृंगारस्य।

18. 'सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता' वाक्य किसके लिए कहा गया है–
(i) गौतमी के लिए (ii) प्रियंवदा के लिए (iii) नारद के लिए (iv) शकुन्तला के लिए
उत्तर– (iv) शकुन्तला के लिए।

19. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि' उक्ति है–
(i) कण्व की (ii) शिष्य की (iii) गौतमी की (iv) अनसूया की
उत्तर– (ii) शिष्य की।

20. प्रियंवदायाः सख्याः किन्नाम् आसीत्?
(i) शकुन्तला (ii) अनसूया (iii) मैत्रेयी (iv) गार्गी
उत्तर– (i) शकुन्तला।

21. 'प्रकृतिवक्र' है–
(i) शारद्वत (ii) शार्ङ्गरव (iii) दुर्वासा (iv) नारद
उत्तर– (iii) दुर्वासा।

22. 'सुलभकोप' हैं–
(i) काश्यप (ii) कण्व (iii) नारद (iv) दुर्वासा
उत्तर– (iv) दुर्वासा।

23. काश्यप को शकुन्तला के विवाह की सूचना किसने दी है–
(i) प्रियंवदा ने (ii) गुरु ने (iii) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने (iv) नारद ने
उत्तर– (iii) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने।

24. पतिगृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का गच्छत्?
अथवा महर्षि कण्वेन पति गृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का प्रेषिता?
अथवा शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं का गता?
(i) अनसूया (ii) प्रियंवदा (iii) गौतमी (iv) वृद्धतापसी
उत्तर– (iii) गौतमी।

25. कुसुम प्रसूति समये कस्याः उत्सवः भवति स्म?
(i) प्रियंवदायाः (ii) अनसूयायाः (iii) शकुन्तलायाः (iv) गौतम्याः
उत्तर– (iii) शकुन्तलायाः।

26. 'वत्से! वीरप्रसविनी भव' यह आशीर्वाद है—

(i) गौतमी का (ii) पहली तापसी का (iii) अनसूया का (iv) तीसरी तापसी का

उत्तर— (iv) तीसरी तापसी का।

27. तृतीय तापसी का आशीर्वाद है—

(i) वत्से! सुखं लभस्व (ii) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव (iii) वत्से! वीरप्रसविनी भव (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (ii) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव।

28. शकुन्तलासाकं राजकुलं का गता।

(अथवा) प्रस्थान काले शकुन्तलया सह गच्छति—

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) मेनका

उत्तर— (iii) गौतमी।

29. कस्याः प्रस्थानकौतुकं निवर्त्यताम्—

(i) शकुन्तलायाः (ii) अनसूयायाः (iii) प्रियंवदायाः (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (i) शकुन्तलायाः।

30. शकुन्तलां कोऽपालयत्?

(अथवा) शकुन्तला कस्य पालिता पुत्री आसीत्?

(i) वशिष्ठः (ii) अगस्त्यः (iii) विश्वामित्रः (iv) कण्वः

उत्तर— (iv) कण्वः।

31. संस्कृतमाश्रित्य पठति—

(i) शकुन्तला (ii) प्रियंवदा (iii) गौतमी (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (ii) प्रियंवदा।

32. ''पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं''—किसका कथन है?

(i) शकुन्तला (ii) प्रियंवदा (iii) अनसूया (iv) गौतमी

उत्तर— (iii) अनसूया।

33. शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं का गता?

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) मेनका (iv) गौतमी

उत्तर— (iv) गौतमी।

34. 'शान्तानुकूल पवनश्च शिवश्च पन्थाः' किसका कथन है?

(i) वशिष्ठ का (ii) काश्यप का (iii) प्रियंवदा का (iv) दुष्यन्त का

उत्तर— उपर्युक्त किसी का नहीं। यह आकाशवाणी है।

35. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कविः (रचयिता) कः अस्ति?

(i) राजशेखरः (ii) भवभूतिः (iii) भट्टनारायणः (iv) कालिदासः

उत्तर— (iv) कालिदासः।

36. शकुन्तलायाः निवसने सज्जते—

(i) वनज्योत्स्ना (ii) पुत्रकृतकः मृगः (iii) लता (iv) हरिणः

उत्तर— (ii) पुत्रकृतकः मृगः।

37. ''न खलु धीमतां कश्चिद् विषयो नाम''—किसका कथन है?

(i) शारद्वत (ii) विदूषक (iii) कण्व (iv) शाङ्र्गरव

उत्तर— (iv) शाङ्र्गरव।

38. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति इति वचनं आह—

(i) काश्यपः (ii) गौतमी (iii) अनसूया (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (iii) अनसूया।

39. शकुन्तलायाः मातुः नाम आसीत्—

अथवा शकुन्तलायाः जननी कास्ति?

(i) मेनका (ii) सुमित्रा (iii) गार्गी (iv) उर्वशी

उत्तर— (i) मेनका।

40. शकुन्तलायाः दुष्यन्ते स्नेहप्रवृत्तिः अस्ति—

(i) बान्धवकृता (ii) अबान्धवकृता (iii) पूर्वजन्मकृता (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (ii) अबान्धवकृता।

41. वनौकसौऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति वचनम् आह—

(i) शारद्वतः (ii) काश्यपः (iii) शिष्यः (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (ii) काश्यपः।

42. दुष्यन्तः कः आसीत् ?

(i) राजा (ii) मन्त्री (iii) तपस्वी (iv) कुलपतिः

उत्तर— (i) राजा।

43. 'तात! वन्दे' इति वचनम् आह—

(i) प्रियंवदा (ii) शकुन्तला (iii) अनसूया (iv) गौतमी

उत्तर— (ii) शकुन्तला।

44. 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' इस वाक्य का वक्ता है—

(i) काश्यपः (ii) शार्ङ्गरव (iii) नारद (iv) गौतमी

उत्तर— (ii) शार्ङ्गरव।

45. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' वाक्य कहा है—

(i) अनसूया ने (ii) प्रियंवदा ने (iii) शकुन्तला ने (iv) नारद ने

उत्तर— (i) अनसूया ने।

46. वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु-का वक्ता कौन है?

(i) शार्ङ्गरव (ii) गौतमी (iii) प्रियंवदा (iv) काश्यप

उत्तर— (iv) काश्यप।

47. काश्यपः कः आसीत्?

(i) मन्त्री (ii) तपस्वी (iii) राजा (iv) भृत्यः

उत्तर— (ii) तपस्वी।

48. किं शीलः तपस्विजनः?

(i) सुखशीलः (ii) दुःखशीलः (iii) कर्मशीलः (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर— (ii) दुःखशीलः।

49. प्रियम्वदा कस्याः सखी आसीत् ?

(i) दुष्यन्तस्य (ii) अनसूयायाः (iii) शकुन्तलायाः (iv) गौतम्याः

उत्तर— (iii) शकुन्तलायाः।

●●

खण्ड - 'घ'

पत्र-लेखन

प्रार्थना-पत्र

किसी अधिकारी को लिखे गये पत्र प्रार्थना (आवेदन) पत्र कहलाते हैं। ऐसे पत्रों में प्रार्थना सूचना आदि लिखी जाती हैं। ऐसे पत्रों में सबसे ऊपर पहली पंक्ति में बायीं ओर सेवायाम् (सेवा में) लिखा जाता है। उसके नीचे दूसरी पंक्ति में अधिकारी का पद लिखकर आगे महोदय या महोदया शब्द लगा दिया जाता है। कभी-कभी सबसे ऊपर सेवा में न लिखकर प्रार्थना के साथ सेवा में लिखा जाता है। बाद की पंक्ति में कार्यालय (विभाग) का नाम लिखकर उसके बाद नगर या ग्राम (जहाँ कार्यालय स्थित होता है) लिखा जाता है।

इसके बाद की पंक्ति के आरम्भ में श्रीमान्, मान्यवर, पूज्य आदि प्रशस्ति-वाचक शब्द लिखा जाता है। इसके बाद अपनी प्रार्थना आदि लिखकर अन्त में भवदीयः (पुरुष) भवदीया (स्त्री) अथवा निवेदक, निवेदिका, प्रार्थिनी आदि लिखकर अपना नाम, पता, दिनाँक आदि लिखा जाता है। उदाहरण के लिए नीचे कुछ पत्र दिये जा रहे हैं–

(1) प्रधानाचार्य को अवकाश के लिए पत्र

अथवा एक दिन के अवकाश हेतु अपने प्रधानाचार्य को संस्कृत में एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवायाम्

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदयः
राजकीय इण्टर कालेज,
वाराणसी।

महोदय,

सविनयमिदं निवेदयामि, यत् अहम् अद्य गृहे अत्यावश्यक कार्यवशेन विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थोऽस्मि। अतः दिनस्यैकस्य अवकाशं प्रार्थये।

आशांस्ति यद् आज्ञाप्रदानेन अनुग्रहीष्यति भवान् इति।

भवदाज्ञाकारी शिष्य
महेशचन्द्र
कक्षा 12 अ

दिनांकः 22.3.20___

(2) प्रधानाचार्या को रुग्णावकाश के लिए पत्र

सेवायाम्,
श्रीमति प्रधानाचार्या महोदया,
सरस्वती बालिका इण्टर कालेज,
मथुरास्थ।

महोदया,

गतरात्रितः ज्वरागमनकारणात् अहं विद्यालयागमने असमर्था अस्मि। अतः अद्यत; त्रिदिवसेभ्यः रुग्णावकाशं स्वीकृत्य माम् अनुगृह्णातु।

होलीदरवाजा, मथुरातः

भवदीया छात्रा
आभा कुमारी
कक्षा 12 स

दिनांक : 22.3.20___

(3) शुल्क-मुक्ति के लिए प्रधानाचार्य को पत्र

सेवायाम्,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदयः
महाराजा अग्रसेन इण्टर कालेज,
आगरास्थ।

श्रीमान्,

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहं भवतां विद्यालये नवम्यां कक्षायां पठामि। मम पिता एकः निर्धनः कृषकः अस्ति। सः मम शिक्षण शुल्कं दत्तुम् असमर्थः अस्ति। मम परीक्षापरिणामः सदैव उत्तमः अभवत्। अतः अहं अनुरोधपूर्वकं प्रार्थ्येत् माम् शिक्षा–शुल्क–मुक्तं कृत्वा अनुगृह्णातु भवान्।

भवदीयः आज्ञाकारिः शिष्यः
राकेश कुमारः
द्वादश 'अ' कक्षेयः

दिनांक : 14.3.20___

(4) पुस्तक मंगाने के लिए पत्र

सेवायाम्
व्यवस्थापकः
नवीन प्रकाशन मन्दिरम्
महाजनी टोला
इलाहाबाद।

महोदय,

निवेदनमस्ति यत् भवतः संस्थानात् प्रकाशितानि निम्नाङ्कितानि पुस्तकानि शीघ्रमेव वी.पी. द्वारा शीघ्र प्रेषयितव्यानि—

1. नवीन इण्टर संस्कृत गाइड, 4 प्रतयः
2. नवीन इण्टर हिन्दी गाइड, 3 प्रतयः

भवदीय
दिनांक : 15.3.20___ दिनेश चन्द्रः
द्वादश अ कक्षेयः छात्रः
राजकीय इण्टर कालेज, वाराणसी

(5) फुटबाल-क्रीड़ाप्रतियोगिता-आयोजन के लिए प्रधानाचार्य को पत्र

सेवायाम्
प्रधानाचार्यमहोदयानाम्,
राजकीय इण्टर कालेज,
इलाहाबाद।

विषय : फुटबाल-क्रीड़ाप्रतियोगिता

महोदय !

वयं भवतां विद्यालये द्वादशकक्षायाम् अध्ययनं कुर्मः। अस्माकं जनपदे सर्वेष्वपि विद्यालयेषु फुटबालाभिधा-पादकन्दुकक्रीडा सम्पद्यते। बहोः कालात् अस्माकं एतदीया प्रतियोगिता नैव समायोजिता। निवेद्यते यदस्मिन् वर्षे सम्पत्स्यमाने क्रीडामहोत्सवे फुटबाल-क्रीडाप्रतियोगितायाः संयोजनम् अस्माकं विद्यालये भवेत्। एतदर्थम् वयं सर्वेऽपि स्वयोगदानं करिष्यामः।

आशास्यते भवन्तः अस्मिन् विषये व्यवस्थां प्रदाय अस्माकं प्रार्थनाम् अङ्गीकरिष्यन्ति।

भवदीयाः
दिनांकः 05.03.20___ कक्षा 12 छात्राः

(6) 'युवा-महोत्सव' में भाग लेने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र

सेवायाम्
प्रधानाचार्यमहोदयानाम्,
महगाँव इण्टर कालेज,
इलाहाबाद।

विषय : युवामहोत्सवे भागग्रहणम्

महोदय !

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् मया भवता प्रचारिता युवामहोत्सवम् अधिकृत्य सूचना तत्सम्बद्धाः च सर्वे नियमा सावधानतया अधीताः। अहम् अस्मिन् महोत्सवे भागं ग्रहीतुम् इच्छामि। तदर्थं समग्रम् अपि सूचनाजातं निर्धारित-प्रवेश शुल्केन साकम् आवेदनपत्रे विन्यस्य सेवायां प्रहिणोमि।

आशास्यते भवान् सर्वथा सन्तुष्टो भविष्यति। इति।

निवेदकः
दिनांक : 04.03.20___ सुरेश चन्द्रः
कक्षा 12 अ

(7) प्रधानाचार्य को पुस्तकालय की समुचित व्यवस्था के लिए पत्र

सेवायाम्

प्रधानाचार्य महोदयः

डी.ए..वी.इण्टर कालेज,

मेरठ।

महोदयः,

अस्माकं विद्यालयस्य पुस्तकालये इदानीम् अव्यवस्था वर्तते। पुस्तकालयाध्यक्षमहोदयः छात्राणां यथेच्छ पुस्तकानि न ददाति। स पुस्तकालये उपस्थितोऽपि न मिलति; अतः निवेदनमिदमस्ति यत् पुस्तकालये पुस्तकानाम् आदान-प्रदान-व्यवस्था सम्यक् विधाय अनुग्रहं कुर्वन्तु भवन्तः।

निवेदकः

दिनांक : 03.03.20___ प्रवीणः

द्वादशः छात्रः कक्षेयः

(8) अवकाश हेतु कक्षाचार्य को पत्र

अथवा **अपने प्रधानाचार्य को विवाह में सम्मिलित होने हेतु एक सप्ताह के अवकाश के लिए एक पत्र संस्कृत में लिखिए।**

सेवायाम्

कक्षाचार्य महोदयः!

द्वादश कक्षा

डी. ए. वी. इण्टर कालेज,

मेरठ।

महोदय!

सविनयं विनिवेद्यते यत् स्वभ्रातुः विवाहोत्सवे भागं ग्रहीतुम् अहं स्वगृहे गमिष्यामि। तस्य विवाहः आगामिनि नवम्बर मासस्य द्वादशतारिकायां भवितं निश्चितोऽस्ति। वरयात्रा मथुरा नगरां प्रस्थास्यति। अतोऽहं त्रयाणां दिनानां अक्टूबर मासस्य द्वादशदिनाङ्कितः तस्यैव मासस्य चतुर्दश दिनाङ्क यावत् (12.04.20___ से 14.04.20___) अवकाशं प्रार्थयामि। अतः मह्यम् अवकाशं स्वीकृत्य माम् अनुगृह्णातु।

भवदाज्ञाकारी शिष्यः

दिनांक : 10.03.20___ रामनारायणः

द्वादशः कक्षेयः छात्रः

(9) पुस्तकों की सहायता के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष को पत्र

सेवायाम्

श्री पुस्तकालयाध्यक्षः महोदयः!

राजकीय इण्टर कालेज,

लखनऊ।

महोदय!

सविनयं निवेद्यते यत् अहं द्वादशः कक्षायाः निर्धनः छात्रः अस्मि। मम आर्थिकी स्थिति सुदृढ़ः नास्ति। अतः अहं पुस्तकानां

व्यवस्थाम् आपणात् कर्तुं न समर्थोऽस्मि। अतः निवेदयामि यत् पुस्तकालयात् एव पुस्तकानि निर्गत्य माम् अनुगृह्णन्तु भवन्तः।

भवदीयः

दिनांक : 04.02.20___

लवलेश कुमारः

द्वादशः छात्रः कक्षेयः

(10) बेरोजगारी की समस्या के सम्बन्ध में मुख्यमंत्री को पत्र

सेवायाम्

माननीयः मुख्यमन्त्री महोदयः!

उ. प्र. शासन,

लखनऊनगरस्थ।

महोदय!

सविनयं निवेद्यते यत् शिक्षितानां संख्या सततं यादृशी वर्द्धयति, तादृशी नूतनं विकासस्य मार्गं न। फलस्वरूपं बेरोजगाराणां समस्या बलवती अस्ति। ते इतस्ततः भ्रमन्ति आन्दोलनं च कुर्वन्ति। अतः निवेदनम् इदम् अस्ति यत् बेरोजगारान् भृत्यं दत्वा समाधानः करणीयः। विश्वासानुग्रहं कुर्वन्तु भवन्तः।

भवदीयः

दिनांक : 10.04.20___

मनोज अग्रवाल

राजकीय इण्टर कालेज,

वाराणसी

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र

ऐसे पत्र तीन प्रकार के होते हैं— (1) अपने पूज्य वर्ग (माता, पिता, गुरु आदि) के लिए। (2) अपने छोटों (छोटा भाई, छोटी बहन, पुत्र आदि) के लिए। (3) बराबर वालों (मित्रादि) के लिए। आरम्भ में पूज्य वर्ग के लिए प्रणामः, नमस्कारः आदि, छोटों के लिए स्वस्ति, शुभाशीषः और बराबर वालों के लिए नमस्कार, नमस्ते आदि का प्रयोग किया जाता है।

अन्त में बड़ों के लिए भवदाज्ञाकारी, भवत्कृपाकांक्षी आदि। छोटों के लिए शुभेच्छुः, शुभाकांक्षी आदि और बराबरवालों के लिए भवदीयः, भावात्मकः आदि का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए कुछ पत्र दिये जा रहे हैं–

(11) धन भेजने हेतु पिता को पत्र

पूज्य पितः! सादरं प्रणमामि!

सकुशलमहमत्र आगतोऽस्मि। आगत्यात्र मातुलेन सह गत्वा बी०डी० माध्यमिक विद्यालये एकादश्यां कक्षायां प्रविष्टोऽहम्। प्रवेश शुल्कादिकं च तत्र प्रदत्तम्। इदानीं पुस्तकादिकं क्रेतुं धनस्य आवश्यकता वर्तते। कृपया धनादेशेन रूप्यकाणां शतद्वयं शीघ्रं सम्प्रेष्य अनुगृह्णातु भवानिति निवेदयामि।

सादरम्।

भवदाज्ञाकारी पुत्रः

राजकुमारः

लंका, वाराणसी

(12) अपने अध्ययन की प्रगति का उल्लेख करते हुए पिता को पत्र

पूज्य पितुः चरणेषु प्रणामाः!

अत्राहं कुशली भवानपि कुशली भविष्यति इति आशासे। मम अध्ययनं सम्यक् चलति। गतमासे अस्माकं त्रैमासिकी परीक्षा अभवत्। तस्यां च प्रतिशतम् अशीतिः (८०) अंकाः मया लब्धाः। इदानीम् अध्ययने पूर्वतोऽपि अधिकं दत्तचित्तः अस्मि। प्रयतिष्ये च षाण्मासिकपरीक्षायां ततोऽपि अधिकतरान् अङ्कान् लब्धुम्। अग्रे परमेश्वरकृपा भवतः आशीर्वादः च अपेक्षते। मातुश्चरणयोर्मे प्रणामः समर्पणीयः।

भवदाज्ञाकारी पुत्रः
उमेशः
कल्याणपुर, कानपुर

(13) अपनी कुशलता बताने के लिए पिता को पत्र

मेरठ
03.04.20___

प्रातः स्मरणीयः पितृपादाः!

भवच्चरणयोः मे शतशः प्रणामाः।

अहमत्र कुशली। आशास्यते तत्रापि सर्वे कुशलिनः। भवत्प्रेषितानि शतरुप्यकाण्यपि अद्य मया प्राप्तानि। एतैः सर्वेऽपि मासिकव्ययः सम्पन्नः भविष्यति। मम अध्ययनं सुचारुतया प्रचलति। अस्मिन् मासान्ते कक्षा-परीक्षा सम्पन्नः भविष्यति। परीक्षानन्तरम् अहं गृहम् आगमिष्यामि।

मातृचरणयोः मे प्रणतिः। प्रिय अनुजाय दिनेशाय च आशीर्वादाः वाच्याः।

भवदाज्ञाकारी
सुरेशः

(14) छोटे भाई के लिए पत्र

लखनऊ
4.02.20___

प्रिय सुरेशः!

शुभाशीषः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। अहं सोमवासरे अत्र सकुशलम् आगतः छात्रावासे च समुचितं स्थानं प्राप्तम्। मया पाठ्य-पुस्तकानि क्रीतानि। कतिपयैः एव दिनैः अध्ययने सम्यक्तया प्रचलिष्यति।

मम प्रस्थानकाले पितामहः पूर्णतः स्वस्थः नासीत्। तस्य स्वास्थ्य विषये चिन्तितोऽस्मि। अतः तस्य परिवारस्य च क्षेमकुशलवार्ता शीघ्रमेव प्रेषणीया।

शुभेच्छुः
सौरभः

(15) उत्सव में सम्मिलित होने हेतु मित्र को पत्र

सैरपुर, मालीपुर
25.12.20___

प्रिय महेन्द्र!

सस्नेहं नमस्कारम्।

अहं सकुशलः तत्रापि कुशलम् वाञ्छामि। त्वतः प्राप्तस्य पत्रस्य बहुकालो व्यतीतः। ईदृशं नैष्ठुर्यम् अनुचितम्। तव कुशलसमाचारज्ञातुम् अतिव्यग्रोऽहम्। अतः शीघ्रमेव पत्रम् लेखनीयम्।

आगामी वर्षस्य जनवरी मासस्य पञ्चादश दिनाङ्के मम भ्रातुः श्रीश्यामनारायणस्य तिलक संस्कारः भविता। वरयात्रा एकोनविंशति दिनाङ्के प्रातः षष्ठवादनकाले रेलयानेन कानपुरनगरं गमिष्यति। अस्मिन् उत्सवे तवागमनम् अत्यावश्यकम् अतः त्वया सपरिवारम् आगन्तव्यम् पूर्वमेव।

स्वमातृपितृचरणयोः मे प्रणामाः।

निवेदनीयः
तव स्नेहभाजनम्
राकेशः

(16) अपनी समस्या के निवारणार्थ मित्र को पत्र

आगरा
23.03.20___

प्रियवर!

नमस्ते!

अस्माकं 'एम. सी. ए.' कक्षायाः द्वितीयसत्रस्य परीक्षा अस्यैव मासस्य नवविंशतितमे दिनाङ्के समाप्ता भविष्यति। परीक्षानन्तरम् अहं शीघ्रमेव स्वगृहम् आगन्तुम् इच्छामि परं वाहनस्य समुचितं व्यवस्था नास्ति। अतः वाहनं नीत्वा मम समीपं आगच्छ सामग्रीं च नेतुं व्यवस्थां कुरु। तदनन्तरे अहम् अपि स्वगृहाय प्रस्थास्यामि। त्वं कदा आगमिष्यसि मम गृहम्। अहं त्वां स्वगृहे प्रतीक्षिष्ये।

भवदीयः
दीपक कुमारः

(17) ग्रीष्मावकाश घर में व्यतीत करने हेतु पिता को पत्र

मेरठ नगरातः
21.04.20___

श्रद्धेयाः पितृचरणाः!

सादरं शतशः प्रणामाः।

अत्र अहं स्वस्थोऽस्मि। चिराद् भवतां कृपा-पत्रम् न आयातम्। इतः गत्वा तु भवता अहं विस्मृता एव। परिवारस्य क्षेमकुशलम् अवगन्तुम् उत्सुकोऽहम्। अहं परीक्षानन्तरं शीघ्रमेव भवत्सकाशं समागमिष्यामि। मम मित्र सुरेन्द्रः अपि तत्रैव मया सह आगमिष्यति। आवां स्वगृहे एव पञ्चादशदिनानि उशित्वा ग्रीष्मावकाशस्य आनन्दं अनुभविष्यावः।

मातृचरणयोः मे प्रणामाः। अनुजाय आशीर्वादः वाच्याः।

भावत्कः पुत्रः
रमेशः

(18) 'एम. बी. बी. एस.' परीक्षा उत्तीर्ण करने पर अपने भाई को बधाई-पत्र

कानपुर
10.03.20___

प्रिय नरेश!

नमस्कारः।

दिष्ट्या वर्धसे त्वं विजयलाभेन। ह्यः एव मया समाचारपत्रैः पठितं यद् भवान् "एम. बी. बी. एस." चिकित्सापरीक्षायां प्रथमस्थानं अवाप्तवान्। समाचारं पठित्वा अहम् अतिप्रसन्नमनुबभूव। स्वसफलतायां मम शुभकामनाः स्वीकरणीयाः।

मातृपितृचरणयोः मम प्रणतयः निवेदनीयाः। परिवारस्य क्षेमकुशलम् पत्रं प्रदातव्यम्।

भवदीयः
अनुरागः

(19) अपनी यात्रा-सम्बन्धी संस्मरण बताने के लिए मित्र को पत्र

काशी
10.03.20___

प्रिय वयस्य रामनारायणः

सादरं सस्नेहम् अभिवन्दे।

अत्र कुशलं तत्र कुशली भवान्। अहं ग्रीष्मावकाशे हरिद्वार नगरम् अटतुम् अगच्छम्। जननी अपि मया सह तत्र शोभां दर्शनाय अगच्छत्। तत्र हरिसोपाने सायंकाले मन्दिरेषु घण्टानादं भवति। दर्शकाः एकत्रीभूय आनन्दम् अनुभवं कुर्वन्ति। अहं आशासे यत् आगामीवर्षे त्वमपि मया सह गमिष्यति। तत्रोषित्वा स्वास्थ्यं शोभनम् आनन्दः लाभश्च भविष्यति। त्वया भ्रमणविषये त्वरितम् उत्तरं देयम्।

भवदीयः अभिन्नहृदयः
महेशः

(20) पुस्तक मेला के विषय में अपने पिता को पत्र

पूज्यपितृचरणेषु प्रणामाः।

अत्र अहं स्वस्थोऽस्मि। चिराद् भवतां कृपापत्रम् न आयातम्। चिन्तितोऽस्मि।

अहम् एवं निवेदयामि यत् आगामी अगस्तमासस्य चतुर्दश दिनाङ्कतः तस्यैव मासस्य अष्टादाङ्कदिनांकम् यावत् दिल्लीनगरे पुस्तकमेलायाः आयोजनं भविष्यति। तत्र अहं गन्तुम् इच्छामि। आशासे भवन्तः तत्र गमनम् अनुमत्य माम् अनुगृह्णीयुः।

मातृचरणेषु प्रणतीः समर्पये। अनुजाय शिवाय च स्नेहवचनानि दद्यात् भवान् ।

भवताम् पुत्रः
नरेशः

(21) चित्रकूट जाने के लिए पिता को पत्र

प्रतापगढ़

दिनाङ्का : 02.02.20___

श्रद्धेया; पितृचरणाः!

सादरं प्रणतयः।

सम्प्रति नवरात्रमहोत्सवः समायोज्यते। अस्य मासस्य एकादश्यां तारिकायां रामनवमी अस्ति। अत्रावसरे चित्रकूटे समारोहो भवति इति मया श्रुतम्। तदा भवताम् अवकाशः अपि अस्ति। अतः सर्वैः सह भवन्तः तत्र चलन्ति चेत् सुखावहं स्यात्। मातृचरणकमलेभ्यो नमः। अनुजायै स्वस्ति।

भवतां पुत्रः

रमेशः

●●

खण्ड - 'ङ'

अलंकार

(1) अनुप्रास अलंकार

परिभाषा – स्वरों में समानता न होते हुए भी समान व्यजनों अथवा वर्णों का बार-बार आना अर्थात् उनकी आवृत्ति होना अनुप्रास अलंकार कहलाता है। 'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।'

उदाहरण – लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवलिपुञ्जं चपलयन्,
समलिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्ग प्रबलयन्।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्
रजो वृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशिदिशि।।

स्पष्टीकरण – इस श्लोक में 'ङ्ग' 'ङ्ग' और 'न्द' 'न्द' का वर्णसाम्य होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

अन्य उदाहरण–

(1) ''कावेरी वारि पावनः पवनः''

उपर्युक्त उदाहरण में स्वरों की विषमता होने पर भी व्, र्, प्, व्, न् व्यञ्जन वर्णों में अनुप्रास अलंकार है।

(2) ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दी कृतवपुः शशी
दध्रे कामपरिक्षाम कामिनी गण्ड पाण्डुताम्।।

(3) इस उदाहरण में न्द-न्द, ण्ड-ण्ड में आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(2) यमक अलंकार

परिभाषा – स्वरों और व्यञ्जनों के सार्थक समूह की पुनरावृत्ति जहाँ इस प्रकार हो कि प्रत्येक आवृत्ति में अर्थ में परिवर्तन हो जाय वहाँ यमक अलंकार होता है। निरर्थक पदों की आवृत्ति में भी यमक होता है। 'सत्यर्थे पृथगर्थाया; स्वरव्यञ्जनसंहतेः। क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।'

उदाहरण – नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् ससुरभिंसुरभिंसुमनो भरैः।

स्पष्टीकरण – इस श्लोक में पलाश-पलाश, पराग-पराग, लतान्त-लतान्त पदों की आवृत्ति है परन्तु अर्थ भिन्न-भिन्न होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण–

सरस्वति! प्रसाद मे स्थितिं चित्त सरस्वति!
सरस्वति! कुरु क्षेत्र कुरुक्षेत्र सरस्वति।

इस श्लोक की प्रथम पंक्ति में प्रयुक्त सरस्वति का अर्थ 'वाग्देवी' सरस्वती है और द्वितीय सरस्वति का अर्थ 'समुद्र' है। द्वितीय पंक्ति के सरस्वति शब्द का अर्थ सरस्वती 'नदी' है। द्वितीय पंक्ति का एक 'कुरु' क्रिया के रूप में प्रयुक्त है जिसका अर्थ है करो और दूसरे 'कुरु' का अर्थ कुरु प्रदेश के रूप में हुआ है। इसी पंक्ति में प्रथम क्षेत्र का अर्थ शरीर है और द्वितीय का अर्थ 'स्नान' के रूप में हुआ है।

●●

खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1 अनुवाद : हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद कहलाता है। संस्कृत में वाक्यों के संगठन के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। जैसे – 'रामः गृहं गच्छति' वाक्य ठीक है तथा गृहं गच्छति रामः भी सही है, किन्तु सरलता के लिए क्रमशः कर्त्ता, कर्म और तब अन्त में क्रिया रखी जाती है। इसलिए किसी भी वाक्य का अनुवाद करते समय उसके कर्त्ता, कर्म और क्रिया तथा अन्य कारकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

संस्कृत में कोई भी शब्द विभक्ति चिह्नरहित नहीं प्रयुक्त होता है तथा इसकी क्रियाओं में लिंग-भेद नहीं होता, तीनों लिंगों में क्रिया समान हो सकती है।

अनुवाद के नियम

(1) हिन्दी में एकवचन और बहुवचन ये दो ही वचन होते हैं, किन्तु संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन– ये तीन वचन होते हैं।

(2) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता और क्रिया प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के होते हैं।

(3) संस्कृत में तीन वचनों के कारण तीनों पुरुषों में प्रत्येक क्रिया के प्रत्येक काल में 3×3=9 रूप होते हैं। जैसे लिख्, (लिखना), वर्तमान काल (लट् लकार) में लिखति, लिखतः, लिखन्ति, लिखसि, लिखथः, लिखथ, लिखामि, लिखावः, लिखामः, ये नौ रूप हैं।

(4) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता, कर्म, करण आदि सात कारक होते हैं, किन्तु उन्हें प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि कहा जाता है। संस्कृत में कारकों को विभक्ति कहते हैं। नीचे की तालिका में उन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है–

विभक्ति	**कारक**	**चिह्न**
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा (सहायता)
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (को)
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, ओ, अरे, ए आदि।

(5) संस्कृत में तीनों पुरुषों में कर्त्ता के ये नौ रूप होते हैं–

पुरुष	**एक वचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब, लोग)

मध्यम पुरुष	त्वम् (तू, तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब लोग)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब, लोग)

ये नौ कर्त्ता के रूप में आते हैं। इन्हीं के आधार पर प्रत्येक काल की क्रिया के नौ रूपों का प्रयोग किया जाता है।

(6) कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होता है अर्थात् कर्त्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन में होगी। क्रिया जिस काल की हो, उसी काल का रूप लिखा जाता है। जैसे-वह जाता है–यहाँ कर्त्ता 'वह' (सः) प्रथम पुरुष एकवचन का है, अतः उसके अनुसार क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की होगी। 'जाता है' क्रिया वर्तमान काल (लट् लकार) की है। अतः 'गम्' धातु के 'लट्' लकार (वर्तमान काल) का रूप प्रयुक्त होगा, 'गम्' धातु के लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रथम पुरुष एकवचन का रूप होता है–गच्छति। इसलिए अनुवाद होगा 'सः गच्छति' (वह जाता है)। इसी तरह अन्य वाक्यों को समझना चाहिए।

(7) संस्कृत में क्रिया के काल को व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित लकारों का प्रयोग होता है–

1. वर्तमान काल-लट् लकार। 2. भूतकाल-लङ् लकार।
3. भविष्यत् काल-लृट् लकार। 4. आज्ञासूचक-लोट् लकार।
5. विधिसूचक-विधिलिङ् लकार।

वर्तमान, भूत, भविष्य आदि कालों को सूचित करने के लिए, प्रयुक्त लकारों का रूप इस प्रकार होता है– जैसे-पठ् (पढ़ना) लट्लकार (वर्तमानकाल)।

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

इसी प्रकार वद् (बोलना), रक्ष् (रक्षा करना), हस् (हंसना), खाद् (भोजन करना), नम् (प्रणाम करना), गम् (जाना), पच् (पकाना), आदि धातुओं के रूप होते हैं।

ऊपर बताये गये 9 कर्त्ता और प्रत्येक काल की क्रिया के 9 रूपों का प्रयोग इस प्रकार देखा जा सकता है–

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
	(वह पढ़ता है)	(वे दोनों पढ़ते हैं)	(वे लोग पढ़ते हैं)
मध्यम पुरुष	त्वं पठसि	युवां पठथः	यूयं पठथ
	(तुम पढ़ते हो)	(तुम दोनों पढ़ते हो)	(तुम सब लोग पढ़ते हो)
उत्तम पुरुष	अहं पठामि	आवां पठावः	वयं पठामः
	(मैं पढ़ता हूँ)	(हम दोनों पढ़ते हैं)	(हम सब लोग पढ़ते हैं)

(8) ऊपर कहे गये मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के 6 कर्त्ताओं को छोड़कर शेष जितने कर्त्ता होते हैं उनके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे छात्रः पठसि (छात्र पढ़ता है) कृष्णः पठति (कृष्ण पढ़ता है), बालकः पठन्ति (लड़के पढ़ते हैं), भवान् पठसि (आप पढ़ते हैं), कः पठति (कौन पढ़ता है), गजः गच्छति (हाथी जाता है) आदि।

इस प्रकार कर्त्ता और क्रिया को जोड़ा जाता है। इनके अतिरिक्त वाक्य में जितने शब्द आते हैं उनका प्रयोग उनके कारकों के अनुसार होता है।

(9) अनुवाद करते समय सबसे पहले वाक्य का कर्त्ता खोजना चाहिए। कर्तृवाच्य में क्रिया के पहले कौन लगाने से उत्तर में आनेवाली वस्तु 'कर्त्ता' होती है। फिर कर्त्ता यदि एकवचन हो तो प्रथमा विभक्ति के एकवचन का रूप, द्विवचन हो तो 'प्रथमा' के द्विवचन का रूप और बहुवचन हो तो प्रथमा के बहुवचन का रूप निश्चित करना चाहिए। इसके बाद कर्त्ता के पुरुष पर ध्यान देना चाहिए। कर्त्ता के पुरुष और वचन जान लेने पर क्रिया के काल का निश्चय करना चाहिए। इसके बाद क्रिया के उस काल के रूपों में से कर्त्ता के पुरुष तथा वचन वाला एक रूप छाँटकर लिख देना चाहिए। इसके बाद वाक्य के अन्य शब्दों के कारक तथा वचनों

के अनुसार रूप भी यथास्थान लिख देना चाहिए।

(10) क्रिया का सामान्य रूप 'धातु' कहलाता है, यथा–गच्छति, पठसि, अपठत्, पठेत् आदि क्रियाओं में गच्छ, (गम्), पठ्, धातु हैं। ये सब धातु तीन प्रकार की होती हैं—परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद। परस्मैपद धातुओं में तिप्, तस्, झि। सिप्, थस्, थ। मिप्, वस्, मस् प्रत्ययों का तथा आत्मनेपद धातुओं में त, आताम्, झ। थास्, आथाम्, ध्वम्, इट्, दहिङ्, महिङ् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। विशेष नियमानुसार इन प्रत्ययों के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन होता है। भिन्न-भिन्न प्रत्ययों के जोड़ने से धातु के विविध रूप बनते हैं।

लकारों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

नियम 1. वर्तमान काल में कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और उसी के अनुसार क्रिया प्रयुक्त होती है। यथा–

(1) श्याम पुस्तक पढ़ता है। श्यामः पुस्तकं पठति।

(2) सभी छात्र विद्यालय जाते हैं। सर्वे छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।

(3) तुम नगर कब जाते हो? त्वं नगरम् कदा गच्छसि?

(4) हम दोनों गर्म जल पीते हैं। आवाम् उष्णं जलं पिबावः।

(5) मैं विद्यालय क्यों जाता हूँ? अहं विद्यालयं किं गच्छामि?

नियम 2. जब वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं और 'च' से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की होती है। यथा–

(1) राम और श्याम बाजार जाते हैं। रामः श्यामश्च आपणं गच्छतः।

(2) सीता और गीता खाना खाती हैं। सीता गीता च भोजनं खादतः।

नियम 3. जब वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा) से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की होती है। यथा–

राम अथवा मोहन बाजार जाता है। रामः मोहनः वा आपणं गच्छति।

नियम 4. यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्त्ता हो तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचनान्त होती है और यदि एक से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहुवचनान्त होती है। यथा–

(1) तुम और श्याम जाते हो। त्वं श्यामः च गच्छथः।

(2) दिनेश और तुम दोनों जाते हो। दिनेशः युवां च गच्छथ।

इसी प्रकार यदि उत्तम पुरुष के कर्त्ता के साथ प्रथम पुरुष एवं मध्यम पुरुष के कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष की वचनानुसार होगी। यथा–

(1) मैं और राम जाते हैं। अहं रामश्च गच्छावः।

(2) सुरेश, तुम और मैं जाते हैं। सुरेशः त्वं अहं च गच्छामः।

(3) मैं, तुम और वे सब पढ़ते हैं। अहं त्वं ते च पठामः।

नियम 5. यदि कई कर्त्ता 'वा' अथवा 'या' से जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है— यथा–

(1) सोहन अथवा तुम जाते हो। सोहनः त्वं वा गच्छसि।

(2) तुम अथवा मोहन जाते हो। त्वं मोहनः वा गच्छति।

(3) मैं अथवा तुम जाते हो। अहं त्वं वा गच्छसि।

नियम 6. संस्कृत में आप प्रथम पुरुष का कर्त्ता है। भवान् (आप) भवन्तौ (आप दोनों) भवन्तः (आप सब) प्रथम पुरुष पुँल्लिंग के कर्त्ता हैं, जबकि भवति (आप) भवत्यौ (आप दोनों) भवत्यः (आप सब) प्रथम पुरुष स्त्रीलिंग के कर्त्ता हैं। जैसे– आप सब जाते हैं = भवन्तः गच्छन्ति। आप सब जाती हैं = भवत्यः गच्छन्ति।

नियम 7. अव्यय या विकाररहित शब्दों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे – कृष्णः इति प्रसिद्धः। यहाँ पर इति अव्यय के कारण कृष्णः में प्रथमा विभक्ति है।

➡ आदर्श वाक्य

1. त्वं पठसि। – तुम पढ़ते हो, पढ़ती हो।
2. युवां पठथः। – तुम दोनों पढ़ते हो, पढ़ती हो।
3. यूयं पठथ। – तुम सब या तुम लोग पढ़ते हो, पढ़ती हो।
4. त्वं रामश्च गच्छथः। – तुम और राम जाते हो।
5. युवां रामः हरिश्च गच्छथ। – तुम, राम और हरि जाते हो।
6. यूयं महेशः सुरेशश्च गच्छथ। – तुम लोग, महेश और सुरेश जाते हो।
7. रामः कृष्णश्च पठतः। – राम और कृष्ण पढ़ते हैं।

2. लङ् लकार (भूतकाल)

नियम 1. जो काम बीते हुए समय में हो चुका है, उस काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग होता है।

नियम 2. कभी-कभी वर्तमान काल के प्रथम पुरुष की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्रायः 'था' के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे – पठसि स्म = पढ़ रहा था। हसति स्म = हँसता था।

आदर्श वाक्य

1. छात्रः अगच्छत्। - छात्र चला गया। (पुंल्लिङ्ग)।
2. छात्रा अगच्छत्। - छात्रा चली गयी। (स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलम् अपतत्। - फल गिरा। (नपुंसकलिङ्ग)।
4. सः अपश्यत्। - उसने देखा। (पुंल्लिङ्ग)।
5. यूयम् अपतत्। - तुम लोग गिर गये।

3. लृट्लकार (भविष्यत्काल)

नियम 1. जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है, तब वह भविष्य काल में होता है और भविष्यकाल में लृट्लकार का प्रयोग होता है? इसके रूप लट्लकार के समान होते हैं केवल 'ति' 'त' आदि प्रत्ययों के पहले 'स्य' जुड़ जाता है। जैसे– पठति-पठिष्यति।

आदर्श वाक्य

1. सः पठिष्यति। - वह पढ़ेगा। (पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठिष्यति। - वह पढ़ेगी। (स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलं पतिष्यति। - फल गिरेगा। (नपुंसकलिङ्ग)।
4. रामः श्यामश्च गमिष्यतः। - राम और श्याम जायेंगे।
5. श्यामः हरिः, वा भक्षयिष्यति। - श्याम या हरि खायेगा।

4. लोट्लकार (आज्ञार्थक)

नियम 1. लोट्लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम 2. प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग प्रायः इच्छा प्रार्थना अर्थ में होता है।

नियम 3. मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग आज्ञा, आशीर्वाद अर्थ में होता है। कभी-कभी आज्ञा में 'तुम' कर्ता छिपा रहता है। ऐसी दशा में क्रिया छिपे हुए कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की होती है।

नियम 4. उत्तम पुरुष में इसका प्रयोग इच्छा और प्रश्न अर्थ में होता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. सः लिखतु। – वह लिखे। (पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठतु। – वह पढ़े। (स्त्रीलिङ्ग)।
3. भवान् आगच्छत्। – आप आयें। (प्रार्थना)।
4. त्वं पठ। – तुम पढ़ो। (आज्ञा)।
5. चिरंजीवी भव। – दीर्घायु हो। (आशीर्वाद)।

5. विधिलिङ् (चाहिए के अर्थ में)

नियम 1. विधिवाक्य (जिसमें 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है)। इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना, सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना इत्यादि अर्थों में तथा यदि के साथ विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

विशेष – इन अर्थों में कहीं-कहीं लोट्लकार का भी प्रयोग किया जाता है। 'चाहिए' से युक्त वाक्यों में कर्त्ता में 'को' का चिह्न लगा रहता है उसे कर्म का चिह्न न समझना चाहिए।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः पठेत्। – लड़के को पढ़ना चाहिए या लड़का पढ़े। (पुंल्लिङ्ग)
2. बालिका पठेत्। – लड़की को पढ़ना चाहिए या लड़की पढ़े। (स्त्रीलिङ्ग)
3. बालकाः पठेयुः। – लड़कों को पढ़ना चाहिए या लड़के पढ़ें। (पुंल्लिङ्ग)
4. छात्रः तत्र पठेत्। – छात्र वहाँ पढ़ें। (विधि)
5. बालकः किं कुर्यात्। – लड़का क्या करे? (प्रश्न)

कारकों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम 1. क्रिया करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) 'ने' है। यह कहीं-कहीं छिपा रहता है। जैसे– राम लिखता है – रामः लिखति (कर्तृवाच्य) में 'ने' छिपा है और रामः प्रथमा विभक्ति का शब्द है।

नियम 2. संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये शब्द निरर्थक होते हैं। अतः अर्थ बनाने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे रामः-राम। गजः-हाथी, शुकः-तोता आदि।

नियम 3. पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे–तटः (पुंल्लिङ्ग) तटी (स्त्रीलिङ्ग) तटम् (नपुंसकलिङ्ग)- किनारा आदि।

नियम 4. अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे गांधी 'बापू' इति प्रसिद्धः अस्ति-गांधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं। नेहरू नाम एक एव महापुरुषः असीत् – नेहरू नाम के एक ही महापुरुष थे।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः बालिका च पठतः। – लड़का और लड़की पढ़ रही है।
2. भानुः शशिः वा गच्छति। – भानु या शशि जाता है।
3. शुकः एकः पक्षी अस्ति। – तोता एक चिड़िया है।
4. इदम् एकं नगरम् अस्ति। – यह एक नगर है।
5. इयम् एका नगरी अस्ति। – यह एक नगरी है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. अशोक प्रियदर्शी इस नाम से प्रसिद्ध था। 2. राम और लक्ष्मण भाई थे। 3. गीता और रेखा चली गयीं। 4. सीता या रीता नहीं आयेंगी। 5. यह एक सुन्दर उपवन है। 6. हम और तुम वहाँ कब चलेंगे। 7. सीता सती नारी थी। 8. वे लोग वहाँ जायें। 9. तुम्हें सदा हँसना चाहिए। 10. यह विशाल भवन है।

सहायक शब्द – इस नाम से-इति। भाई-भ्रातरौ।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

नियम – किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से कर्त्ता जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं, अर्थात् जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता है (पड़ता) है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–बालकः वानरं ताडयति- लड़का बन्दर को मारता है। यहाँ 'ताडयति' क्रिया का फल वानर पर पड़ता है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

विशेष – क्रिया के पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है वह कर्म होता है। हिन्दी में 'कर्म' का चिह्न 'को' है। यह कहीं-कहीं छिपा भी रहता है। जैसे- रामः पुस्तकं पठति – राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ कर्म का चिह्न 'को' छिपा है। यहाँ वाक्य में 'क्या' लगाने से 'क्या' पढ़ता है उत्तर में 'पुस्तक' आती है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति होगी।

वाक्य में यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हों तो द्विवचन और दो से अधिक हों तो बहुवचन होता है। जैसे– 1. अहं गणेशं नमामि- मैं गणेश को प्रणाम करता हूँ। 2. बालकः फलानि खादन्ति- लड़के फल खाते हैं आदि।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकाः नाटकम् अपश्यन्। –लड़कों ने नाटक देखा।
2. बालिकाः गीतं गायन्ति। –लड़कियाँ गीत गाती हैं।
3. अहं सूर्यं पश्यामि। –मैं सूर्य को देखता हूँ।
4. शिक्षकः छात्रान् ताडयति। –अध्यापक छात्रों को पीटता है।
5. त्वं बालकौ कुत्र अपश्यः? –तुमने दो लड़कों को कहाँ देखा?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. राम ने रावण को मारा था। 2. छात्र एक निबन्ध लिख रहे हैं। 3. हमने एक गीत गाया। 4. वे शिक्षक को प्रणाम करते हैं। 5. मैं एक कहानी कहूँगा। 6. वे लोग फल खायेंगे। 7. रमेश पुस्तकें लाता है। 8. वे चित्र देखेंगे। 9. हम दोनों ने एक पत्र लिखा। 10. मैंने दो गायों को देखा।

सहायक शब्द – मारा था = अहन्। लाता है = आनयति। गाया = अगायम्।

3. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति उपपद के रूप में)

जब सामान्य नियम के स्थान पर किसी विशेष नियम के अनुसार कोई विभक्ति हो जाती है, तब उसे उपपद विभक्ति कहते हैं।

नियम 1. याच् (माँगना), पच् (पकाना), प्रच्छ् (पूछना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना), हृ (चुराना), आदि और इनके अर्थवाली अन्य धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–

गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति– गुरु जी छात्र से प्रश्न पूछते हैं। यहाँ 'छात्र से' कर्म कारक नहीं है किन्तु इस विशेष नियम से 'छात्र' में द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

नियम 2. गमनार्थक धातु के योग में (जहाँ जाया जाता है उसमें) द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-बालकः गृहं गच्छति-लड़का घर में जाता है।

नियम 3. शी (सोना), स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु से पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनके आधार में द्वितीया विभक्ति हो जाती है। जैसे- रामाः शिलाम् अधिशेते-राम शिला पर सोता है।

नियम 4. अभितः (सब तरफ) परितः-चारों तरफ। सर्वतः (सब तरफ) उभयतः (दोनों ओर), हा, धिक्, प्रति, बिना आदि के योग में (इन शब्दों की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे मम ग्रामं परितः अभितः सर्वतः वा वृक्षाः सन्ति – मेरे गाँव के चारों ओर या सब तरफ पेड़ हैं।

➠ आदर्श वाक्य

1. कपिः वृक्षम् आरोहति। – बन्दर पेड़ पर चढ़ता है।
2. सिंहः वनम् अटति। – सिंह वन में घूमता है।
3. राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति। – राजा सिंहासन पर स्थित है।
4. विद्यालयम् उभयतः एका नदी वहति। – विद्यालय के दोनों ओर एक नदी बहती है।
5. व्याधः मृगं प्रति अपश्यत्। – बहेलिये ने हिरन की ओर देखा।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं। 2. विद्यार्थी गुरु के चारों ओर बैठे हैं। 3. तुम्हारे प्रति कोई ध्यान करेगा। 4. लंका के चारों ओर समुद्र है। 5. अर्जुन रथ पर चढ़ते हैं। 6. लड़कियाँ कक्षा में प्रवेश करती हैं। 7. छात्र आसन पर बैठते हैं। 8. किसान गाँव में रहते हैं। 9. तुम्हें कक्षा में जाना चाहिए। 10. मेरे घर के चारों ओर पानी था।

सहायक शब्द – सड़क = राजमार्गम्, चढ़ता है = आरोहति, रहते हैं –अधिवसन्ति।

4. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम 1. जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। उसकी पहचान से या द्वारा है। जैसे – छात्रः मुखेन खादति– छात्र मुख से खाता है। यहाँ कर्ता छात्र मुख से अपना काम पूरा कर रहा है, अतः वह करण कारक है और उसमें तृतीया विभक्ति मुखेन हुई।

विशेष– आँख, कान, हाथ, पैर प्रत्येक आदमी के दो होते हैं। अतः जब एक के लिए इसका प्रयोग होता है, तब ये सदा द्विवचन में ही आते है। जैसे– **अहं नेत्राभ्यां पश्यामि –** मैं आँख से देखता हूँ।

जहाँ इनका प्रयोग एक से अधिक के लिए होता है, वहाँ इनमें द्विवचन और बहुवचन दोनों ही हो सकते हैं। जैसे – **वयं कर्णाभ्याम्** (द्विवचन) अथवा कर्णैः (बहुवचन) शृणुमः – हम लोग कान से सुनते हैं। यहाँ द्विवचन या बहुवचन दोनों हो सकता है।

➠ आदर्श वाक्य

1. रामः बाणेन बालिम् अहन्। – राम ने बाण से बालि को मारा।
2. यूयं स्व हस्ताभ्याम् (हस्तैः) कार्यं कुरुत। – तुम लोग अपने हाथ से काम करो।
3. बालकः हस्ताभ्याम् लिखति। – लड़का हाथ से लिखता है।
4. परिश्रमेण कार्यं सिद्ध्यति। – मेहनत से काम सिद्ध होता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. तुम लोग परिश्रम से पढ़ो। 2. किसान हल से खेत जोतते हैं। 3. हम लोग रोज गेंद से खेलते हैं। 4. वे पानी से पेड़ों को सींच रहे हैं। 5. लड़कियाँ स्वर से गाती हैं। 6. वे कान से कथा सुनते हैं। 7. लड़के पैरों से गेंद को मार रहे हैं। 8. परिश्रम से धन और धन से सुख होता है। 9. भीम ने गदा से दुर्योधन को मारा। 10. वह ध्यान से अपना पाठ याद करेगा।

सहायक शब्द – रोज-नित्यम्। गेंद से = कन्दुकेन। खेत = क्षेत्रम्। जोतते हैं = कर्षन्ति। सींचते हैं = सिञ्चन्ति। मार रहे हैं = ताडयन्ति। याद करेगा = स्मरिष्यति।

5. करण कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. साथ अर्थवाले 'सह, समम्, साकम्' के योग में, (जिसके साथ काम किया जाता है उसमें), तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **पिता पुत्रेण सह गच्छति-**पिता पुत्र के साथ जाता है।

नियम 2. जिस अंग के द्वारा शरीर में कोई विकार प्रतीत हो, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **सः कर्णेन बधिरः अस्ति–** वह कान का बहरा है।

नियम 3. पृथक्, बिना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **कलमेन बिना कथं लिखिष्यामि–** कलम के बिना मैं कैसे लिखूँगा।

➠ आदर्श वाक्य

1. सः अध्यापकेन सह गृहं गमिष्यति। – वह अध्यापक के साथ घर जायेगा।
2. अयं बालकःपादेन खञ्जः अस्ति। – यह लड़का पैर का लँगड़ा है।
3. पुस्तकेन बिना अहं किं पठामि। – पुस्तक के बिना मैं क्या पढ़ूँ?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. मैं मोहन के साथ घर जाऊँगा। 2. दुष्टों के साथ विवाद मत करो। 3. राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये। 4. सत्य बोलने से सम्मान होता है। 5. यह भिखारी आँख का अन्धा है। 6. हम लोग नाव से विहार करेंगे। 7. पत्नी के बिना घर सूना होता है। 8. विद्या के बिना बुद्धि नहीं होती है। 9. तुम लोगों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए। 10. वह स्वभाव से दुष्ट है।

सहायक शब्दः – बोलने से = भाषणेन। भिखारी = भिक्षुकः। नाव से = नौकया। सूना = शून्यम्। पढ़ना चाहिए = पठत।

6. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम 1. जिसे कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई काम किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) के लिए अथवा 'को' है। जैसे–**राजा ब्राह्मणाय गां ददाति** राजा ब्राह्मण को गाय देता है। इस वाक्य में 'ब्राह्मण' को गाय देने का वर्णन है, अतः उसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।

विशेषः– 'को' कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति) का चिह्न है किन्तु सम्प्रदान कारक में भी 'को' का प्रयोग केवल देने के अर्थ में होता है। जैसे– **शिक्षकः छात्राय पुरस्कारं ददाति –** शिक्षक छात्र को इनाम देता है।

2. जब कोई वस्तु सदा के लिए दे दी जाती है तब वहाँ चतुर्थी विभक्ति होती है।

3. जहाँ कोई वस्तु थोड़े समय के लिए दी जाती है और देनेवाले का उस पर से अधिकार समाप्त नहीं होता, वहाँ चतुर्थी विभक्ति नहीं होती, बल्कि षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे – **सः रजकस्य वस्त्राणि ददाति–** वह धोबी को कपड़े देता है।

➠ आदर्श वाक्य

1. राजा निर्धनाय वस्त्रं ददाति। – राजा गरीब को कपड़ा देता है।
2. त्वं बालकाय फलम् आनय। – तुम लड़के के लिए फल लाओ।
3. वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। – पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।
4. सः कस्मै भोजनं दास्यति। – वह किसे भोजन देगा?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. तुम मोहन को पुस्तक दो। 2. भूखे को भोजन देना चाहिए। 3. नौकर स्वामी के लिए फल लाता है। 4. किसान अन्न के लिए खेत सींचता है। 5. मन्त्री सैनिक को पुरस्कार देता है। 6. तुम मुझे अपनी पुस्तक दो। 7. पिता के लिए फल लाया। 8. वे प्यासे को पानी देंगे। 9. लोग ज्ञान के लिए अध्ययन करते हैं। 10. वे लोग धोबी को कपड़ा नहीं देंगे।

सहायक शब्द – भूखे को = बुभुक्षिताया। नौकर = सेवक। प्यासे को = पिपासिताय, तृषिताय। धोबी को = रजकस्य।

7. चतुर्थी विभक्ति (उपपद के रूप में)

नियम 1. 'रुच्' धातु के योग में जिसे कोई चीज अच्छी लगती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **बालकाय मिष्ठान्नं रोचते** – लड़के को मिठाई अच्छी लगती है।

नियम 2. क्रुध् (गुस्सा करना) द्रुह् (शत्रुता करना) ईर्ष्य् (डाह करना) असूय् (निन्दा करना) आदि धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध आदि किया जाता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **अध्यापकः छात्राय क्रुध्यति** – अध्यापक छात्र पर क्रोध करता है।

नियम 3. नमः, स्वस्ति (कल्याण) स्वाहा, स्वधा, अलम (समर्थ, पर्याप्त) आदि के योग में जिसे नमस्कार आदि किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **रामाय नमः** –राम को नमस्कार है।

विशेष – जब 'नमः' के साथ कृ धातु का प्रयोग होता है, तब द्वितीया विभक्ति नहीं होती है। जैसे– **देवं नमस्करोमि –** देवता को नमस्कार करता हूँ।

1. बालकाय पठनं रोचते। – लड़के को पढ़ना अच्छा लगता है।
2. रामः श्यामाय क्रुध्यति। – राम श्याम पर क्रोध करता है।
3. कंसः कृष्णाय अद्रुह्यत्। – कंस कृष्ण से द्रोह करता था।
4. छात्राः अध्यापकाय असूयन्ति। – छात्र अध्यापक की निन्दा करता है।
5. श्री गणेशाय नमः। – श्री गणेश जी को नमस्कार है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. दुष्ट सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। 2. तुम लड़कों से द्रोह करते हो। 3. कौरव पाण्डवों पर क्रोध करते थे। 4. इस समय छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता। 5. सज्जनों को विवाद अच्छा नहीं लगता। 6. भगवान् शिव को नमस्कार है। 7. शाम को टहलना सबको अच्छा लगता है। 8. रावण राम से सदा द्रोह करता था। 9. तुम्हारा कल्याण हो। 10. छात्र अध्यापक को नमस्कार करते हैं।

सहायक शब्द – सज्जनों से = सज्जनेभ्यः। द्रोह करते हो = द्रुह्यसि। पढ़ना = पठनम्,अध्ययनम्। अच्छा नहीं लगता = न रोचते। टहलना = भ्रमणम्। नमस्कार करते हैं = नमस्कुर्वन्ति।

8. अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

नियम – जिसमें किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'से' है। जैसे – **हरिः अश्वात् अपतत्**– हरि घोड़े से गिर पड़ा। इस वाक्य में 'घोड़े से' हरि अलग हो गया है, अतः अश्व में पंचमी विभक्ति हुई।

➡ आदर्श वाक्य

1. मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत्। – मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
2. छात्राः गृहात् आगच्छन्ति। – छात्र घर से आते हैं।
3. अशोकः वृक्षात् अवतरति। – अशोक पेड़ से उतरता है।
4. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। – पेड़ से पत्तियाँ गिरती हैं।
5. कूपात् जलम् आनय। – कुएँ से पानी लाओ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए– 1. मैं घर से स्कूल जाऊँगा। 2. लड़का पेड़ से गिर पड़ा। 3. वे पुस्तकालय से पुस्तकें लाते हैं। 4. हम लोग बाजार से फल लायेंगे। 5. लड़कियाँ विद्यालय से घर जा रही हैं। 6. तुम लोग कक्षा से बाहर मत जाओ। 8. मैं तालाब से पानी लाऊँगी। 9. घुड़सवार घोड़े से गिर पड़ा। 10. तुम लोग जंगल से बाहर जाओ।

सहायक शब्द– लाते हैं = आनयन्ति। बाजार से = आपणात्। बाहर = बहिः। घुड़सवार = अश्वारोही।

9. अपादान कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे– **सः चौरात् विभेति –** वह चोर से डरता है। **पिता पुत्रं पापात् त्रायते–** पिता पुत्र को पाप से बचाता है।

नियम 2. जिससे कोई वस्तु हटायी जाती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे – गुरुः शिष्यं कुमार्गात् निवारयति– गुरु शिष्य को कुमार्ग से रोकता है।

नियम 3. जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे अहं गुरोः व्याकरणं पठामि। मैं गुरु जी से व्याकरण पढ़ता हूँ।

नियम 4. अन्य (सिवाय) दूर, इतर (दूसरा), ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पंचमी होती है। जैसे– **ग्रामात् पूर्वं नदी बहति–** गाँव से पूर्व में नदी बहती है।

➡ आदर्श वाक्य

1. जनाः सिंहात् बिभ्यन्ति। – लोग सिंह से डरते हैं।
2. त्वं चौरात् बालं रक्ष। – तुम चोर से बालक को बचाओ।
3. कृषकाः क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति। – किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
4. बालकाः अध्यापकात् गणितं पठन्ति। – लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
5. ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः। – ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
6. गंगा हिमालयात् प्रभवति। – गंगा हिमालय से निकलती है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. आजकल विद्यार्थी अध्यापक से नहीं डरते हैं। 2. चूहे बिल्ली से डरते हैं। 3. तालाब में कमल पैदा होते हैं। 4. मैं अपने मित्र के साथ पढ़ता हूँ। 5. माली बाग से जानवरों को निकालता है। 6. चैत के पहले फागुन आता है। 7. कृष्ण के सिवाय मेरी रक्षा कौन करेगा? 8. मेरे गाँव से दूर एक पहाड़ है। 9. धन के बिना सुख नहीं होता है। 10. पेड़ों से पत्तियाँ उत्पन्न होती हैं।

सहायक शब्द – आजकल = इदानीम्। चूहे = मूषकाः। बिल्ली = मार्जार, डालः। पैदा होते हैं = प्रभवन्ति। आता है = आयाति। कृष्ण के सिवाय = कृष्णात् अन्यः।

10. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

नियम 1. जब किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट होता है, तब जिसका सम्बन्ध होता है उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। इसकी पहचान का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने है। जैसे– अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रं आसीत्– अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र था। यहाँ अर्जुन तथा पुत्र में सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः 'अर्जुनस्य' में षष्ठी विभक्ति हुई है।

नियम 2. समान (बराबर) अर्थ रखने वाले तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में जिससे तुलना की जाती है, उसमें षष्ठी या तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– रामस्य रामेण वा समः कोऽपि नास्ति– राम के समान कोई भी नहीं है।

➡ आदर्श वाक्य

1. कूपस्य जलं शीतलं भवति। – कुएं का पानी ठंडा होता है।
2. रामस्य माता कौशल्या आसीत्। – राम की माता कौशल्या थीं।
3. तव गृहं कुत्र अस्ति। – तुम्हारा घर कहाँ है?
4. स्वस्थ वचनं पालय। – अपने वचन का पालन करो।
5. सः अध्ययनस्य हेतोः काश्यां वसति। – वह अध्ययन के हेतु काशी में रहता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए – 1. कंस कृष्ण का शत्रु था। 2. कालिदास संस्कृत के कवि हैं। 3. दुष्टों की संगति नहीं करनी

चाहिए। 4. मैंने अपना सब धन दान कर दिया। 5. तुम्हारा भाई यहाँ कब आवेगा। 6. तुलसीदास रामायण के रचयिता थे। 7. भक्त ईश्वर का स्मरण करता है। 8. कर्ण के समान कोई न था। 9. नदी का पानी धीरे-धीरे बहता है। 10. उसका नाम सदा अमर है।

सहायक शब्द – धीरे-धीरे = शनैः-शनैः। अपना = स्वस्य।

11. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

नियम 1. जिस स्थान या वस्तु में कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'में' या पर है। जैसे– अहं विद्यालये पठामि– मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। यहाँ पढ़ने का कार्य विद्यालय में हो रहा है, अतः विद्यालय में सप्तमी विभक्ति हुई है।

नियम 2. जिसके लिए स्नेह, आसक्ति एवं सम्मान प्रदर्शित किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम 3. समुदायवाचक शब्द में तथा जिस समय या स्थान में कोई काम किया जाता है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे– **कविषु कालिदासः श्रेष्ठः आसीत्** – कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे। प्रथमे दिवसे सः आगमिष्यति– पहले दिन वह यहाँ आयेगा।

➡ आदर्श वाक्य

1. सरोवरे कमलानि विकसन्ति। – तालाब में कमल खिलते हैं।
2. वयं नद्यां स्नानं कुर्मः। – हम लोग नदी स्नान करते हैं।
3. मम पिता मयि स्निह्यति। – मेरे पिता जी मुझ पर स्नेह रखते हैं।
4. गुरौ भक्तिः कुर्यात्। – गुरु जी पर भक्ति रखनी चाहिए।
5. अस्मिन् समये वयं पठिष्यामः। – इस समय हम लोग पढ़ेंगे।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –1. पेड़ों पर चिड़ियाँ बोलती हैं। 2. काशी में विश्वनाथ का मन्दिर है। 3. अध्यापक छात्रों पर स्नेह रखते हैं। 4. फूलों पर भौंरे गूँज रहे हैं। 5. कृष्ण का जन्म जेल में हुआ था। 6. मैं अपने भाइयों में बड़ा हूँ। 7. काव्यों में नाटक सुन्दर होता है। 8. आज मेरे घर में उत्सव होगा। 9. धर्म में प्रेम रखना चाहिए। 10. वह दूसरे दिन आवेगा।

सहायक शब्द – बोलती हैं = कूजन्ति। गूँज रहे हैं = गुञ्जन्ति। बड़ा = ज्येष्ठ। सुन्दर = रम्यम्। प्रेम = रतिः। रखना चाहिए = कुर्यात्।

12. सम्बोधन

नियम 1. जिसे पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न हे, अरे, ऐ, आदि हैं। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। जैसे– हे राम! भो बालक! अरे लड़के! आदि।

नियम 2. संस्कृत में सम्बोधन के एक वचन में रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होता है।

विशेष – सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. भो पुत्र! त्वं कुत्र गच्छसि। – अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?
2. बालकाः! प्रतिदिनं प्रातः उद्यानं भ्रमत। – लड़कों! प्रतिदिन सबेरे बगीचे में भ्रमण करो।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–1. छात्रो! परिश्रम से पढ़ो। 2. गुरुदेव! चित्र में क्या है? 3. हे राम! मेरी रक्षा करो। 4. महर्षि! आप सब कुछ जानते हैं। 5. विद्यार्थियों! अपने आसन पर बैठ जाओ।

विभिन्न प्रयोगों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. सर्वनामों का प्रयोग

1. **युष्माकं** गृहं कुत्र अस्ति?	– तुम्हारा घर कहाँ है?
2. **तस्य** बालकस्य किं नाम अस्ति?	– उस लड़के का नाम क्या है?
3. **यस्य** चित्ते दया भवति, सः साधुः भवति।	– जिसके चित्त में दया होती है, वह साधु होता है।
4. **तस्मै** बालकाय दुग्धं वितर।	– उस बालक के लिए दूध बाँटो।
5. **एतानि** पुस्तकानि मह्यं यच्छ।	– इन पुस्तकों को मुझे दो।
6. **तस्यां** नगर्या कः अवसत्?	– उस नगरी में कौन रहता था?
7. **कस्मिश्चिद्** नगरे एकः ब्राह्मणः वसति स्म।	– किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था।
8. **कस्यचिद्** नृपस्य हस्ती मरणासन्नः आसीत्।	– किसी राजा का हाथी मरणासन्न था।
9. **सः तस्मै** विप्राय धेनुं ददाति।	– वह उस ब्राह्मण के लिए गाय देता है।
10.**कस्यचित्** बालिकायै फलं यच्छ।	– किसी लड़की को फल दो।

नियम 1. युष्मद् (तू), अस्मद् (मैं), तद् (वह), एतद् (यह), इदम् (यह), अहम् (मैं), किम्, (कौन, किस) यद् (जो), सर्व (सब) आदि सर्वनाम हैं। इनके रूप पहले लिखे जा चुके हैं।

नियम 2. सर्वनामों का प्रयोग संज्ञाओं के स्थान पर होता है, अतः इनके कारक और वचन पहले कहे हुए नियमों के अनुसार ही होते हैं। जैसे–

वाक्य, 1 'तुम्हारा' में युष्मद् शब्द का षष्ठी बहुवचन होने से इसकी संस्कृत 'युष्माकम्' है। इसी प्रकार वाक्य 3 में 'यस्य' षष्ठी एकवचन है।

नियम 3. सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की भाँति भी होता है। जहाँ ये विशेषणों की तरह काम में आते हैं वहाँ इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन अपने विशेष्य की तरह होते हैं। जैसे– वाक्य 2 में 'उस' सर्वनाम 'लड़के का' की विशेषता प्रकट कर रहा है। इसकी संस्कृत बालकस्य में पुंल्लिङ्ग की षष्ठी का एकवचन है, अतः 'उसकी' संस्कृत 'तद्' का भी पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का रूप 'तस्य' है।

इसी प्रकार वाक्य 5 में 'पुस्तकानि' के नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन होने के कारण 'इन' की संस्कृत 'एतत्' का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप 'एतानि' प्रयोग में लाया गया है।

इसी प्रकार वाक्य 6 में 'नगर्याम्' के स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन होने के कारण 'तस्याम्' भी 'तद्' का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप प्रयोग में आया है।

नियम 4. किस की संस्कृत 'किम्' शब्द के रूपों में 'चित्' जोड़ने से बनती है, किन्तु ऐसे स्थान पर 'किम्' शब्द के विशेष्य से लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन के अनुसार चलाकर 'चित्' जोड़ा जाता है और आवश्यकतानुसार सन्धि भी करनी पड़ती है। जैसे– वाक्य 7 में किसी 'नगरे' का विशेषण है। नगरे में नपुंसकलिङ्ग सप्तमी एकवचन है, अतः किम् शब्द का नपुंसकलिङ्ग एकवचन के रूप 'कस्मिन्' में 'चित्' जोड़कर सन्धि करने से 'कस्मिश्चिद्' रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 8 में 'नृपस्य' के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन होने के कारण किम् के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का 'कस्य' में 'चित्' जोड़कर ' कस्यचित्' का रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 10 में 'बालिकायै' के स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन होने के कारण 'कि' के स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन का रूप, 'कस्यै' में 'चित्' जोड़कर 'कस्यैचित्' रूप प्रयुक्त हुआ।

2. विशेषणों का प्रयोग

1. विशेषणों के विभक्ति, वचन और लिङ्ग अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

2. 'मुझ जैसा' और 'तुझ जैसा' आदि की संस्कृत बनाने के लिए इनके वाचक सर्वनाम शब्दों में 'दृश्' जोड़ दिया जाता है। इनके लिङ्ग, विभक्ति, वचन भी अपने विशेष्य के अनुसार प्रयोग किये जाते हैं।

➨ आदर्श वाक्य

1. मैं सफेद घोड़ा देखता हूँ। – अहं श्वेतम् अश्वं पश्यामि।
2. यह जल पवित्र है। – एतत् जलं पवित्रम् अस्ति।
3. पथिक वृक्ष की शीतल छाया में बैठता है। – पथिकः वृक्षस्य शीतलायां छायाः तिष्ठति।
4. मैं गर्म जल से मुँह धोता हूँ। – अहम् उष्णेन जलेन मुखं प्रक्षालयामि।
5. वे निर्बल पुरुषों की रक्षा करते हैं। – ते निर्बलान् पुरुषान् रक्षन्ति।
6. भीम सबसे बलवान् थे। – भीमः बलवत्तमः आसीत्।
7. रमा एक श्रेष्ठ स्त्री है। – रमा एका श्रेष्ठा नारी आसीत्।
8. विपिन उत्तम छात्र है। – विपिनः उत्तमः छात्रः अस्ति।
9. वीर पुरुषों की प्रशंसा सब जगह होती है। – वीराणां पुरुषाणां प्रशंसा सर्वत्र भवति।
10. राम भरत से बड़े थे। – रामः भरतात् ज्येष्ठतरः आसीत्।

3. उपसर्ग युक्त धातुओं का प्रयोग

नियम 1. उपसर्ग धातु से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं जैसे– हृ (हर) धातु का अर्थ हरण करना, चुराना है, किन्तु इसके पहले **'वि'** उपसर्ग जुड़ जाने से विहरति (प्रथम पुरुष एकवचन) रूप बनता है। उसका विहार करता है, घूमता है, हो जाता है।

नियम 2. लङ्लकार (भूतकाल) में धातु से पहले 'अ' जुड़ता है किन्तु यह 'आ' मूल धातु से पहले जुड़ता है, उपसर्ग से पहले नहीं। अतः भूतकाल के रूप से पहले उपसर्ग जोड़ कर सन्धि करके उपसर्ग युक्त क्रिया बनायी जाती है। जैसे– गम् धातु का भूतकाल (लङ्लकार) से रूप अगच्छत् होता है। उसके पहले उपसर्ग **'निर्'** जोड़ने से उसका रूप निर्गच्छत् (निकला) बनेगा इसी तरह अनु + अभवत् = अन्वभवत् (अनुभव किया) आदि होता है।

विशेष – इसका विस्तृत विवरण उपसर्ग अंश में पढ़िये। यहाँ अनुवाद में केवल उनका प्रयोग दिया गया है।

➨ आदर्श वाक्य

1. सैनिकाः बाणैः शत्रून् प्रहरन्ति। – सैनिक बाण से शत्रुओं को मारते रहे।
2. लक्ष्मणः रामम् अन्वगच्छत्। – लक्ष्मण राम के पीछे गया।
3. बालकः गृहात् वहिः निर्गच्छत्। – लड़का घर से बाहर निकला।
4. अहं प्रसन्नताम् अनुभविष्यामि। – मैं प्रसन्नता का अनुभव करूँगा।

4. कृदन्त प्रयोग

क्त्वा तथा ल्यप् प्रत्यय (पूर्वकालिक क्रिया)

नियम 1. मुख्य क्रिया को करने से पहले जो काम किया जाता है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। हिन्दी में ऐसी क्रिया

के बाद में 'कर' या 'करके' जुड़े रहते हैं।

संस्कृत में इसे धातुओं के आगे क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ कर बनाते हैं। जैसे – पठ् + क्त्वा = पठित्वा–पढ़कर आदि।

2. धातुओं से पूर्व निषेधार्थक 'अ' अथवा 'न' को छोड़कर यदि कोई उपसर्ग (प्र, परा, अप, सम आदि) होता है, तो क्त्वा के स्थान में ल्यप् हो जाता है। ल्यप् में 'य' शेष रहता हैं। जैसे – उप + विश् + क्त्वा (ल्यप्)– उपविश्य – बैठकर।

3. क्त्वा प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः पठित्वा गृहं गमिष्यति। – लड़का पढ़कर घर जाएगा।
2. सः गुरुं प्रणम्य उपविशति। – वह गुरु को प्रणाम कर बैठता है।
3. हस्तौ प्रक्षाल्य भोजनं कुर्यात्। – हाथ धोकर भोजन करना चाहिए।
4. अहं कार्यम् अकृत्वा गृहं न गमिष्यामि। – मैं काम किये बिना घर नहीं जाऊँगा।

तुमुन् प्रत्यय (उत्तरकालिक क्रिया)

नियम 1. 'के लिए' आदि द्वारा निमित्त या प्रयोजन सूचित करने के लिए धातु के आगे तुम् (तुमुन् प्रत्यय) का प्रयोग होता है। जैसे – दा + तुमुन् = दातुम् – देने के लिए। पठ् + तुमुन् = पठितुम् – पढ़ने के लिए, आदि।

नियम 2. तुमुन् (तुम) प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

नियम 3. तुमुन् प्रत्यय वहीं होता है, जहाँ दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही हो। भिन्न कर्त्ता होने पर तुमुन्, प्रत्यय नहीं होता।

नियम 4. यत् (यत्न करना) शक् (सकना) लभ् (पाना) विद् (जानना) इष् (इच्छा करना) आदि धातुओं के योग में 'तुमुन्' प्रत्यय होता है। जैसे– सः गृहं गन्तुम् इच्छति–सः स्नातुं (स्नानाय) गच्छति– वह नहाने जाता है।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः लेखितुं यतते। – लड़का लिखने का प्रयत्न करता है।
2. अहं गृहं गन्तुम् इच्छामि। – मैं घर जाना चाहता हूँ।
3. अयं विद्यालयं गन्तुं समयः अस्ति। – यह विद्यालय जाने का समय है।
4. सः पठितुं, पठनाय वा विद्यालयं गच्छति। – वह पढ़ने के लिए स्कूल जाता है।

शतृ, शानच् प्रत्यय (वर्तमान कालिक कृदन्त)

नियम 1. हिन्दी के 'जाता हुआ, खाता हुआ, आदि अर्थों में परस्मैपदी धातुओं से शतृ (अन्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्) प्रत्यय होते हैं।

नियम 2. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं। अतः उनके लिङ्ग, वचन, विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

विषय – शतृ और शानच् प्रत्ययों को विशेषणात्मक कृदन्त भी कहते हैं। ये भविष्यकाल की क्रिया के साथ भी लगते हैं।

➡ आदर्श वाक्य

1. बालकः पठन् गच्छति। – लड़का पढ़ता हुआ जा रहा है।
2. हसन्तीम् बालिकां पश्य। – हँसती हुई लड़की को देखो।
3. वृक्षात् पतत् फलं पश्य। – पेड़ से गिरते हुए फल को देखो।
4. शयानः पुरुषः तिष्ठति। – सोता आदमी बैठा है।
5. अहं कम्पमानां बालिकाम् अपश्यम्। – मैंने काँपती हुई लड़की को देखा।

क्त और क्तवतु प्रत्यय (भूतकालिक कृदन्त)

नियम 1. भूतकाल में (काम के पूर्णतया समाप्त हो जाने पर) धातु से क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। इनमें 'क्त' में 'त' और 'क्तवतु' में 'तवत्' शेष रहता है।

नियम 2. 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में होता है।

नियम 3. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति आदि इनके विशेष्यों के अनुसार होते हैं।

नियम 4. क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप अकारान्त शब्दों की तरह तीनों लिङ्गों में चलते हैं। जैसे– गतः त्पुं। गता (स्त्री) गतम् (नपुं) आदि।

नियम 5. क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है। इससे बने शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग में 'भगवत्', स्त्रीलिङ्ग में ईकार जोड़कर 'नदी' और नपुंसकलिङ्ग 'जगत्' शब्द के समान होते हैं। जैसे– गतवान्, गतवन्तौ, गतवन्तः (पु0) गतवती, गतवत्यौ, गतवंत्यः (स्त्री) तथा गतवत् आदि नपुंसकलिङ्ग।

➡ आदर्श वाक्य

1. रामेण रावणो हतः। – राम ने रावण को मारा।
2. बालकेन पुस्तकं पठितम्। – लड़के ने पुस्तक पढ़ा।
3. मया अद्य काशी दृष्टा। – मैंने आज काशी देखी।
4. सः गतः अथवा तेन गतम्। – वह गया।
5. रामः गृहं गतवान्। – राम घर गया।

●●

॥ महत्त्वपूर्ण हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद ॥

1.	गंगा नदी सभी नदियों में प्रसिद्ध और पवित्र मानी जाती है।	गंगा नद्यः सर्वासु नदीषु प्रसिद्ध पवित्रः च मन्यते।
2.	परिश्रम के बिना विद्या और विद्या के बिना सुख नहीं मिलता।	परिश्रमं विना विद्या विद्यां विना सुखः न प्राप्यते।
3.	परिश्रमी छात्र ही गुरुजनों के स्नेहभाजन होते हैं।	परिश्रमी छात्रः एव गुरुजनस्य स्नेहभाजनं भवति।
4.	नदी के दोनों ओर पेड़ हैं।	नदीम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
5.	भगवान् के बिना सुख नहीं है।	भगवानं बिना सुखं नास्ति।
6.	गुरु को नमस्कार।	गुरवे नमः।
7.	मेरे गाँव से पहले एक नदी पड़ती है।	मम ग्रामं पूर्वः एकः नदी अस्ति।
8.	विद्यालय के चारों ओर सड़क है।	विद्यालयं परितः पथः अस्ति।
9.	कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं।	कृष्णम् उभयतः ग्वालाः सन्ति।
10.	राम और श्याम के बीच में मोहन है।	अन्तरा रामं श्यामंच मोहनः।
11.	राम सीता के साथ वन गये।	रामः सीतया सह वनम् अगच्छत्।
12.	घी के बिना भोजन अच्छा नहीं लगता।	घृतं बिना भोजनं न रोचते।
13.	प्रजाओं का कल्याण हो।	स्वस्ति प्रजाः।
14.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ कवि हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः कविः।
15.	सतीश पैर से लंगड़ा है।	सतीशः पादेन खञ्जः अस्ति।
16.	साहित्य और संगीत के बिना मनुष्य पशु है।	साहित्यं संगीतं च बिना मनुष्यः पशुः अस्ति।
17.	मेरे साथ मेरा मित्र विद्यालय जाता है।	मया सह मम मित्रः विद्यालयं गच्छति।
18.	उद्यान के दोनों ओर मार्ग हैं।	उद्यानम् उभयतः पथौ स्तः।
19.	सभी देवताओं को नमस्कार।	सर्वेभ्यः देवेभ्यः नमः।
20.	बालक साँप से डरता है।	बालकः सर्पात् विभेति।
21.	राजा शत्रुओं पर क्रोध करता है।	नृपः शत्रवे क्रुध्यति।
22.	छात्रों में मोहन मेधावी है।	छात्रेषु मोहनः कुशाग्रबुद्धिः अस्ति।
23.	द्वीप के चारों ओर समुद्र है।	द्वीपं परितः सागरः अस्ति।
24.	राकेश स्वभाव से सरल है।	राकेशः स्वभावेन सरलः अस्ति।
25.	वह सिर से गंजा है।	सः शिरसा खल्वाटः अस्ति।
26.	मैं गुरु के साथ विद्यालय जाता हूँ।	अहं गुरुणा सह विद्यालयं गच्छामि।
27.	अध्ययन के बिना ज्ञान नहीं प्राप्त होता है।	अध्ययनेन विना ज्ञानः न प्राप्यते।
28.	मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।	मानवेषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः।
29.	वह भिक्षुकों को भोजन देता है।	सः भिक्षुकाय भोजनं ददाति।
30.	देवदत्त आसन पर बैठता है।	देवदत्तः आसने तिष्ठति।

31.	नगर के दोनों ओर नदी है।	नगरम् उभयतः नदी अस्ति।
32.	छात्र को पढ़ना अच्छा लगता है।	छात्रै अध्ययनं रोचते।
33.	वह अध्ययन के लिए शहर में रहता है।	सः अध्ययनाय नगरं वसति।
34.	गणेश को नमस्कार।	गणेशाय नमः।
35.	राम के साथ सीता भी वन गयीं।	रामेण सह सीता अपि वनं गतवती।
36.	बालक पिता से मार्ग पूछता है।	बालकः पितरं मार्गं पृच्छति।
37.	हमारे विद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं।	अस्माकं विद्यालयं उभयतः उद्यानम् अस्ति।
38.	हिमालय से गङ्गा निकलती है।	हिमालयात् गंगा निर्गच्छति।
39.	छात्रों में राम कुशल है।	रामः छात्रेषु कुशलः।
40.	भक्त मुक्ति के लिए हरि को भजता है।	भक्तः मुक्तये हरिं भजति।
41.	रमा वृक्ष से फल चुनती है।	रमा वृक्षमविचिनोति फलानि।
42.	महल के चारों ओर उद्यान है।	महलं परितः उद्यानमस्ति।
43.	रमेश आँख से काना है।	रमेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
44.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
45.	गङ्गा हिमालय से निकलती है।	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।
46.	मैं ब्राह्मण को गाय देता हूँ।	अहं विप्राय गां ददामि।
47.	विक्रमादित्य की सभा में रहे नवरत्नों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	विक्रमादित्यस्य सभायाम् उपस्थित-नवरत्नेषु कालिदासः श्रेष्ठः।
48.	दुर्जनों को दूर से नमस्कार।	दुर्जनेभ्यः दूरात् नमः।
49.	मूर्ख को धिक्कार।	जाड्यं धिक्।
50.	गाँव के चारों ओर खेत हैं।	ग्रामं परितः क्षेत्राः सन्ति।
51.	यह बालिका स्वभाव से सरल है।	एषा बालिका स्वभावेन सरलः अस्ति।
52.	छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जा रहा है।	छात्र अध्ययनाय विद्यालयं गच्छति।
53.	राजा सिंहासन पर बैठता है।	नृपः सिंहासने तिष्ठति।
54.	मोहन राजा से क्षमा माँगता है।	मोहनः राजानं क्षमा याचते।
55.	सुरेश आँख से काना है।	सुरेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
56.	सीता राम के साथ वन गयी।	सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
57.	राम को दूध अच्छा लगता है।	रामाय दुग्धं रोचते।
58.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
59.	गाँव के दोनों ओर नदी है।	ग्रामम् उभयतः नदी अस्ति।
60.	गंगा और यमुना के बीच प्रयाग है।	अन्तरा गंगा यमुनाच प्रयागः अस्ति।
61.	सुरेश पैर से लंगड़ा है।	सुरेशः पादेन खञ्जः अस्ति।
62.	राम अध्ययन के लिए नगर में रहता है।	रामः अध्ययनस्य हेतोः नगरं वसति।
63.	राणाप्रताप का घोड़ा इतिहास में प्रसिद्ध है।	राणाप्रतापस्य अश्वः इतिहासे प्रसिद्धः।
64.	विद्यालय के चारों तरफ वृक्ष हैं।	विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।
65.	हमारे देश में अनेक नदियाँ बहती हैं।	अस्माकं देशे अनेकानि नद्यः प्रवहन्ति।

66.	गाँव के चारो ओर जंगल हैं।	ग्रामं परितः वनानि सन्ति।
67.	जंगल के मध्य एक सरोवर है।	वनस्य मध्ये एकः सरोवरः अस्ति।
68.	उसका जल अत्यन्त निर्मल है।	तस्य जलः अत्यन्तः निर्मलः अस्ति।
69.	प्रायः स्नान के लिए लोग वहाँ जाते हैं।	प्रायः स्नानार्थम् जनाः तत्र गच्छन्ति।
70.	सरोवर के तट पर एक आश्रम भी है।	सरोवरस्य तटे एकः आश्रमः अपि अस्ति।
71.	राजसेवक शासन का अंग है।	राजसेवकः शासनस्य अंगः अस्ति।
72.	छात्रों में श्याम मेधावी है।	छात्रेषु श्यामः मेधावी अस्ति।
73.	यात्री छात्र से रास्ता पूछता है।	पथिकः छात्रं पथं पृच्छति।
74.	कृष्ण के चारों ओर ग्वाल-बाल हैं।	कृष्णं परितः ग्वाल-बालाः सन्ति।
75.	नगर के चारों ओर जङ्गल है।	नगरं परितः वनः अस्ति।
76.	छात्र अध्यापक के साथ आते हैं।	छात्राः शिक्षकेन सह आगच्छन्ति।
77.	कारुणिकजन याचकों को धन देते हैं।	कारुणिकजनाः याचकाय धनं ददन्ति।
78.	छात्र गुरु से प्रश्नोत्तर पूछता है।	छात्र गुरुं प्रश्नोत्तरं पृच्छति।
79.	वह भिक्षकों को भोजन देता है।	सः भिक्षुकाय भोजनं ददाति।
80.	वह शिर से खल्वाट है।	सः शिरसा खल्वाटः अस्ति।
81.	गाँव के दोनों ओर नदी है।	ग्रामं परितः नद्यः अस्ति।
82.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
83.	गङ्गा और यमुना के बीच में प्रयाग है।	अन्तरा गंगा यमुनाच प्रयागः अस्ति।
84.	सुरेश पैर से लंगड़ा है।	सुरेशः पादेन खञ्जः।
85.	देवदत्त अध्ययन के लिए शहर में रहता है।	देवदत्तः अध्ययनाय नगरे निवसति।
86.	छात्रों में रमेश उत्तम है।	छात्रेषु उत्तमः रमेशः।
87.	नदी के दोनों ओर आम के पेड़ हैं।	नदीम् उभयतः आम्रवृक्षाः सन्ति।
88.	अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।	अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति।
89.	रमेश मामा के साथ बाजार गया।	रमेशः मातुलेन सह हाटम् अगच्छत्।
90.	देवदत्त स्वभाव से मधुर है।	देवदत्तः स्वभावेन मधुरः अस्ति।
91.	पर्वत के दोनों ओर नदियाँ हैं।	पर्वतम् उभयतः नद्याः सन्ति।
92.	गायों में काली गाय बहुत दूध देनेवाली होती है।	गवेषु कृष्णः धेनुः बहुक्षीराः भवति।
93.	पिता पुत्र के साथ विद्यालय जाता है।	पिता पुत्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
94.	ग्राम के चारों ओर वन है।	ग्रामं परितः वनम् अस्ति।
95.	भगवान वैकुण्ठ में रहते हैं।	भगवान वैकुण्ठं अधिशेते।
96.	ग्राम के दोनों ओर नदी है।	ग्रामं उभयतः नदी अस्ति।
97.	गुरु शिष्य के साथ पुस्तकालय जाता है।	गुरुः शिष्येण सह पुस्तकालयं गच्छति।
98.	नदियों में गङ्गा सबसे अधिक पवित्र है।	नदीषु गङ्गा सर्वासु पवित्रः अस्ति।
99.	गृहस्थ भिखारियों को धन देता है।	गृहस्थः भिक्षुकेभ्यः धनं ददाति।
100.	मोहन राम के साथ विद्यालय जाता है।	मोहनः रामेण सह विद्यालयं गच्छति।
101.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
102.	गङ्गा हिमालय से निकलती है।	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।

103.	मैं लिखता हूँ।	अहं लिखामि।
104.	सुरेश आँख से काना है।	सुरेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
105.	रमेश दौड़ता है।	रमेशः धावति।
106.	हम दोनों कहाँ जाते हैं?	आवां कुत्र गच्छावः?
107.	गाँव के समीप विद्यालय है।	ग्रामं निकषा विद्यालयं अस्ति।
108.	हिमालय से नदी निकलती है।	हिमालयात् नदी प्रभवति।
109.	गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।	गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
110.	हमारे विद्यालय के दोनों ओर नदी है।	अस्माकं विद्यालयं उभयतः नदी अस्ति।
111.	सीता राम के साथ वन में जाती है।	सीता रामेण सह वनं गच्छति।
112.	हिमालय से गंगा निकलती है।	हिमालयात् गङ्गा प्रभवति।
113.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
114.	सुरेश राम से पुस्तक माँगता है।	सुरेशः रामं पुस्तकं याचते।
115.	देवदत्त स्वभाव से दयालु है।	देवदत्तः स्वभावेन दयालुः अस्ति।
116.	तीर्थों में प्रयाग श्रेष्ठ है।	तीर्थेषु प्रयागः श्रेष्ठः अस्ति।
117.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
118.	गाँव के दोनों ओर जलाशय है।	ग्रामं उभयतः जलाशयः अस्ति।
119.	गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।	अन्तरा गंगा यमुना च प्रयागः अस्ति।
120.	महेश एक आँख से काना है।	महेशः एकं अक्ष्णा काणः अस्ति।
121.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
122.	नदी एक कोस टेढ़ी-मेढ़ी है।	क्रोशं कुटिला नदी।
123.	राजा सिंहासन पर बैठता है।	नृपः सिंहासने तिष्ठति।
124.	हमारे महाविद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं।	अस्माकं महाविद्यालयं उभयतः उद्यानम् अस्ति।
125.	छात्रों में राम कुशल है।	छात्रेषु रामः कुशलः।
126.	मुक्ति के लिए भक्त हरि को भजता है।	मुक्तये भक्तः हरिं भजति।
127.	तुम जल से मुख धोते हो।	त्वं जलेन मुखं प्रक्षालयसि।
128.	विद्यालय के चारों ओर वन है।	विद्यालयं परितः वनं अस्ति।
129.	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
130.	माधव लेखनी से लिखता है।	माधवः लेखन्या लिखति।
131.	गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।	ग्रामम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
132.	राम ने रावण को बाण से मारा।	रामः रावणं बाणेन अहनत्।
133.	मोहन पैर से लंगड़ा है।	मोहनः पादेन खञ्जः।
134.	देवदत्त को लड्डू अच्छे लगते हैं।	देवदत्ताय मोदकं रोचते।
135.	घर के दोनों ओर बगीचा है।	गृहम् उभयतः उद्यानम् अस्ति।
136.	बगीचे में सुन्दर पुष्प हैं।	उद्याने सुन्दरं पुष्पाणि सन्ति।
137.	गणेशजी को लड्डू अच्छा लगता है।	गणेशाय मोदकं रोचते।
138.	शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है।	शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
139.	वह जल से हाथ धोता है।	सः जलेन हस्तं प्रक्षालयति।

140.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
141.	वह चोर से डरता है।	सः चौरात् विभेति।
142.	भक्त हरि को भजता है।	भक्तः हरिं भजति।
143.	वह महीने भर निरन्तर पढ़ता है।	सः मासं यावत् निरन्तरः पठति।
144.	राम श्याम के साथ जाता है।	रामः श्यामेण सह गच्छति।
145.	बालक घोड़े से गिरता है।	बालकः अश्वात् पतति।
146.	मन्दिर के चारों ओर पुष्प पादप हैं।	मन्दिरं अभितः पुष्पाणि पादपानि सन्ति।
147.	विष्णु बलि से पृथ्वी माँगते हैं।	विष्णु बलिं वसुधां याचते।
148.	देवदत्त दोनों नेत्रों से काना है।	देवदत्तः नेत्राभ्यां काणः।
149.	हम दोनों माता-पिता के साथ बाजार गये।	आवाम् माता-पित्रेण सह आपणम् अगच्छताम्।
150.	लङ्का के चारों ओर समुद्र है।	लङ्कां अभितः समुद्रः अस्ति।
151.	गाँव के निकट ही दो नदियाँ हैं।	ग्रामं निकषा एव द्वौ नद्यौ स्तः।
152.	मित्रों के साथ पढ़ने जाओ।	मित्रेण सह पठितुं गच्छ।
153.	विद्यालय के चारों ओर बाग है।	विद्यालयं अभितः उद्यानम् अस्ति।
154.	वह घोड़े से गिर पड़ा।	सः अश्वात् अपतत्।
155.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	ग्वाला गां दुग्धं दोग्धि।
156.	देवदत्त चावलों से भात पकाता है।	देवदत्तः तन्दुलान् ओदनं पचति।
157.	मन्दिर के चारों ओर वाटिका है।	मन्दिरं परितः वाटिका अस्ति।
158.	वह मित्रों के साथ विद्यालय जाता है।	सः मित्रैः सह विद्यालयं गच्छति।
159.	दुर्योधन पाण्डवों पर क्रोध करता है।	दुर्योधनः पाण्डवेभ्यः क्रुध्यति।
160.	भीष्म वीरों में श्रेष्ठ थे।	भीष्मः वीरेषु श्रेष्ठः आसीत्।
161.	वह निर्धनों को धन देता है।	सः निर्धनेभ्यः धनं ददाति।
162.	विद्यालय के चारों ओर विशाल वृक्ष हैं।	विद्यालयं परितः विशालवृक्षाः सन्ति।
163.	सिद्धार्थ कलम से लिखता है।	सिद्धार्थः लेखन्या लिखति।
164.	गंगा हिमालय से निकलती हैं।	गंगा हिमालयात् निर्गच्छति।
165.	तीर्थस्थलों में लोग भूमि पर सोते हैं।	तीर्थस्थलेषु जनाः भूमे शयनं कुर्वन्ति।
166.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
167.	राजाओं में राम श्रेष्ठ हैं।	नृपेषु रामः श्रेष्ठः।
168.	छात्र अध्यापक से प्रश्न पूछता है।	छात्रः अध्यापकं प्रश्नं पृच्छति।
169.	भगवान् को नमस्कार।	भगवते नमः।
170.	नदी कोस भर टेढ़ी है।	क्रोशं कुटिला नदी।
171.	राधा चोरों से डरती है।	राधा चौरात् विभेति।
172.	मनुष्यों में परोपकारी ही प्रशंसनीय है।	मानवेषु परोपकारी एव प्रशंसनीयः।
173.	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।	ज्ञानेन बिना मुक्तिः न भवति।
174.	रमा पूजा के लिए फूल चुनती है।	रमा पूजाय पुष्पं चिनोति।
175.	मेरा मित्र कानों से बहरा है।	मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
176.	छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जा रहे हैं।	छात्राः अध्ययनस्य हेतोः विद्यालयं गच्छन्ति।

177.	तालाब के दोनों ओर बहुत पेड़ हैं।	तडागम् उभयतः बहवः वृक्षाः सन्ति।
178.	हम लोग शाम को कुटी जाते हैं।	वयं सायंकाले कुटीं गच्छामः।
179.	सबेरे घूमना स्वास्थ्य के लिए हितकर है।	प्रातःकालीन भ्रमणः स्वास्थ्याय हितकरः अस्ति।
180.	हमारे शरीर में स्थित आलस्य हमारा परम शत्रु है।	अस्माकं शरीरस्थितः आलस्य अस्माकं परमशत्रुः।
181.	वह कभी-कभी घोड़े से गिर जाता है।	सः यदा-कदा अश्वात् पतति।
182.	तीर्थराज प्रयाग एक प्रसिद्ध नगरी है।	तीर्थराज प्रयागः एकः प्रसिद्ध नगरी अस्ति।
183.	विद्यालय के दोनों ओर गंगा नदी बहती है।	विद्यालयं उभयतः गङ्गा नदी बहति।
184.	तुम लोग अपने हाथ से काम करो।	यूयं स्व हस्तेन कार्यं कुरुत।
185.	राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये।	रामेण सह लक्ष्मणोऽपि वनम् अगमत्।
186.	पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।	वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति।
187.	राम श्याम पर क्रोध करता है।	रामः श्यामाय क्रुध्यति।
188.	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।	ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
189.	कुएँ का पानी ठण्डा होता है।	कूपस्य जलं शीतलं भवति।
190.	वह अध्ययन के लिए छात्रावास में निवास करता है।	सः अध्ययनस्य हेतोः छात्रावासे निवसति।
191.	विद्यालय के दोनों ओर सुन्दर उद्यान हैं।	विद्यालयं उभयतः सुन्दराणि उद्यानानि सन्ति।
192.	सभी पक्षियों में मोर अधिक सुन्दर है।	सर्वेषु पक्षिषु मयूरः सुन्दरतमः अस्ति।
193.	विद्या विनय से शोभित होती है।	विद्या विनयेन शोभते।
194.	मेरा मित्र कान से बहरा है।	मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
195.	छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।	छात्रेषु गुरुं प्रति श्रद्धा भवेत्।
196.	संस्कृत के कवियों में कालिदास सर्वश्रेष्ठ हैं।	संस्कृत-कविषु कालिदासः सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
197.	मैं पिता के साथ बाजार जाता हूँ।	अहं पित्रा सह आपणं गच्छामि।
198.	बालिका चावल से खीर पकाती है।	बालिका तण्डुलान् पायसम् पचति।
199.	नारी के बिना धर्म कार्य अधूरे होते हैं।	स्त्रीम्, स्त्रिया, स्त्रियाः विना धर्म कार्यं पूर्णं न भवति।
200.	ग्राम के चारों ओर वृक्ष हैं।	ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।
201.	राम कान से बहरा है।	रामः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
202.	मैं अपनी माता से फल माँगता हूँ।	अहं स्व मात्रा फलम् याचामि।
203.	हमारे संस्कृत शिक्षक स्वभाव से सरल हैं।	अस्माकं संस्कृत शिक्षकः स्वभावेन सरलः अस्ति।
204.	प्रयाग में भरद्वाज मुनि का आश्रम है।	प्रयागे भरद्वाज मुनिना आश्रमः अस्ति।
205.	सभी छात्र समय से विद्यालय जाते हैं।	सर्वे छात्राः समयेन विद्यालयं गच्छन्ति।

●●

2 कारक तथा विभक्ति

'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' क्रिया से जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं अर्थात् कारक उस वस्तु को कहा जाता है जिसका अन्वय साक्षात् या असाक्षात् रूप से, वाक्य की क्रिया से हो। यथा– ''वन में आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।''

इस वाक्य में क्रिया को सम्पादित करनेवाला 'राम' 'कर्त्ता' है। क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह 'कर्म' है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है वह 'कर्म' है। क्रिया के साधन में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'बाण' करण है। सीता के लिए 'रावण' मारा गया, अतः 'सीता' 'सम्प्रदान', 'वन' 'अपादान', लंका में क्रिया पूर्ण हुई थी, अतः लंका 'अधिकरण' कारक है। इस वाक्य में वन, राम, सीता, लंका, रावण इन सभी शब्दों का मारना क्रिया के सम्पादन में साक्षात् या असाक्षात् रूप से उपयोग है, अतः ये सभी कारक कहे जायँगे। इस प्रकार क्रिया के सम्पादन में ये छह सम्बन्ध होते हैं, इन्हीं सम्बन्धों को प्रकट करने के लिए कारकों का प्रयोग होता है तथा इन्हीं अर्थों में प्रथमा आदि विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं।

➠ कारक के चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के; रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर
प्रथमा	सम्बोधन	भो, हे, अरे

विभिन्न सूत्रों के आधार पर कारकों एवं विभक्तियों का ज्ञान

प्रथमा विभक्ति

नियम 1–'स्वतन्त्रः कर्त्ता'– क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय वही कर्त्ता होता है।
यथा– सोहनः पठति। यहाँ सोहन कर्त्ता है।
वाक्य में कर्त्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं :
(क) कर्त्तृवाच्य – मोहनः पठति। यहाँ कर्त्ता की प्रधानता होती है और उसमें प्रथमा विभक्ति होती है।
(ख) कर्मवाच्य – मोहनेन पठ्यते। यहाँ कर्म की प्रधानता होती है और कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
(ग) भाववाच्य – रामेण पठ्यते। यहाँ भाव की ही प्रधानता होती है और कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
नियम 2– 'प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग परिमाण वचन मात्रे प्रथमा'– इस सूत्र में प्रत्येक पद के साथ शब्द का सम्बन्ध है,

अतः केवल प्रातिपदिक अवस्था में किसी शब्द का नियम अर्थ बताने के लिए अथवा केवल लिंग मात्र का बोध कराने के लिए अथवा परिमाण मात्र बताने के लिए अथवा वचन मात्र बताने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

प्रातिपदिक का अर्थ है– सार्थक शब्द। प्रत्येक शब्द स्वभावतः अपना कुछ निश्चित अर्थ अवश्य रखता है, जो कि प्रातिपदिकार्थ कहलाता है, किन्तु इस अर्थ को भी प्रकट करने के लिए उस सार्थक शब्द के आगे प्रथमा विभक्ति का प्रयोग करना पड़ता है, क्योंकि संस्कृत वैयाकरणों की मान्यता के अनुसार कोई भी सार्थक शब्द तब तक प्रयोगार्ह नहीं बन सकता, जब तक कि उसके आगे कोई-न-कोई विभक्ति, प्रत्यय न लगा दिया जाय।

लिङ्गमात्रे प्रथमा– 'लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा' अर्थात् प्रातिपदिकार्थ के बिना केवल लिंग का बोध नहीं हो सकता, अतः जब किसी प्रातिपदिकार्थ में लिंगमात्र का बोध रेखांकित करना हो तब प्रथमा विभक्ति होती है।

यथा–

(1) तटः – प्रातिपदिक पुंल्लिंग

(2) तटी – प्रातिपदिक स्त्रीलिंग

(3) तटम् – प्रातिपदिक नपुंसकलिंग

परिमाणमात्रे प्रथमा – 'परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा' प्रातिपदिक के साथ जब परिमाण मात्र की अधिकता हो तो प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा – द्रोणोव्रीहिः – यहाँ द्रोण का अर्थ माप है और व्रीहि वह पदार्थ है जिसको मापा गया है।

वचनमात्रे प्रथमा – केवल वचन का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा– एकः, द्वौ, बहवः।

द्वितीया विभक्ति

नियम 1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म – कर्त्ता का क्रिया से सबसे अधिक चाहा हुआ कारक 'कर्म' कहलाता है। यथा– राम कलम से पत्र लिखता है (रामः कलमेन पत्रं लिखति)।

इस वाक्य में कर्त्ता (राम) अपनी क्रिया (लिखना) के लिए पत्र को चाहता है; अतः 'पत्र' कर्म है।

ध्यातव्य – यद्यपि लिखने के लिए राम कलम को भी चाहता है। किन्तु कलम का काम तो पेन्सिल भी कर सकती है, सबसे अधिक चाह 'पत्र' की होती है, अतः 'पत्र' कर्म है।

नियम 2. कर्मणि-द्वितीया – कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है, यथा–

रामः **गृहं** गच्छति। — राम घर जाता है।
छात्रः **विद्यालयं** गच्छति। — छात्र विद्यालय जाता है।
रामः **पत्रं** लिखति। — राम पत्र लिखता है।
अहं **जलं** पिबामि। — मैं जल पीता हूँ।
ते **फलानि** खादन्ति। — वे फल खाते हैं।
सः **नगरं** गच्छति। — वह नगर जाता है।

नियम 3. अकथितं च — निम्नलिखित 16 धातुएँ द्विकर्मक धातु हैं। इनके प्रयोग में अपादानादि कारकों में भी द्वितीया विभक्ति होती है। धातुयें निम्नलिखित हैं–

धातु	प्रयोग	हिन्दी अर्थ
दुह् (दुहना)	धेनुं दुग्धं दोग्धि।	गाय से दूध दुहता है।
याच् (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि बलि से पृथ्वी माँगता है।
पच् (पकाना)	तण्डुलान् ओदनं पचति।	चावलों से भात पकता है।
दण्ड् (दण्ड देना)	चौरं शतं दण्डयति।	चोर से सौ रुपये दण्ड लेता है।
रुध् (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
प्रच्छ् (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
चि (चुनना)	वृक्षं फलानि अवचिनोति।	वृक्ष से फल चुनता है।
ब्रू (बोलना-कहना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य को धर्म बताता है।
शास् (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।

जि (जीतना)	देवदत्तः शतं जयति।	देवदत्त से सौ जीतता है।
मथ् (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
मुष् (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ चुराता है।
नी (ले जाना)	स धेनुं ग्रामं नयति।	वह गाय को गाँव में ले जाता है।
हृ (हरना)	स धेनुं ग्रामं हरति।	,,
वह् (ले जाना)	स धेनुं ग्रामं वहति।	,,
कृष् (खींचना-ले जाना)	स धेनुं ग्रामं कर्षति।	,,
याच् (माँगना)	नृपं क्षमां याचते।	राजा से क्षमा माँगता है।

नियम 4. अधिशीङ्स्थासां कर्म– शी (सोना), स्था (ठहरना), आस् (बैठना) इन धातुओं के पूर्व यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्म संज्ञा होती है (कर्म में द्वितीया); यथा—

राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।	राजा सिंहासन पर बैठता है।
हरिः वैकुण्ठम् अध्यास्ते।	हरि बैकुण्ठ में बैठते हैं।
शिष्यः आसनं अधितिष्ठति।	शिष्य आसन पर बैठता है।
मुनिः शिलां अधिशेते।	मुनि शिला पर सोता है।
स पर्यंकम् अधिशेते।	वह पलंग पर सोता है।

नियम 5. अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि — अभितः (आस-पास), परितः (सब ओर), समया (निकट), निकषा (निकट) हा तथा प्रति शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है; यथा—

बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्।	भूखे को कुछ प्रतिभासित नहीं होता।
रामो गुरुं प्रति श्रद्दधाति।	राम गुरु को श्रद्धा करता है।
ग्रामं अभितः वनमस्ति।	गाँव के आसपास वन है।
लंका निकषा हनिष्यति।	लंका के निकट मारेगा।
विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।	विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं।
आश्रमम् अभितः वनम्।	आश्रम के आस-पास वन हैं।
ग्रामं परितः उपवनानि सन्ति।	गाँव के सब ओर उपवन हैं।
लंका समया (निकषा) सागरः।	लंका के निकट सागर है।
हा कृष्णाभक्तम्!	कृष्ण के अभक्त के विषय में खेद है।
नगरं प्रति गच्छति।	नगर की ओर जाता है।
नदीं उभयतः वृक्षाः सन्ति।	नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।

नियम 6. कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे— यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो अथवा अध्व (रास्ते की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस काल तथा अध्ववाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

क्रोशं गिरिः वर्तते।	कोस भर पर्वत है।
सः मासं अधीते।	वह माह भर पढ़ता है।
सः मासमधीते रामायणम्।	वह महीने भर रामायण पढ़ता है।
क्रोशं कुटिला नदी।	कोस तक नदी टेढ़ी है।
स सप्ताहं पठिष्यति।	वह सप्ताह भर पढ़ेगा।
क्रोशद्वयं वनम् अस्ति।	दो कोस तक वन है।

तृतीया विभक्ति

नियम 1. साधकतमं करणम् — क्रिया की सिद्धि में सबसे अधिक जो कारक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं; यथा— काम को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है; अतः हाथ करण है। यथा— स हस्तेन वितरति मधुरं मिष्ठान्नं।

नियम 2. कर्तृकरणयोस्तृतीया— अनुक्त कर्त्ता अर्थात् कर्मवाच्य के कर्त्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है; यथा—

कुठारेण वृक्षं छिनति।	कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है।
रामेण बालिः हतः।	राम के द्वारा बालि मारा गया।
रामः दण्डेन सर्पं हन्ति।	राम डंडे से साँप को मारता है।
त्वं कलमेन पत्रं लिख।	तू कलम से पत्र लिख।
मोहनः दात्रेण लुनाति।	मोहन हँसिए से काटता है।

नियम 3. सहयुक्तेऽप्रधाने — सह, साकम्, सार्धम् (सहार्थक) शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है; यथा—

पिता पुत्रेण सह मेरठ नगरम् गतः।	पिता पुत्र के साथ मेरठ नगर को गया।
रामो जानक्या सह गच्छति।	राम जानकी के साथ जाता है।
रामेण सह सीतालक्ष्मणौ वनं गतौ।	राम के साथ सीता और लक्ष्मण वन गये।
मोहनः गुरुणा सह विद्यालयं गच्छति।	मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।
लक्ष्मणेन सह रामः गच्छति।	लक्ष्मण के साथ राम जाता है।

इसी प्रकार सहार्थक-शब्दों के योग में तृतीया—

बालकैः सार्धम् सः पठति।	बालकों के साथ वह पढ़ता है।
गोपालेन साकं राधा आगच्छति।	गोपाल के साथ राधा आती है।
श्यामेण सह राधा नृत्यति।	श्याम के साथ राधा नाचती है।
गोपालेन सह शीला दुग्धं पिबति।	गोपाल के साथ शीला दूध पीती है।

नियम 4. पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् — पृथक्, बिना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया विभक्ति होती है; यथा—

जलेन बिना न जीवति कमलम्।	जल के बिना कमल जीवित नहीं रहता है।
ग्रामेण पृथक् या ग्रामात् पृथक्।	गाँव से अलग।
रामेण बिना या रामात् बिना।	राम के बिना।

नियम 5. येनांगविकारः — शरीर के जिस अंग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है; यथा—

अक्ष्णा काणः।	आँख से काना।
हस्तेन लुञ्जः।	हाथ से लुंज।
शिरसा खल्वाटः।	सिर से गंजा।
कर्णाभ्यां बधिरः।	कानों से बहरा।

कारक एवं विभक्ति पर आधारित प्रश्नों के हल

पयसा **ओदनं** भुङ्क्ते।	ओदनं	द्वितीया	कर्तुरीप्सिततमं कर्म
देवदत्तः **गां** पयः दोग्धि।	गां	द्वितीया	दुह्याच्दण्डरुध,
मासमधीते।	मासम्	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
वैकुण्ठमधिशेते विष्णुः।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासांकर्म
छात्राः **अध्यापकं** परितः तिष्ठन्ति।	अध्यापकं	द्वितीया	अभितः परितः समया
सः **कर्णाभ्यां** बधिरोऽस्ति।	कर्णाभ्यां	तृतीया	येनाङ्गविकारः
माता **तण्डुलान्** ओदनं पचति।	तण्डुलान्	द्वितीया	दुह्याच्पच्दण्ड,
लक्ष्मणेन सह सीता अपि गतवती।	लक्ष्मणेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
भूपतिः **सिंहासनम्** अध्यास्ते।	सिंहासनम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
गुरुणा सह शिष्यः अपि आगच्छति।	गुरुणा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने

छात्रः **विद्यालयं** गच्छति।	विद्यालयं	द्वितीया	गमने द्वितीया
परिचारकः **कर्णाभ्याम्** बधिरो अस्ति।	कर्णाभ्याम्	तृतीया	येनांगविकारः
विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।	विद्यालयं	द्वितीया	अभितः, परितः, समया
सः **अक्ष्णा** काणः अस्ति।	अक्ष्णा	तृतीया	येनांगविकारः
पुत्रेण सह आगतः पिता।	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
गुरुणा सह शिष्यः समागताः।	गुरुणा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
बलिं याचते वसुधाम्।	बलिं	द्वितीया	अकथितं च
क्रोशं कुटिला नदी।	क्रोशं	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
नगरम् **अजां** नेष्यति।	अजां	द्वितीया	अकथितम् च
श्यामः शय्यामधिशेते।	शय्याम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
विद्यालयं परितः उद्यानमस्ति।	विद्यालयं	द्वितीया	अभित, परितः, समया, निकषा, हा
गोपालः गां पयः दोग्धि।	गां	द्वितीया	अकथितं च
कुमारः शय्यामधिशेते।	शय्याम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
रमेशः अक्ष्णा काणः।	अक्ष्णा	तृतीया	येनांगविकारः
हरिः बैकुण्ठम् अधितिष्ठति।	बैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।	विषं	द्वितीया	अकथितं च
कन्याम् अभिक्रुध्यति माता।	कन्याम्	द्वितीया	अकथितं च
गृहम् उभयतः वृक्षाः शोभन्ते।	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समयाः
जटाभिस्तापसः।	जटाभिः	तृतीया	साधकतमंकरणम्
ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।	ग्रामं	द्वितीया	अभितः परितः समया
विष्णुः वैकुण्ठम् उपवसति।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
अन्तरेण हरिं न सुखम्।	हरिं	द्वितीया	पृथग्विनानानाभि
उपाध्यायं धर्मं पृच्छति।	उपाध्यायं	द्वितीया	अकथितं च
पद्भ्यां पङ्गुः।	पद्भ्यां	तृतीया	येनाङ्गविकारः
गां दोग्धि पयः।	गां	द्वितीया	अकथितं च
आसनम् अध्यास्ते।	आसनम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
ग्रामं परितः वनं अस्ति।	ग्रामं	द्वितीया	अभितः परितः समया
अधिशेते वैकुण्ठं विष्णुः।	वैकुण्ठं	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
पादेन खञ्जः।	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
ग्रामम् अभितः वनम् अस्ति।	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
ग्रामम् उभयतः उद्यानानि सन्ति।	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
ग्रामम् अभितः नदी अस्ति।	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः, परितः, समया, निकषा हा प्रतियोगे द्वितीया।
मासम् अधीते माणवकः।	मासम्	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
शिरसा खल्वाटोऽयम्।	शिरसा	तृतीया	येनांगविकारः
लङ्कां परितः समुद्रोऽस्ति।	लङ्कां	द्वितीया	अभितः परितः समया
पुत्रेण सहागतः पिता।	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
प्रयागं प्रति जनानां श्रद्धा अस्ति।	प्रयागं	द्वितीया	अभितः परितः प्रतियोगे द्वितीया
हरिं भजति।	हरिं	द्वितीया	अकथितं च

मोहनः पादेन खञ्जः।	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
सः कन्दुकेन सह क्रीडति।	कन्दुकेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
शशिना सह कौमुदी राजते।	शशिना	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
कन्याम् अभिक्रुध्यति माता।	कन्याम्	द्वितीया	अकथितं च
गृहम् परितः वृक्षाणि शोभन्ते।	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समया...
नृपं क्षमां याचते।	नृपम्	द्वितीया	अकथितं च।
श्यामः नेत्रेण काणः।	नेत्रेण	तृतीया	येनांगविकारः...
मातुलेन सह आगतः।	मातुलेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
लुब्धकाः वृक्षम् आरोहन्ति।	वृक्षम्	द्वितीया	
रामं विना सुखं नास्ति।	रामं	द्वितीया	पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्
परितः कृष्णं गोपाः।	कृष्णं	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि
गोपः गां पयः दोग्धि।	गां	द्वितीया	अकथितं च
अभितः कृष्णम्।	कृष्णम्	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि
पित्रा सह गतः।	पित्रा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति।	क्षीरनिधिं	द्वितीया	अकथितं च
अधिवसति वैकुण्ठं हरिः।	वैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
रामेण बाणेन हतो बाली।	बाणेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
दण्डेन घटः।	दण्डेन	तृतीया	
अक्ष्णा काणः।	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'दशरथेन प्राणाः त्यक्ताः' वाक्य के 'प्राणाः' पद में विभक्ति, वचन है–**
(क) प्रथमा बहुवचन (ख) द्वितीया बहुवचन (ग) तृतीया एकवचन (घ) द्वितीया बहुवचन
उत्तर – (क) प्रथमा बहुवचन।

2. **'गुरुः शिष्यं पाठयति' इस वाक्य के शिष्यं पद में विभक्ति है–**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) प्रथमा (घ) चतुर्थी
उत्तर – (क) द्वितीया।

3. **'भवन्तमन्तरेण कीदृशः अस्या रागः' इस वाक्य के भवन्तं पद में विभक्ति है–**
(क) द्वितीया (ख) प्रथमा (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
उत्तर – (क) द्वितीया।

4. **'मोहनः अक्ष्णा काणः अस्ति'–इस वाक्य में 'अक्ष्णा' पद में विभक्ति है–**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर – (ख) तृतीया।

5. **'देवदत्तेन ग्रामः गम्यते' इस वाक्य के 'ग्रामः' पद में विभक्ति है–**
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) सप्तमी (घ) कोई नहीं
उत्तर – (क) प्रथमा।

6. **'सः जटाभिस्तापसः प्रतीयते'— इस वाक्य के 'जटाभिः' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) तृतीया (ख) द्वितीया (ग) पञ्चमी (घ) कोई नहीं
उत्तर — (क) तृतीया।
7. **'इदम् मया श्रूयते' इस वाक्य में प्रयुक्त 'इदम्' पद में विभक्ति है—**
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
उत्तर — (क) प्रथमा।
8. **'क्रोशं गिरिः' में क्रोशं में विभक्ति है—**
(क) तृतीया (ख) द्वितीया (ग) पञ्चमी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर — (ख) द्वितीया।
9. **'विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति' इस वाक्य में 'विद्यालयं' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर — (क) द्वितीया।
10. **'प्रजापतेः' लोकः जायते' इस वाक्य में 'प्रजापतेः' पद में विभक्ति है—**
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) इनमें कोई नहीं
उत्तर — (क) तृतीया।
11. **सः <u>कर्णाभ्याम्</u> बधिरोऽस्ति।**
(क) तृतीया द्विवचन (ख) द्वितीया द्विवचन (ग) सप्तमी एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर — (क) तृतीया द्विवचन।
12. **'नमः शिवाय' इस वाक्य के 'शिवाय' पद में कौन सी विभक्ति है?**
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) षष्ठी
उत्तर — (ख) चतुर्थी।
13. **'विष्णुः क्षीरसागरम् अधिशेते' इस वाक्य में 'क्षीरसागरम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर — (क) द्वितीया।
14. **'सः पादेन खञ्जः अस्ति' इस वाक्य के 'पादेन' पद में निम्नलिखित में से कौन सी विभक्ति है?**
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) सप्तमी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर — (ख) तृतीया।
15. **'सुरेशः शिरसा खल्वाटोऽस्ति' इस वाक्य के 'शिरसा' पद में विभक्ति है—**
(क) चतुर्थी (ख) तृतीया (ग) षष्ठी (घ) द्वितीया
उत्तर — (ख) तृतीया।
16. **'भारवाहकः हस्ताभ्याम् भारमुत्थापयति' इस वाक्य के 'हस्ताभ्याम्' पद में विभक्ति एवं वचन है—**
(क) तृतीया एकवचन (ख) चतुर्थी द्विवचन (ग) पञ्चमी द्विवचन (घ) तृतीया द्विवचन
उत्तर — (घ) तृतीया द्विवचन।
17. **'सः अक्ष्णा काणः अस्ति'—इस वाक्य के 'अक्ष्णा' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर — (ग) तृतीया।
18. **'विष्णवे नमः'—इस वाक्य के 'विष्णवे' पद में कौन-सी विभक्ति है?**
(क) षष्ठी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) द्वितीया
उत्तर — (ख) चतुर्थी।

19. 'बालकः कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति'–इस वाक्य में 'कर्णाभ्यां' पद में विभक्ति, वचन बताइए–
(क) तृतीया द्विवचन (ख) चतुर्थी एकवचन (ग) पंचमी एकवचन (घ) सप्तमी एकवचन
उत्तर – (क) तृतीया द्विवचन।

20. 'नवीनः प्रकृत्या दयालुः' वाक्य में 'प्रकृत्या' पद में प्रयुक्त विभक्ति-वचन है–
(क) द्वितीया एकवचन (ख) तृतीया एकवचन (ग) पञ्चमी द्विवचन (घ) तृतीया बहुवचन
उत्तर – (ख) तृतीया एकवचन।

21. 'राजा सिंहासनमधिशेते' इस वाक्य में 'सिंहासनम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) द्वितीया।

22. 'सः कर्णेन वधिरः' वाक्य के 'कर्णेन' पद में विभक्ति है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) पञ्चमी
उत्तर – (ग) तृतीया।

23. 'स्वस्ति भवते' वाक्य के 'भवते' पद में विभक्ति है–
(क) षष्ठी (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

24. 'पुण्येन दृष्टो हरिः' इस वाक्य में 'पुण्येन' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) तृतीया।

25. 'अजां नेष्यति' इस वाक्य में 'अजां' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
उत्तर – (ख) द्वितीया।

26. 'लवणं विना भोजनं न स्वादु'–इस वाक्य में 'लवणं' में विभक्ति है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) सम्बोधन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) द्वितीया।

27. 'ग्रामम् अभितः नदी' इस वाक्य के 'ग्रामम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
उत्तर – (ख) द्वितीया।

28. 'रमेशः शय्यामधिशेते।' वाक्य में 'शय्याम्' में कर्मकारक संज्ञा किस सूत्र से हुई है?
(क) अकथितञ्च (ख) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(ग) अधिशीङ्स्थासां कर्म (घ) कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
उत्तर– (ग) अधिशीङ्स्थासां कर्म।

29. 'पिता पुत्रेण सह गच्छति' इस वाक्य में 'पुत्रेण' पद में कौन-सी विभक्ति है–
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ख) तृतीया।

30. 'जटाभिः तापसः' में 'जटाभिः' पद में विभक्ति है–
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ख) तृतीया।

●●

3 समास

समास का अर्थ है – संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं, तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं और बना हुआ शब्द समास कहलाता है।

यथा — रामस्य पुत्रः = रामपुत्रः
विशालः बाहुः यस्य सः = विशालबाहुः।

विग्रह – समास के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जिन पदों को अलग किया जाता है, उन्हें विग्रह कहते हैं। यथा— रामस्य पुत्रः, विशालः बाहुः यस्य सः।

समस्त-पद – समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं।
यथा — रामपुत्रः, विशालबाहुः।

समास के भेद

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं—

(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास (3) कर्मधारय समास (4) द्विगु समास
(5) बहुव्रीहि समास (6) द्वन्द्व समास

(1) तत्पुरुष समास

जिसमें प्रायः उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है वह तत्पुरुष नामक तृतीय समास कहलाता है। **'प्रायेणोत्तरपदार्थ प्रधानस्तत्पुरुषः।'** यथा — 'गंगा जलम् आनय।' यहाँ आनय इस क्रिया पद के साथ जल का ही साक्षात् सम्बन्ध होता है। अतः 'जल' उत्तर पद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के भेद

(क) व्यधिकरण तत्पुरुष समास– जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद या पूर्व पद तथा द्वितीय पद या उत्तर पद दोनों भिन्न-भिन्न विभक्तियों में हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है।

यथा— गोसुखम् में गोभ्यः चतुर्थी विभक्ति में है तथा सुखम् प्रथमा विभक्ति है। इस प्रकार दोनों पृथक्-पृथक् विभक्तियों में होने से यह व्यधिकरण तत्पुरुष समास है। व्यधिकरण तत्पुरुष के **छह भेद** किये गये हैं— (1) द्वितीया तत्पुरुष, (2) तृतीया तत्पुरुष, (3) चतुर्थी तत्पुरुष, (4) पंचमी तत्पुरुष, (5) षष्ठी तत्पुरुष, (6) सप्तमी तत्पुरुष अर्थात् प्रथम पद जिस विभक्ति का है वह उसी विभक्ति से सम्बन्धित तत्पुरुष होगा।

यथा—

द्वितीया तत्पुरुष

सामासिक पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
कृष्णाश्रितः	कृष्णम् आश्रितः	कृष्ण के आश्रित
शरणागतः	शरणम् आगतः	शरण में आया हुआ
लोकातीतः	लोकम् अतीतः	लोक से परे
भयापन्नः	भयम् आपन्नः	भय को प्राप्त
रामाश्रितः	रामम् आश्रितः	राम के आश्रित

सुखप्राप्तः	सुखं प्राप्तः	सुख को प्राप्त हुआ
अश्वारूढ़ः	अश्वम् आरूढ़ः	घोड़े पर आरूढ़
स्वर्गगतः	स्वर्गं गतः	स्वर्ग को गया हुआ

तृतीया तत्पुरुष

हरित्रातः	हरिणा त्रातः	विष्णु से रक्षा किया गया
पादखञ्जः	पादेन खञ्जः	पैर से लँगड़ा
बाणाहतः	बाणेन आहतः	बाण से घायल
धान्यार्थः	धान्येन अर्थः	धान्य से धन
नेत्रहीनः	नेत्राभ्यां हीनः	नेत्रों से रहित
मातासदृशः	मातया सदृशः	माता के समान
घृतपक्वम्	घृतेन पक्वम्	घी से पकाया हुआ
मासपूर्वः	मासेन पूर्वः	महीने से पहले

चतुर्थी तत्पुरुष

यूपदारुः	यूपाय दारुः	यूप के लिए दारु
धनकामना	धनाय कामना	धन के लिए कामना
सुखार्थम्	सुखाय इदम्	सुख के लिए
धनार्थम्	धनाय इदम्	धन के लिए
भूतबलिः	भूतेभ्यः बलिः	भूतों के लिए बलि
कुम्भमृत्तिका	कुम्भाय मृत्तिका	घड़े के लिए मिट्टी
भक्तप्रियः	भक्तेभ्यः प्रियः	भक्तों के लिए प्रिय

पंचमी तत्पुरुष

चौरभयम्	चौरात् भयम्	चोर से भय
बन्धनमुक्तः	बन्धनात् मुक्तः	बन्धन से मुक्त
राजभयम्	राज्ञः भयम्	राजा से भय
वृक्षपतितः	वृक्षात् पतितः	वृक्ष से गिरा हुआ
सिंहभीतः	सिंहात् भीतः	सिंह से डरा हुआ
अश्वपतितः	अश्वात् पतितः	घोड़े से गिरा हुआ
मार्गभ्रष्टः	मार्गात् भ्रष्टः	मार्ग से भ्रष्ट हुआ

षष्ठी तत्पुरुष

नरपतिः	नराणां पतिः	मनुष्यों का स्वामी
विद्यालयः	विद्यायाः आलयः	विद्या का घर
राजमाता	राज्ञः माताः	राजा की माता
भरतमाता	भरतस्य माता	भरत की माता
ईश्वरभक्तः	ईश्वरस्य भक्तः	ईश्वर का भक्त
सीतापतिः	सीतायाः पतिः	सीता का पति
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष
राजपुत्रः	राज्ञः पुत्रः	राजा का पुत्र

नन्दनन्दनः	नन्दस्य नन्दनः	नन्द का नन्दन
कृष्णसखः	कृष्णस्य सखः	कृष्ण का सखा
प्रजापतिः	प्रजायाः पतिः	प्रजा का पति
रामानुजः	रामस्य अनुजः	राम का अनुज
देवपूजा	देवस्य पूजा	देव की पूजा
दशरथपुत्रः	दशरथस्य पुत्रः	दशरथ के पुत्र
राजकुमारः	राज्ञः कुमारः	राजा का कुमार
राजसेवकः	राज्ञः सेवकः	राजा का सेवक

सप्तमी तत्पुरुष

अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः	पासों में शौण्ड चतुर
गुरुभक्तिः	गुरौ भक्तिः	गुरु में भक्ति
कला निपुणः	कलासु निपुणः	कलाओं में श्रेष्ठ
पुरुषोत्तमः	पुरुषेषु उत्तमः	पुरुषों में श्रेष्ठ
मुनिश्रेष्ठः	मुनिषु श्रेष्ठः	मुनियों में श्रेष्ठ
क्षेत्रोत्पन्नः	क्षेत्रे उत्पन्नः	क्षेत्र में उत्पन्न
रणकुशलः	रणे कुशलः	रण में कुशल
कार्यकुशलः	कार्ये कुशलः	कार्य में कुशल
कूपपतितः	कूपे पतितः	कुएं में गिरा हुआ

(ख) समानाधिकरण तत्पुरुष समास — जिसमें दोनों पदों की विभक्ति समान हो उसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। इसे ही कर्मधारय समास भी कहा जाता है। यथा — 'कृष्णः सर्पः अपसर्पति' इस वाक्य में सर्प की गमन क्रिया के साथ-साथ उसकी विशेषता भी बतायी है। प्रथम पद कृष्णः तथा द्वितीय पद सर्पः एक ही प्रथमा विभक्ति के रूप हैं। अतः यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के उपभेद – उपर्युक्त व्यधिकरण तथा समानाधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इस प्रकार हैं—

(क) नञ् तत्पुरुष समास – जिस समास का पूर्व पद नञ् (न) हो तथा उत्तर पद कोई संज्ञा या विशेषण युक्त हो उसे नञ् समास कहते हैं। यथा—

अनश्वः	न अश्वः	जो अश्व न हो
अकृतम्	न कृतम्	जो किया न हो
अनिच्छा	न इच्छा	इच्छा न हो
अनागतम्	न आगतम्	जो आया न हो
अगजः	न गजः	जो गज न हो
अनुक्तः	न उक्तः	जो उक्त न हो
अपुत्रः	न पुत्रः	जो पुत्र न हो

(ख) प्रादि तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास का पूर्व पद 'कु' (अव्यय) गति संज्ञक शब्द या 'प्र' आदि होता है, उसे गति तत्पुरुष एवं प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा— 'कुपुरुषः'—कुत्सितः पुरुषः। 'प्राचार्यः' — 'प्रगतः आचार्यः'।

(ग) उपपद तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद उपपद (सुबन्त) तथा उत्तर पद कृत् प्रत्ययान्त (तिङ्न्त भिन्न समर्थ पद) होता है, वह उपपद तत्पुरुष समास कहलाता है। यथा—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
कुम्भकारः	कुभं करोति	जो कुम्भ बनाता है।
धर्मज्ञः	धर्मं जानाति	जो धर्म जानता है।
सामगः	सामं गायति	जो सामवेद को जानता है।

आसनस्थः	आसने तिष्ठति	जो आसन पर बैठता है।
धनदः	धनं ददाति	जो धन देता है।

(घ) अलुक् तत्पुरुष समास – जब तत्पुरुष में प्रथम पद अर्थात् पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता तब उसे अलुक् तत्पुरुष कहते हैं। जैसेः–

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
युधिष्ठिरः	युधि स्थिरः	युद्ध में स्थिर युधिष्ठिर
कृच्छादागतः	कृच्छात् आगतः	कठिनाई से आगत
सरसिजम्	सरसि जातम्	तालाब में उत्पन्न
खेचरः	खे चरति	आकाश में विचरण करनेवाला पक्षी
अभ्यासादागतः	अभ्यासात् आगतः	अभ्यास से आया हुआ
वाचस्पतिः	वाचः पतिः	बृहस्पति
आत्मनेपदम्	आत्मने पदम्	अपने लिए पद
परस्मैपदम्	परस्मैपदम्	दूसरे के लिए पद

(2) कर्मधारय समास

'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' अर्थात् जहाँ विशेषण का समानाधिकरण विशेष्य के साथ बहुलता से होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है। यह समास तत्पुरुष समास का ही एक भेद है। इस समास में दोनों पदों की विभक्तियाँ समान होती हैं। यदि लिंग विषम है तो द्वितीय पद अर्थात् उत्तर पद के आधार पर लिंग का निर्णय किया जाता है। कर्मधारय समास के भी चार भेद हैं—

(क) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय – समानाधिकरण तत्पुरुष समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है तो उसे विशेषण पूर्व पद कर्मधारय कहते हैं। यथा—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
मधुरफलम्	मधुरं च तत्फलम्	मधुर जो फल
श्रेष्ठपुरुषाः	श्रेष्ठाः च ते पुरुषाः	श्रेष्ठ जो पुरुष
अन्धतमम्	अन्धं च तत् तमः	अन्धा करनेवाला तम
नीलाकाशः	नीलः आकाशः	नीला आकाश
महापुरुषः	महान् चासौ पुरुषः	महान् पुरुषः
महर्षिः	महान् चासौ ऋषिः	महान् ऋषि
गौरः बालकः	गौरः बालकः	गोरा बालक
महाराजः	महान् चासौ राजा	महान् राजा
सुन्दरबालकः	सुन्दरः च असौ बालकः	सुन्दर जो बालक
कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	काला सांप
महादेवः	महान् चासौ देवः	महादेव
श्वेताश्वः	श्वेतश्चासौ अश्वः	श्वेत घोड़ा
महारथीः	महान् चासौ रथी	महान् रथी
रक्तोत्पलम्	रक्तं च तत् उत्पलम्	लाल कमल
श्वेत वस्त्रः	श्वेत च तत् वस्त्रम्	श्वेत वस्त्र

(ख) उपमान पूर्वपद कर्मधारय— जब उपमानवाचक शब्द के साथ साधारण धर्मवाचक शब्दों का समास होता है वह उपमान पूर्वपद कर्मधारय होता है।

यथा—

पुरुषसिंहः	पुरुषः सिंहः इव	सिंह के समान पुरुष
नरसिंहः	नरः सिंह इव	मनुष्य सिंह के समान
चन्द्राह्लादकः	चन्द्र इव आह्लादक	चन्द्र के समान कोमल

कमलकोमलम्	कमलम् इव कोमलम्	कमल के समान कोमल
पुरुषव्याघ्र	पुरुषः व्याघ्र इव	व्याघ्र के समान पुरुष

(ग) रूपक कर्मधारय – उपमान और उपमेय के अभिन्न रूप से कल्पित होने से, उपमान-उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। यथा—

शोकाग्नि	शोक एव अग्नि	शोकरूपी अग्नि
विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	विद्यारूपी धन
मुखकमलम्	मुखमेव कमलम्	मुखरूपी कमल
परीक्षापयोधिः	परीक्षा एव पयोधि	परीक्षारूपी सागर

(घ) उभयपद विशेषण कर्मधारय – इस समास में विशेषण का विशेष्य के साथ समास होता है। यथा—

पीतकृष्णः	पीतः चासौ कृष्णः	पीला और काला
श्वेतकृष्णः	श्वेतः चासौ कृष्णः	श्वेत और काला
चराचरम्	चरं च अचरम् च	चराचर
सुप्तोत्थितः	पूर्वम् सुप्तः पश्चात् उत्थितः	पहले सोया फिर उठा
कृताकृतम्	कृतं च अकृतं च	किया हुआ और न किया हुआ

(3) बहुव्रीहि समास

'अनेकम् अन्य-पदार्थे' अर्थात् जिसमें पूर्व तथा उत्तर पद अप्रधान तथा अन्य पद प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। तात्पर्य यह है कि बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं— **प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि। उदाहरणतया**—लम्बोदरः— लम्बं उदरं यस्य सः। यहाँ लम्बं उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो हैं लेकिन वे किसी अन्य (गणेश) की विशेषता बता रहे हैं।

➡ बहुव्रीहि समास के भेद :

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि — इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है। यथा—

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी-अर्थ**
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	पीले वस्त्र वाला
लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	लम्बा है उदर जिसका
जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः (मुनिः)	जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने
श्वेताम्बरः	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः (साधु)	श्वेत हैं वस्त्र जिसके
नीलकण्ठः	नीलं कण्ठं यस्य सः (शिवः)	नीला है कण्ठ जिसका
लब्धप्रतिष्ठाः	लब्धा प्रतिष्ठा येन सः (विद्वान्)	प्राप्त कर ली है प्रतिष्ठा जिसने
दामोदरः	दामम् उदरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	रस्सी है उदर पर जिसके
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यम् सः	जल जिसे प्राप्त है
महाशयः	महान् आशयः यस्य सः	सभ्य व्यक्ति
यशोधनः	यशः एव धनं यस्य सः (राजा)	यश ही है धन जिसका

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि — इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। यथा—

चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः (विष्णु)	चक्र है पाणि में जिसके
वीणापाणिः	वीणा पाणौ यस्या सा (सरस्वती)	वीणा है पाणि में जिसके
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिव)	चन्द्र है शिखर पर जिसके
पीयूषपाणि	पीयूषः पाणौ यस्य सः (वैद्य)	पीयूष है पाणि में जिसके
मृगनयनी	मृगस्य नयने इव नयने यस्या सा (स्त्री)	मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके।

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि — युद्ध, लड़ाई आदि का ज्ञान करानेवाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
केशाकेशि	केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्	बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध

हस्ताहस्ति हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि — जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्य योग बहुव्रीहि होता है। 'सह' का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी अर्थ
सार्जुनः	अर्जुनेन सह	अर्जुन के साथ
सराधिकः	राधिकया सह इति (कृष्ण)	राधिका के साथ
सभार्यः	भार्यया सह	स्त्री सहित
सकलम्	कलाभिः समम्	कलाओं से युक्त
ससीतः	सीतया सह (रामः)	सीता के साथ

समास (हल सहित)

नरपतिः	नराणां पतिः	षष्ठी तत्पुरुषः
श्वेताम्बरः	श्वेतं अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
गुरुसेवा	गुरोः सेवा	षष्ठी तत्पुरुषः
जननीजन्मभूमिः	जनन्याः जन्मभूमिः	षष्ठी तत्पुरुषः
भग्नमनोरथः	भग्नः मनोरथः यस्य सः	बहुव्रीहि
विशालतरुः	विशालः चासौ तरुः	कर्मधारयः
मुनिश्रेष्ठः	मुनिषु श्रेष्ठः	सप्तमी तत्पुरुषः
महाकविः	महान् चासौ कविः	कर्मधारयः
राजमाता	राज्ञः माता	षष्ठी तत्पुरुषः
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः	बहुव्रीहि
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
पुरुषव्याघ्रः	पुरुषः व्याघ्रः इव	कर्मधारयः
सीतापतिः	सीतायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
चित्रगुः	चित्रा गावः यस्य सः	बहुव्रीहि
नीलकंठः	नीलं कंठ यस्य सः	बहुव्रीहि
कृष्णसर्पः	कृष्णः चासौ सर्पः	कर्मधारय
शास्त्रपटुः	शास्त्रे पटुः	सप्तमी तत्पुरुष
गुरुभक्तिः	गुरौ भक्तिः	सप्तमी तत्पुरुष
कुम्भकारः	कुम्भं करोति	उपपद तत्पुरुष
घनश्यामः	घन इव श्यामः	कर्मधारय
चक्रपाणिः	चक्रौ पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष
नीलाम्बरं	नीलं अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
लम्बोदरः	लम्बं उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि
रमापतिः	रमायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
कृष्णाश्रितः	कृष्णं आश्रितः	द्वितीया तत्पुरुष
महाराजः	महान चासौ राजा	कर्मधारय
पञ्चाननः	पंचानि आननानि यस्य सः	बहुव्रीहि
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष
चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि
पितृभक्तः	पितरि भक्तः	सप्तमी तत्पुरुष

दिव्याम्बरः	दिव्यम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः	बहुव्रीहि
चोरभयम्	चौरात् भयम्	पञ्चमी तत्पुरुष
नीलकमलम्	नीलमेव कमलम्	कर्मधारय
पुरुषसिंहः	पुरुषः सिंहः इव	कर्मधारय
लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
जलदः	जलं ददाति	उपपद तत्पुरुष समास
अध्ययनकुशलः	अध्ययने कुशलः	सप्तमी तत्पुरुष
ईश्वरभक्तः	ईश्वरस्य भक्तः	षष्ठी तत्पुरुष
नीलोत्पलम्	नीलम् उत्पलम्	कर्मधारय
राजपुत्रः	राज्ञः पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष
दशरथपुत्रः	दशरथस्य पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष समास
राजकुमारः	राज्ञः कुमारः	षष्ठी तत्पुरुष समास
राजसेवकः	राज्ञः सेवकः	षष्ठी तत्पुरुष
नीलोत्पलम्	नीलं च तत् उत्पलम्	कर्मधारय समास
महापुरुषः	महान चासौ पुरुषः	कर्मधारय समास
भरतमाता	भरतस्य माता	षष्ठी तत्पुरुष
हरित्रातः	हरिणा त्रातः	तृतीया तत्पुरुष
अपुत्रः	न पुत्रः	नञ् तत्पुरुष
रक्तोत्पलम्	रक्तम् उत्पलम्	कर्मधारय समास
दशाननः	दशः आननः यस्य सः	बहुव्रीहि समाम
सीतापतिः	सीतायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
उपसमुद्रम्	समुद्रस्य समीपम्	अव्ययीभाव
लम्बोदर	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि
ईश्वरभक्तः	ईश्वरस्य भक्तः	षष्ठी तत्पुरुष
चरणकमलम्	कमल इव चरणम्	कर्मधारय
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
नीलकमलम्	नीलम् इव कमलम्	कर्मधारय समास
देवालयः	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यं स	बहुव्रीहि समास
श्वेताम्बरः	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
जीवनप्राप्तः	जीवनम् प्राप्तः	द्वितीया तत्पुरुष समास
नीलोत्पलम्	नीलं च तत् उत्पलम्	कर्मधारय समास
नीलकमलम्	नीलमेव कमलम्	कर्मधारय समास
देवालयः	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
यूपदारुः	यूपाय दारुः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि समास
चोरभयम्	चौरात् भयम्	पंचमी तत्पुरुष समास
भूतवलिः	भूतेभ्यः वलिः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
कष्टापन्नः	कष्टम् आपन्नः	द्वितीया तत्पुरुष समास

●●

4 सन्धि

सन्धि का अर्थ मेल होता है। अतः निकटवर्ती दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि योजना में पहले शब्द का अन्तिम अक्षर और दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर ग्रहण किया जाता है। जैसे– पुस्तकालयः (पुस्तक+आलयः) में अ और आ मिलकर 'आ' हो गया है। सन्धि किये हुए शब्दों को अलग-अलग करना सन्धि-विच्छेद कहलाता है।

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद हैं— (क) स्वर सन्धि, (ख) व्यञ्जन सन्धि, (ग) विसर्ग सन्धि।

(क) स्वर सन्धि— स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ जो मेल होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे — नर+ईशः = नरेशः। यहाँ नर के अन्त में 'अ' और ईशः के आदि में 'ई' है। दोनों मिलकर 'ए' हो गया है, अतः स्वर सन्धि है।

विशेष — स्वर सन्धि को अच् सन्धि भी कहा जाता है। स्वर सन्धि में जो व्यञ्जन आधे लिखे हुए नहीं होते और उनके अन्त में हलन्त का चिह्न लगा हुआ नहीं होता, वे सभी अपने अन्त में किसी स्वर को अवश्य रखते हैं। जैसे – र में 'अ', कि में 'इ', कु में 'उ' है।

(ख) व्यञ्जन सन्धि — जिसमें पहले शब्द या भाग का अन्तिम अक्षर व्यञ्जन और दूसरे शब्द या भाग के पहले व्यञ्जन या स्वर हों, उनके मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं अथवा व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन अक्षर आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे — जगत् + ईशः = जगदीशः। यहाँ 'त्' व्यंजन के बाद 'ई' स्वर आया है, अतः व्यञ्जन सन्धि है।

(ग) विसर्ग सन्धि — जिसमें पहले शब्द के अन्त में विसर्ग हो और दूसरे शब्द का पहला अक्षर स्वर या व्यञ्जन हो, तो उनके मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं या विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे— भाः + करः। यहाँ विसर्ग के बाद व्यञ्जन है, अतः विसर्ग सन्धि है।

(क) स्वर अथवा अच् सन्धि

परिभाषा – 'पर तथा पूर्व स्वरों के मिलने से जो विकार होता है उसे स्वर कहते हैं।' यथा — रवि+इन्द्रः=रवीन्द्रः। यहाँ इ+इ=ई हुआ है। इ तथा इ दोनों ही स्वर हैं, अतः यहाँ स्वर सन्धि है।

स्वर सन्धि के प्रमुख भेद निम्न प्रकार से हैं—

1. दीर्घ सन्धि

सूत्र – अकः सवर्णे दीर्घः

परिभाषा — "जब अ, आ, इ, ई, उ, ऊ एवं ऋ वर्ण के पश्चात् इनके सवर्ण वर्ण आते हैं तो क्रमशः आ, ई, ऊ और ॠ बन जाते हैं तब दीर्घ सन्धि कहलाती है।"

उदाहरण (1) **(अ या आ के पश्चात् अ या आ = आ)**

हिम	+	आलयः	=	हिमालयः।
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी।
विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः।
पुस्तक	+	आलयः	=	पुस्तकालयः।
वाचन	+	आलयः	=	वाचनालयः।
शस्त्र	+	आगारः	=	शस्त्रागारः।
अद्य	+	अपि	=	अद्यापि।

(2) (इ या ई के पश्चात् इ या ई = ई)

रवि	+	इन्द्रः	=	रवीन्द्रः।
कपि	+	ईशः	=	कपीशः।
गौरी	+	ईशः	=	गौरीशः।
मुनि	+	इन्द्रः	=	मुनीन्द्रः।
सती	+	इन्द्रः	=	सतीन्द्रः।
श्री	+	ईशः	=	श्रीशः।

(3) (उ या ऊ के पश्चात् उ या ऊ = ऊ)

भानु	+	उदयः	=	भानूदयः।
वधू	+	उत्सवः	=	वधूत्सवः।
लघु	+	उर्मिः	=	लघूर्मिः।
विधु	+	उदयः	=	विधूदयः।
गुरु	+	उपदेशः	=	गुरूपदेशः।
साधु	+	उक्तम्	=	साधूक्तम्।

(4) (ऋ या ॠ के पश्चात् ऋ या ॠ = ॠ)

मातृ	+	ऋणम्	=	मातॄणम्।
होतृ	+	ऋकारः	=	होतॄकारः।

2. गुण सन्धि

सूत्र – आद्गुणः

परिभाषा — यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाता है।

उदाहरण – (1) अ या आ के बाद इ या ई आने पर = ए

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः	अ + इ = ए
सुर + ईशः = सुरेशः	अ + ई = ए
राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः	आ + इ = ए
रमा + ईशः = रमेशः	आ + ई = ए

(2) अ या आ के बाद उ या ऊ आने पर = ओ

हित + उपदेशः = हितोपदेशः	अ + उ = ओ
महा + उत्सवः = महोत्सवः	आ + उ = ओ
पीन + ऊरुः = पीनोरुः	अ + ऊ = ओ
गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः	आ + ऊ = ओ

(3) अ या आ के बाद ऋ आने पर = अर्

देव + ऋषिः = देवर्षिः	अ + ऋ = अर्
महा + ऋषिः = महर्षिः	आ + ऋ = अर्
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः	अ + ऋ = अर्

(4) अ या आ के बाद ऌ आने पर = अल्

तव + ऌकारः = तवल्कारः	अ + ऌ = अल्

3. वृद्धि सन्धि

सूत्र-वृद्धिरेचि

परिभाषा– जब अ या आ के बाद ए या ऐ अथवा ओ या औ आते हैं तो क्रमशः ऐ और औ हो जाते हैं और तब वृद्धि सन्धि होती है।

उदाहरण **1– (अ या आ के बाद ए या ऐ = ऐ)**

सदा	+	एव	=	सदैव।
न	+	एवम्	=	नैवम्।
म	+	एवम्	=	मैवम्।
लता	+	एषा	=	लतैषा।
देव	+	ऐश्वर्यम्	=	देवैश्वर्यम्।
मत	+	ऐक्यम्	=	मतैक्यम्।
धन	+	एषणा	=	धनैषणा।

2– (अ या आ के बाद ओ या औ = औ)

वन	+	औषधिः	=	वनौषधिः।
जल	+	ओधः	=	जलौधः।
देव	+	औदार्यम्	=	देवौदार्यम्।
महा	+	औषधिः	=	महौषधिः।
वन	+	ओकसः	=	वनौकसः।
पुष्प	+	ओकः	=	पुष्पौकः।

4. यण् सन्धि

सूत्र–इकोयणचि

परिभाषा– यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ (इक्) के बाद असमान स्वर आये तो उनके स्थान में क्रमशः य्, र्, ल् (यण्) हो जाता है।

उदाहरण **1– इ या ई के बाद कोई असमान स्वर आने पर = य् + स्वर**

यदि + अपि	= यद्यपि	इ + अ	= य
इति + आदि	= इत्यादि	इ + आ	= या
सुधी + उपास्यः	= सुध्युपास्यः	ई + उ	= यु
नदी + ऊर्मिः	= नद्यूर्मिः	ई + ऊ	= यू
अभि + उदयः	= अभ्युदयः	इ + उ	= यु

2– उ या ऊ के बाद असमान स्वर आने पर = व् + स्वर

मधु + अरिः	= मध्वरिः	उ + अ	= व
सु + आगतम्	= स्वागतम्	उ + आ	= वा
वधू + आदेशः	= वध्वादेशः	ऊ + आ	= वा

3– ऋ के बाद असमान स्वर आने पर = र् + स्वर

पितृ + आदेशः	= पित्रादेशः	ऋ + आ	= रा
धातृ + अंशः	= धात्रंशः	ऋ + अं	= रं

4– ऌ के बाद असमान स्वर आने पर = ल् + स्वर

ऌ + आकृतिः	= लाकृतिः	ऌ + आ	= ला

5. अयादि सन्धि

सूत्र–एचोऽयवायावः

परिभाषा–"जब ए, ऐ, ओ और औ से परे कोई स्वर वर्ण हो तो ए को अय्/ऐ को आय्/ओ को अव् और औ को आव् आदेश हो जाते हैं, तब अयादि सन्धि होती है।"

उदाहरण– **1– (ए के बाद कोई स्वर = अय् + स्वर वर्ण)**

चे	+	अनम्	=	चयनम्।

ने	+	अनम्	=	नयनम्।
शे	+	अनम्	=	शयनम्।
संचे	+	अनम्	=	संचयनम्।

2– (ऐ के बाद कोई स्वर = आय् + स्वर वर्ण)

नै	+	अकः	=	नायकः।
गै	+	इका	=	गायिका।
शै	+	अकः	=	शायकः।
दै	+	अकः	=	दायकः।

3– (ओ के बाद कोई स्वर = आव् + स्वर वर्ण)

पो	+	अनः	=	पवनः।
भो	+	अनम्	=	भवनम्।
साधो	+	ए	=	साधवे।
श्रो	+	अनम्	=	श्रवणम्।

4– (औ के बाद कोई स्वर = आव् + स्वर वर्ण)

एतौ	+	अपि	=	एतावपि।
द्वौ	+	एव	=	द्वावेव।
बालकौ	+	अपि	=	बालकावपि।
पौ	+	अकः	=	पावकः।
पौ	+	अनः	=	पावनः।
भौ	+	उकः	=	भावुकः।
श्रौ	+	इका	=	श्राविका।

6. पूर्वरूप सन्धि

सूत्र– **''एङः पदान्तादति''**

परिभाषा–''जब पदान्त में ए या ओ होता है और उसके पश्चात् 'अ' आता है तो 'अ' को पूर्वरूप अर्थात् अ अपना रूप छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाता है और 'अ' का संकेत (ऽ) रह जाता है, तब पूर्वरूप सन्धि होती है।''

उदाहरण– 1– (ए के बाद अ = ऽ)

एते	+	अपि	=	एतेऽपि।
हरे	+	अव	=	हरेऽव।
रमे	+	अत्र	=	रमेऽत्र।
गते	+	अत्र	=	गतेऽत्र।

2– (ओ के बाद अ = ऽ)

को	+	अपि	=	कोऽपि।
विष्णो	+	अव	=	विष्णोऽव।
बालको	+	अपि	=	बालकोऽपि।
रामो	+	अवति	=	रामोऽवति।
शिवो	+	अर्च्यः	=	शिवोऽर्च्यः।
को	+	अवादीत्	=	कोऽवादीत्।

7. पररूप सन्धि

सूत्र–''एङि पररूपम्''

परिभाषा–अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ से प्रारम्भ धातु रूप होने पर पररूप हो जाता है।

उदाहरण– प्र + एजते = प्रेजते प्र् + अ + एजते = अ का लोप होने पर प्र् + ए + जते = प्रेजते
प्र + ओषति = प्रोषति प्र् + अ + ओषति = अ का लोप होने पर प्र् + ओषति = प्रोषंति
उप + ओषति = उपोषति उप् + अ + ओषति = अ का लोप होने पर = उप् ओषति = उपोषति।

स्वर सन्धि–चक्र

सन्धि का नाम	सूत्र	अर्थ	प्रयोग
1. यण् सन्धि	इकोयणचि	उ, ऋ, ऌ के आगे भिन्न स्वर आने पर क्रम से य्, व्, र्, ल्, होता है।	यदि + अपि = यद्यपि। प्रति + उपकार = प्रत्युपकार। साधु + आगमनम् = साध्वागमनम्। मातृ + आदेशः = मात्रादेशः। ऌ + आकृतिः = लाकृतिः।
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	ए, ओ, ऐ, औ के बाद स्वर वर्ण आने पर क्रम से अय्, अव्, आय्, आव् होता है।	हरे + ए = हरये। भानो + ए = भानवे। नै + अकः = नायकः। पौ + अनः = पावनः।
3. गुण सन्धि	आद्‌गुणः	अ, आ के बाद इ, उ, ऋ, आने पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है।	सुर + ईशः = सुरेशः। सूर्य + उदयः = सूर्योदयः। देव + ऋषिः = देवर्षिः।
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	अ वर्ण के बाद ए, ऐ, ओ, औ आवे तो ऐ तथा औ हो जाता है।	तथा + एकः = तथैकः। महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्। जल + औधः = जलौधः। महा + औषधिः = महौषधिः।
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	अ, इ, उ, ऋ के आगे, समान वर्ण आने पर दोनों का दीर्घ हो जाता है।	शिव + आलयः = शिवालयः। गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः। लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः। पितृ + ऋणम् = पितृणम्।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. **'रमेशः' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) रम + ईशः (ख) रमे + ईशः (ग) रमा + ईशः (घ) रमे + ईशः
उत्तर – (ग) रमा + ईशः।
2. **'साधुष्वपि' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) साधुसु + अपि (ख) साधुशु + अपि (ग) साधुषु + अपि (घ) साधूषु + अपि
उत्तर – (ग) साधुषु + अपि।
3. **'नायकः' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) न + अयकः (ख) ने + अकः (ग) नै + अकः (घ) नौ + अकः
उत्तर – (ग) नै + अकः।

4. **'गङ्गोदकम्' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?**
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद् गुणः (ग) इको यणचि (घ) वृद्धिरेचि
उत्तर – (ग) इको यणचि।
5. **'हरीशः' का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) हर + इशः (ख) हरि + इशः (ग) हरि + ईशः (घ) हरी + ईशः
उत्तर – (ग) हरि + ईशः।
6. **परोपकारः में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?**
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) इकोयणचि
उत्तर – (ख) आद्गुणः।
7. **देवैश्वर्यम् में सन्धि-विधायक सूत्र है–**
(क) आद्गुणः (ख) एङः पदान्तादति (ग) वृद्धिरेचि (घ) एङिपररूपम्
उत्तर – (ग) वृद्धिरेचि।
8. **'रमेशः' शब्द में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?**
(क) वृद्धिरेचि (ख) आद्गुणः (ग) एङिपररूपम् (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।
9. **विद्यालय में सन्धि-विच्छेद होगा–**
(क) विद्या + लय (ख) विद्या + आलयः (ग) विद्याल + य (घ) वि + द्यालय
उत्तर – (ख) विद्या + आलयः।
10. **सुरेशः का सन्धि-विच्छेद होता है 'सुर + ईशः' बताइए इसमें किस सूत्र से सन्धि की गयी है?**
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) इकोयणचि (घ) उरण रपरः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।
11. **'यद्यपि' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होता है?**
(क) यदी + अपि (ख) यदी + यपि (ग) यदि + अपि (घ) यदि + यपि
उत्तर – (ग) यदि + अपि।
12. **'वाक् + ईशः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?**
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) झलाँ जशोऽन्ते (घ) स्तोः श्चुनाश्चुः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।
13. **विद्या + आलयः में निम्नलिखित में से किस सूत्र से सन्धि हुई है?**
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) इकोयणचि (ग) आद्गुणः (घ) शात्
उत्तर – (क) अकः सवर्णे दीर्घः।
14. **'नायकः' इस पद का सन्धि-विच्छेद निम्नालिखित में से कौन-सा सही है?**
(क) ने + अकः (ख) ना + यकः (ग) नाय + कः (घ) नै + अकः
उत्तर – (घ) नै + अकः।
15. **'गुर्वादेशः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?**
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) वृद्धिरेचि (ग) इकोयणचि (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) इकोयणचि।
16. **'प्रेजते' शब्द का सन्धि-विच्छेद होता है–**
(क) प्रे + जते (ख) प्र + एजते (ग) प्रे + एजेत (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) प्र + एजते।
17. **गुर्वादेशः का सन्धि-विच्छेद होता है?**
(क) गुर्व + आदेशः (ख) गुर + आदेशः (ग) गु + वादेशः (घ) गुरु + आदेशः
उत्तर – (घ) गुरु + आदेशः।

18. 'पवनः' पद का उचित सन्धि-विच्छेद है–
(क) पव + अनः (ख) पो + अनः (ग) पव + अनः (घ) पौ + अनः
उत्तर – (ख) पो + अनः।

19. 'रामायोपहारः' इसका सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) रामा + योपहारः (ख) रामायो + पहारः (ग) राम + आयोपहारः (घ) रामाय + उपहारः
उत्तर – (घ) रामाय + उपहारः।

20. 'गङ्गोदकम्' इसका सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) गङ्गो + दकम् (ख) गङ्ग + ओदकम् (ग) गङ्गा + ओदकम् (घ) गङ्गा + उदकम्
उत्तर – (घ) गङ्गा + उदकम्।

21. 'रक्षोपायः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) वृद्धिरेचि (ख) अकः सवर्णे दीर्घः (ग) आद्गुणः (घ) इकोयणचि
उत्तर – (ग) आद्गुणः।

22. 'चन्द्रोदयः' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) वृद्धिरेचि (ख) एङि पररूपम् (ग) आद्गुणः (घ) अतो रोरप्लुतादप्लुते
उत्तर – (ग) आद्गुणः।

23. 'नीतीयम्' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) नीती + ईयम् (ख) नीति + इयम् (ग) नीती + इयम (घ) नीत + ईयम्
उत्तर – (ख) नीति + इयम्।

24. प्रत्यर्पणम् पद का सन्धि विच्छेद होता है–
(क) प्रत्य + अर्पणम् (ख) प्रति + अर्पणम् (ग) प्रती + अर्पणम् (घ) प्रति + यर्पणम्
उत्तर – (ख) प्रति + अर्पणम्

25. 'यद्यपि' इस पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) य + द्यपि (ख) यद्य + पि (ग) यदि + अपि (घ) यद् + यपि
उत्तर – (ग) यदि + अपि।

26. 'साधुष्वपि' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) साधुसु + अपि (ख) साधुशु + अपि (ग) साधुषु + अपि (घ) साधूषु + अपि
उत्तर – (ग) साधुषु + अपि।

27. 'उपर्युक्तः' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) उपरि + उक्तः (ख) उपर + युक्तः (ग) उपर + ओक्तः (घ) उप + रोक्तः
उत्तर – (क) उपरि + उक्तः।

28. 'सूर्योदयः' में सन्धि है–
(क) आद्गुणः सूत्र से (ख) अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से
(ग) वृद्धिरेचि सूत्र से (घ) इको यणचि सूत्र से
उत्तर – (क) आद्गुणः सूत्र से।

29. 'गणेश' पद में सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) गणे + ईशः (ख) गणा + ईशः (ग) गण + ईशः (घ) गण + इशः
उत्तर – (ग) गण + ईशः।

30. 'विद्यालयः' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) इकोयणचि (ख) आद्गुणः (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) एचोऽयवायावः
उत्तर – (ग) अकः सवर्णे दीर्घः।

31. 'मिथ्याचारः' का सही सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) मिथ्या + आचारः (ख) मिथ्य + आचारः (ग) मिथि + आचारः (घ) मिथ् + आचारः
उत्तर – (क) मिथ्या + आचारः।

32. 'यद्यत्र' में सन्धि किस सूत्र से होती है?
(क) एचोऽयवायावः (ख) इकोयणचि (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) आद्गुणः
उत्तर – (ख) इकोयणचि।

33. 'महेशः' पद का सन्धि-विच्छेद है–
(क) महा + ईशः (ख) महे + अशः (ग) मह + इशः (घ) महा + इशः
उत्तर – (क) महा + ईशः।

34. 'शिवालयः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) इको यणचि (ख) आद्गुणः (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर – (ग) अकः सवर्णे दीर्घः।

35. 'पावकः' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) पो + अकः (ख) पौ + अकः (ग) पा + वकः (घ) प + आवकः
उत्तर – (ख) पौ + अकः।

36. 'इत्याह' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) इति + आह (ख) इती + आह (ग) इती + अह (घ) इति + अह
उत्तर – (क) इति + आह।

37. 'दैत्यारिः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) आद्गुणः (ख) इको यणचि (ग) झलां जश् झशि (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (घ) अकः सवर्णे दीर्घः।

38. 'पश्योपरि'' का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) पश्य + उपरि (ख) पश्य् + उपरि (ग) पश्य् + ऊपरि (घ) पशय + उपरि
उत्तर – (क) पश्य + उपरि।

39. 'मधु + अरिः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) इकोयणचि (ख) आद्गुणः (ग) एचोऽयवायावः (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (क) इकोयणचि।

40. 'स्वागतम्' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) स्व + आगतम् (ख) सू + आगतम् (ग) सु + आगतम् (घ) स्व + गतम्
उत्तर – (ग) सु + आगतम्।

41. 'महोत्सवः' में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) एङिपररूपम्।
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

42. 'इत्यादि' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होता है?
(क) इत् + यादि (ख) इत्या + दि (ग) इति + आदि (घ) इत्य + आदि
उत्तर – (ग) इति + आदि।

43. 'गङ्गोदकम्' पद में सन्धि-विच्छेद होगा–
(क) गङ्गो + दकम् (ख) गङ्गा + उदकम् (ग) गङ्ग् + ओदकम् (घ) गङ्ग + ओदकम्
उत्तर – (ख) गङ्गा + उदकम्।

44. 'नयनम्' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) न + यनम् (ख) नय + नम् (ग) नै + अनम् (घ) ने + अनम्
उत्तर – (घ) ने + अनम्।

45. 'इत्यादि' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) इति + आदि (ख) इति + अदि (ग) इती + आदि (घ) इत + आदि
उत्तर – (क) इति + आदि।

46. 'वसन्तोत्सवः' में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) इको यणचि (घ) एङि पररूपम्
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

47. 'हिमालयः' पद का सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) हिमा + लयः (ख) हिमा + आलयः (ग) हिम + आलयः (घ) हिम + अलयः
उत्तर– (ग) हिम + आलयः।

48. 'सप्त + ऋषिः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) एचोऽयवायावः
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

49. 'तीर्थोदकम्' पद में किस सूत्र से सन्धि-कार्य होता है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) इकोयणचि (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

50. 'मध्वरिः' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) मधू + अरिः (ख) मध् + वरिः (ग) मधो + अरिः (घ) मधु + अरिः
उत्तर– (घ) मधु + अरिः।

51. 'प्रेजते' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) इको यणचि (ख) अकः सवर्णे दीर्घः (ग) आद्गुणः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (घ) एङिपररूपम्।

52. 'राजेन्द्रः' पद में सन्धि-कार्य किस सूत्र से हुआ है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) खरिच
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

53. 'प्रत्युवाच' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) प्रती + उवाच (ख) पत्यु + वाच (ग) प्रते + उवाच (घ) प्रति + उवाच
उत्तर– (घ) प्रति + उवाच।

54. 'महा+ऋषिः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) एचोऽयवायावः
उत्तर– (ख) आद्गुणः।

55. 'हर्यश्वः' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) हरी+अश्वः (ख) हरे+अश्वः (ग) हरि+अश्वः (घ) हरिः+अश्वः
उत्तर– (ग) हरि+अश्वः।

56. 'कूपोदकम्' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) इको यणचि (ख) अकः सवर्णे दीर्घः (ग) आद्गुणः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (ग) आद्गुणः।

57. 'हरये' का सन्धि-विच्छेद है–
(क) हर+ये (ख) हरे+अ (ग) हरि+ए (घ) हरे+ए
उत्तर– (घ) हरे+ए।

58. 'उपेन्द्रः' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) आद्गुणः (ख) इको यणचि (ग) एचोऽयवायावः (घ) एङः पदान्तादति
उत्तर– (क) आद्गुणः।

59. 'अत्रैकः' पद में सन्धि-कार्य किस सूत्र से हुआ है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) वृद्धिरेचि (ग) इको यणचि (घ) आद्गुणः
उत्तर– (ख) वृद्धिरेचि।

●●

5 शब्द-रूप

(क) पुंल्लिङ्ग

1. राम (अकारान्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

2. इकारान्त पुंल्लिङ्ग 'हरि'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरिणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः।

संकेत – हरि के समान ही सभी पुंल्लिङ्ग इकारान्त शब्दों के रूप जैसे मुनि, कपि, कवि, भूपति, नरपति आदि चलेंगे।

3. उकारान्त पुंल्लिङ्ग 'गुरु'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरुवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरुवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरुणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु

सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरुवः

संकेत – गुरु के समान ही सभी उकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप जैसे तरु, शिशु, भानु, बन्धु आदि चलेंगे।

4. ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग 'पितृ'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रौः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पिता!	हे पितरौ!	हे पितरः!

5. तकारान्त पुंल्लिङ्ग 'भगवत्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वितीया	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
तृतीया	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
चतुर्थी	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
पंचमी	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
षष्ठी	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
सप्तमी	भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
सम्बोधन	हे भगवन्!	हे भगवन्तौ!	हे भगवन्तः!

6. इनन्त पुंल्लिङ्ग 'करिन्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	करी	करिणौ	करिणः
द्वितीया	करिणम्	करिणौ	करिणः
तृतीया	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
चतुर्थी	करिणे	करिभ्याम्	करिभ्यः
पंचमी	करिणः	करिभ्याम्	करिभ्यः
षष्ठी	करिणः	करिणोः	करिणाम्
सप्तमी	करिणि	करिणोः	करिषु
सम्बोधन	हे करिन्!	हे करिणौ!	हे करिणः!

7. अनन्त पुंल्लिङ्ग 'राजन्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः

पंचमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि/राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

8. इकारान्त पुंल्लिङ्ग 'पति'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

9. इकारान्त पुंल्लिङ्ग 'सखि'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पंचमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

10. सकारान्त पुंल्लिङ्ग 'विद्वस्'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विदुषाम्
सम्बोधन	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

11. सकारान्त पुंल्लिङ्ग 'चन्द्रमस्'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पंचमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमसः!

(ख) स्त्रीलिङ्ग

1. 'रमा' (अकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

2. 'मति' (इकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मतये/मत्यैः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मतेः/मत्याः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मतः/मत्याः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मतौ/मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

3. 'नदी' (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

4. 'धेनु' (उकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेनोः/धेन्वाः	धेन्वोः	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः/धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

5 'वधू' (ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः।

6. 'वाच्' (चकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्/वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पंचमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्/हे वान्!	हे वाचौ!	हे वाचः!

7. 'सरित्' (तकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पंचमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः

षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्!	हे सरितौ!	हे सरितः!

8. 'श्री' (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै/श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पंचमी	श्रियः/श्रियाः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियः/श्रियाः	श्रियोः	श्रीणाम्
सप्तमी	श्रियाम्/श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः!	हे श्रियौ!	हे श्रियः!

9. 'स्त्री' (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्/स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रीः/स्त्रियः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

10. 'अप' (पकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

(अप शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः। 'अप' शब्द नित्य बहुवचनान्त है।)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	—	—	आपः
द्वितीया	—	—	अपः
तृतीया	—	—	अद्भिः
चतुर्थी	—	—	अद्भ्यः
पंचमी	—	—	अद्भ्यः
षष्ठी	—	—	अपाम्
सप्तमी	—	—	अप्सु
सम्बोधन	—	—	हे आपः!

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'गुरुभ्यः' पद 'गुरु' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**
(क) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
(ग) पंचमी विभक्ति, एक वचन (घ) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन।

2. **विद्वस् शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप है–**
(क) विद्वान (ख) विद्वांसम् (ग) विदुषः (घ) विदुषा
उत्तर–(ग) विदुषः।

3. **'रमा' प्रातिपदिक के सप्तमी एक वचन में रूप होगा–**
(क) रमाणाम् (ख) रमायाम् (ग) रमया (घ) रमे
उत्तर–(ख) रमायाम्।

4. **'गुरु' शब्द के षष्ठी एक वचन में रूप होता है–**
(क) गुरुणा (ख) गुरवे (ग) गुरोः (घ) गुरौ
उत्तर–(ग) गुरोः।

5. **'नद्याम्' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?**
(क) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन का (ख) षष्ठी विभक्ति तथा बहुवचन का
(ग) सप्तमी विभक्ति तथा एकवचन का (घ) किसी का नहीं
उत्तर–(ग) सप्तमी विभक्ति तथा एकवचन का।

6. **'पितृ' शब्द का पंचमी एकवचन में रूप होता है?**
(क) पित्रः (ख) पितरस्य (ग) पितुः (घ) पित्रात्
उत्तर–(ग) पितुः।

7. **'गुर्वोः' पद 'गुरु' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**
(क) प्रथमा एकवचन (ख) पंचमी बहुवचन (ग) सप्तमी द्विवचन (घ) किसी का नहीं
उत्तर–(ग) सप्तमी द्विवचन।

8. **'नद्यै' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**
(क) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति तथा बहुवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति तथा एकवचन (घ) किसी का नहीं
उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति तथा एकवचन।

9. **'राज्ञि' पद 'राजन्' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है–**
(क) द्वितीया विभक्ति एकवचन (ख) सप्तमी विभक्ति का एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन (घ) किसी का नहीं
उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन।

10. **'हरेः' पद 'हरि' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**
(क) प्रथमा विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का
(ग) पञ्चमी विभक्ति एकवचन का (घ) द्वितीया विभक्ति बहुवचन का
उत्तर–(ग) पञ्चमी विभक्ति एकवचन का।

11. **'राज्ञि' पद 'राजन्' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**
(क) द्वितीया विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का
(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन का (घ) किसी का नहीं
उत्तर–(ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का।

12. 'नद्यः' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?
(क) प्रथमा एकवचन (ख) द्वितीया द्विवचन (ग) प्रथमा बहुवचन (घ) तृतीया बहुवचन
उत्तर–(ग) प्रथमा बहुवचन।

13. 'रमा' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होता है–
(क) रमायै (ख) रमाः (ग) रमायाः (घ) रमायाम्
उत्तर–(ग) रमायाः।

14. 'सरित्' शब्द तृतीया विभक्ति एक वचन का रूप है–
(क) सरितः (ख) सरिता (ग) सरितम् (घ) सरिते
उत्तर–(ग) सरितम्।

15. भगवत्' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन में रूप होता है–
(क) भगवतैः (ख) भगवद्भिः (ग) भगवद्भ्याः (घ) भगवता
उत्तर–(ख) भगवद्भिः।

16. 'नदीः' की सही विभक्ति एवं वचन का निर्देश करें–
(क) प्रथमा एकवचन (ख) द्वितीया एकवचन (ग) द्वितीया बहुवचन (घ) तृतीया बहुवचन
उत्तर–(ग) द्वितीया बहुवचन।

17. 'राजन्' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है–
(क) राज्ञे (ख) राज्ञि (ग) राजसु (घ) राज्ञोः
उत्तर–(ख) राज्ञि।

18. 'हरिणा' पद हरि शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति तथा एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन
(ग) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन (घ) इसमें से किसी का नहीं
उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन।

19. धेनु शब्द का चतुर्थी एकवचन में क्या रूप होता है?
(क) धेनवः (ख) धेनुना (ग) धेनवे (घ) धेनोः
उत्तर–(ग) धेनवे।

20. 'रमासु' पद 'रमा' शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति एक वचन का (ख) सप्तमी विभक्ति बहुवचन का
(ग) तृतीया विभक्ति एक वचन का (घ) द्वितीया विभक्ति एक वचन का
उत्तर–(ख) सप्तमी विभक्ति बहुवचन का।

21. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होता है–
(क) पिते (ख) पितरि (ग) पितरौ (घ) पितृषु
उत्तर – (ख) पितरि।

22. पितृ शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–
(क) पितुः (ख) पितरि (ग) पितृणाम् (घ) पीतृणाम्
उत्तर – (ग) पितृणाम्।

23. 'करिणे' पद 'करिन्' के किस विभक्ति और वचन का रूप है?
(क) प्रथमा द्विवचन (ख) तृतीया एकवचन (ग) चतुर्थी एकवचन (घ) पंचमी बहुवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी एकवचन।

24. 'भगवत्सु' पद किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(क) भगवा शब्द प्रथमा बहुवचन (ख) भगवत् शब्द सप्तमी बहुवचन
(ग) भगवन् शब्द सप्तमी बहुवचन (घ) भगवत् शब्द सप्तमी एकवचन
उत्तर – (ख) भगवत् शब्द सप्तमी बहुवचन।

25. चन्द्रमसि पद चन्द्रमस् की किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति एकवचन

(ग) पञ्चमी विभक्ति बहुवचन (घ) सप्तमी विभक्ति एकवचन।

उत्तर – (घ) सप्तमी विभक्ति एकवचन।

26. 'एतद्' (पुँल्लिङ्ग) शब्द के पञ्चमी विभक्ति द्विवचन का रूप होगा–

(क) एते (ख) एतैः (ग) एताभ्याम् (घ) एनयोः

उत्तर – (घ) एनयोः।

27. 'करिन्' शब्द का तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है–

(क) करिण (ख) करिणा (ग) करिणेन (घ) करिणि

उत्तर – (घ) करिणि।

28. 'रमाः' पद 'रमा' प्रातिपदिक के किस विभक्ति वचन का रूप होता है?

(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन

उत्तर – (ख) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

29. 'चन्द्रमाः' पद 'चन्द्रमस्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति-वचन का रूप है?

(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन (ग) प्रथमा, एकवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन

उत्तर – (क) प्रथमा, बहुवचन।

30. 'नदी' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है–

(क) नदीनाम् (ख) नदीः (ग) नद्यः (घ) नदीभिः

उत्तर – (घ) नदीभिः।

31. 'वाचा' पद वाच् शब्द की किस विभक्ति-वचन का रूप है?

(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

32. 'नदी' शब्द का सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप है–

(क) नद्यै (ख) नद्याः (ग) नद्याम् (घ) नद्या

उत्तर – (ग) नद्याम्।

33. 'पितृ' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप है–

(क) पितरः (ख) पित्रा (ग) पितृभ्यः (घ) पित्रे

उत्तर – (घ) पित्रे।

34. 'मत्' में कौन-सी विभक्ति है?

(क) पञ्चमी (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) प्रथमा

उत्तर – (क) पञ्चमी।

35. 'रामस्य' पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति-वचन का रूप है?

(क) तृतीया विभक्ति, एकवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, द्विवचन

(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन

उत्तर – (ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन।

36. 'रमा' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप होता है–

(क) रमया (ख) रमायै (ग) रमायाः (घ) रमायाम्

उत्तर – (ख) रमायै।

37. 'रामाय' पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) द्वितीया, एकवचन (ख) तृतीया, द्विवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) पञ्चमी, द्विवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी, एकवचन।

38. 'हरि' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होता है–
(क) हरिः (ख) हरिम् (ग) हरिणा (घ) हरये
उत्तर – (ग) हरिणा।

39. 'रमा' शब्द का द्वितीया एकवचन में क्या रूप होता है?
(क) रमाम् (ख) रमया (ग) रमायै (घ) रमायाः
उत्तर – (क) रमाम्।

40. 'गुरुणा' पद 'गुरु' प्रातिपदिक के किस विभक्ति व वचन का रूप है?
(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकचन (घ) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

41. 'हरये' पद 'हरि' शब्द के किस विभक्ति व वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एक वचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
उत्तर– (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

42. 'रमा' शब्द का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है–
(क) रमया (ख) रमायै (ग) रमाणाम् (घ) रमासु
उत्तर– (ग) रमाणाम्।

43. 'गुरुवे' पद गुरु प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर– (ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

44. 'हरये' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है?
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) षष्ठी, एकवचन (घ) तृतीया, एकवचन
उत्तर– (ख) चतुर्थी, एकवचन।

45. 'विद्वांसः' पद प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है–
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

46. 'नद्याः' पद नदी प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति द्विवचन
उत्तर–(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

47. 'पित्रा' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

48. 'हरीन्' पद 'हरि' शब्द की किस विभक्ति तथा वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर–(ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन।

49. 'रमा' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है?
(क) रमाम् (ख) रमया (ग) रमायै (घ) रमायाः
उत्तर– (ग) रमायै।

50. 'भगवत्' शब्द के सप्तमी, एकवचन का रूप है?
(क) भगवते (ख) भगवति (ग) भगवतः (घ) भगवान्
उत्तर–(ख) भगवति।

51. 'हरौ' हरि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है?
(क) द्वितीया, एकवचन (ख) तृतीया, एकवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) पञ्चमी, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

52. 'पितृ' शब्द के सप्तमी एकवचन का रूप है–
(क) पितरम् (ख) पित्रा (ग) पितरि (घ) पित्रे
उत्तर–(ग) पितरि।

53. 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) पंचमी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन।

54. 'रमायाम्' रमा प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है?
(क) द्वितीया, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

55. 'पितरः' पद 'पितृ' शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन
(ग) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (घ) तृतीया विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ग) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

●●

6 धातु-रूप

लकारों का संक्षिप्त परिचय

क्रिया की काल आदि से सम्बन्धित विशेषताओं को सूचित करनेवाली प्रक्रिया को 'लकार' कहते हैं। संस्कृत भाषा में क्रिया की विभिन्न विशेषताओं को सूचित करनेवाले दस लकार होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

1. **लट् लकार**—क्रिया का वर्तमानकाल में होना सूचित करने के लिए लट् लकार का प्रयोग होता है।
2. **लिट् लकार**—क्रिया का परोक्ष भूतकाल अर्थात् बहुत प्राचीनकाल में होना सूचित करने के लिए लिट् लकार का प्रयोग होता है।
3. **लुट् लकार**—आज के पश्चात् भविष्यत्काल में क्रिया का होना सूचित करने के लिए धातु से लुट् लकार के रूप बनाए जाते हैं।
4. **लृट् लकार**—आज ही अब के पश्चात् के काल में क्रिया का होना सूचित करने के लिए लृट् लकार के रूपों का प्रयोग किया जाता है।
5. **लेट् लकार**—इस लकार का प्रयोग केवल वेद में ही होता है।
6. **लोट् लकार**—आज्ञा, प्रार्थना, आशीर्वाद, निमन्त्रण, आमन्त्रण आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए लोट् लकार का प्रयोग होता है।
7. **लङ् लकार**—आज ही अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए धातु से लङ् लकार के रूप बनाए जाते हैं।
8. **लिङ् लकार के दो रूप हैं**—विधिलिङ् और आशीर्लिङ्।
   (क) विधिलिङ् लकार—विधि (प्रेरणा), निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न तथा प्रार्थना आदि अर्थों को सूचित करने के लिए विधिलिङ् लकार के रूपों का प्रयोग होता है।
   (ख) आशीर्लिङ्—आशीर्वाद अर्थ में आशीर्लिङ् का प्रयोग होता है।
9. **लुङ् लकार**—सामान्य भूतकाल को सूचित करने के लिए लुङ् लकार के रूप प्रयोग होते हैं।
10. **लृङ् लकार**—हेतुहेतुमद्भूत; जहाँ एक क्रिया का कारण दूसरी क्रिया हो, ऐसे भूतकाल में लृङ् लकार का प्रयोग होता है।

(क) परस्मैपद

1. भू (होना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म0 पु0	भव	भवतम्	भवत
उ0 पु0	भवानि	भवाम	भवाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म0 पु0	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ0 पु0	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म0 पु0	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ0 पु0	भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म0 पु0	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ0 पु0	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

2. पठ् (पढ़ना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	पठति	पठतः	पठन्ति
म0 पु0	पठसि	पठथः	पठथ
उ0 पु0	पठामि	पठावः	पठामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	पठतु, पठतात	पठताम्	पठन्तु
म0 पु0	पठ	पठतम्	पठत
उ0 पु0	पठानि	पठाव	पठाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म0 पु0	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ0 पु0	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

ऌट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

3. पा (पिब्) पीना

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
म० पु०	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उ० पु०	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबतु, पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
म० पु०	पिब, पिबतात्	पिबतम्	पिबत
उ० पु०	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म० पु०	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उ० पु०	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
म० पु०	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उ० पु०	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
म० पु०	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उ० पु०	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

4. गम् (गच्छ) जाना

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छतु, गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ, गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

5. दृश् (देखना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० पु०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० पु०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पश्यतु, पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० पु०	पश्य, पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत
उ० पु०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

6. स्था (तिष्ठ) ठहरना

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म० पु०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ० पु०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तिष्ठतु, तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म० पु०	तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ० पु०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म० पु०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ० पु०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म० पु०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ० पु०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म0 पु0	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ0 पु0	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

7. नी (नय्) ले जाना

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	नयति	नयतः	नयन्ति
म0 पु0	नयसि	नयथः	नयथ
उ0 पु0	नयामि	नयावः	नयामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	नयतु, नयतात	नयताम्	नयन्तु
म0 पु0	नय, नयतात्	नयतम्	नयत
उ0 पु0	नयानि	नयाव	नयाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म0 पु0	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ0 पु0	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म0 पु0	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ0 पु0	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म0 पु0	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ0 पु0	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

8. अस् (होना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	अस्ति	स्तः	सन्ति

म० पु०	असि	स्थः	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्तु, स्यात्	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि, स्यात्	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु०	आसीः	आस्तम्	आसत
उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

9. नश् (नष्ट होना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० पु०	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० पु०	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यतु, नश्यतात्	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० पु०	नश्य, नश्यतात्	नश्यतम्	नश्यत
उ० पु०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्

म० पु०	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० पु०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० पु०	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० पु०	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

10. आप् (प्राप्त करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
म० पु०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उ० पु०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आप्नोतु, आप्नुतात्	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
म० पु०	आप्नुहि, आप्नुतात्	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० पु०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म० पु०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० पु०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
म० पु०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उ० पु०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति

म0 पु0	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उ0 पु0	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

11. शक् (सकना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म0 पु0	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ0 पु0	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	शक्नोतु, शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म0 पु0	शक्नुहि, शक्नुतात्	शक्नुतम्	शक्नुत
उ0 पु0	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म0 पु0	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ0 पु0	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयः
म0 पु0	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ0 पु0	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
म0 पु0	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उ0 पु0	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

12. इष् (इच्छा करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म0 पु0	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ0 पु0	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	इच्छतु, इच्छतात्	इच्छताम्	इच्छन्तु
म0 पु0	इच्छ, इच्छतात्	इच्छतम्	इच्छत
उ0 पु0	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म0 पु0	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ0 पु0	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म0 पु0	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ0 पु0	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
म0 पु0	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उ0 पु0	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

13. प्रच्छ् (पूछना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म0 पु0	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ0 पु0	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	पृच्छतु, पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म0 पु0	पृच्छ, पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उ0 पु0	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म0 पु0	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ0 पु0	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० पु०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृक्ष्यति	पृक्ष्यतः	पृक्ष्यन्ति
म० पु०	पृक्ष्यसि	पृक्ष्यथः	पृक्ष्यथ
उ० पु०	पृक्ष्यामि	पृक्ष्यावः	पृक्ष्यामः

14. कृष् (जोतना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृषति	कृषतः	कृषन्ति
म० पु०	कृषसि	कृषथः	कृषथ
उ० पु०	कृषामि	कृषावः	कृषामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृषतु, कृषतात्	कृषताम्	कृषन्तु
म० पु०	कृष, कृषतात्	कृषतम्	कृषत
उ० पु०	कृषाणि	कृषाव	कृषाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्
म० पु०	अकृषः	अकृषतम्	अकृषत
उ० पु०	अकृषम्	अकृषाव	अकृषाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृषेत्	कृषेताम्	कृषेयुः
म० पु०	कृषेः	कृषेतम्	कृषेत
उ० पु०	कृषेयम्	कृषेव	कृषेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृक्ष्यति	कृक्ष्यतः	कृक्ष्यन्ति
म० पु०	कृक्ष्यसि	कृक्ष्यथः	कृक्ष्यथ
उ० पु०	कृक्ष्यामि	कृक्ष्यावः	कृक्ष्यामः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'अपठत्' पद 'पठ्' धातु के किस लकार, पुरुष और वचन का रूप होता है?**
(क) लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
2. **'भू' धातु के लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होता है–**
(क) अभवत् (ख) अभवः (ग) अभवन् (घ) अभवम्
उत्तर – (ख) अभवः।
3. **'अभवन्' भू धातु का रूप होता है–**
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लिङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।
4. **गम् धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है–**
(क) गच्छति (ख) गच्छन्ति (ग) आगच्छत् (घ) गच्छेत्
उत्तर – (ख) गच्छन्ति।
5. **'पठ्' धातु का लङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में क्या रूप होता है?**
(क) अपठत् (ख) अपठत (ग) अपठतम् (घ) अपठन्
उत्तर –(घ) अपठन्।
6. **'गच्छामः' गम् धातु के किस लकार, पुरुष और वचन का रूप है?**
(क) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन (ख) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (क) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन।
7. **'पा' धातु का विधिलिङ् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन में रूप होता है–**
(क) पिबेत (ख) पिबेव (ग) पिबेम (घ) कुछ नहीं
उत्तर – (ग) पिबेम।
8. **पठ् धातु के लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन रूप होता है–**
(क) पठतु (ख) पठन्तु (ग) पठतम् (घ) पठानि
उत्तर – (ग) पठतम्।
9. **'भू' धातु का 'भवन्ति' रूप किस लकार, पुरुष और वचन में होता है?**
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में (ख) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन में
(ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में
उत्तर – (ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में।
10. **'पा' धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में कौन-सा रूप होगा?**
(क) पिबति (ख) पिबन्ति (ग) पिबेत (घ) पिबसि
उत्तर – (क) पिबति।
11. **'पठ्' धातु का लोट् लकार के प्रथम पुरुष एकवचन में कौन-सा रूप होता है?**
(क) पठति (ख) पठिष्यति (ग) पठतु (घ) पठेतु
उत्तर – (ग) पठतु।
12. **'पास्यामि' में 'पा' धातु के किस लकार पुरुष और वचन का रूप होता है?**
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में
(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में (घ) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में
उत्तर – (ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में।

13. 'नी' धातु का लृट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में रूप होता है?
(क) नेयथ (ख) नयथः (ग) नेष्यथः (घ) नेष्यथ
उत्तर – (घ) नेष्यथ।

14. 'द्रक्ष्यति' क्रिया रूप का मूल धातु है–
(क) द्रुह् (ख) दृश् (ग) दृष् (घ) दुह्
उत्तर – (ख) दृश्।

15. 'पा' धातु का लृट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है–
(क) पिबिष्यति (ख) पास्यति (ग) पाक्ष्यति (घ) पाष्यति
उत्तर – (ख) पास्यति।

16. 'ददति' दा धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

17. 'पा' धातु का लोट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में रूप होता है–
(क) पिबेतम् (ख) पिबतम् (ग) पिबथः (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) पिबतम्।

18. 'अगच्छत' गम् धातु का रूप होता है–
(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन में (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन में
(ग) विधिलिंग लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन में (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में
उत्तर – (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन में।

19. अतिष्ठन् यह स्था धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

20. 'तिष्ठत'-'स्था' धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (ख) विधिलिंग लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन।

21. भवानि भू धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन में (ख) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में
(ग) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एक वचन में (घ) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन में
उत्तर – (ग) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एक वचन में।

22. शक् धातु का लट् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन में रूप होता है–
(क) शक्नोभः (ख) शक्नुवन्ति (ग) शक्नुमः (घ) शक्नुवः
उत्तर – (ग) शक्नुमः।

23. 'नी' धातु का लृट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) नमिष्यथः (ख) नेष्यथः (ग) नेष्येथे (घ) नेयथः
उत्तर – (ख) नेष्यथः।

24. 'तिष्ठतम्' स्था धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन (ख) लृट लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (घ) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन।

25. 'प्रच्छ्' धातु का लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) पृच्छतः (ख) प्रक्ष्यथः (ग) पृच्छतम् (घ) पृच्छेतम्
उत्तर – (ग) पृच्छतम्।

26. 'स्था' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है–
(क) तिष्ठत (ख) तिष्ठतम् (ग) अतिष्ठताम् (घ) तिष्ठताम्
उत्तर – (क) तिष्ठत।

27. 'भू' धातु का लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होता है–
(क) भवतु (ख) भवतम् (ग) भव (घ) भवाव
उत्तर – (ग) भव।

28. 'भू' धातु का लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) भवति (ख) भवतु (ग) भविष्यते (घ) अभवत्
उत्तर – (घ) अभवत्।

29. 'पा' धातु का लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) पासि (ख) पाहि (ग) पिबसि (घ) पास्यसि
उत्तर – (ग) पिबसि।

30. 'गच्छेयम्' गम् धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

31. 'भू' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है–
(क) भवत (ख) भवथ (ग) भवतः (घ) भवता
उत्तर – (क) भवत।

32. 'गम्' धातु का लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) गच्छति (ख) गच्छतु (ग) गमिष्यति (घ) गच्छेत्
उत्तर – (ग) गमिष्यति।

33. 'प्रच्छ' धातु के लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) पृच्छताम् (ख) प्रक्ष्यथः (ग) पृच्छतम् (घ) पृच्छेतम्
उत्तर – (ग) पृच्छतम्।

34. किसी एक धातु के लोट् लकार के मध्यम पुरुष के तीनों वचनों में रूप लिखिए–
(क) पठ् = पठ पठतम् पठत (ख) भू = भव भवतम् भवत
(ग) गम् = गच्छ गच्छतम् गच्छत

35. 'पास्यसि' में पा धातु किस लकार, वचन का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का
(ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का
उत्तर – (ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का।

36. 'पा' धातु के लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एक वचन में रूप होगा–
(क) पिबन्ति (ख) पिबताम् (ग) अपिबः (घ) पास्यति
उत्तर – (ग) अपिबः।

37. 'दृश्' धातु के लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन का रूप होगा–
(क) पश्यति (ख) अपश्यताम् (ग) पश्यन्तु (घ) द्रक्ष्यति
उत्तर – (घ) द्रक्ष्यति।

38. 'दृश्' धातु के लृट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन में रूप होता है–
(क) दृक्ष्यति (ख) द्रक्ष्यति (ग) द्रक्ष्यामि (घ) द्रक्ष्यथ
उत्तर– (ग) द्रक्ष्यामि।

39. 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, वचन एवं पुरुष का है?
(क) लट् ल0, प्र0पु0, एकवचन (ख) लृट् ल0, प्र0पु0, एकवचन
(ग) लोट् ल0, प्र0पु0, एकवचन **उत्तर–** (ख) लृट् ल0, प्र0पु0, एकवचन।

40. 'द्रक्ष्यामि' दृश् धातु का रूप है–
(क) लट् लकार, उ0 पु0, एकवचन (ख) लट् लकार, उ0पु0, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, उ0 पु0, एकवचन (घ) लृट् लकार, उ0पु0, बहुवचन
उत्तर– (ग) लृट् लकार, उ0 पु0, एकवचन।

41. 'गम्' धातु का लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में रूप होता है–
(क) अगच्छन् (ख) अगमिष्यन् (ग) अगमन् (घ) अगच्छतम्
उत्तर– (क) अगच्छन्।

42. 'पठताम्' रूप 'पठ्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है?
(क) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन
(ग) विधिलिङ्ग लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन
उत्तर– (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन।

43. 'पास्यति' रूप 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का है?
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर– (ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

44. 'पा' धातु का लोट् लकार मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) पिबताम् (ख) पिबतम् (ग) पिबाव (घ) पिबेतम्
उत्तर– (ख) पिबतम्।

45. 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है?
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार प्र0 पुरुष, एकवचन
उत्तर–(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

46. 'स्था' धातु का लोट् लकार म0 पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) तिष्ठाम् (ख) तिष्ठतम् (ग) तिष्ठाव (घ) तिष्ठेतम्
उत्तर–(ख) तिष्ठतम्।

47. 'पठिष्यति' पठ् धातु का रूप है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

48. 'अपिबः' 'पा' धातु का रूप है–
(क) लट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, म0 पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, द्विवचन (घ) लृट् लकार, उ0 पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

49. 'पास्यामि' रूप 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष तथा वचन का है?
(क) लट् लकार, प्र0 पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, म0 पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

50. 'अगच्छम्' रूप गम् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का है?
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन
(ग) लोट लकार, प्र0 पुरुष, बहुवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर–(घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

●●

7 प्रत्यय

जो वर्ण या समूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नये अर्थ की प्रतीति कराते हैं तथा शब्द की विश्वसनीयता में वृद्धि करते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के हैं– कृदन्त प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

1. कृदन्त प्रत्यय — जो प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होकर नये शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

2. तद्धित प्रत्यय — संज्ञा और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं और बने हुए शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं।

नोट – पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्यय नीचे दिये जा रहे हैं।

कृदन्त प्रत्यय

(1) क्तिन् प्रत्यय — "स्त्रियाँ क्तिन।"

अर्थात् भाव आदि वाच्य होने पर धातु से क्तिन् प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'क्तिन्' के क् और न् का लोप होकर केवल ति शेष रहता है। यह प्रत्यय सदैव भाववाचक व इससे बना हुआ शब्द स्त्रीलिंग होता है।

यथा—

कृ	+	क्तिन् (ति)	=	कृतिः	धृ	+	क्तिन् (ति)	=	धृतिः
नी	+	क्तिन् (ति)	=	नीतिः	भू	+	क्तिन् (ति)	=	भूतिः
गम्	+	क्तिन् (ति)	=	गतिः	नम्	+	क्तिन् (ति)	=	नतिः

(2) क्त्वा प्रत्यय– प्रत्यय एक क्रिया के हो चुकने पर जब दूसरी क्रिया आरम्भ हो तो पहले समाप्त हुई क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। ऐसी स्थिति में दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही होना चाहिए। सोकर, पीकर, पढ़कर, जाकर आदि पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ का बोध कराने के लिए धातु में क्त्वा प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'करके' या 'कर' अर्थ के लिए संस्कृत में 'क्त्वा' प्रत्यय का ही प्रयोग होता है। क्त्वा प्रत्यय में क् का लोप होकर 'त्वा' शेष रहता है। क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय हो जाता है जिसके रूप नहीं चलते हैं।

यथा—

पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा
लभ्	+	क्त्वा	=	लब्धवा	दा	+	क्त्वा	=	दात्त्वा
भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा	दृश	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा
नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा	कथ्	+	क्त्वा	=	कथित्वा
त्यज्	+	क्त्वा	=	त्यक्त्वा					

(3) ल्यप् प्रत्यय– ल्यप् का 'य' शेष रहता है। यह भी पूर्वकालिक प्रत्यय है। यदि पूर्वकालिक क्रिया की धातु से पूर्व कोई उपसर्ग या उपसर्ग स्थानीय पद हो तो वहाँ ल्यप् प्रत्यय होता है। यथा —

प्र	+	आप्	+ ल्यप् (य)	=	प्राप्य	आ	+	गम्	+	ल्यप् (य)	=	आगम्य
आ	+	दा	+ ल्यप् (य)	=	आदाय	वि	+	स्मृ	+	ल्यप् (य)	=	विस्मृत्य
उप	+	गम्	+ ल्यप् (य)	=	उपगम्य	प्र	+	नम्	+	ल्यप् (य)	=	प्रणम्य
वि	+	हा	+ ल्यप् (य)	=	विहाय	अव्	+	तृ	+	ल्यप् (य)	=	अवतीर्य
नि	+	पा	+ ल्यप् (य)	=	निपीय							

(4) शतृ - शानच् प्रत्यय– 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' अर्थात् अ प्रथमान्त (प्रथमा विभक्ति से भिन्न) के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् प्रत्यय आते हैं। शतृ और शानच् प्रत्यय वर्तमान काल एवं भविष्यत् काल की क्रियाओं के साथ प्रयोग किए जाते हैं। शतृ का अत् तथा शानच् का आन शेष रहता है।

शतृ प्रत्यय के प्रयोग से सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिंङ्) में विकार उत्पन्न हो जाता है। शतृ प्रत्ययान्त रूप बनाने के लिए सरल तरीका है। परस्मैपदी धातु से लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन रूप में से ति निकाल देने पर प्रथमा विभक्ति एक वचन पुंल्लिङ्ग का रूप बन जाता है। जैसे गच्छन्ति-ति=गच्छन्। पठन्ति-ति = पठन्। पिबन्ति - ति = पिबन्। जिनका अर्थ होता है जाता हुआ, पढ़ता हुआ, पीता हुआ। शतृ प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुंल्लिङ्ग में गच्छत् के समान गच्छन्, गच्छन्तौ, गच्छन्तः आदि, स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' के समान गच्छन्ती, गच्छन्त्यौ, गच्छन्त्यः आदि तथा नपुंसकलिङ्ग में 'जगत्' के समान गच्छत्, गच्छती, गच्छन्ति आदि रूप चलते हैं।

शानच् प्रत्यय का 'आन' शेष रहता है। इसको भी संक्षेप में इस प्रकार बनाया जा सकता है। आत्मनेपदी लट् लकार प्रथम पुरुष के रूप सेवते या सेवन्ते में से 'तो' या 'न्ते' निकालकर 'आन' जोड़ देते हैं। उसमें मुक् के आगम के साथ 'मान' हो जाता है। तब नियमानुसार मान या आन जोड़ देने से शानच् प्रत्ययान्त रूप बन जाता है। यथा— सेवते-ते = सेव + मान = सेवमान। ददते - ते = दद + आन = ददान।

इस तरह शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग में राम के समान सेवमानः सेवमानौ सेवमानाः आदि, स्त्रीलिङ्ग में 'रमा' के समान-सेवमाना, सेवमाने, सेवमानाः आदि तथा नपुंसकलिङ्ग में फल के समान-सेवमानम्, सेवमाने, सेवमानानि रूप बनते हैं।

शतृ प्रत्ययान्त रूप

				पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
कथ्	+	शतृ	=	कथयन्	कथयन्ती	कथयन्
हस्	+	शतृ	=	हसन्	हसन्ती	हसत्
अस्	+	शतृ	=	सन्	सती	सत्
खाद्	+	शतृ	=	खादन्	खादन्ती	खादत्
चल्	+	शतृ	=	चलन्	चलन्ती	चलत्
ज्ञा	+	शतृ	=	जानन्	जानन्ती	जानत्
पठ्	+	शतृ	=	पठन्	पठन्ती	पठत्
दृश्	+	शतृ	=	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यात्
गम्	+	शतृ	=	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
भू	+	शतृ	=	भवन्	भवन्ती	भवत्

शानच् प्रत्ययान्त रूप

				पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
भाष्	+	शानच्	=	भाषमानः	भाषमाना	भाषमानम्
एध्	+	शानच्	=	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
कृ	+	शानच्	=	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुवाणम्
यज्	+	शानच्	=	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
लभ्	+	शानच्	=	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
याच्	+	शानच्	=	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
नी	+	शानच्	=	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
वृध्	+	शानच्	=	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्दमानम्
कथ्	+	शानच्	=	कथयमाण	कथयमाणा	कथयमाणम्

(5) तुमुन् प्रत्यय– 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' अर्थात् क्रियार्थक क्रिया उपपद रहते भविष्यत् अर्थ में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है। तुमुन् प्रत्यय में 'तुम्' शेष रहता है। इसका प्रयोग हेतु वाचक शब्दों में 'के लिए' 'का' 'के' अर्थ में किया जाता है। यह अव्यय होता है और इसके रूप नहीं चलते हैं। यह तुमुन् प्रत्ययान्त रूप चतुर्थी विभक्ति का विकल्प रूप है।

पठ्	+	तुमुन्	=	पठितुम्
दृश्	+	तुमुन्	=	द्रष्टुम्
स्था	+	तुमुन्	=	स्थातुम्
श्रु	+	तुमुन्	=	श्रोतुम्
ज्ञा	+	तुमुन्	=	ज्ञातुम्

कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्
भू	+	तुमुन्	=	भवितुम्
गम्	+	तुमुन्	=	गन्तुम्
हन्	+	तुमुन्	=	हन्तुम्
छिद्	+	तुमुन्	=	छेन्तुम्
गै	+	तुमुन्	=	गातुम्
कथ्	+	तुमुन्	=	कथयितुम्
पा	+	तुमुन्	=	पातुम्

(6) यत् प्रत्यय–'अचो यत्' अर्थात् 'चाहिए' अर्थ को बतानेवाले यत् प्रत्यय में 'य' शेष रहता है और धातु के स्वर को गुण हो जाता है। यथा—

				पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पा	+	यत्	=	पेयः	पेया	पेयम्
नी	+	यत्	=	नेयः	नेया	नेयम्
श्रु	+	यत्	=	श्रव्यः	श्रव्या	श्रव्यम्
भू	+	यत्	=	भव्यः	भव्या	भव्यम्
चि	+	यत्	=	चेयः	चेया	चेयम्
लभ्	+	यत्	=	लभ्यः	लभ्या	लभ्यम्
शकु	+	यत्	=	शक्यः	शक्या	शक्यम्
हन्	+	यत्	=	वध्यः	वध्या	वध्यम्

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'पीत्वा' में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय को लिखिए–**
(क) पा + त्वा (ख) पि + क्त्वा (ग) पा + क्त्वा (घ) पी + त्वा
उत्तर – (ग) पा + क्त्वा।
2. **'नी' धातु में 'यत्' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
(क) नीय (ख) नाय्य (ग) नेय (घ) नेय्य
उत्तर–(ग) नेय।
3. **'शायितुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय लिखिए–**
(क) शा + तुमुन् (ख) शी + तुमुन् (ग) शि + तुमुन् (घ) शे + तुमुन्
उत्तर – (क) शा + तुमुन्।
4. **'प्रच्छ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
(क) प्रछ्वा (ख) पृष्ट्वा (ग) प्रष्ट्वा (घ) प्रिछ्ट्वा
उत्तर – (ग) प्रष्ट्वा।
5. **'नेतुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए–**
(क) ने + तुमुन् (ख) नी + तुमुन् (ग) नै + तुमुन् (घ) नय् + तुमुन्
उत्तर – (ख) नी + तुमुन्।
6. **'ग्रह' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
(क) ग्रहीत्वा (ख) गृहीत्वा (ग) गहीत्वा (घ) ग्राहित्वा
उत्तर – (ख) गृहीत्वा।
7. **'दा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–**
(क) दात्वा (ख) दयित्वा (ग) दत्वा (घ) दायित्वा
उत्तर – (ग) दत्वा।

8. 'द्रष्टुम्' में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए–
(क) द्रश + तुमुन् (ख) दृश् + तुमुन् (ग) उष् + तुमुन् (घ) दृष् + तुमुन्
उत्तर –(ख) दृश् + तुमुन्।

9. 'पातुम्' में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय लिखिए–
(क) पिब् + तुमुन् (ख) पिब् + क्त्वा (ग) पा + तुमुन् (घ) पा + क्त
उत्तर – (ग) पा + तुमुन्।

10. 'पठ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है–
(क) पठत्वा (ख) पठित्वा (ग) पठितः (घ) पठितुम्
उत्तर–(ख) पठित्वा।

11. 'सेव्' धातु में 'शानच्' प्रत्यय लगाने पर बनता है–
(क) सेवमानः (ख) सेवामानः (ग) सेवशानः (घ) सहमानः
उत्तर – (क) सेवमानः।

12. 'त्यक्त्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है–
(क) त्यज् + क्त (ख) त्यज् + क्त्वा (ग) त्यज् + तुमुन् (घ) त्यज् + ल्यप्
उत्तर – (ख) त्यज् + क्त्वा।

13. 'दा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय का योग करने पर होता है–
(क) देतम् (ख) दानम् (ग) दातुम् (घ) देयम्
उत्तर – (ग) दातुम्।

14. 'याचितुम्' पद का प्रकृति प्रत्यय है–
(क) याच् + तुमुन् (ख) याच् + ल्यप् (ग) याच् + शानच् (घ) याच् + क्तिन्
उत्तर – (क) याच् + तुमुन्।

15. 'भू' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप बनता है–
(क) भूत्वा (ख) भूक्त्वा (ग) भवित्वा (घ) भावित्वा
उत्तर – (क) भूत्वा।

16. 'पठित्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृत (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए–
(क) पठ् + त्वां (ख) पठ् + क्तं (ग) पठ् + क्त्वा (घ) पठ् + तुमुन्
उत्तर – (ग) पठ् + क्त्वा।

17. 'गम्' धातु में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग करने पर क्या रूप होता है?
(क) गमितुम (ख) गन्तुम् (ग) गच्छितुम (घ) इनमें से कुछ भी नहीं
उत्तर – (ख) गन्तुम्।

18. 'अनु + स्त + ल्यप्' का उचित कृदन्त रूप है–
(क) अनुसर्य (ख) अनुस्तत (ग) अनुस्तय (घ) अनुसृज्य
उत्तर – (ख) अनुस्तत।

19. 'गृहीत्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय हैं–
(क) गह् + त्वा (ख) ग्रह् + क्त्वा (ग) गही + त्वा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) ग्रह् + क्त्वा।

20. 'दृश् ' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय करने पर योग बनता है–
(क) दर्शितुम् (ख) पश्यतुम् (ग) द्रष्टुम् (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर –(ग) द्रष्टुम्।

21. 'भवन' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए।
(क) भव् + इन् (ख) भू + तिप् (ग) भू + शतृ (घ) भू + तुम्
उत्तर – (ग) भू + शतृ।

22. 'छिद्र' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(क) छिन्तः (ख) छिन्नः (ग) छेन्ता (घ) कोई नहीं
उत्तर – (क) छिन्तः।

23. पठ् धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा–
(क) पठयितुम् (ख) पठित्वा (ग) पठितुम् (घ) सभी अशुद्ध
उत्तर – (ग) पठितुम्।

24. भवितुम् पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(क) भू + क्त्वा (ख) भू + शतृ (ग) भू + तुमुन् (घ) भू + शानच्
उत्तर – (ग) भू + तुमुन्।

25. 'गति' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय लिखिए।
(क) गम् + क्त (ख) गम् + तुमुन् (ग) गम् + ङीष (घ) गम् + क्तिन्
उत्तर – (घ) गम् + क्तिन्।

26. 'दृश्' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय का योग करने पर बनता है–
(क) दर्शितुम् (ख) पश्यतुम् (ग) द्रष्टुम् (घ) दृष्टम्
उत्तर – (ग) द्रष्टुम्।

27. 'नेतुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–
(क) ने + तुमुन् (ख) नी + तुमुन् (ग) नै + तुमुन् (घ) नय् + तुमुन
उत्तर – (ख) नी + तुमुन्।

28. 'स्था' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर बनता है–
(क) स्थाक्त्वा (ख) स्थित्वा (ग) तिष्ठित्वा (घ) स्थात्वा
उत्तर – (ख) स्थित्वा।

29. 'दृष्टिः' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–
(क) दृश् + क्तिन् (ख) दृष् + टि (ग) दृश् + ति (घ) दृष् + क्तिन्
उत्तर – (क) दृश् + क्तिन्।

30. 'गन्तुम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) गम् + तुमुन् (ख) गन् + तुम् (ग) गम् + तुम् (घ) गन् + तुमुन्
उत्तर – (क) गम् + तुमुन्।

31. 'पा' धातु में 'शतृ' प्रत्यय का योग करने पर बनता है–
(क) पातुम् (ख) पीत्वा (ग) पिबन् (घ) पीतम्
उत्तर – (ग) पिबन्।

32. 'पठितुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) पठ् + त्वा (ख) पठ् + क्त (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर – (ग) पठ् + तुमुन्।

33. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) गम् + शतृ (ख) गच्छ + शानच् (ग) गच्छ् + शतृ (घ) गम् + क्त्वा
उत्तर – (क) गम् + शतृ।

34. 'भू' धातु में 'तुमुन्' 'प्रत्यय' करने पर रूप होता है–
(क) भूतम् (ख) भवतुम् (ग) भवितुम् (घ) भवन
उत्तर – (ग) भवितुम्।

35. 'कृ + शतृ' का उचित कृदन्त रूप है–
(क) कर्ता (ख) कुर्वन् (ग) कर्तृ (घ) कृतम्
उत्तर – (ख) कुर्वन्।

36. 'पठन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय है–
(क) पठ् + क्त्वा (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर – (ख) पठ् + शतृ।

37. 'लभ्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का रूप होगा–
(क) लभित्वा (ख) लब्ध्वा (ग) लाभित्वा (घ) इनमें से कोई भी नहीं
उत्तर – (ख) लब्ध्वा।

38. 'पा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनेगा?
(क) पीतम् (ख) पीतः (ग) पीत्वा (घ) पातुम्
उत्तर – (ग) पीत्वा।

39. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय करने पर रूप होता है–
(क) भूतम् (ख) भवतुम (ग) भवितुम्
उत्तर – (ग) भवितुम्।

40. 'ददत्' पद में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय हैं–
(क) दा + शतृ (ख) दा + तव्यत् (ग) दा + अनीयर् (घ) दा + क्त्वा
उत्तर– (क) दा + शतृ।

41. 'गम्' धातु में शतृ प्रत्यय लगने पर रूप होगा–
(क) गन्तुम् (ख) गमयितुम् (ग) गच्छन् (घ) गमितः
उत्तर– (ग) गच्छन्।

42. 'भुज्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा–
(क) भुक्त्वा (ख) भुक्तवान् (ग) भुक्तम् (घ) भोक्ता
उत्तर– (ग) भुक्तम्।

43. 'लब्धुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) लभ् + क्त (ख) लभ् + क्त्वा (ग) लभ् + तुमुन् (घ) लभ् + क्तवतु
उत्तर– (ग) लभ् + तुमुन्।

44. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है–
(क) गम् + शतृ (ख) गम् + शानच् (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + ण्वुल्
उत्तर– (क) गम् + शतृ।

45. 'धा' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय करने पर रूप होता है–
(क) धात्वा (ख) हित्वा (ग) धूत्वा (घ) धोत्वा
उत्तर– (क) धात्वा।

46. 'हस्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप होता है–
(क) हसितवान् (ख) हसितुम् (ग) हसितम् (घ) हसित्वा
उत्तर– (घ) हसित्वा।

47. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा–
(क) पठिता (ख) पठन् (ग) पठित (घ) पठित्वा
उत्तर– (ख) पठन्।

48. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा–
(क) पठत् (ख) पठन् (ग) पठितुम् (घ) पठितः
उत्तर– (ख) पठन्।

49. 'गायन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय हैं–
(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + तुमुन् (घ) गै + यत्
उत्तर– (ग) गै + तुमुन्।

50. 'पातुम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) पा + क्तिन् (ख) पा + तुमुन् (ग) पा + ल्यप् (घ) पा + क्त्वा
उत्तर– (ख) पा + तुमुन्।

●●

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

संस्कृत

कक्षा-11

समय : तीन घण्टे] *[पूर्णांक : 100*

निर्देश : प्रारम्भ के पन्द्रह मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

1. निम्नलिखित गद्यखण्ड पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 2×5=10

आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा। तस्य विदिशाभिधाना राजधान्यासीत्। स तस्याम्, असकृदालोचितनीतिशास्त्रैः निर्मलमनोभिः अमात्यैः परिवृतः, समानवयोविद्यालङ्कारैः राजपुत्रैः सह रममाणः, प्रथमे वयसि वर्तमानोऽपि वनितासुखपराङ्मुखः सुखमतिचिरमुवास। एकदा तम्, आस्थानमण्डपगतम् दक्षिणापथात् आगता काचित् चण्डाल-कन्यका पञ्जरस्थं शुकम् आदाय, समुपसृत्य "देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिकुशलः, पुराणेतिहासकथासु निपुणः, सकलभूतलरत्नभूतः, वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम् आत्मीयः क्रियाताम्' इत्युक्त्वा, पञ्जरं पुरो निधाय, अपससार।

प्रश्न (i) उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

प्रश्न (ii) विदिशायाः अधिपतिः कः आसीत्?

प्रश्न (iii) "देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिकुशलः, पुराणेतिहासकथासु निपुणः, सकलभूतलरत्नभूतः, वैशम्पायनो नाम शुकः' रेखांकित अंश का अनुवाद लिखिए।

प्रश्न (iv) 'राजपुत्रैः' में कौन-सी विभक्ति है?

प्रश्न (v) 'समुपसृत्य' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

अथवा

मध्ये च तस्य, प्रथमे वयसि वर्तमानम् आजानुलम्बेन भुजयुगलेन उपशोभितम्, अनेकवर्णैः श्वभिः अनुगम्यमानम्, मातङ्गकनामानं शबरसेनापतिमपश्यम्। सोऽयम् अटवीभ्रमणसमुद्भवं श्रमम् अपनिनीषुः आगत्य तस्यैव शाल्मलीतरोः अधः छायायाम् उपाविशत्। अथ तस्मात् सरसः सलिलम् अत्यच्छम् कमलिनीपत्रपुटेन आदाय, आपीय, धौतपङ्का निर्मलाः मृणालिकाश्च अदशत्। अपगतश्रमश्चोत्थाय, सकलेन तेन शबरसैन्येन अनुगम्यमानः शनैः शनैः अभिमतं दिगन्तरम् अयासीत्। एकमस्तु जरच्छबरः पिशितार्थी, तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत।

प्रश्न (i) उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

प्रश्न (ii) शबरसेनापतिः कः नाम आसीत्?

प्रश्न (iii) 'तस्यैव शाल्मलीतरोः अधः छायायाम् उपविशत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद लिखिए।

प्रश्न (iv) 'भुजयुगलेन' में कौन-सी विभक्ति है?

प्रश्न (v) 'मुहूर्तमिव' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** पात्र का चरित्र-चित्रण हिन्दी में कीजिए (अधिकतम 100 शब्द) — 4

(i) चन्द्रापीड (ii) महाश्वेता (iii) पुण्डरीक

3. बाणभट्ट का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख हिन्दी अथवा संस्कृत में कीजिए। (अधिकतम 100 शब्द) 4

4. निम्नलिखित दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए—

(अ) का दक्षिणपथादागता? 1

(i) महाश्वेता (ii) कादम्बरी

(iii) चाण्डालकन्या (iv) तरलिका

(आ) विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्— 1

(i) शुकनासस्य (ii) शूद्रकस्य
(iii) चन्द्रापीडस्य (iv) कुमारपालितस्य

5. अधोलिखित श्लोकों में से किसी **एक** श्लोक की हिन्दी में सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए— 2+5=7

(अ) निवर्त्य राजा दयितां दयालु-
स्तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।
पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां
जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्।।

(आ) स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां
निषेदुषीमासनबन्धधीरः।
जलाभिलाषी जलमाददानां
छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ।।

6. अधोलिखित श्लोकों में से किसी **एक** श्लोक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या कीजिए— 2+5=7

(अ) व्रताय तेनानुचरेण धेनो-
र्न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः।
न चान्यतस्तस्य शरीररक्षा
स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः ।।

(आ) सञ्चारपूतानि दिगन्तराणि
कृत्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुम्।
प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा
प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः ।।

7. महाकवि कालिदास का जीवन-परिचय हिन्दी अथवा संस्कृत में लिखिए। (अधिकतम 100 शब्द) 4

8. निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए—

(अ) कः राजा नन्दिनी सिषेवे? 1

(i) अजः (ii) दिलीपः (iii) रघुः (iv) दशरथः

(आ) "प्रयुक्तमप्यश्रमितो वृथा स्यात्" इयं कस्योक्तिः? 1

(i) रघोः (ii) सिंहस्य (iii) दिलीपस्य (iv) दशरथस्य

9. अधोलिखित में से किसी **एक** अंश का हिन्दी में सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए— 2+5=7

(अ) यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।

(आ) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

10. निम्नलिखित में से किसी **एक** सूक्ति की हिन्दी में सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए— 2+5=7

(i) न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।
(ii) स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।
(iii) अर्थो हि कन्या परकीय एव।

11. कालिदास की नाट्यकला की समीक्षा कीजिए। (अधिकतम 100 शब्द) 4

12. निम्नलिखित दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए—

(अ) शकुन्तलां शापं कः अददात्? 1

(i) कण्वः (ii) दुर्वासाः
(iii) गौतमी (iv) प्रियंवदा

(आ) अभिज्ञानशाकुन्तले मुख्य रसः कः? 1

(i) करुण रसः (ii) शान्त रसः
(iii) वीर रसः (iv) शृंगार रसः

13. एक दिन के अवकाश हेतु अपने प्रधानाचार्य को संस्कृत में एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। *अथवा* 6
प्रधानाचार्य को पुस्तकालय की समुचित व्यवस्था के लिए संस्कृत में एक पत्र लिखिए।

14. अनुप्रास **अथवा** यमक अलंकार की परिभाषा हिन्दी अथवा संस्कृत में लिखकर संस्कृत में उदाहरण दीजिए। 4

15. अधोलिखित में से किन्हीं चार का संस्कृत में अनुवाद कीजिए— 8

(i) साधु की कुटिया नदी के पास है। (ii) गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।
(iii) राम ने रावण को मारा। (iv) मोहन पैर से लँगड़ा है।
(v) विद्या से नम्रता आती है। (vi) देवदत्त को लड्डू अच्छे लगते हैं।

16. *(अ)* निम्नलिखित रेखाङ्कित पदों में से किसी **एक** में नियमोल्लेखपूर्वक विभक्ति का निर्देश कीजिए— 2

(i) क्रोशं कुटिला नदी। (ii) मुनिः शिलाम् अधिशेते।
(iii) शिरसा खल्वाटः।

(आ) "रामः लक्ष्मणेन सह गच्छति" में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? 2

(i) द्वितीया (ii) तृतीया
(iii) सप्तमी (iv) पंचमी

17. *(अ)* अधोलिखित पदों में से किसी एक पद में विग्रह कीजिए— 2

(i) शरणागतः (ii) युधिष्ठिरः (iii) कृष्णसर्पः

(आ) 'हरित्रातः' में प्रयुक्त समास का नाम है– 2

(i) अव्ययीभाव (ii) द्वन्द्व
(iii) तत्पुरुष (iv) बहुव्रीहि

18. *(अ)* 'रमेशः' का सन्धि विधायक सूत्र लिखिए। 2

(आ) 'नायकः' का सन्धि-विच्छेद होता है– 2

(i) न + अयकः (ii) ने + अकः
(iii) नै + अकः (iv) नौ + अकः

19. *(अ)* 'मत्यैः' में 'मति' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? 2

(आ) 'हरिभिः' पद में 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? 2

(i) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ii) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(iii) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (iv) पंचमी विभक्ति, बहुवचन

20. *(अ)* 'तिष्ठथ' क्रिया पद का पुरुष एवं वचन लिखिए। 2

(आ) 'गम्' धातु के लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– 2

(i) गच्छति (ii) गच्छतु
(iii) गमिष्यति (iv) गच्छेत्

21. *(अ)* 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– 1

(i) पठितः (ii) पठन्
(iii) पठित्वा (iv) पठिता

(आ) 'पातुम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– 1

(i) पिब् + तुमुन् (ii) पिब् + क्त्वा
(iii) पा + तुमुन् (iv) पा + क्त

●●